राजस्थानी लोक-कथाएँ

(प्रथम खण्ड)

श्री गोविन्द अग्रवाल

ग्रंथ-संख्या	२३७
प्रथम संस्करण	संवत् २०२१
मूल्य	५·००
प्रकाशक तथा विक्रेता	भारती भंडार लीडर प्रेस, इलाहाबाद
मुद्रक	बी. पी. ठाकुर लीडर प्रेस, इलाहाबाद

समर्पण

मरु-भारती
के
प्रधान संपादक
राजस्थानी साहित्य-गगन
के
जाज्वल्यमान नक्षत्र
व
हिन्दी जगत के
श्रेष्ठ आलोचक एवं निबन्धकार
श्रद्धेय डॉ० श्री कन्हैयालाल जी सहल
को
उनके स्नेहमय निरंतर प्रोत्साहन
के लिए
श्रद्धा पूर्वक समर्पित

—गोविन्द अग्रवाल

भूमिका

राजस्थानी लोक-कथाओं का यह संग्रह चुरू निवासी श्री गोविन्द अग्रवाल ने लोकवार्त्ता शास्त्र के आधार पर किमा है। इसे दो खण्डों में प्रकाशित करने की योजना है, जिसका पहला खण्ड अब प्रकाशित हो रहा है।

इस संग्रह की कहानियाँ सब प्रकार पठनीय हैं और भारतीय कथा-साहित्य में इन्हें सम्मानित स्थान मिलने की आशा है। भारतवर्ष कहानियों का देश है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यहाँ लगभग तीन सहस्र लोक-कथाएँ हैं। उनका विधिवत् संकलन लोकवार्त्ताशास्त्र का महत्वपूर्ण अंग है। हमें यह देखकर हर्ष है कि राजस्थान के लोकवार्त्ताशास्त्री विद्वान् अपने उत्साह से क्रमशः आगे बढ़ रहे हैं। "वरदा" पत्रिका ने पहले ही इस ओर अच्छा काम किया है। श्री मनोहर शर्मा और श्री गोविन्द अग्रवाल ने जितनी कहानियाँ सामने रक्खी हैं और जो अभी लोक में व्याप्त हैं, उनकी विशाल सामग्री का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। कौन-सी कहानी ऐतिहासिक पवाड़ों से जा मिलती है, कौन-सी जातक, पंचतंत्र एवं नैतिक कथा-साहित्य से निकली है, कौन सी केवल विनोदपूर्ण चुटकुलों के रूप में है, यह सूक्ष्म छान-बीन का विषय है।

प्रस्तुत लेखक ने प्राथमिक संग्रह मात्र किया है, किन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से उच्चस्तरीय अध्ययन भी अपेक्षित है। यह भी ज्ञातव्य है कि इन कहानियों में से कितनी ही अन्य प्रदेशों में भी प्रचलित हैं, जैसे पृष्ठ तीन-चार पर "कौवे और चिड़िया" की कहानी। ये कहानियाँ मानव-जीवन की

समस्याओं की शाश्वत भाषा है। कर्म और भाग्य, बुद्धि की चतुराई और मूर्खता, उत्साह और आलस्य, प्रेम और घृणा, आत्म विश्वास और निराशा इन तत्वों से मानव का जीवन बना है। जब से मनुष्य है, तब से ही मनोभावों की ये प्रेरणाएँ भी मानव के साथ हैं एवं इन्हीं से उसका जीवन संचालित होता आया है। उन्हें ही उसने कहानियों में ढाला है। कहानी का कटाक्ष दूसरे पर होता है। कहानी के व्यक्ति की हार-जीत, भलाई-बुराई, कहानी कहने या सुनने वाले को दुखदाई नहीं जान पड़ती, पर कहानियों के अक्षर निरंतर मानवीय जीवन के उतार-चढ़ाव की ओर संकेत करते हैं। घर के आँगन में या घर से बाहर के बीहड़ जंगल और पहाड़ों में या नदी और समुद्र के जोखिम भरे स्थानों में सर्वत्र कहानी की भाषा की मिठास मधु-बिन्दुओं की वर्षा की भांति फैली हुई मिलती है। विश्व का कोई ही मानव शायद ऐसा हो, जिसे कहानी की चासनी अच्छी न लगे।

कहानी सुनने के लिए बाल-भाव चाहिए। अधेड़ या बुढ्ढे व्यक्ति के भीतर भी सनातन बाल-भाव रहता ही है।

अनेक विद्वानों ने पुरानी कहानियों की जो उधेड़बुन की है, उससे विश्व की रचना के बहुत से तथ्य ज्ञात हुए हैं। कहानियों की रचना में जैसे मनुष्य भाग लेते हैं, वैसे देवता भी। कहानी का धरातल इतना हलका-फुलका होता है कि उसमें स्वर्ग और पृथ्वी के सभी प्राणी, अर्थात् पशु-पक्षी, कीट-पतंग, वृक्ष-वनस्पति, मनुष्य, देवयोनियाँ सभी पात्र बनाये जा सकते हैं। मानवीय स्वभाव के सौम्य और घोर रूप कहानी में भिन्न-भिन्न पैतरों के साथ आते हैं और वहाँ उन सबका स्वागत किया जाता है। कहानियों के जगत् में कुछ भी जड़ नहीं है। वहाँ मिट्टी-पत्थर, नदी-पहाड़, पेड़-पौधे, फूल-कलियाँ, आकाश और हवाएँ, सूर्य-चन्द्र और तारे सभी प्राणवन्त जीवधारियों के समान व्यवहार करते हैं। वह एक विलक्षण संसार है, जहाँ सारी सृष्टि को कोई एक सूत्र में आपस में पिरोए रहता है।

इस संग्रह की "इल्ली-घुणियों" शीर्षक कहानी, पृष्ठ ११७-११८ हमने अपने यहाँ उत्तर प्रदेश में भी कार्त्तिक-स्नान के समय कही जाती

हुई सुनी है । इसके सरल वातावरण में इल्ली (सुरसुरी नाम का छोटा कीड़ा) घुन, राजकुमारी, रानी, राजा ये सब एक ही नाटक के पात्र बनते हैं और सब अपने चरित्र की सत्ता से व्यवहार करते हैं। इनमें इल्ली नामक सबसे छोटे कीड़े का चरित्र सबसे ऊपर उभड़ आता है। कहानियों के इस सनातन संसार को मानव श्रद्धा से अपना प्रणाम भाव अर्पित करता है।

—वासुदेव शरण अग्रवाल

काशी विश्वविद्यालय
२१–३–६४

यज्ञ का अनुष्ठान

राजस्थान का अतीत साहित्य और उसका सांस्कृतिक वैभव अत्यन्त समुज्ज्वल है। जिस मरु-रानी ने पानी रखकर रक्त का दान दिया, जहाँ के मानी आन-बान पर मरते आये, जहाँ सतियों की दिव्य ज्योति वातावरण को आलोकित करती रही, जहाँ के निवासियों को पद-पद पर संघर्ष करना पड़ा, उस राजस्थान की भूमि चाहे सस्यश्यामला न रही हो, चाहे वहाँ जल के अनन्त स्रोत न फूटे हों, किन्तु इसमें संदेह नहीं, संस्कृति के जितने अगणित स्रोत इस प्रदेश में फूटे, उनकी कोई तुलना नहीं।

वैसे तो समूचे लोक-साहित्य की दृष्टि से ही राजस्थान अत्यन्त समृद्ध है किन्तु थोड़े 'अर्थवाद' का आश्रय लेकर यदि कहें तो कह सकते हैं कि यहाँ की लोक-कथाएँ तो गगन-मण्डल में टिमटिमाते हुए तारों की भाँति असंख्य हैं। इस प्रदेश की अन्तरात्मा में अनेक कथा सरित्सागर और सहस्र-रजनी चरित छिपे हुए हैं।

अनेक वर्षों से मैं एक ऐसे व्यक्ति की तलाश में था जो राजस्थान की असंख्य लोक-कथाओं को लिपिबद्ध करने का काम कर सके। अंत में मेरा ध्यान राजस्थान की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा के धनी श्री गोविन्द अग्रवाल की ओर गया जो राजस्थानी लोक-कथाओं के चलते-फिरते कोश हैं। मेरे 'ओढ़ाने' से उन्होंने 'मरु-भारती' में राजस्थानी लोक कथा-कोश के अनुष्ठान का शुभारम्भ कर दिया। उनके अध्यवसाय, उनकी स्मरण-शक्ति और उनकी दायित्व-भावना को देख कर मुझे साश्चर्य आह्लाद हुआ। यह बड़े हर्ष की बात है कि राजस्थानी लोक कथा-कोश का यह यज्ञ जब से प्रारम्भ हुआ, तब से यह अखण्ड और अनवच्छिन्न क्रम से आज

भी चल रहा है और मैं पूर्णतः आश्वस्त हूँ कि भविष्य में भी अप्रतिहत गति से आगे बढ़ता रहेगा ।

राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के अनन्य प्रेमी और पृष्ठपोषक श्रीयुत कृष्णकुमारजी बिड़ला का ध्यान उक्त कोश की ओर आकृष्ट हुआ। उन्हीं की सतत प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता से यह कोश खण्डशः पुस्तकाकार प्रकाशित हो रहा है । मरु-भारती-परिवार तथा उक्त कोश के संग्रहकर्त्ता श्री गोविन्द अग्रवाल—हम सभी श्री बिड़ला जी के चिरकृतज्ञ रहेंगे ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्री गोविन्द अग्रवाल द्वारा प्रारम्भ किया हुआ यह अखंड कोश-यज्ञ लेखक को यशस्वी बनाएगा तथा लोक-कथाओं के क्षेत्र में शोध करने वाले अनुसंधित्सुओं को भी इससे सहायता मिलेगी । 'मरु-भारती' के विशिष्ट परामर्शदाता तथा लोक-संस्कृति के मर्मज्ञ एवं विविध शास्त्र-निष्णात सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने उक्त लोककथा— कोश की भूमिका लिख कर हमें उपकृत किया है और इसका गौरव बढ़ाया है ।

२५ मार्च, १९६४

कन्हैयालाल सहल
प्रधान संपादक
'मरु-भारती'
पिलानी

नम्र निवेदन

बचपन में माँ, दादी और दादा से बहुतेरी कहानियाँ सुनी थीं, जिनमें से कुछ याद रहीं, कुछ भूल गया। मेरे छोटे दादाजी बहुत रोचक ढंग से कहानियाँ कहा करते थे। उनके कहानी कहने का ढंग इतना मोहक था कि पाँच छह वर्ष की अवस्था में उनके मुँह से सुनी खप्परिया चोर जैसी बड़ी कहानियाँ भी आज मुझे ज्यों की त्यों याद हैं। कहानी शुरू करने से पहले वे,

बात कहतां बार लागै,
हुंकारै बात मीठी लागै,
बात में हुंकारो,
फौज में नगारो,
आधा'क सोवै आधा'क जागै,
जागतोड़ां की पगड़ी
सूत्योड़ा ले भागै,
जद बातां का रंग धोरा लागै......।

आदि कह कर हमें मन लगा कर कहानी सुनने और हुंकारा देने के लिए तैयार करते और फिर, "तो रामजी भला दिन दे, एक साहूकार के च्यार बेटा हा", आदि से कथा शुरू करते। कहानी सुनते वक्त हुंकारा देना बहुत आवश्यक है। इससे कथा कहने वाला अनुभव करता है कि कथा ध्यान से सुनी जा रही है और कथा कहने में उसका उत्साह बढ़ता रहता है। इसीलिए फौज में नग़ारे की तरह कथा में हुँकारे का महत्त्व है।

कभी कभी मैं सोचा करता कि ये कथाएँ लिखी जाएँ तो अच्छा हो। मुझे लगता कि यह बहुमूल्य कथा-साहित्य शीघ्रता से नष्ट होता जा रहा

है क्योंकि देश की आजादी के बाद आने वाली पीढ़ी इस कथा-साहित्य से बहुत दूर हो चुकी है और आगामी चन्द वर्षों में यह प्राचीन कथा-साहित्य सदैव के लिए नष्ट हो जाएगा। मेरे मन में बड़ी छटपटाहट थी कि किसी प्रकार इस साहित्य को संरक्षण मिले। तभी मुझे मरु-भारती के प्रधान संपादक आदरणीय डॉ० श्री कन्हैयालाल जी सहल का आदेश मिला कि मैं मरु भारती के लिए राजस्थानी लोक-कथाएँ लिखूँ। उनका आदेश मेरी इच्छापूर्ति का साधन बन गया। मुझे ऐसा लगा मानो घर बैठे ही गंगा आ गयी और मैं इस कार्य में जुट गया। लेकिन विधि की विडंवना ही कहिए कि हार्दिक इच्छा और रुचि होते हुए भी इस कार्य को पूरा समय नहीं दे सका। लेकिन डॉ० साहब का सहज स्नेह और प्रोत्साहन मुझे बराबर मिलता रहा और उन्होंने थोड़े ही समय में मुझसे एक हजार कथाओं से भी अधिक का संग्रह करवा लिया। ये कथाएँ बराबर मरु-भारती में निकल रही हैं और आगे भी निकलती रहेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। आदरणीय डॉ० साहब के प्रयत्न से ही ये कथाएँ अब पुस्तकाकार निकल रही हैं, जिससे इन राजस्थानी कथाओं के प्रचार और प्रसार में अधिकाधिक बढ़ोतरी हो सकेगी। इन सब के लिए डॉ० साहब का हृदय से अत्यंत आभारी हूँ।

राजस्थान की चप्पा-चप्पा भूमि वीरों के बलिदानों से भरी पड़ी है। यहाँ का कण-कण राजस्थानी वीर और वीरांगनाओं की गौरवपूर्ण गाथाओं से देदीप्यमान हो रहा है। महाभारत के वीर योद्धा कर्ण ने श्रीकृष्ण से अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करते हुए कहा था कि मेरी चिता ऐसी जगह बनायी जाए कि जहाँ पहले कोई दाग न लगा हो। श्रीकृष्ण के दिव्य दृष्टि से देखने पर सूई की नोक के बराबर ऐसी जगह मिल भी गयी थी। लेकिन राजस्थान की धरती पर शायद सूई की नोक के बराबर भी ऐसी जमीन न मिलेगी जो शूरवीरों के खून से सिंचित न हुई हो। उन शूरवीरों के अद्भुत पराक्रम की कितनी कथाएँ काल के कराल गाल में समा गयी हैं, इसका कोई लेखा—जोखा नहीं। फिर जो कथाएँ उपलब्ध हैं, वे भी दिन प्रति दिन

नष्ट होती जा रही हैं क्योंकि अधिकतर कथाएँ तो लोगों की जबान पर ही चलती आ रही हैं और जो कहीं हस्तलिखित भी पड़ीं हैं, वे भी दीमकों का भोजन बन जाने की बाट जोह रही हैं। इसलिए इन कथाओं के संरक्षण की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। इनको संरक्षण न मिलना एक राष्ट्रीय अपराध होगा।

वीर गाथाओं के अतिरिक्त धार्मिक कथाएँ, नीति-कथाएँ, बाल-कथाएँ, साहसिक और परियों आदि की विभिन्न प्रकार की अनगिनत कथाएँ हैं, जिन सबका संकलन होना अत्यावश्यक है। नीति-कथाएँ, पंचतंत्र और हितोपदेश की कथाओं की तरह ही बहुत रोचक एवं उपयोगी हैं। प्रायः हर राजस्थानी कहावत के पीछे कोई न कोई कथा होती है। इन कथा कहानियों को लोग-बाग प्रायः अपनी मंडली में, सफर में, अवकाश के समय अथवा कोई प्रसंग उपस्थित होने पर कहते हैं। वैसे मोटे तौर पर इन कथाओं को तीन भागों में बाँटा जा सकता है:—

१. वे घरेलू बाल कथाएँ जो घर की बड़ी बूढ़ी स्त्री (नानी, दादी) या पुरुष बालकों को सुनाता है। शाम होते ही घर भर के बालक अपनी नानी, दादी को घेर कर बैठ जाते हैं और सब अपनी अपनी पसंद की कहानी कहने का आग्रह करते हैं। पशु-पक्षियों की, चोर-साहूकार की और राजा-रानी आदि की कथाएँ कह कर वृद्धा बालकों का मनोरंजन करती है। किसी हास्य-कथा को सुनते वक्त बालक हंसते हंसते लोट-पोट हो जाते हैं तो किसी दुःखान्त कथा को सुनकर वे गमगीन बन जाते हैं। ये छोटी-छोटी कथाएँ बालकों के कोमल मनों पर सदैव के लिए अंकित हो जाती हैं। कथा सुनाते वक्त वृद्धा बालकों के साथ विनोद भी करती जाती है। जब उसे बच्चों को टालना होता है तो वह कहती है:—

"का'णी कैवै कागलो, हुंकारो देवै मइया ,
आंधळियै नैं चोर लेग्या, भाग रै पांगळिया ।"

और कथा समाप्त करने पर वह अपने किसी नन्हें पोते का नाम लेकर कहती है:—

"ओड का'णी, मूंगा राणी, मूंग पुराणा, नंदू के सासरै का नाई बामण सै कोणा ।"

रात के समय घर के काम-काज से निवृत्त होने पर कथाएं कही जाती हैं। यदि कोई बालक अपनी माँ से दिन में कथा कहने का आग्रह करता है तो माँ यह कह कर बच्चे को टाल देती है कि दिन में कथा कहने से मामा रास्ता भूल जाता है ।

इन कथाओं का एक बड़ा लाभ तो यह रहा है कि घर के सभी बालक बड़ों के सान्निध्य में आने का प्रयत्न करते हैं। बालकों को मनोरंजन के साथ साथ अच्छी शिक्षा मिलती है तथा इस मनोरंजन में कुछ खर्च नहीं होता। इसके विपरीत सिनेमा वगैरह आधुनिक मनोरंजन के साधनों के चल पड़ने से बालक बड़ों के समीप आने में कतराते हैं, उनके सान्निध्य से दूर भागते हैं और पैसे खर्च करके अवगुण सीखते हैं ।

२. दूसरे प्रकार की कथाएँ वे हैं जो रावल, भाट, ढाढ़ी, चारण, मिरासी और राणी-मंगा आदि अपने आश्रय दाताओं या यजमानों को सुनाते हैं। ऐसी कथाएँ काफी बड़ी होती हैं। कथा सुनाने वाले तरह तरह के दोहे और गीत आदि बीच बीच में बोलते जाते हैं जिनसे कथाओं में बहुत रोचकता आ जाती है। इस प्रकार कथा कहने वाले अपने विशेष ढंग से कथा कहते हैं, वे पुरजोर आवाज में कथा कहते हैं जिससे बैठे हुए सारे श्रोता अच्छी तरह कथा सुन सकें। साथ ही कथा कहने वाला कथा के पात्रों का सफल अभिनय भी करता जाता है। घोड़े के दौड़ाने का प्रसंग कथा में आता है तो कथा कहने वाला इस प्रकार की ध्वनि निकालता है जैसे वास्तव में घोड़ा दौड़ रहा हो ।

राजा और रईसों के मनोरंजन का मुख्य साधन शिकार होता था लेकिन घर पर फुरसत के वक्त वे कुशल कहानी कहने वालों से शूरों, सामन्तों, सुन्दरियों और वीरांगनाओं की कथाएँ सुना करते थे और उन्हें भरपूर पुरस्कार भी देते थे। अपनी पसन्द की कथाओं को वे लिखवा भी लेते थे ।

३. महिला व्रत कथाएँ:—जो एक स्त्री अन्य स्त्रियों को घर में, मन्दिर में अथवा तुलसी या बड़-पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ कर सुनाती है। महिला धार्मिक व्रत कथाओं का अपना महत्त्व है। कथा कहने वाली स्त्री कथा को हरूफ ब हरूफ इस प्रकार सुनाती है मानो कोई पुस्तक पढ़ रही हो। एक अक्षर भी कहीं कम या अधिक नहीं हो पाता। इन कथाओं का ही यह प्रभाव है कि इस मरु-भूमि में जहाँ वर्षा बहुत कम होती है यत्र-तत्र बड़ पीपल जैसे बड़े और घनी छाया वाले वृक्ष दिखलाई पड़ जाते हैं। वृक्ष की एक हरी शाखा को तोड़ने मात्र से कितना पाप होता है, यह बात ये कथाएँ बतलाती हैं और साथ ही यह भी बतलाती हैं कि आक की एक डाली को नियमपूर्वक सींचने से भी कितना फल मिलता है। फलत: बैसाख और जेठ की कड़ी धूप में भी राजस्थानी महिलाएँ अपने सुहाग को अमर बनाने के लिए और कुमारी कन्याएँ योग्य वर पाने की अभि-लाषा से बड़-पीपल आदि वृक्षों को दूर-दूर से पानी लाकर अपने हाथों से सींचती हुई दिखलाई पड़ती हैं। वन-महोत्सव मनाने का कार्य तो अधिकतर अखबार और प्रचार तक ही सीमित रहा लेकिन इन कथाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव सदियों से स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ रहा है।

"गंगा और जमुना" जैसी कथाएँ यह बतलाती रही हैं कि अनजाने भी चोरी करने का कितना बड़ा पाप होता है और देवी-देवताओं को भी इसका प्रायश्चित्त करना पड़ता है। फलत: इन कथाओं का सुप्रभाव राज-स्थान की नारी पर बहुत अधिक पड़ा है। ये कथाएँ यथासमय नियमपूर्वक सुनी जाती हैं और कथा सुन लेने पर ही अन्न-जल ग्रहण किया जाता है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग को अमर बनाने के लिए, पुत्र-पौत्रों की कामना के लिए और धन-धान्य की प्राप्ति के लिए विधान-सहित कथाएँ अवश्य सुनती हैं, इसलिए इन कथाओं की परंपरा अबाध गति से चलती रही है। इन कथाओं की एक और विशेषता यह रही है कि कथा के अन्त में जो फलश्रुति कही जाती है, उसमें यह कामना की जाती है कि कथा में वर्णित कार्य का जो सुफल करने वाले को मिला, वैसा सब को मिले। आज

'जय-जगत' या 'जिओ और जीने दो' का नारा सब को एक अनोखी सूझ लगता है लेकिन राजस्थानी व्रत-कथाओं की यह एक परंपरागत अनूठी देन है ।

इनके अतिरिक्त कथाओं की एक चौथी किस्म वह कही जा सकती है जो नव-युवक यार दोस्त अपने साथियों में बैठ कर कहते हैं। इन कथाओं में अश्लीलता का पुट होता है, अतः ऐसा साहित्य लिपि-बद्ध नहीं किया जा सकता। यदि इन कथाओं से अश्लील अंश और शब्द निकाल दिये जाएँ तो ये कथाएँ भी बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं । मैंने इन कथाओं में कुछ अश्लील कथाओं को श्लील बनाकर पेश करने का प्रयत्न किया भी है ।

इतिहास तो राजाओं के जन्म-मरण की तारीखों आदि का सूचीपत्र मात्र होता है । तत्कालीन जन-जीवन पर तो इन कथाओं से ही प्रकाश पड़ता है। ये लोक-कथाएँ ही राजस्थान के तत्कालीन जन-जीवन की सच्ची तस्वीर खींचती हैं और इन कथाओं का राजस्थान के जन-जीवन पर भरपूर असर रहा है ।

जहाँ तक हो सका है, मैंने कथाएँ संक्षिप्त रूप में ही लिखने की चेष्टा की है लेकिन साथ ही मेरा यह प्रयत्न भी रहा है कि कथा का कोई आवश्यक अंग छूटने न पाये। कुछ ऐसे भी प्रसंग होते हैं जो थोड़े बहुत हेर फेर के साथ कई कथाओं में आते हैं। जो प्रसंग एक कथा में विस्तार से आ चुका हैं, वैसा ही प्रसंग दूसरी कथा में आने पर मैंने उसे बहुत संक्षिप्त कर दिया है। मैंने अपना कर्त्तव्य ईमानदारीपूर्वक और निष्पक्ष भाव से निभाने की चेष्टा की है। इसमें कहाँ तक सफल हो सका हूँ, यह तो विद्वान् और सहृदय पाठक ही बतला सकेंगे। जहाँ तक भाषा का सवाल है, मैंने सरलतम और बोलचाल की भाषा में कथाएँ लिखने का प्रयत्न किया है, जिससे अधिकाधिक पाठक इन कथाओं को पढ़ सकें तथा जिन राज्यों में हिन्दी का अभी बहुत प्रचलन नहीं हुआ है और जहाँ सरल हिन्दी ही समझी और पढ़ी जाती है, वहाँ के निवासी भी इन कथाओं में रुचि ले सकें। कथाओं के

शीर्षक राजस्थानी ही रखे गये हैं और यत्र-तत्र कुछ बहु प्रचलित राजस्थानी शब्दों से भी पाठकों को परिचित कराने का प्रयत्न किया गया है।

जितनी कथाएँ लिखी गयी हैं, वे सब सुनकर या पढ़कर मूल रूप में ही लिखी गयी हैं। मैंने अपनी ओर से उनमें कुछ भी मिलाने की चेष्टा नहीं की हैं। जिन संबंधियों, मित्रों, परिचित या अपरिचित महानुभावों से मैंने कथाएँ सुनी हैं या जिन महानुभावों द्वारा पूर्व लिखित कथाओं से मुझे सहायता मिली है उन सब का हृदय से आभारी हूँ।

राजस्थान लोक-कथाओं का रत्नाकर है और इससे रत्नों को इकट्ठा करने के लिए भगीरथ प्रयत्न की आवश्यकता है जो सरकार या कोई बड़ी साधनसंपन्न संस्था ही कर सकती है। किसी एक आदमी के बूते का यह काम नहीं है और विशेष कर मेरे जैसे आदमी का तो कतई नहीं जो इस कार्य में रुचि रखते हुए भी अधिक समय नहीं दे सकता। फिर भी मेरी हार्दिक इच्छा है कि अधिकाधिक राजस्थानी लोक-कथाओं का संकलन करूँ और आशा करता हूँ कि हितैषियों के आशीर्वाद और सहयोग से इस कार्य को निरंतर जारी रख सकूँगा।

—गोविन्द अग्रवाल

चूरू
१ अप्रेल १९६४

घर का घर में सलट लिया

एक गीदड़ और गीदड़ी पानी पीने के लिए तालाब पर गये। वे दोनों बहुत प्यासे थे, लेकिन तालाब के किनारे एक शेर बैठा था। शेर को देख कर दोनों वहीं ठिठक गये और पानी पीने की कोई तरकीब सोचने लगे। सोचते-सोचते उन्हें एक युक्ति सूझी और वे दोनों सिंह के पास गये। सियारी ने सिंह से कहा कि जेठजी, हमारा न्याय आप कर दीजिए। हमारे तीन बच्चे हैं सो दो बच्चे मैं रखना चाहती हूँ और एक बच्चा इसे देना चाहती हूँ। लेकिन यह दो बच्चे स्वयं लेना चाहता है और एक मुझे देना चाहता है। भला आप ही बतलाइये कि मैं एक बच्चा कैसे ले लूँ? मैंने ही उन्हें जन्म दिया है, मैंने ही उन्हें पाला पोषा है। उधर गीदड़ भी दो बच्चों की माँग कर रहा था। तब सियारी ने कहा कि मैं तीनों बच्चों को यहीं ले आती हूँ, जेठजी जैसा उचित समझें कर दें। यों कह कर सियारी पानी पीकर चलती बनी। सिंह ने सोचा कि—सियारी तीनों बच्चों को ले आये तो पूरा कलेवा बन जाएगा। लेकिन बहुत देर बीत जाने पर भी जब सियारी नहीं आयी तो सियार ने सिंह से कहा कि हुजूर, वह कुलटा अभी तक नहीं लौटी है, जरूर उसकी नीयत में फरक है। वह राँड स्वयं दो बच्चे लेना चाहती है, मैं अभी उसे घसीट कर लाता हूँ। यों कह कर गीदड़ भी पानी पी कर चलता बना।

कुछ देर तक तो सिंह वहीं प्रतीक्षा करता रहा, लेकिन जब उसे भूख अधिक सताने लगी तो सियार-सियारी का न्याय करने के लिए वह उनकी 'धुरी' पर स्वयं गया और उसने पुकार कर गीदड़ से कहा कि अपने बच्चों को लेकर जल्दी बाहर आ जाओ, तुम्हारा न्याय कर दूँ, मुझे देर हो रही है। सिंह की बात सुनकर सियारी ने अन्दर से ही कहा कि

जेठजी, आपने यहाँ आने की तकलीफ क्यों उठाई ? हम तो 'घर के घर में ही सलट लिये' यह निपूता कहता है कि मैं दो बच्चे ही लूँगा सो क्या करूँ, दो बच्चे इसे दे दूँगी, मैं एक ही रख लूँगी । सियारी की बात सुनकर सिंह अपना सा मुँह लेकर चला गया ।

हलदी और सूँठ

हलदी और सोंठ दो बहिने थीं । हलदी खूब काम किया करती लेकिन सोंठ काम को हाथ भी न लगाती । एक बार हलदी अपनी नानी के यहाँ गई । रास्ते में एक हलवाई की दुकान आई । हलवाई के कहने पर हलदी ने भट्टी लीप-पोत दी । फिर वह आगे बढ़ी तो एक खाती का घर आया । हलदी ने उसका घर बुहार झाड़ कर साफ कर दिया । हलदी आगे बढ़ी तो उसे एक झड़बेरी मिली । हलदी ने झड़बेरी के काँटे बुहार दिये । इसी प्रकार जो भी उसे रास्ते में मिला वह सबका काम करती गई । नानी के यहाँ पहुँची तो वहाँ भी वह नानी का तथा अपनी मामियों का काम दौड़ दौड़ के करती । सभी उसे प्यार करते । कुछ दिन नानी के यहाँ रह कर जब हलदी लौटने लगी तो नानी और मामियों ने उसे तरह तरह की चीजें दीं । वे सब यही चाहती थीं कि हलदी कुछ दिन और रहे ।

सारी चीजें लेकर हलदी वहाँ से चली । रास्ते में झड़बेरी मिली तो उसने हलदी को अपने मीठे बोर दिये, माली ने फल दिये, खाती ने सुन्दर खिलौने दिये और हलवाई ने तरह तरह की मिठाइयाँ हलदी को दीं । हलदी जब घर पहुँची तो सभी ने हलदी की बहुत प्रशंसा की कि हलदी तो बहुत चीजें लाई है, लेकिन सोंठ को बड़ी ईर्षा हुई । वह भी चीजें लाने के लिए नानी के घर चल पड़ी । रास्ते में हलवाई की दुकान आई । हलवाई ने सोंठ से भट्टी लीपने के लिए कहा तो सोंठ ने तड़ाक से उत्तर दे दिया, "वाही हलदी-पलदी, मैं हूँ सठ[illegible] सूँ[illegible] काम करूँ तो मेरै हाथाँ में साल कोनी पड़ज्या के ?" [illegible] और [illegible]र जो भी उसे रास्ते में

मिला उसे यही उत्तर देती गई। नानी के यहाँ पहुँचकर भी सोंठ ने कोई काम नहीं किया। जब उसकी नानी मामी कोई काम ओड़ाती तो सोंठ यही उत्तर देती, 'बाही हलदी पलदी मैं हूँ सठवा सूंठ, काम करूँ तो मेरै हाथां में साल कोनी पड़ज्या के ?"

थोड़े ही दिनों में उसकी मामियाँ उससे उकता गईं। वे मन में कहतीं कि सोंठ किसी प्रकार यहाँ से निकले तो अच्छा रहे। निदान सोंठ वहाँ से चली तो उसकी नानी मामियों ने उसे नाम-मात्र की चीजें दीं। रास्ते में उसे वही झड़बेरी मिली जिसमें बड़े मीठे बोर लगे थे। सोंठ ने बेर माँगे तो झड़बेरी ने उसे झिड़कते हुए कहा कि काम करते वक्त तो तेरे हाथों में साल पड़ता था अब बेर माँगने आई है, भाग जा यहाँ से। सोंठ को रास्ते भर यही उत्तर मिला। वह खिन्न मन से घर पहुँची। घर पहुँचने पर सबने सोंठ से यही कहा कि बाई, सब को काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं, हलदी ने भाग-भाग कर काम किया तो वह इतनी चीजें ले आई, तू सठवा सोंठ बनी रही तो तुझे भला चीजें भी कहाँ से मिलतीं ?

● कागलो और चिड़ी

एक चिड़ी और कौवा आपस में दोस्त थे। कौवे को मिला लाल और चिड़ी को मिला एक मोती। कौवे ने चिड़ी से कहा कि जरा अपना मोती तो दिखलाना। चिड़ी ने मोती दिखलाया और कौवा उसे अपनी चोंच में दवाकर 'नीमड़ी' (नीम का वृक्ष) पर जा बैठा। चिड़ी ने नीमड़ी से झरकर कहा कि नीमड़ी नीमड़ी काग उड़ा। लेकिन नीमड़ी ने उत्तर दिया, "मैं क्युं उड़ाऊं मेरो के लियो।" "काग मोती देवै नी, चिड़ी रोवती रैवैनी" (कथा कहते समय हर बार इस पद को दोहराया जाता है।) नीमड़ी के उत्तर से असंतुष्ट होकर चिड़ी खाती के पास जा कर बोली कि—खाती खाती नीमड़ी काट। लेकिन खाती ने भी कह दिया, "मैं क्युँ काटूँ मेरो के लियो।" तब चिड़ी ने राजा के पास पुकार की, 'राजा राजा खाती नै डंड' लेकिन राजा ने उत्तर दिया कि "मैं क्युँ डंडूँ मेरो के लियो।" तब चिड़ी ने

राजा की रानी से कहा कि रानी रानी राजा से 'रूठ'। लेकिन रानी ने उत्तर दिया कि 'मैं क्युं रूसूँ मेरो के लियो ?" तब चिड़ी ने चुहिया से जाकर कहा कि तू रानी के कपड़े काट दे लेकिन चुहिया ने भी वही उत्तर दिया कि भला मैं रानी के कपड़े क्यों काटूँ ? मेरा क्या लेता है ? तब चिड़िया ने बिल्ली से कहा कि तू चुहिया को मार डाल, लेकिन बिल्ली ने भी इनकार कर दिया तो चिड़ी कुत्ते के पास पहुँची। लेकिन कुत्ते ने भी यही उत्तर दिया कि भला मैं बिल्ली को क्यों मारूँ ? उसने मेरा क्या बिगाड़ा है ? तब चिड़िया लाठी के पास आई और उससे प्रार्थना करने लगी कि तू कुत्ते को मार, लेकिन लाठी ने भी ऐसा करने से इनकार किया तो चिड़िया आग के पास पहुँची और आग से बोली कि तू लाठी को जला दे लेकिन आग ने भी ऐसा करना स्वीकार नहीं किया तो बेचारी चिड़िया सरोवर के पास पहुँची और बोली कि तू आग को बुझा दे। लेकिन सरोवर पर भी चिड़िया की पुकार का कोई असर नहीं हुआ तो वह हाथी के पास पहुँची कि तू अपनी सूँड से पानी को सोख ले लेकिन हाथी ने भी इनकार कर दिया। अंत में निराश होकर चिड़िया कीड़ी के पास पहुँची और उसने कीड़ी से अपनी कष्ट कथा कही। चिड़िया ने कीड़ी से कहा कि तू हाथी की सूँड में घुस कर उसे मार डाल। कीड़ी ने कहा कि मैं अवश्य ही हाथी की सूँड में घुसूँगी। कीड़ी बात सुनकर हाथी ने कहा कि तू मेरी सूँड में क्यों घुसती है, मैं सरोवर का पानी सोख लूँगा। सरोवर ने हाथी से कहा कि तू मेरा पानी मत सोख, मैं आग बुझा दूँगा। आग ने कहा कि तू मुझे न बुझा मैं लाठी को जला दूँगी। लाठी ने आग से कहा कि तू मुझे न जला, मैं कुत्ते को मारूँगी। कुत्ते ने कहा कि तू मुझे न मार, मैं बिल्ली को मार डालूँगा। बिल्ली ने कहा कि मैं चुहिया को मारूँगी। चुहिया ने कहा कि मैं रानी के कपड़े काट डालूँगी। रानी ने कहा कि तू मेरे कपड़ न काट, मैं राजा से रूठ जाऊँगी। राजा ने रानी से कहा कि तू मेरे से क्यों रूठती है मैं खाती को दंड दूँगा। खाती ने राजा से प्रार्थना की कि मुझे दंड न दिया जाय मैं नीमड़ी काट दूँगा। नीमड़ी ने कहा कि

तू मुझे न काट मैं काग को उड़ा दूँगी । कौवे ने नीमड़ी से कहा कि तू मुझे न उड़ा मैं चिड़ी का मोती दे दूँगा ।

कौवे ने चिड़ी का मोती उसे दे दिया और चिड़ी खुश होकर फुर्र से उड़ गई ।

● पगड़ी गई भैंस के पेट

एक महाजन एक गूजर के कुछ रुपये माँगता था । गूजर ने रुपये नहीं दिये तो महाजन ने बीकानेर के मोहते हाकिम के पास फरियाद की। साथ ही उसने हाकिम को एक पगड़ी भी बँबक्ष दी । हाकिम ने गूजर को तलब किया तो गूजर ने एक भैंस रिश्वत स्वरूप हाकिम के घर भेज दी । महाजन रुपये दिलवाने के लिए जल्दी करने लगा तो हाकिम ने उसे बुलवा कर कहा कि रुपये होने से मिलेंगे । महाजन ने अपनी पगड़ी को हाथ लगाते हुए हाकिम से कहा कि मेरी पगड़ी की लाज रखो । हाकिम पगड़ी को भूला नहीं था लेकिन गूजर ने उसके घर भैंस भेज दी थी अतः उसने महाजन से कहा कि पगड़ी भैंस के पेट में गई। महाजन अपना सा मुँह लेकर अपने घर चला आया ।

● बो ही कुहाड़ो बो ही बैंसो

एक गाँव में 'बावली माता' की बड़ी मान्यता थी । गाँव में जो कोई चोरी करता उसका हाथ बावली माता की मूर्ति से चिपक जाता । एक दिन सैंसा नाम का खाती, 'रावले' की एक अच्छी भैंस चुरा कर लाया और इस डर से कि सबेरे मूर्ति को हाथ चिपक जाएगा वह देवी का 'मँड' (छोटा-सा देवालय) तोड़ने लगा । देवी ने कहा कि तू मेरा 'मँड' मत तोड़, तेरा हाथ नहीं चिपकेगा । सैंसा चला गया । सबेरे भैंस की चोरी का हल्ला हुआ । गाँव भर के लोग परीक्षा देने के लिए देवी के 'मँड' के पास इकट्टे हुए और बारी बारी से हाथ चिपका कर परीक्षा देने लगे । सबसे अंत में सैंसे की बारी आई । सैंसे ने देवी को चेतावनी देते हुए कहा:

सुण घे माता बावली, भैंस गई है रावली ।
मैं हूँ खाती सैंसो, बोही कुहाड़ो बां ही बैंसो ।।

सैंसे का हाथ मूर्ति के नहीं चिपका और वह निर्दोष साबित हो गया ।

नागी भली क छींके पाँव

ननद और भौजाई रात को साथ साथ सोया करतीं । ननद दरवाजे की ओर सोती और भौजाई को अपने पीछे सुलाया करती । लेकिन भौजाई का अपने जेठ के साथ अनुचित संबंध था और वह हर आधी रात को उसके पास जाया करती । इसके लिए उसने एक छीका लटका रखा था और ननद जाग न जाए इसके लिए छीके पर पैर रखकर चुपचाप दूसरी ओर को उतर जाया करती । लेकिन ननद से यह बात छिपी न थी ।

एक दिन भौजाई अपने वस्त्र उतार कर नहा रही थी कि उसका जेठ आ गया । अब उस स्त्री ने आसमान सिर पर उठा लिया कि जेठ ने मुझे स्नान करते हुए नग्नावस्था में देख लिया । मेरा तो पातिव्रत धर्म नष्ट हो गया । अब मैं अन्न पानी ग्रहण नहीं करूँगी और प्राण दे दूँगी । सारे लोग समझा कर हार गये लेकिन वह नहीं मानी । तब उसकी ननद ने एकांत में उससे कहा :

तेरो जेठ और मेरो बीर, जिण को देखत ढ़क्यो सरीर
बारह मास मोहि देखत भया, मैं मुख सेती कुछ नहीं कह्या ।
अब लाग्यो कहने को दाँव, नागी भली क' छींके पाँव ।।

भौजाई को तो इस बात का गुमान भी न था कि ननद उसकी कारस्तानी जानती है । उसने ननद के पैरों पर गिर कर रोटी खा ली ।

लेणा एक न देणा दोय

एक कछुआ और कौआ आपस में दोस्त थे । एक दिन एक चिड़ीमार

ने कौवे को फँसा लिया तो कछुवे ने चिड़ीमार से कहा कि तू कौवे को छोड़ दे। इसके वदले मैं तुम्हें एक कीमती मोती दे दूँगा। चिड़ीमार ने कहा कि तू पहले मुझे मोती दे तो मैं कौवे को छोड़ दूँ। कछुवे ने तालाव में डुबकी लगाई और एक मोती लेकर वाहर आया। चिड़ीमार के मन में मोती को देख कर लालच आ गया और वह कछुवे से बोला कि इसकी जोड़ी का मोती लाकर देगा तव कौवे को छोड़ूँगा। कछुवे ने कहा कि मैं मोती ला दूँगा लेकिन पहले तुम कौवे को छोड़ दो। चिड़ीमार ने कौवे को वन्धन-मुक्त कर दिया। कछुवे ने एक मोती और लाकर चिड़ीमार को दिया लेकिन चिड़ीमार ने कहा कि यह मोती छोटा है। तव कछुवे ने चिड़ीमार से कहा कि वह पहले वाला मोती मुझे दो, मैं उसकी जोड़ का मोती ला दूँगा। चिड़ीमार ने मोती दे दिया और कछुवा जाकर पानी में बैठ गया। चिड़ीमार रो-रोकर कछुवे को पुकारने लगा लेकिन कछुवे ने तालव के अन्दर से ही उत्तर दे दिया:

खुदा करै सो होय,
लेणा एक न देणा दोय ॥

अर्थात् तू एक मोती लेता नहीं और मैं दो देता नहीं। निदान चिड़ीमार अपना सा मुंह लेकर चला गया।

● देवी मंड में ही मरड़का करै है

एक वनिये ने 'भैरूँ जी' (भैरव) की मनौती मानी कि यदि मेरे पुत्र हो जाए तो मैं तुम्हारे एक भैंसा चढ़ा दूँगा। बनिये के वेटा हो गया। अव वह एक भैंसा लेकर भैरव के 'थान' पर पहुँचा। बनिया अव बड़ी दुविधा में पड़ गया। भैंसे की वलि उससे कैसे दी जाए ? कुछ देर तक तो वह खड़ा-खड़ा सोचता रहा फिर उसने भैंसे की नाथ को भैरूँ जी के गले में डालकर हाथ जोड़ लिये और घर आ गया। थोड़ी देर तक तो भैंसा वहीं खड़ा रहा लेकिन फिर उसका धैर्य समाप्त हो गया और उसने बलपूर्वक भैरूँ की मूर्ति को उखाड़ लिया और उसे घसीटता हुआ इधर-उधर भागने

लगा। पास ही देवी का भी एक मंड था। भैरूँ की यह दशा देखकर देवी ने व्यंग्य पूर्वक पूछा कि भैरव, आज इस प्रकार कैसे घिसटते फिर रहे हो। इस पर भैरव ने खीझ कर उत्तर दिया कि देवी, तुम मंड में बैठी ही टर्रा रही हो, कभी बनिये को बेटा नहीं दिया है।

● अल्ला दिया तार तार खुदा लेग्या सोड़ उतार

एक पिनारा (धुनियाँ) एक मिल में रूई धुनने के लिये जाया करता था। घर लौटते वक्त वह थोड़ी सी रूई अपनी जेब में चुरा कर ले आता। यों करके उसने करीब दो सेर रूई इकट्ठी कर ली। मजदूरी के बचे हुए पैसों से वह कपड़ा खरीदकर ले आया। रूई उसके पास थी ही। उसने रूई धुन कर एक 'सोड़' (रजाई) भरली और रात को सोड़ ओढ़ कर खूब ठाट से सोया। सबेरे काम पर जाते वक्त वह रजाई की तह करके घर पर छोड़ गया। लेकिन कोई उच्चका वह रजाई ले गया। शाम को पिनारा घर आया तो सारी बात जानकर उसे बड़ा रंज हुआ। उसने तो थोड़ी-थोड़ी करके दो सेर रूई इकट्ठी की थी और बाजार से कपड़ा खरीद कर लाया था लेकिन वह रजाई तो एक ही दिन में गायब होगई। सहसा उसके मुँह से निकला :

अल्ला दिया तार तार।
खुदा लेग्या सोड़ उतार॥

● मींडकी और ऊँट

एक मेंढ़की तालाब की पाल पर बैठी थी। एक ऊँट पानी पीने के लिए तालाब पर आया तो उसे देखकर मेंढ़की ने कहा, "ऐ लचंगे, जबर जंगे काईं म्हाँनै दाबो ला ?" मेंढ़की की बदतमीजीसे अप्रसन्न होकर ने उत्तर दिया, "ऐ नाक की नकटी, भूँ की चपटी, क्यूँ पड़ी पड़ी

वरड़ावै सै ?" उसी वक्त बाड़ के ऊपर एक नेवला चढ़ रहा था। मेंढ़की ने नेवले से कहा, "बाड़ चढ़ंता, बड़का राजा, देखोजी जेठजी मैं नकटी सूँ ?" बड़का राजा और जेठ जी बनकर नेवला फूल गया। उसने मेंढ़की से प्यार भरे लहजे में कहा, "ऐ रतनागर सागर की जायेड़ी, क्युं अं साल्है ओझाँ सें बोलै सै ?"

● नुगरी भायली

एक चूही और चिड़ी भायली थीं। चूही ने चिड़ी से कहा कि आओ बहिन, कुएँ को उलाँघें। चिड़ी तो फर्र से उड़ गई लेकिन चूही कुएँ को न उलाँघ सकी। वह कुएँ में गिर गई। चिड़ी रोने लगी। इतने में पानी निकालने वाले कुछ लोग कुएँ पर आ गये। चिड़ी को रोते देख उन्होंने चिड़ी से पूछा कि तू क्यों रो रही है ? चिड़ी ने कहा कि मेरी चूही भायली कुएँ में गिर गई है, उसे निकाल दो। उन लोगों ने चूही को बाहर निकाल दिया तो चिड़ी ने चूही से कहा कि भायली, तू तो कुएँ में गिर गई। इतना सुनते ही चूही ने रोष पूर्वक कहा कि मैं क्यों गिर गई, कुएँ में गिरे तेरा बाप निगोड़ा, मैं तो हर हर गंगा नहा रही थी।

चुहिया ने फिर चिड़ी से कहा कि आओ इस बाड़ को उलाँघें। चिड़ी तो फर्र से बाड़को उलाँघ गई लेकिन चुहिया बाड़ में उलझ गई। चिड़ी फिर रोने लगी और बड़ी मुश्किल से कह सुन कर उसने चूही को बाड़ में से निकलवाया। चिड़ी ने चूही से कहा कि तू तो बाड़ में फँस गई। इतना सुनते ही चूही ने तड़ाक से उत्तर दिया कि मैं क्यों फँस गई, फँसे तेरा बाप निगोड़ा, मैं तो कचर-कचर कान बिंधवा रही थी।

अब चूही ने फिर प्रस्ताव किया कि आओ भैंस के नीचे से निकलें। चिड़ी तो शीघ्रता से उड़ गई लेकिन उसी वक्त भैंस ने 'पोटा' (गोबर) किया और चूही गोबर के नीचे दब गई। चिड़ी फिर रोने लगी। गोबर पाथने वाली चमारी आई तो उसने चिड़ी से पूछा कि तू क्यों रो रही है ? चिड़ी ने अपनी व्यथा कही तो चमारी ने चुहिया को गोबर के नीचे से

निकाल दिया। चिड़ी ने सहानुभूति पूर्वक चूही से कहा कि भायली तू तो दब गई। लेकिन चूही ने फिर आँखें तरेरते हुए उत्तर दिया कि भला मैं क्यों दब जाती, दब जाए तेरा बाप निगोड़ा मैं तो अपनी कमर दबवा रही थी। चूही की बात सुनकर चिड़ी आकाश में उड़ गई।

● भूत भाई राँड़ आई

एक जाट की बड़ी उम्र में शादी हुई। विवाह का उसे बड़ा चाव था लेकिन औरत बड़ी कर्कशा मिली। उस औरत का नियम था कि वह नित्य प्रातः काल अपने पति को मकान के बायें कोने पर बैठा कर उसके सिर में गिन कर इक्कीस जूते मारती और तब रोटी खाती। जाट कुछ दिनों तक तो जूतों की मार किसी तरह सहता रहा लेकिन निदान तंग आकर एक दिन भाग गया और दूरके किसी शहर में जाकर रहने लगा। जाट के भाग जाने का जाटनी को बड़ा अफ़सोस था, वह अब जूते लगाये तो किसे। अंत में उसने निश्चय किया कि जिस जगह जाट को बिठला कर जूते मारती थी उसी स्थान पर जूते मार कर रोटी खाली जाए। निश्चयानुसार वह उसी जगह पर इक्कीस जूते मार कर संतोष कर लेती।

रोजाना जूते पड़ने से जमीन में भी खड्डा पड़ गया। वहीं जमीन में एक हँडिया गड़ी हुई थी और उस हँडिया में एक भूत रहता था। जाटनी के जूते उस भूत के सर में लगते। भूत की खोपड़ी जूतों की मार से पिलपिली हो गई। लेकिन रोज रोज जूते पड़ने से एक दिन हँडिया फूट गई और भूत उसमें से निकल कर भागा। जाटनी कुछ दूर तक तो उसके पीछे भागी लेकिन भूत हाथ नहीं आया। वह भूत भी उसी शहर में चला गया जहाँ वह जाट रहता था। एक दिन भूत ने जाट को देख लिया और वह जाट के पास जाकर बोला, 'जूत-भाई', राम-राम।" जाट चौंका। भूत ने अपना परिचय दिया और 'जूत-भाई' होने की व्याख्या भी की।

अब दोनों साथ-साथ रहने लगे। एक दिन भूत ने जाट से कहा कि मैं तुम्हें मालदार बना दूँगा, लेकिन तुम लालच मत करना। फिर भूत ने

जाट को अपनी योजना समझाई कि मैं नगर-सेठ के इकलौते बेटे के शरीर में प्रवेश करूँगा सो जब तक तुम नहीं आओगे, मैं नहीं निकलूँगा। तुम्हारे आते ही मैं निकल जाऊँगा। तुम सेठ से दस हज़ार रुपये ले लेना। लेकिन एक बात याद रखना कि दूसरी बार मैं राजा के बेटे के शरीर में प्रवेश करूँगा, वहाँ भूल कर भी मत आना, अन्यथा तुम्हें जान से मार डालूँगा।

भूत ने नगर-सेठ के बेटे के शरीर में प्रवेश करके जाट को दस हज़ार रुपये दिलवा दिये। फिर वह राजकुमार के शरीर में घुस गया। राजकुँवर हाय तोबा मचाने लगा। सभी संभव उपचार किये गये लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। तब किसी ने कहा कि नगर-सेठ के बेटे पर भी भूत का कोप हुआ था सो फलाँ जाट ने उसका उपचार किया था और अब वह भला चंगा है। तत्काल ही चौधरी को बुलावा भेजा गया। अब चौधरी बड़ी दुविधा में फँस गया, इधर गिरे तो कुआँ उधर गिरे तो खाई। राजा के आदमी उसे पकड़ कर ले गये। सोचटे-सोचते जाट को एक तरकीब सूझी। जिस महल में राजकुमार लेटा था उसकी सारी जानकारी जाट ने प्राप्त की और फिर उसने सारे लोगों को वहाँ से हटा दिया। अब जाट ने धोती के पल्ले ऊपर की और कमर में खोंस लिये, जूतियाँ हाथ में ले लीं और दौड़ता-दौड़ता हाँफते हुए राजकुमार के पास पहुँचा और हाँफते-हाँफते ही बोला, भूत भाई राँड आई, भूत भाई राँड आई। यों कहकर जाट वहाँ से महल के बाहर भागा। भूत ने सोचा कि जूते मारने वाली राँड उसकी तलाश करते करते यहाँ आन पहुँची है, अब खैर नहीं, सो वह भी राजकुमार के शरीर से निकल कर बेतहाशा भाग पड़ा और भागता ही चला गया। उसने पीछे मुड़ कर देखने की भी हिम्मत नहीं की। राजा ने जाट को मुँह माँगा पुरस्कार दिया और अब जाट खूब आराम से रहने लगा।

● कोथल तूँ क्युँ उणमणों

एक चारण कुछ पढ़ा लिखा भी था। वह कतार लादने के लिए अन्य

कतारियों के साथ जाया करता था। एक दिन वह कहीं जा रहा था। उसके पास आटे से भरी हुई कोथली थी लेकिन रोटी बनाने का कोई साधन न था। चारण एक ठाकुर के घर पहुँचा और उसने ठाकुर की लड़की से कहा कि मेरे लिए भी चार रोटियाँ बना दो। यों कहकर उसने आटे की कोथली ठाकुर की लड़की को सौंप दी। ठाकुर के घर में भूख थी अतः ठाकुर की लड़की ने कुछ आटा कोथली में से रख लिया। चारण को जब कोथली लौटाई गई तो उससे यह बात छिपी नहीं रही। उसने कोथली को सम्बोधित करके कहा :

कोथल तूं क्युं उणमणों, क्युं तेरो ढ़ीलो गात ?
काँई कुत्ता फंफेड़ियो, कांई लाग्या बाईजी रा हाथ ?

ठाकुर ने देखा कि चारण सब जगह हमारी बदनामी करेगा अतः उसने कोथली फिर आटे से भरवा कर चारण को दे दी।

● ठग और चोर

एक चोर और एक ठग आपस में दोस्त थे। एक बार दोनों 'कमाने' के लिए जयपुर गये। चोर एक सोने का थाल चुराकर लाया और उसे पानी से लबालब भर कर छीके पर रख दिया। फिर वह छीके के नीचे खटिया डाल कर सो रहा। आधी रात को ठग उसके घर आया। उसने चोर द्वारा किया गया सारा बन्दोबस्त देखा। फिर उसने रसोई-घर में से एक फुँकनी ली और थाल का सारा पानी उसके सहारे खींच लिया। उसने फिर कपड़े से थाल को पोंछा और थाल लेकर चलता बना। थाल ले जाकर उसने पास के एक तालाब में छुपा दिया और अपने घर जाकर सो रहा।

इधर जब चोर की आँख खुली और उसने थाल को गायब पाया तो वह जान गया कि यह सारी कारस्तानी उसके ठग मित्र की ही है। वह उठ कर उसके घर गया। ठग आराम से खर्राटे भर रहा था। चोर ने उसके पैरों को हाथ लगा कर देखा। पैर घुटनों तक ठंढे थे, ऊपर गरम।

वह जान गया कि ठग पास के तालाब में घुटनों तक पानी में थाल को छुपा कर आया है। वह उसी वक्त तालाब पर गया। उसका अनुमान सही निकला। थाल उसे मिल गया और वह थाल को लेकर अपने घर आ गया।

दूसरे दिन चोर ने अपने ठग-मित्र को अपने यहाँ जीमने का निमंत्रण दिया। ठग आया तो उसे उसी सोने के थाल में भोजन परोसा गया। ठग को तो यही विश्वास था कि थाल तालाब में गड़ा हुआ है, लेकिन चोर के यहाँ थाल को देख कर उसे बड़ा अचंभा हुआ। जब ठग को सारी बात का पता चला तो उसने कान पकड़ लिये।

● च्यार सूणी

एक गाँव में चार 'सूणी' (शकुन देखने वाले) थे। वे चारों आपस में मित्र थे। कमाते कजाते कुछ थे नहीं, सारे दिन गप्पें लड़ाया करते। घरवाले उनसे तंग आ गये तो चारों दोस्त सौ-सौ रुपये लेकर कमाने के लिये चले। चलते-चलते रात हो गई तो उन्होंने एक वृक्ष के नीचे अपने डेरे लगाये। सोते वक्त रुपयों को कोई चुरा न ले इसके लिए चारों दोस्त चारों ओर सो गये और बीच में रुपयों की थैली रख दी। लेकिन रात को कोई थैली उठा कर ले गया। सवेरे जब चारों उठे और थैली गायब देखी तो बड़े असमंजस में पड़ गये। अब चारों शकुन देखने लगे। एक बोला, 'पगड़ी आँटैदार है' दूसरा बोला, 'पजामो घेरदार है' तीसरा बोला 'जूता कूँटेदार है' चौथा बोला, 'नाम मुरार है'। अब वे चारों ऐसे आदमी की तलाश में चले। चलते चलते वे दिल्ली पहुँच गये। घूमते घामते उन्हें एक आदमी दिखलाई पड़ो। उसे देखते ही एक बोला देखो, 'पगड़ी आँटैदार है' दूसरा बोला देखो 'पैजामा भी घेरदार है"। तीसरा बोला 'जूती भी कूँटेदार' है और चौथा बोला कि पूछ कर देखलो नाम उसका मुरार है। पूछे जाने पर उसने अपना नाम मुरार ही बतलाया तो चारों ने उसे पकड़ लिया और पकड़ कर उसे बादशाह के पास ले गये। संक्षेप में उन्होंने सारी बात बादशाह से कही और बोले कि यही हमारा चोर है, इससे

हमारे रुपये दिलाइये । मुरार से पूछने पर वह बोला कि मेरा नाम तो अवश्य मुरार ही है लेकिन मैंने इनके रुपये नहीं चुराये हैं ।

बादशाह ने उन सबको दूसरे दिन आने के लिए कहा । दूसरे दिन जब वे आये तो बादशाह ने एक बंद मुँह का घड़ा उनके सामने रख कर पूछा कि बतलाओ इसमें क्या है ? पहले ने सोचकर कहा, 'गोलमाल है' दूसरे ने कहा, 'गुलाँदार है" तीसरे ने कहा 'नाकैदार' है और चौथे ने कहा 'नाम अनार है' बादशाह को विश्वास हो गया कि ये लोग सच्चे हैं क्योंकि घड़े में अनार ही था । मुरार को पीटा गया तो उसने रुपये लाकर दे दिये । बादशाह ने चारों को भरपूर इनाम दिया और उन्हें अपने यहाँ नौकर रख लिया ।

● कोई बरतियो मरग्यो होसी

एक सेठ की हवेली में एक जाट नौकर रहा करता था । एक दिन सेठ के दूसरे नौकर ने जाट से कहा कि आज व्रत है सो तुम यदि आज व्रत रखो तो व्रत रखने वालों की सूची में अपना नाम लिखवा दो । जाट ने पूछा कि व्रत क्या होता है ? नौकर ने कहा कि व्रत रखने वाला दोपहर को सिर्फ एक बार भोजन करता है । जाट ने कहा कि नहीं, मुझे ऐसा व्रत नहीं चाहिए । जाट ने ना कर दी लेकिन जब दोपहर को सेठ और व्रत करने वाले अन्य लोग भोजन करने लगे तो जाट ने देखा कि सारे व्रत करने वालों को विविध प्रकार के मिष्ठान्न और फल परोसे जा रहे हैं । जाट के मुंह में पानी भर आया लेकिन वह तो मौका चूक गया था । जाट ने निश्चय किया कि अगली बार व्रत करने वालों की सूची में अपना नाम सबसे पहले लिखाऊँगा ।

जन्माष्टमी आई तो जाट से फिर व्रत रखने के लिए पूछा गया । इस बार तो जाट तैयार ही बैठा था । उसने अपना नाम व्रत रखनेवालों की सूची में लिखवा दिया । मध्याह्न तक तो जाट किसी प्रकार सब्र किये बैठा रहा. लेकिन जब भोजन की कोई तैयारी नहीं दिखलाई दी तो वह

निराश होने लगा। पल-पल उसके लिए भारी हो रहा था लेकिन भोजन बनाने का कोई कार्य शुरू नहीं हुआ। निढाल होकर जाट एक कोने में पड़ रहा। संध्या होने से पहले ही उसकी आँखों के आगे तारे दिखलाई देने लगे। भूख के मारे उसका बुरा हाल हो गया।

शाम को मोहल्ले में कोई लड़ाई-झगड़ा हो गया। शोरगुल सुनकर सेठ ने जाट से कहा कि चौधरी, जरा देखो तो बाहर क्या हो-हल्ला हो रहा है ? चौधरी के प्राण भूख के मारे निकले जा रहे थे। उसने ठंडी साँस भरते हुए सेठ से कहा कि कोई बरतिया (व्रत रखने वाला) मर गया होगा। चौधरी का उत्तर सुन कर सेठ को हँसी आ गई। उसने अपने दूसरे नौकर को बुलाकर कहा कि चौधरी को भोजन करवाओ अन्यथा यह सचमुच ही मर जाएगा।

चमार मारी चिड़कली

एक चमारी एक ठाकुर के यहाँ काम करने के लिए जाया करती थी। एक दिन चमारी की इच्छा लपसी खाने की हुई तो वह ठाकुर के यहाँ से थोड़े गेहूँ ले आई। गेहूँ भिगोकर उसने आँगन में सुखा दिये। कुछ चिड़ियाँ आकर गेहूँ चुगने लगीं। चमार ने एक कंकड़ी मारी। और सब चिड़ियाँ तो उड़ गईं लेकिन एक चिड़ी मर गई। चिड़े को अपनी चिड़ी के मर जाने का बड़ा रंज हुआ और उसने चमार से बदला लेने की ठान ली।

चिड़ा एक खाती के घर गया और वहाँ से एक 'गाँड़ुली' (छोटी गाँड़ी) ले आया। बैलों की जगह उसमें ऊँदरे (चूहे) जोते और चमार से वैर लेने के लिए चल पड़ा। रास्ते में उसे एक साँप मिला। साँप ने पूछा, चिड़ाजी चिड़ाजी कहाँ चले ? चिड़े ने उत्तर दिया

गारै की मेरी गाड़ुली, ऊँदर का मेरा बैल्या।
चमार मारी चिड़कली, बैर काढ़ण चाल्या॥

साँप ने कहा कि मैं भी तुम्हारी मदद करूँगा। चिड़े ने साँप को भी अपनी गाड़ली पर बिठला लिया और आगे बढ़ा।

थोड़ी दूर जाने पर उसे एक बिच्छू मिला। बिच्छू के पूछने पर भी चिड़े ने वही उत्तर दिया :

गारै की मेरी गाड़ुली, ऊँदर का मेरा बैल्या।
चमार मारी चिड़कली, बैर काढ़ण चाल्या ॥

चिड़े ने बिच्छू को भी अपनी गाड़ी पर चढ़ा लिया।

चिड़ा फिर आगे बढ़ा तो उसे एक झड़बेरी मिली। झड़बेरी के पूछने पर चिड़े ने वही उत्तर दिया और झड़बेरी ने चिड़े को अपने काँटे दे दिये। फिर चिड़े को एक गाय मिली उसने अपना 'पोटा' (गोबर) चिड़े को दिया। अंत में चिड़े को एक लाठी मिली चिड़े ने उसे भी उठाकर गाड़ी पर रख ली और चमार के घर पहुँचा।

जिस वक्त चिड़ा चमार के घर पहुँचा संध्या हो गई थी। चमारी लपसी बना रही थी। चिड़े ने अपने सारे साथियों को मोर्चे लगाने के लिए कह दिया। साँप पानी के घड़े के नीचे छुप गया, बिच्छू दीपक के नीचे जा बैठा। गाय का पोटा पोल में जम गया; वहीं एक कोने में लाठी छुपकर खड़ी हो गई और काँटे सारे आँगन में बिखर गये।

लपसी बनाते बनाते चमारी ने चमार को पुकारा कि थोड़ा पानी लाना। चमार घड़े में से पानी लेने गया तो साँपने उसे डस लिया। चमार हायतोबा करने लगा तो चमारी दीपक लेकर उसे सम्हालने चली बिच्छू ने चमारी को डंक मार दिया, चमारी के हाथ से दीपक गिर गया और अँधेरा हो गया। दोनों चिल्लाते हुए बाहर की ओर भागे लेकिन गोबर से रपट कर गिर पड़े। उनके शरीर में काँटे ही काँटे चुभ गये। अब लाठी ने उनकी खबर लेनी शुरू की और उन्हें अधमरा कर दिया।

इस प्रकार चिड़े ने अपनी चिड़ी के मारने का भरपूर बदला लिया। फिर उसने अपने साथियों को गाड़ी पर बिठलाया और लौट पड़ा। लौटती बार वह अपने साथियों को यथास्थान छोड़ता गया।

● कुंटक सेठ

एक सेठ बहुत मालदार था लेकिन साथ ही कंजूस भी था। एक दिन वह पानी का लोटा भरकर शौच के लिए जा रहा था कि उसे सामने टीले पर खड़े दो चोर दिखलाई पड़े। चोरों ने सोचा कि आज सेठ का लोटा छीनना चाहिए, लेकिन सेठ उनके मनसूबे को ताड़ गया। उसने चोरों को सुना कर और लोटे की ओर देख कर कहा कि अरे, आज यह फूटा हुआ लोटा कैसे आ गया ? मैं तो हमेशा चाँदी का लोटा लाया करता हूँ। अभी जाकर चाँदी वाला लोटा लेकर आऊँगा। यों कह कर सेठ घर की ओर चल पड़ा। चोरों ने सोचा कि चाँदी का लोटा आ जाए तो फिर और क्या चाहिए। लेकिन सेठ फिर नहीं लौटा।

चोरों ने जान लिया कि सेठ चालाकी से निकल गया। वे दोनों आकर सेठ के मकान की मोरी के नीचे छुपकर बैठ गये। जब कुछ देर हो गई तो सेठ ने सोचा कि चोर गये या नहीं देखना चाहिए। सेठ ने चोरों को देखने के लिए जैसे ही मोरी में मुँह डाला एक चोर ने झपट कर शीघ्रता से सेठ की मूँछें पकड़ ली। सेठ ने तत्काल सेठानी को आवाज लगाई कि ओ रामप्यारी की माँ, जल्दी से सौ रुपये लाना, चोर जी ने मूँछ पकड़ ली है तो वे सौ रुपये ही लेकर छोड़ देंगे लेकिन यदि वे नाक पकड़ लेंगे तो फिर दो सौ रुपये वसूल करेंगे। चोर ने सोचा कि मूँछ की अपेक्षा नाक पकड़नी फायदेमंद है सो उसने मूँछें छोड़कर नाक पकड़नी चाही लेकिन सेठ ने बड़ी फुरती से अपना मुँह अन्दर कर लिया। फिर उसने चोरों से व्यंग्यपूर्वक कहा, मूर्खों मैंने तुम्हें आठ आने का फूटा हुआ लोटा भी नहीं दिया तो क्या तुम्हें मुफ्त ही दो सौ रुपये दे देता।

● ताखड़ी कोनी चालै

एक सेठ का कारोबार ठप्प हो गया। वह उदास मन अपनी दुकान पर बैठा था कि उधर से गाँव के ठाकुर की सवारी निकली। सेठ ने ठाकुर

को मुजरा किया। ठाकुर ने सेठ से पूछा कि सेठजी आज बड़े उदास दिखलाई पड़ते हो क्या बात है ? सेठ ने कहा कि हुजूर, आजकल तखड़ी नहीं चलती है। इस पर ठाकुर ने हँस कर कहा कि तखड़ी तो हम चला देंगे। तुम कल से अपनी तखड़ी लेकर हमारे अस्तबल में आ जाना और वहीं कल से घोड़ों की लीद तौला करना। सेठ ने कहा कि बहुत अच्छी बात है।

दूसरे दिन सेठ तखड़ी और बाट लेकर अस्तबल पहुँच गया और उसने सबको ठाकुर का हुक्म सुना दिया। सारे साईस घोड़ों की लीद ला-ला कर तुलवाने लगे। सेठ लीद तौल कर उसका वजन और साईस का नाम अपनी बही में लिख लेता और लीद एक तरफ डलवा देता। साईस लोग आपस में काना-फूसी करने लगे कि आज यह क्या नया गुल खिला है। उन्होंने सेठ से इसका कारण पूछा तो सेठ ने कहा कि ~~अस्तबल~~ के घोड़े दुबले हो रहे हैं। तुम लोग घोड़ों को पूरा दाना नहीं देते हो। इसलिए ठाकुर साहब का आदेश है कि इसकी पड़ताल की जाए। जिस साईस के घोड़े की लीद कम होगी उसे दंड दिया जायगा। सारे ही साईस दाने की चोरी करते थे, अतः हर साईस सेठ से प्रार्थना करने लगा कि उसकी लीद पूरी दर्ज करा ली जाए। इसके लिए प्रति घोड़ा एक रुपया महीना सेठ का निश्चत कर दिया गया।

अस्तबल में सौ घोड़े थे, अतः सेठ को सौ रुपये मासिक आदमनी होने लगी। उधर लीद का ढेर बहुत ऊँचा हो गया। एक दिन उस गाँव के पड़ोसी ठाकुर को अपने बाग में खाद देने के लिए घोड़ों की लीद की आवश्यकता हुई तो सेठ ने वह सारी लीद उसे बेच दी और सेठ को उससे भी काफी रुपये मिल गये। अब सेठ का कारोबार अच्छा चलने लगा।

दूसरी बार जब ठाकुर सेठ की दुकान के आगे से निकला तो सेठने फिर ठाकुर को मुजरा किया। ठाकुर ने सेठ से पूछा कि सेठजी, आजकल तो आपके चेहरे-पर बड़ी रौनक आ गई है। मालूम होता है कि आपको अच्छी आमदनी होने लगी है। इस पर सेठने हँस कर कहा कि यह सब

आपकी ही महरवानी है। मैंने कहा था न कि बनिये की तखड़ी चलनी चाहिए, फिर सब आनन्द है।

● चमार की लीक

एक सेठ ने एक चमार से लकड़ी का एक भार बारह आने में लिया और चमार से कहा कि जाकर दुकान मे पैसे ले लो। सेठ ने एक ठीकरी पर कोयले से तीन खड़ी लकीर खींचकर उनके आगे एक अर्द्ध चन्द्राकार लकीर बना कर चमार को दे दी और चमार से कहा कि यह ठीकरी मुनीम को दिखला देना, वह तुम्हें बारह आने दे देगा।

चमार ठीकरी लेकर चला। रास्ते में उसने देखा कि सेठ ने तीन लकीरें खिचाई हैं जिनसे तीन चवन्नियाँ बनती हैं, यदि मैं एक लकीर और खींच दूँ तो पूरा रुपया बन जाएगा। यों सोचकर उसने गली में से एक कोयला उठाया और एक लीक खींच दी। लेकिन जब वह ठीकरी मुनीम को दी गई तो मुनीम ने सोचा कि चमार ने जरूर कुछ गड़बड़ की है। यदि सेठजी को पूरा रुपया देना होता तो वे चार लकीरें न खींचकर एक रुपया ही लिख देते। इसलिए मुनीम ने चमार से कहा कि थोड़ी देर बैठ जाओ अभी सेठजी आ जाते हैं। चमार ने सोचा कि सेठ के आने से तो सारा भेद खुल जाएगा अतः उसने मुनीम से ठीकरी ली और अपनी खींची हुई लकीर को मिटा कर मुनीम को दिखलाई कि मुनीमजी अब आप फिर ठीकरी को अच्छी तरह देखिये और मुझे पैसे दे दीजिए क्योंकि मुझे देर हो रही है। मुनीम ने चमार को बारह आने दे दिये।

चमार पैसे लेकर चल पड़ा लेकिन वह रास्ते भर यही सोचता रहा कि मैंने जो लकीर खींची थी उससे चवन्नी क्यों नहीं बनी, आखिर मैंने उसमें कौन सा विष घोल दिया था ?

● ठाकर कूँलै मांडेड़ो ई बुरो

एक सेठ ने नई हवेली बनवाई। हवेली बन गई तो उस पर चित्र-

कारी होने लगी। सेठ ने हवेली के दरवाजे के कोने पर एक जमादार का चित्र बनवाया जो हाथ में बन्दूक लिये और कमर में तलवार बाँधे खड़ा था। एक दिन सेठ की जान-पहिचान का एक ठाकुर उधर आ निकला। बातों बातों में ठाकुर ने जमादार के चित्र की ओर इशारा करके पूछा कि यह चित्र किसका है ? सेठ ने मजाक में कह दिया कि यह तो आपके बाबो'सा का ही चित्र है। ठाकुर ने कहा कि यह तो बहुत अच्छा हुआ, आप तस्वीर के नीचे उनका नाम भी लिख दीजिए। सेठ ने नाम लिखवा दिया। ठाकुर चला गया।

कुछ वर्षों बाद एक दिन ठाकुर फिर आया। राम-राम के पश्चात् ठाकुर ने सेठ से पूछा कि और तो सब आनन्द है न ? इस बीच हवेली में कोई चोरी तो नहीं हुई? सेठ ने कहा कि चोरी भला क्यों होती ? अब ठाकुर ने पैंतरा बदला और बोला कि सेठ साहब, हमारी नौकरी का हिसाब दे दीजिए। सेठ ने पूछा कि कैसी नौकरी ? ठाकुर ने उत्तर दिया कि मेरे बाबो'सा हवेली बनी तब से खड़े-खड़े आपकी हवेली का पहरा दे रहे हैं, उनकी इतनी धाक है कि उनका नाम सुनकर ही चोर इधर नहीं झाँकता। सेठ ने कहा कि मैं आपके बाबो'सा का नाम दीवार पर से मिटवा दूँगा तो ठाकुर बोला कि आज तक की नौकरी का तो दे दीजिए आगे चाहे आप उनका नाम हटवा दें।

निदान सेठ को नौकरी के रुपये देने पड़े। लेकिन साथ ही सेठ के मुँह से यह भी निकला, "ठाकर तो कूँलै, मांडेड़ो ई बुरो।"

सौ का भाई सट्ठ

एक सेठ एक कुँजड़े के सौ रूपये माँगता था। बार-बार तकाजा करने पर भी जब कुँजड़े ने रूपये नहीं दिये तो एक दिन सेठ रुपये माँगने के लिए उसके घर गया। कुँजड़े ने पहले तो टालना चाहा लेकिन सेठ के अधिक कहने सुनने पर वह बोला कि सेठ जी आप सौ रुपये माँगते हैं सो आज आपका हिसाब चुकता किये देता हूँ। "देखिये सौ का भाई सट्ठ"

(अर्थात् सौ और साठ तो भाई भाई हैं, इसलिए यदि सौ दे दूँ या साठ दे दूँ कोई फरक नहीं पड़ेगा) "आधा नैं गयो नट" (साठ में से आधे रुपये ही आपको देने रहे) जिनमें से दस दूंगा, दस दिलाऊँगा और शेष दस का क्या लेना देना। आपका हिसाब चुकता हुआ, अब बच्चे का मुँह मीठा कराइये। कुँजड़े की बात सुनकर सेठ को हँसी आ गई तो कुँजड़े के बेटे ने अपने बाप से कहा कि बाबा देखो सेठ तो हँस रहा है। इस पर कुँजड़ा बोला कि भई, सेठ हँसे क्यों नहीं उसका दगड़-दगड़ घर जो भर रहा है।

धाया तेरा दूध-दलिया

एक मियाँ जी कई दिनों के भूखे थे। वे पानी पीने के लिए तालाब पर पहुँचे। तालाब में मामूली सा ही पानी था। में सफ़ेद सफ़ेद मिट्टी दिखलाई पड़ रही थी। मियाँ के प्राण भूख के मारे छटपटा रहे थे। उसने खुदा से अरज़ की कि या खुदावंद करीम, इस पानी का तो बन जाए दूध और इस गीली मिट्टी का बन जाए दलिया तो फिर मैं दूध और दलिया पेट भर कर यों खाऊँ। यों कहकर मियाँ ने अंजली भर भर कर "दूध और दलिया" खाना शुरु किया, लेकिन भूख मरते हुए मियाँ जी को गश आने लगा और वे डगमगा गये। तब उन्होंने खफ़ा होकर खुदा से कहा, "धाया तेरा दूध और दलिया, धक्के भी क्यूँ दे?"

बे' का घाल्या ना टलै

एक दिन रावण को 'बे-माता' (विधना) मिली तो रावण ने उससे पूछा कि तू कहाँ गई थी? विधना ने कहा कि मैं तेरी मृत्यु के अंछर डाल कर आई हूँ। रावण ने पूछा कि मेरी मृत्यु किसके हाथ होगी तो विधना ने कहा कि आज कौशल्या का जन्म हुआ है, वह अयोध्या के राजा दशरथ की पत्नी बनेगी और उससे पैदा होने वाला लड़का तुम्हें मारेगा। रावण ने कहा कि मैं यह विवाह होने ही नहीं दूँगा।

जिस दिन कौशल्या और दशरथ का विवाह होने वाला था उसके

पहले दिन ही रावण कौशल्या को उठा लाया। वह चाहता था कि कौशल्या को मारकर और उसकी बोटी बोटी करके समुद्र में बहा दे लेकिन मंदोदरी ने कहा कि नारी पर हाथ उठाना आपको शोभा नहीं देता। तब रावण ने कौशल्या को एक बड़े सन्दूक में बन्द करके उसे समुद्र में बहा दिया। सन्दूक को एक बड़ा मगरमच्छ निगल गया। यह देख कर रावण को संतोष हो गया।

कौशल्या के अचानक गायब हो जाने से कन्या-पक्ष वालों को बड़ी चिन्ता हुई। अब क्या किया जाए ? अन्त में यह निश्चय किया गया कि कौशल्या की जगह एक डोम की लड़की का विवाह दशरथजी से कर दिया जाए। निश्चयानुसार डोम की लड़की को 'तेलबान' चढ़ाकर वधू का रूप दे दिया गया। उधर बरात आई तो कन्या पक्षवाले अगवानी के लिए चले। लेकिन दूल्हे का हाथी अचानक बिगड़ गया और भाग खड़ा हुआ। भागते-भागते वह समुद्र तट पर जा पहुँचा।

जिस सन्दूक में कौशल्या को बंद करके समुद्र में बहा दिया गया था और जिसे मगरमच्छ निगल गया था वह सन्दूक को पचा नहीं सका और समुद्र के दूसरे तट पर आकर उसने सन्दूक को उगल दिया। सन्दूक समुद्र के किनारे लग गया। राजा दशरथ का हाथी वहीं आकर रुका। हाथी पर राजा दशरथ के अतिरिक्त पंडित और चँवर डुलाने वाला नाई था। हाथी रुक गया तो महावत ने हाथी को बैठाया। सब लोग हाथी पर से उतरे। उन्होंने सन्दूक को देखा तो वे उसे बाहर ले आये।

सन्दूक को खोलने पर उसमें से एक बड़ी सुन्दर कन्या निकली। पंडित ने लड़की से पूछा कि बेटी तू कौन है तो लड़की ने अपना परिचय दिया और सारी घटना कह सुनायी। पंडित ने कहा कि महाराजा दशरथ यहीं मौजूद हैं जिनसे आप का विवाह होना निश्चित हुआ था। विवाह का समय हो चुका है अतः मैं यहीं आप दोनों का विवाह करवा देता हूँ। यों कहकर पंडित ने धरती, जल, आकाश अग्नि और ब्राह्मण (स्वयं) के पाँच साक्षियों द्वारा फेरे करवा दिये।

इतनी देर हाथी जंगल में चर रहा था। विवाह हो गया तो सारे लोग हाथी पर सवार हुये और घर आ पहुँचे। दोनों पक्षवालों को सारी बात जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। अब बेचारी डोमनी को कौन पूछता था। वह तेल-बान चढ़ी हुई भी कुँआरी रह गई। इसी बात को लेकर यह गाथा चल पड़ी :

बे'का घाल्या ना टलै, टलै रावण का खेल।
रैई कुँआरी डूमणी, धाल पटाँ में तेल ॥

● बे'माता का अंछर झूठा नी होवै

एक सेठ ने एक महात्मा की बड़ी सेवा की। सेवा करते-करते बहुत दिन हो गये। एक दिन महात्मा को सेठ के हाथ की रेखाएँ दिखलाई पड़ गई। महात्मा को बड़ा पछतावा हुआ कि सेठ ने इतने दिनों तक मेरी सेवा की लेकिन मैंने इसे कुछ दिया नहीं, अब परसों तो इसकी उम्र पूरी हो जाएगी। सेठ के पूछने पर महात्मा ने अपने पश्चात्ताप का कारण उसे बतला दिया।

सेठ की उम्र बढ़ाने के लिए महात्मा सेठ को साथ लेकर ब्रह्मा के पास पहुँचे। ब्रह्मा ने महात्मा का बहुत आदर सत्कार किया लेकिन सेठ की उम्र बढ़ाने में अपनी असमर्थता प्रकट की। तब तीनों विष्णु भगवान के पास पहुँचे। विष्णु भगवान ने कहा कि सेठ की उम्र शिवजी भले ही बढ़ा दें, मैं नहीं बढ़ा सकता। तब चारों शिवजी के पास पहुँचे, लेकिन शिवजी ने कहा कि उम्र के अंछर 'बेमाता' डालती है अतः वही इसमें हेर-फेर कर सकती है। अब पाँचों 'बेमाता' के पास चले। बेमाता एक पहाड़ की कंदरा में रहती थी। कंदरा में प्रवेश करने के लिए एक छोटे सूराख में से होकर गुजरना पड़ता था। ब्रह्मा, विष्णु, शिव और महात्मा तो सूराख में से होकर कंदरा में चले गये लेकिन सेठ कंदरा में प्रवेश करने का प्रयत्न कर ही रहा था कि ऊपर से एक बड़ा शिलाखंड आकर उस पर गिरा और सेठ की मृत्यु हो गई।

जिस वक्त ब्रह्मा, विष्णु, शिव और महात्मा कंदरा में घुसे, 'बेमाता'

ज़ार-ज़ार रो रही थी लेकिन उन्हें देखते ही वह खिलखिला कर हँस पड़ी। चारों ने इसका कारण पूछा तो बेमाता ने उत्तर दिया कि इस सेठ के कपाल में मैंने यह अंछर डाले थे कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव और ये महात्मा चारों जने यहाँ आयें और कंदरा के बाहर झरोखे पर लगा शिलाखंड सेठ के ऊपर गिरे तब उसकी मृत्यु हो। लेकिन मैं यह सोच सोचकर रो रही थी कि आज मेरे अंछर झूठे हो जाएँगे क्योंकि ऐसा बानक बनना बड़ा मुश्किल है। भला ब्रह्मा, विष्णु और शिव मृत्युलोक के एक तुच्छ जीव के लिए यहाँ क्यों आयेंगे। लेकिन आप सब आगये और बाहर शिलाखंड के गिरने से सेठ की मृत्यु हो चुकी है। मेरे अंछर सत्य हो गये हैं, इसी लिए मैं हँस रही हूँ।

बेमाता का उत्तर सुनकर चारों स्तंभित रह गये। दो दिन की अवधि पूरी हो गई थी और सेठ मर चुका था।

● बिस्वास को फल

एक नगर में एक मालदार सेठ रहता था। उसके घर लड़का हुआ तो 'बे-माता' अंछर डालने के लिए आई। सेठ ने बे-माता से पूछा कि तू कौन है? बे-माता ने कहा कि मैं बे माता हूँ और तेरे बेटे के अंछर डाल कर आई हूँ। सेठ ने पूछा कि तू क्या अंछर डाल कर आई है सो बतला। बे-माता ने कहा कि तेरे मरने के बाद तेरा बेटा व्याध बनेगा और नित्य एक जानवर को मार कर अपना पेट पालेगा। बे-माता की बात सुनकर सेठ ने कहा कि मेरे यहाँ किस बात की कमी है, कुत्ते भी पेट भर कर सोते हैं। ऐसा कदापि नहीं होगा, तेरे अंछर झूठे हैं। बे-माता चली गई दूसरी बार सेठ के घर कन्या का जन्म हुआ और बे-माता फिर अंछर डालने के लिए आई तो सेठ ने फिर पूछा। बे-माता ने उत्तर दिया कि यह वेश्या बनेगी। सेठ को यह बात भी बिलकुल नहीं जँची।

समय पाकर सेठ की मृत्यु हो गई और उसका सारा धन नष्ट हो गया। और कोई चारा न देख कर सेठ का बेटा व्याध बन गया। एक जानवर

वह नित्य मार लेता और उसी से अपना पेट पालता। सेठ की बेटी वेश्या बन गई।

एक साधु उस सेठ का मित्र था। एक दिन वह घूमता-घामता उस नगर में आ निकला। उसने लोगों से पूछा कि इस नगर में अमुक सेठ रहता था वह कहाँ है? लोगों ने कहा कि वह तो मर गया और उसके बेटा-बेटी अमुक-अमुक धंधा करते हैं। साधु वहीं टिक गया। शाम को जब सेठ का बेटा जंगल से लौटा तो साधु ने उसे अपना परिचय दिया। दूसरे दिन साधु भी सेठ के साथ जंगल में गया। साधु ने सेठ के बेटे से कहा कि तुम्हारे हाथ से रोजाना एक जानवर की मृत्यु होगी ऐसा तुम्हारे भाग्य में लिखा है और यह निश्चित है, इसे कोई टाल नहीं सकता। इसलिए तुम छोटे मोटे जानवरों को मत मारो। शाम तक कोई न कोई बड़ा जानवर अवश्य आएगा। चिड़ी-कमेड़ी से लेकर हिरन तक बहुत से जानवर उसके आगे आये लेकिन साधु ने हरबार सेठ के बेटे का हाथ पकड़ लिया। सेठ के बेटे को भूख सता रही थी लेकिन वह विवश था। अंत में शाम होते-होते एक बड़ा हाथी वहाँ आ गया। साधु ने सेठ के बेटे से कहा कि इसके सिर में तीर मारो। सेठ के बेटे ने तीर मारा और हाथी चित हो गया। उसके मस्तक में से बहुत से गजमुक्ता निकले जिन्हें बेचकर सेठ का बेटा फिर मालदार बन गया।

दूसरे दिन वह साधु सेठ की बेटी के पास पहुँचा और उससे कहा कि मैं तुम्हारे बाप का दोस्त हूँ, एक बात मेरी मान। कल तुम्हारे घर कोई भी आये तुम किवाड़ मत खोलना। सेठ की बेटी ने हाँ भर ली। दूसरे दिन उसने किवाँड़ बंद कर लिये। पहले दस बीस रुपये देने वाले आये और फिर सौ दो सौ देने वाले आये और फिर हजारों रुपये देने वाले भी आये लेकिन सेठ की बेटी ने किवाड़ नहीं खोले। लेकिन बे-माता के अंछर झूठे न हो जाएँ इसलिए उन्हें सच्चे करने के लिए अंत में स्वयं भगवान मनुष्य के वेश में आये लेकिन सेठ की बेटी ने कहा कि तुम चाहे भगवान हों, आज मैं किवाड़ नहीं खोल सकती। तुम भगवान हो तो

किवाड़ बंद होने पर भी अन्दर आ सकते हो। तब भगवान ने अन्दर आकर उसे दर्शन दिये और सेठ की बेटी की मुक्ति हो गई।

अबलो नाई

अबला नाई सुलफेबाज ब्राह्मणों की सोहबत में रहता था। व लोग प्रायः अबले से कहा करते थे कि अबला, एक दिन तो हमें मीठा भोजन खिला। बार-बार के कहने से अबले ने हाँ भर ली और सब सुलफेबाज मित्रों को दूसरे दिन भोजन का निमंत्रण दे दिया। लेकिन साथ ही उसने यह भी कह दिया कि मेरे पास इतने थाली लोटे नहीं हैं सो थाली लोटे अपने-अपने लेते आना।

दूसरे दिन यथासमय ब्राह्मण देवता आ-आकर जम गये। अबला एक जान-पहचान के हलवाई से मिठाई ले आया और ब्राह्मणों को जिमाने लगा। जब ब्राह्मण लोग जीमने लगे तो अबला एक बड़ा ताड़ का पंखा लेकर उन सबको हवा करने लगा। हवा करते वक्त अबला कहता जाता था, "थारोई चुन्न थारोई पुन्न, अवले नाई की तो पून ई पून" ब्राह्मणों ने भोजन कर लिया तो अबला बोला कि आप लोग घर पधारें, मैं आपके बरतन साफ करके आपके घर भिजवा दूँगा। सारे यार दोस्त अबले की बड़ाई करते हुए वहाँ से विदा हुए।

अबले ने सारे बरतन मलकर साफ किये और फिर उन्हें लेकर हलवाई के पास पहुँचा। अबले ने हलवाई से कहा कि ये बरतन मैं तुम्हारे यहाँ गिरवी रखता हूँ, ब्राह्मण लोग जैसे आयें उनसे अपनी मिठाई के पैसे वसूल करते जाना और उन्हें उनके बरतन देते जाना। सारी बात समझाकर अबला अपने घर चला गया।

इधर सुलफेबाजों ने अबले को टोकना शुरू किया कि तूने बरतन घर पर नहीं भिजवाये। दो चार दिन तो अबला टालता रहा लेकिन फिर उसने साफ कह दिया कि आपके बरतन अमुक हलवाई के यहाँ पड़े हैं सो उसके पैसे देकर अपने-अपने बरतन ले आओ। ब्राह्मण लोग बिगड़ने लगे

तो अबले ने कहा कि भू देवो, मैं ने तो पहले ही कह दिया था, "थारोई चुन्न थारोई पुन्न, अबलै नाई को तो पूनई पून।" सो मेरे पास तो 'पून' (हवा) ही थी सो मैंने खड़े होकर आपको खूब खिलाई। लाचार ब्राह्मण लोग अबले को गालियाँ और हलवाई को पैसे देकर अपने बरतन छुड़ाकर ले गये।

● बीजलसार की तलवार

एक ठाकुर ने एक सेठ के यहाँ एक तलवार गिरवी रख रखी थी। तलवार दो चार रुपये की साधारण थी लेकिन ठाकुर ने उस पर चालीस रुपये उधार ले रखे थे। अब ठाकुर को क्या पड़ी थी कि वह रुपये देकर तलवार छुड़वाये। सेठ भी इस बात को समझ गया अतः उसने युक्ति से रुपये निकलवाने की सोची।

सेठ ने ठाकुर की जान-पहिचान के लोगों को कहना शुरू किया कि अमुक ठाकुर की एक तलवार हमारे यहाँ गिरवी रखी थी लेकिन वह तलवार खो गई। ठाकुर को पता चला तो बड़ी आफत मचाएगा, अब क्या करें क्या न करें? किसी ने जाकर ठाकुर से यह बात कह दी। ठाकुर ने सोचा कि अब अच्छा मौका हाथ आया है। वह रुपये लेकर सेठ के पास पहुँचा और बोला कि सेठजी, अपना हिसाब करके व्याज समेत रुपये ले लो और मेरी तलवार मुझको दे दो। सेठ ने कहा कि ठाकुर साहब, तलवार खो गई है, आप उतने रुपयों में ही तलवार आई गई कर लीजिए। लेकिन ठाकुर ने कहा कि वाह यह कैसे हो सकता है, वह 'बीजलसार' की तलवार मेरे बावो'सा के हाथ की थी। उसी तलवार से मेरे बावो'सा ने बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ जीती थीं। यों तो वैसी तलवार पाँच सौ रुपये में भी नहीं बन सकती और मुझे तो वह किसी भी मूल्य पर नहीं बेचनी है। यों कहकर ठाकुर ने अपनी 'न्योली' से रुपये निकालकर व्याज समेत सेठ की ओर फेंक दिये। सेठ ने रुपये उठाकर ऊपर की ओर रख लिये और ठाकुर से कहा कि आप थोड़ी देर विश्राम कीजिए। तलवार तो खो

गई है सो मिलनी नहीं है फिर भी एक बार और तलाश कर लेते हैं। ठाकुर बैठ गया। इधर ठाकुर खुश था कि आज साल भर का खर्चा सेठ से वसूल करूँगा, उधर सेठ खुश था कि डूबे हुये रुपये निकल आये।

तलवार तो पड़ी हुई थी ही। सेठ ने थोड़ी देर बाद तलवार लाकर ठाकुर को सौंप दी और कहा कि ठाकुर साहब, आज हमारा दिन अच्छा था जो आप की तलवार मिल गई। ठाकुर का मुँह उतर गया और वह उदास मुँह तलवार लेकर वहाँ से चलता बना।

● चुस्सी को बदलो

एक चुहिया को कहीं एक कौड़ी पड़ी मिल गई। वह राजा के महल में गई और सबको दिखलादिखलाकर कहने लगी कि मेरे पास जितना धन है उतना राजा के पास भी नहीं। राजा ने भी यह बात सुनी तो उसने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि इस चुहिया की कौड़ी छीन ले आओ। चूही की कौड़ी छिन गई तो वह सबसे कहने लगी कि मेरा धन राजा ने छीन लिया, मेरा धन राजा ने छीन लिया। तब राजा ने कहा कि उस राँड की कौड़ी वापिस दे दो। इस पर चुहिया उछलती, फुदकती सब को कहने लगी कि मेरे से डरकर राजा ने मेरा धन वापिस दे दिया, मेरे से डर कर राजा ने मेरा धन वापिस दे दिया। अब राजा ने चूही को पकड़वा कर उसके बाल कटवा दिये और उसे 'मोडी' बना दी। चूही को इस बात से बड़ा रंज हुआ और उसने राजा से बदला लेने की ठान ली।

जिस मन्दिर में राजा नित्य देवी की आराधना करने जाता था चूही उस मन्दिर में गई और देवी की मूर्ति में छुप कर बैठ गई। राजा आया तो चूही ने मूर्ति के अन्दर से कहा कि राजा तू ने बड़ा पाप किया है। मूर्ति को बोलते सुन कर राजा को बड़ा भय हुआ। वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि माँ, मेरे से क्या अपराध बन पड़ा है? 'देवी' ने फिर कहा कि पहले सारी प्रजा सहित अपना सिर मुँडवाले फिर बतलाऊँगी। राजा ने सारे शहर में घोषणा करवाई कि सब अपना सिर मुँडवा लें।

राजा ने भी अपना सिर मुँडवा लिया । जब चूही ने जान लिया कि राजा सहित सारे लोग मूँड़े गये तो वह खिलखिला कर हँस पड़ी और राजा से बोली कि राजा तू ने सिर्फ मुझको ही मुँडवाया था लेकिन मैंने तुझे तथा तेरी सारी प्रजा को मुँडवाकर अपना बदला ले लिया है । यों कहकर चूही कहीं बिल में अंतर्द्धान हो गई ।

● हिब्बो लड्डी

एक जाट के तीन बेटे अपने खेत पर काम कर रहे थे । उनकी साँडनी खेत में एक ओर चर रही थी । तीन चोर आये और साँडनी को खोलकर ले चले । जाट के बेटों ने सोचा कि यों तो चोरों से हम नहीं जीत सकेंगे, अतः इन्हें किसी प्रकार विश्वास देकर मारना चाहिए । तीनों ने युक्ति सोच ली और फिर चोरों को आवाज दी, "चोर जी, चोर जी, म्हारी साँड बीकानेर के टोळै की है सो कूँची और बेलचै बिना सोवणी काय लागैगी नी, सो आकर कूंची और बेलचो ले ज्यावो ।" चोर आये और कूँची तथा बेलचा भी उठा ले गये । वे थोड़ी ही दूर गये थे कि लड़कों ने चोरों को फिर आवाज दी, "चोर जी, चोर जी, म्हारी साँड तमिये बिना पाणी काय पीवैगी नी, सो तमिचो ले ज्यावो।" चोरों ने सोचा कि आज तो अच्छो भोंदू हाथ लगे । यों लड़कों ने चार पाँच बार पुकार पुकार कर साँडनी का सारा साज-सामान चोरों को दे दिया ।

सारा सामान लेकर चोर जाने लगे तो लड़कों ने फिर आवाज दी । चोरों ने आकर पूछा कि अब क्या रह गया है ? लड़कों ने कहा कि रह तो कुछ नहीं गया है, लेकिन हम एक खेल खेला करते हैं जिसका नाम है—हिब्बो लड्डी, सो वह खेल भी आप देखते जाएँ । यों कहकर लड़के खेल दिखलाने के लिए तैयार हो गये । एक ने हाथ में 'दँताली' ली दूसरे ने, 'जेली' ली और तीसरे ने लाठी ले ली और तीनों पटे के हाथ दिखलाने लगे । तीनों का जोश क्षण-प्रतिक्षण बढ़ता जा रहा था । चोर भी खूब तन्मय होकर

बैठे खेल देख रहे थे। एक भाई ने अपनी लाठी पटक दी और उसने चोर की फरसी ले ली तो दूसरे भाई ने चोर से उसकी तलवार ले ली और तीसरे ने गँडासी ले ली और अब तीनों खूब जोर से हिब्बो-लड्डी घालने लगे। चोरों ने सोचा कि लड़के अपना खेल समाप्त करके हमारे हथियार हमें वापिस कर देंगे। लेकिन बड़े भाई ने छोटों को समझाते हुए कहा, "किरू-तिया, हेमला, दोयाँ नैं मैं एकलो, एकैं नैं थे दोय--हिब्बो-लड्डी, हिब्बो लड्डी।" यों करते कराते उन तीनों ने चोरों को बीच में ले लिया और अवसर पाकर तीनों को मार डाला।

● सूवै की साख

एक औरत का यार परदेश से आया। औरत को खबर लगी तो वह उसके पास गई लेकिन उस वक्त वह मनुष्य गहरी नींद में सो रहा था। वह इतना थका हुआ था और इतनी गाढ़ी निद्रा में सोया हुआ था कि औरत के लाख जगाने पर भी न जागा। तब हारकर वह जाने लगी लेकिन फिर उसने सोचा कि यदि मैं यों ही चली जाऊँगी तो यह कहेगा कि तू आई ही नहीं इसलिए किसी को साक्षी बनाना चाहिए। ऊपर पिंजड़े में एक सूआ बैठा था। औरत ने सोचा कि इस सुग्गे को ही साक्षी बनाना चाहिए। यों सोचकर उसने सुग्गे से कहा :--

सूवा सूवा सूवटा, गल़ घालूं तेरै हीरा।
आई थी जाग्यो नहीं, साख भरी मेरा बीरा॥

इस पर सूआ बोला कि ऐसी बातों की साख 'बीरे' (भाई) नहीं भरा करते। इस पर उस औरत ने फिर कहा:--

सूवा सूवा सूवटा, गल़ घालूं तेरै नेवर।
आई थी जाग्यो नहीं, साख भरी मेरा देवर॥

यह सुनकर सुग्गे ने साख भरने की हाँ कर ली और वह औरत चली गई।

पाध में फूल न सूक्यो

परदेश में पाँच-सात यार दोस्त बैठे आपस में घर की बातें कर रहे थे। प्रत्येक यही कह रहा था कि मेरी औरत सती है। एक लड़के का विवाह हाल में ही हुआ था। वह भी बोला कि मेरी स्त्री भी पतिव्रता है। उसकी बात सुनकर दूसरे ने व्यंग्य से कहा कि तुम्हारी पतिव्रता देखी हुई है, मैं एक दिन में उसका धर्म बिगाड़ कर आ सकता हूँ। उसके बात लग गई और उसने कहा कि अच्छा मेरे घर जाकर परीक्षा कर आओ। वह आदमी उसी के कपड़े लत्ते पहन कर उसके घर गया। जिस वक्त वह घर पहुँचा उस समय संध्या हो गई थी, अँधेरा पड़ चुका था।

घर की मालकिन ने सोचा कि यह आदमी मेरे पति के जैसे ही कपड़े पहने है, लेकिन इसे सहसा नहीं पतियाना चाहिए।

विवाह होने के कुछ ही समय बाद उसका पति परदेश चला गया था, अतः भ्रम भी हो सकता था। लेकिन अपने पति की यह बात उसे अच्छी तरह याद थी कि वह कभी बासी भोजन नहीं करता था। उस स्त्री ने अपनी दासी को बुलाकर कहा कि उनसे कह दे कि भोजन बनाने का समय अब नहीं रहा, किसी शादी वाले के यहाँ से आई हुई कुछ मिठाई रखी है सो वे मिठाई खा लें। उस आदमी ने वह मिठाई खुशी-खुशी खा ली। तब उस औरत को निश्चय हो गया कि यह उसका पति नहीं है। रात को उसने दासी को ही शृंगार करके उसके पास भेज दी।

मुँह अँधेरे ही उस आदमी ने कहा कि मैं किसी आवश्यक काम से ही यहाँ आया था, अब मुझे इसी समय वापिस जाना है। दासी ने जाकर अपनी मालकिन से कहा। उसे तो विश्वास हो ही गया था कि यह उसका पति नहीं है। उसने अपने पति को एक फूल दे रखा था जिसे वह अपनी पगड़ी में हर समय लगाये रहता था। उस स्त्री ने अपने पति को कह दिया था कि जिस दिन यह फूल सूख जाए उस दिन यह समझना कि मेरा सती-धर्म नष्ट हो

गया है। उसने अपने पति के नाम एक चिट्ठी लिख कर दासी के हाथ उस आदमी को भिजवा दी।

उसने जाकर चिट्ठी उस औरत के पति को दी। सारे ही यार-दोस्त बैठे थे। चिट्ठी में लिखा था :

घर आयो पावणो, खायो न ल्हुरबो,
हिरणी फेर चुकायगी, पारधी रैयो उसो को उसो,
चतराँ करो बिचार, पाघ में फूल न सूक्यो।

स्त्री के पति ने पाग में से फूल निकाल कर देखा तो वह डहडहा रहा था मानो अभी पौधे से तोड़ा गया हो। उसने वह पत्र और फूल अपने सभी दोस्तों को दिखलाया। पत्र लाने वाले को भी पत्र का रहस्य समझाया गया। सारे मित्रों ने उसे लानत दी और सब उस स्त्री के पति की प्रशंसा करने लगे कि वास्तव में ही तुम्हारी पत्नी सती है।

● बीस बीस बीस

एक सेठ ने बुढ़ापे में विवाह करने की इच्छा की और नाई से कहा कि कोई अच्छी लड़की देखकर सगाई करके आ। नाई चला और घूमता-घामता एक गाँव में पहुँचा। एक बनिये के घर नाई ठहर गया। उस बनिये के विवाह योग्य एक लड़की थी। नाई को लड़की पसन्द आ गई तो उसने लड़की के बाप से कहा कि आपकी बाई की सगाई हमारे सेठ से कर दो। नाई ने खूब नमक-मिर्च लगाकर सेठ की बड़ाई की। बनिया सगाई करने के लिए राजी हो गया। जब नाई जीमने बैठा तो बनिये ने पूछा कि नेवगी जी, सेठजी की अवस्था क्या होगी ? नाई चुप मार गया। बनिये ने फिर पूछा लेकिन नाई नहीं बोला। बनिये ने बार-बार पूछा तो नेवगी गुस्से में भर कर बोला कि कह तो दिया बीस, बीस, बीस। बार-बार क्या पूछते हो ? सगाई करनी हो तो करो अन्यथा सगाई करने वाले आपसे बहुत अच्छे-अच्छे खुशामद करते हैं। बनिये ने सगाई कर दी और विवाह मँड गया।

जब बरात आई और सेठ ने दूल्हे को देखा तो उसे नाई पर बड़ा गुस्सा

आया। नाई को बुलाकर बेटी के बाप ने कहा कि तू तो कहता था कि सेठ जी की उम्र बीस साल की है, ये तो साठ के आस-पास हैं। नाई बोला कि सेठ जी, आप झूठ क्यों बोलते हैं ? मैंने तो कहा था कि सेठ जी की उम्र बीस, बीस, बीस साल की है सो कुल उम्र कितनी हुई आप जोड़ लीजिए, इसमें फर्क हो तो मेरा जिम्मा रहा। मर्द की जबान का मोल होता है, सो आप चुपचाप विवाह कर दीजिए, इसी में दोनों की इज्जत है।

लाचार बनिये को अपनी लड़की का विवाह उस बूढ़े सेठ से कर देना पड़ा।

● ई मुरदै का पीला पाँव

सेठ की हवेली के पास एक सुनार रहता था। एक दिन सेठ ने सुनार से पूछा कि सोनी, आजकल तो बड़ा फीका दिखलाई पड़ता है, क्या बात है ? सुनार ने कहा कि सेठ जी, सोना तो आजकल आँख से भी नहीं दिखलाई देता फिर फीका नहीं तो तीखा कैसे रहूँ ? सोना आँख से न दिखलाई पड़ने के कारण घर में भूख ने डेरा जमा लिया है। सेठ ने कहा कि यदि सोना आँख से देख लेने पर ही तुम्हारी भूख भाग सकती है तो कल हवेली आ जाना सो तुम्हें सोना दिखला दूँगा। सुनार ने हाँ भर ली।

दूसरे दिन सुनार, सेठ की हवेली जा पहुँचा। सेठ ने सुनार के सारे वस्त्र उतरवा लिये, सिर्फ एक लँगोट उसके बदन पर रहने दिया। फिर सेठ ने सुनार को अपने खजाने में प्रवेश करवा दिया और कहा कि जा, जी भर कर सोना आँखों से देख ले। सुनार खजाने में गया और ललचाई निगाहों से सोने के पासे, लग्गी और चाँदी की सिल्लियाँ देखने लगा। संयोग से उसी वक्त एक बिल्ली खजाने में घुस आई। सुनार ने देखा कि अब तो काम बन ही गया। उसने चाँदी की एक सिल्ली उठाकर बिल्ली के ऊपर रख दी। बिल्ली वहीं मर गई तो सुनार ने सोने के पासे और लग्गी मृत बिल्ली के पेट में घुसेड़ दिये और फिर बाहर आ गया। बाहर आते ही सेठ ने पूछा कि क्यों सोनी, सोना आँखों से देख लिया ? सुनार ने हाँ भरी, सेठ ने उसकी तलाशी ले ली। सुनार कपड़े पहनकर अपने घर चला गया।

दूसरे तीसरे दिन मरी बिल्ली बुरी तरह दुर्गन्ध देने लगी। सेठ ने कहा कि बदबू के मारे घर में रहना मुश्किल हो गया है। बहुत खोज-बीन के पश्चात् मृत बिल्ली का पता चला और सेठ ने भंगी से बिल्ली बाहर फिंकवाई। सुनार तो ताक में बैठा ही था। भंगी के जाने के बाद वह बिल्ली को उठाकर अपने घर की ओर चल पड़ा। एक दूसरे सुनार ने ताड़ लिया कि बिल्ली में सोने जैसी कोई कीमती वस्तु अवश्य है, तभी सुनार इसे ले जा रहा है। दूसरे सुनार ने पहले को चेतावनी देते हुए कहा, "ईं मुर्दे का पीला पाँव" पहले सुनार ने सोचा कि इससे बिगाड़ने में फायदा नहीं अतः उसने उत्तर दिया, "मूँड कूटतो तूं भी आव।" दूसरा सुनार भी पहले के घर गया। पहले सुनार ने दूसरे को कुछ दे दिलाकर विदा किया और फिर सारा सोना निकाल कर रख लिया।

अब तो वह सोनी मालदार बन गया। दो चार दिन बाद सेठ उसकी दूकान के आगे से निकला तो उसने देखा कि सुनार का रंग ही दूसरा है। मूँछों पर बल दिये सोनी अकड़ के साथ बैठा था। सेठ ने पूछा कि क्यों सोनी अब क्या हाल है? सुनार ने उत्तर दिया कि बहुत अच्छे हैं, मैंने कहा था न कि सोना आँख से देख लेने पर तो मौज ही मौज है।

● हूँ रे हूँ

एक जाट मर गया तो उसकी औरत तरह-तरह से विलाप करके रोने लगी। रोते-रोते वह बोली कि चौधरी चार सौ बीघे खेत छोड़कर मरा है अब उसे कौन जोतेगा? भाई-बिरादरी के तथा रिश्ते के बहुत से जाट वहाँ इकट्ठे हो रहे थे, उनमें से एक ने हुँकारा देते हुए कहा, 'हूँ रे हूँ'. (अर्थात् खेत का मालिक मैं बन जाऊँगा) जाटनी ने फिर कहा मेरे घर में ऊँट, बैल और गायें हैं उनको कौन सम्हालेगा? उसी जाट ने फिर कहा, 'हूँ रे हूँ'। जाटनी ने फिर पुकार मचाई कि चौधरी इतना बड़ा रेवड़ छोड़ गया है उसका धनी कौन होगा? उसी जाट ने फिर कहा कि 'हूँ रे हूँ'। जाटनी फिर रोई कि अमुक बोहरा मेरे पति के दो हजार रुपये माँगता है उसे कौन चुकाएगा? कोई नहीं बोला तो उसी जाट ने कहा कि इतनी देर हो गई मैं अकेला

ही हुँकारा दिये जा रहा हूँ इस बार और कोई भी तो हुँकारा दो।

● चाकरी जिसो फल

एक सेठ की औरत मर गई तो उसने दूसरी शादी नहीं की। उसके एक बेटे की बहू उसकी सेवा किया करती। जब सेठ नहाने के लिए बैठता तो वह चौकी डाल देती और गरम पानी की बालटी भरकर रख देती। सेठ नहाकर चला जाता तो वह उसकी धोती धोकर सुखा देती। धोती में उसे नित्य एक लाल मिल जाता। इस बात से उसकी देवरानी को बड़ी डाह हुई। उसने कहा कि आज ससुर जी को मैं नहलाऊँगी।

उसने पानी उबालकर रख दिया और चौकी डाल दी। पानी बहुत गरम था सो शरीर पर डालते ही ससुर के शरीर पर फफोले पड़ गये लेकिन उसने कुछ कहा नहीं, चुपचाप नहाकर चला गया। बहू को इस बात की रत्ती भर भी चिन्ता न थी कि ससुर के शरीर पर फफोले पड़ गये हैं। उसने लाल की खोज में जल्दी-जल्दी धोती उलटी-पलटी लेकिन बहू को लाल के स्थान पर एक मोटी सी जूँ मिली।

● आ ए बिलरिया, तेरी ताती खीर सलरिया

एक बुढ़िया अपने बेटे के साथ रहा करती थी। बेटा कमाने के लिए दिसावर जाने लगा तो बोला कि माँ, रोटी बनाने का झंझट तेरे से न होगा अतः तुझे एक गाय ला देता हूँ और चावलों का कुठला भर देता हूँ सो तू नित्य खीर बनाकर खा लिया करना।

सारी व्यवस्था करके बेटा चला गया। पीछे से एक बिल्ली आई और बुढ़िया से कहने लगी कि या तो मुझे नित्य खीर बनाकर खिलाया कर अन्यथा तेरी गाय और उसके बछड़े के पैर काट खाऊँगी। जब खीर बनकर तैयार हो जाय तो उसे एक कटोरे में डालकर आँगन में छोड़ दिया कर और मुझे पुकारा कर, "आये बिलरिया, तेरी ताती खीर सलरिया।" तब मैं आकर खीर खा लिया करूँगी।

बिल्ली के डर के मारे बुढ़िया नित्य ऐसा ही करने लगी। बहुत दिनों

के बाद उसका बेटा घर आया तो उसने अपनी माँ से पूछा कि माँ, तू इतनी दुबली क्यों हो रही है? क्या गाय दूध नहीं देती अथवा और कोई बात है ? बुढ़िया ने बिल्ली की कारस्तानी बतलाई तो बेटे ने कहा कि अच्छी बात है, कल उसे आने दे।

दूसरे दिन बुढ़िया के बेटे ने लोहे की एक सींक आग में खूब गरम कर ली। बुढ़िया ने आवाज लगाई और बिल्ली आकर खीर खाने लगी। तभी लड़के ने पीछे से चुपचाप आकर बिल्ली के शरीर पर गरम सींक चेप दी। बिल्ली नौ-नौ बाँस उछलती हुई भागी।

दूसरे दिन बुढ़िया ने बिल्ली को फिर पुकारा :

आये बिलरिया, तेरी ताती खीर सलरिया ।

लेकिन बिल्ली नहीं आई, उसने वहीं से उत्तर दिया :

क्युं आऊं ए रंडी, तेरो बेटो बाली गंडी ।

● दुनिया सुआरथ की है

सेठ बूढ़ा हो गया तो घर में उसकी कोई पूछ नहीं रही क्योंकि वह अपनी सारी संपत्ति पहले ही अपने बेटे और बहू को दे चुका था। उसका पोता दो वक्त आकर उसे रूखी-सूखी रोटी दे जाया करता। अपनी युवा-वस्था के दिन याद करके सेठ कभी-कभी रो पड़ता था।

एक सुनार उस सेठ का भायला था। एक दिन सुनार सेठ से मिलने आया तो सेठ ने उससे अपनी कष्ट-कथा कही। सुनार ने कहा कि सेठ जी, आजकल यह दुनिया का दस्तूर हो गया है, आपके पास कुछ हो तो मैं आपका कष्ट जीवन भर के लिए मिटा सकता हूँ। सेठ ने कहा कि मेरे पास और तो कुछ नहीं कानों में ये दो 'मुरकियाँ' (कानों में पहनने का छोटा आभूषण) तो हैं। सुनार ने वे मुरकियाँ सेठ से ले लीं और कहा कि मैं कल परसों फिर आऊँगा। सुनार ने चार रुपयों के मोटे टके (मुसलमानी काल के मोटे पैसे जो पिछले कुछ वर्षों तक नाप-तौल के काम में लिये जाते थे) बाजार से खरीदे और उन पर सोने का मुलम्मा चढ़ा दिया। अब वे पैसे सोने की

मोहरों-जैसे लगने लगे। सुनार उनको लेकर सेठ के पास गया और उसने सेठ को युक्ति बतलाई। सुनार की युक्ति सेठ को भी जँच गई।

दूसरे दिन सेठ ने जब देखा कि उसका पोता रोटी लेकर आने ही वाला है तो सेठ उन 'मोहरों' को छुपकर धीरे-धीरे गिनने लगा। लड़का आया तो सेठ ने 'मोहरें' छुपा लीं, लेकिन लड़के से यह बात छिपी नहीं रही। उसने जाकर अपनी माँ से कहा कि दादा के पास तो बहुत सारी सोने की मोहरें हैं। उसकी माँ भी एक दिन छुपकर श्वसुर को मोहरें गिनते देख आई। अब सेठ के दिन फिर गये। उसकी खातिर होने लगी। नहाने के लिए गरम पानी आने लगा और रोटी भी घी-शक्कर से मिलने लगी। सेठ का पोता आकर दिन में चार बार पूछने लगा कि दादाजी आपको क्या चाहिए ? सेठ की शेष जिन्दगी आराम से कट गई। वह परलोक वासी हुआ तो उसकी अरथी बड़े शानदार ढंग से निकाली गई और मृतक के सारे 'क्रिया-कर्म' अच्छी तरह किये गए। लेकिन जब सेठ का खजाना खोला गया तो घरवालों को बड़ा अफ़सोस हुआ कि खजाने में सिर्फ सोने का मुलम्मा चढ़ाए हुए चार रुपयों के पुराने टके थे।

● अम्मा तेरी क' मेरी

एक बदकार स्त्री थी। सास से उसकी जरा भी नहीं बनती थी। सास की बेइज्जती करने के लिए एक दिन वह पेट दर्द का बहाना करके लेट गई। उसके पति ने बहुतेरे वैद्य और हकीम बुलवाये लेकिन दर्द हो तो मिटे। आखिरकार उसके पति ने उससे पूछा कि तेरा दर्द किस तरह मिटे सो तू ही बतला। उसने कहा कि तुम यदि अपनी माँ के सिर के बाल मुँड़वा कर उसका काला मुँह करके और उसे गधी पर चढ़ाकर मेरे सामने से निकालो तो मेरा दर्द मिट सकता है और किसी भी तरह से मेरा दर्द नहीं जाएगा। उसका पति जान गया कि यह सब इस दुष्टा की चालबाजी है। उसे अपनी चाल का मजा चखाने के लिए वह अपनी सास के पास गया और बोला कि तुम्हारी बेटी मर रही है, उसके पेट में बड़ा दर्द है, वैद्य और हकीम सब दवा कर के हार गये। अब उसने एक नुस्खा बतलाया है। यदि तुम उसके

बताये अनुसार कर सको तो तुम्हारी बेटी बच सकती है। सास के हाँ भरने पर दामाद ने नुस्खा बतलाया। बेटी की ममता से वह सब करने को राजी हो गई। दामाद ने उसे 'मोडी' बना, मुँह काला कर और गधे पर चढ़ाकर अपनी स्त्री के आगे हाजिर किया। उसने सोचा कि मेरा पति अपनी माँ को लाया है अत: व्यंग्य से बोली :

देख बनी का चाळा, सिर मूंड्या मूं काळा ।

लेकिन तभी उसके पति ने नहले पर दहला लगाते हुए कहा :

देख मरदाँ की हथफेरी, अम्मा तेरी क मेरी ।

अपनी माँ को पहिचानकर बेटी सन्न रह गई।

● के सी मरती बार

एक सुन्दर स्त्री चूड़ा पहनने के लिए मनिहार के यहाँ गई। स्त्री रूपवती थी सो मनिहार के मन में कुछ पाप आ गया। चूड़ा पहनाते वक्त मनिहार ने जान-बूझकर उसकी कलाई दो-चार बार दबा दी। वास्तव में वह औरत के मुंह से सीत्कार की आवाज सुनकर उसका आनन्द लेना चाहता था। लेकिन उस औरत ने कहा :

रे मूरख मणिहार, बार बार क्या कर गहे ।
के सी मरती बार, के सी पीकी सेज पर ।।

तब मनिहार ने लज्जित होकर शीघ्रता से चूड़ियाँ पहना दीं।

● इण होंठन के कारणै...

छोटी बहिन अपनी बड़ी बहिन के यहाँ मिलने गई। गर्मी की ॠतु थी, छोटी को प्यास लगी तो बड़ी ने मिट्टी के एक सकोरे में शीतल जल लाकर उसको दिया। छोटी बहिन पानी पीने लगी तो मिट्टी का कोरा (नया) सकोरा उसके होंठ से चिपक गया। इस पर वह रुष्ट होकर सकोरे से बोली :

रे माटी का पूरवा, तोहि डारों पटकाय ।
होंठ रखे हैं पीव को, तू क्यों चूसै आय ।।

लेकिन बड़ी ने कहा :

लात सही मुक्की सही, बहुतक सही कुदार।
इन होंठन के कारणें, सिर पर धर्‌यो अंगार ॥

बड़ी बहिन की बात सुनकर छोटी ने सकोरे को चूमकर और छाती सें लँगा कर रख दिया।

● दही का 'गुण'

एक सेठ का बेटा सिर्फ दही ही दही खाया करता। सभी लोग उसे समझा बुझाकर हार गये लेकिन वह दही खाना नहीं छोड़ता था। एक दिन उस सेठ के घर एक साधु भिक्षा लेने के लिए आया। सेठ ने साधु से कहा कि महाराज, यह लड़का दही को छोड़कर और कोई चीज नहीं खाता, इसको बहुत समझाया बुझाया लेकिन यह नहीं मानता। कृपा करके आप ही कोई उपाय बतलायें।

साधु ने लड़के को अपने पास बुलाकर कहा कि बेटा, दही खाना कदापि नहीं छोड़ना, दही खाने के बहुतेरे फायदे हैं। लड़के ने पूछा कि महात्मा जी, दही के कुछ गुण मुझे भी बतलाइये। इस पर साधु ने कहा कि दही के चार गुण तो प्रत्यक्ष ही हैं, पहला यह कि दही खाने वाले के घर में चोर नहीं घुसते, दूसरा यह कि वह कभी पानी में डूबकर नहीं मरता। तीसरा यह कि उसे कभी कुत्ता नहीं काटता और चौथा यह कि वह कभी बूढ़ा नहीं होता। लड़के के पूछने पर साधु ने अपनी बात को स्पष्ट किया कि अधिक दही खाने से आदमी को साँस-खाँसी का रोग हो जाता है सो वह रात भर सोता नहीं, खाँसता रहता है। घर के मालिक को जागता हुआ देखकर चोर घर में नहीं घुसता। दमे का रोग हो जाने से उसे नहाना धोना नहीं सुहाता। अतः जल में डूबकर मरने का प्रश्न ही नहीं है। दमे का रोगी लाठी के सहारे चलता है अतः हाथ में लाठी देखकर कुत्ता उसके पास नहीं फटकता और साँस-खाँसी का रोग हो जाने के कारण वह आदमी जवानी में ही मर जाता है अतः उसे बुढ़ापा नहीं व्यापता। साधु से दही की व्याख्या सुनकर लड़के को होश हो गया और उसने दही खाना छोड़ दिया।

● बिना करम में लिखे धन कोनी मिलै

एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया जंगल से लकड़ी का भार लाकर अपना पेट पाला करते थे। एक दिन दोनों लकड़ी के भार लेकर जंगल से लौट रहे थे कि उसी समय शिव-पार्वती उधर से निकले। बूढ़े-बूढ़ी की दशा पर तरस खाकर पार्वती ने शिवजी से कहा कि महाराज, ये दोनों बहुत बूढ़े हो गये, लकड़ी ढोने लायक इनकी उम्र नहीं रही सो कृपा करके इन्हें धन दीजिए। शिवजी ने कहा कि इनके भाग्य में धन लिखा ही नहीं है तो मैं कैसे दूँ? पार्वती ने हठ किया और 'सोन-चिड़ी' बनकर वृक्ष की डाल पर जा बैठीं। तब शिवजी ने रुपयों से भरी एक थैली उनके रास्ते में डाल दी।

उधर बूढ़े ने बूढ़ी से कहा कि हम बूढ़े हो चले। कुछ समय बाद हमारी आँखों की ज्योति और क्षीण हो जाएगी तथा एक दिन हम सर्वथा अंधे बन जाएँगे। उस हालत में हम किस प्रकार चलेंगे सो आओ थोड़ी दूर तक अंधे-अंधी बनकर चल देखें। आँखें बन्दकर दोनों अंधे-अंधी बन गये और थैली को लाँघकर चले गये। तब शिवजी ने पार्वती से कहा कि देख लो, इनके आगे रुपयों की थैली भरकर डाल दी गई लेकिन बिना भाग्य में लिखे ये थैली को नहीं उठा सके। पार्वती भी जान गईं कि शिव महाराज ठीक कहते हैं अतः वह अपना असली रूप बनाकर फिर शिवजी के पास आ गईं।

● कासी को पंडत

काशी जी से पढ़कर एक पंडित अपने घर को जा रहा था। रास्ते में वह एक गाँव में ठहरा। जिस व्यक्ति के यहाँ पंडित ठहरा था उसके एक युवा लड़की थी। लड़की ने पंडित से पूछा कि आप क्या पढ़कर आ रहे हैं तो पंडित बोला कि मैं वेद, शास्त्र, पुराण सब पढ़कर आया हूँ। कोई ऐसी विद्या बाकी नहीं रही जो मैं नहीं जानता हूँ। लड़की ने पूछा कि आपने त्रियाचरित्र पढ़ा कि नहीं। पंडित बोला कि यह विषय तो मेरे सामने कभी नहीं आया। इस पर लड़की ने व्यंग्य से कहा कि तब तुमने क्या खाक पढ़ा है।

पंडित नहा-धोकर पूजा पाठ करने के लिए झोंपड़े में घुसा तो पीछे-पीछे

लड़की भी झोंपड़े में घुस गई और उसने अन्दर से कुंडी लगा दी। फिर वह जोर-जोर से रोने-चिल्लाने लगी। घर वाले और पास पड़ोस के लोग दौड़े आये। झोंपड़े को बन्द पाकर वे ऊपर से झोंपड़े में घुसे और घुसते ही उन्होंने पंडित की खूब मरम्मत की। फिर उन्होंने लड़की से पूछा कि क्या बात थी? लड़की की घिग्घी बँधी हुई थी। उसने रोते-रोते कहा कि जैसे ही मैं झोंपड़े में घुसी, मैंने देखा कि पंडितजी का सिर मंत्रोच्चारण कर रहा है और धड़ अलग पड़ा है सो डर के मारे मैं चिल्लाने लगी। फिर लड़की ने कुछ सावधान होते हुए कहा, लेकिन तुम लोगों ने पंडितजी को अकारण मार-पीटकर बहुत बुरा किया। यह सिद्ध पुरुष है, यह चाहे तो गाँव भर का अनिष्ट कर सकता है अतः पंडितजी को भेंट देकर और प्रार्थना करके प्रसन्न करना चाहिए।

सब लोग डर गये और पंडितजी की भेंट-पूजा शुरू हो गई। उनके सामने विविध प्रकार की चीजों का ढेर लग गया। जब सारे लोग चले गये तो लड़की ने पंडित जी से कहा कि अब तुम अविलम्ब यहाँ से चल दो। पंडित बोला कि तुमने वह त्रियाचरित्र तो बतलाया ही नहीं, वह बतला दो तो मैं चला जाऊँ। इस पर लड़की बोली कि तुम निरे भोंदू ही रहे। मैंने अकारण ही तुम्हें पिटवा दिया और फिर उन्हीं पीटनेवालों को मूर्ख बनाकर तुम्हें इतना सामान दिलवा दिया और तुम्हारी पूजा करवा दी। यह त्रिया-चरित्र का एक सबक है। अब तुम यहाँ से चले जाओ। पंडित भी जान गया कि वास्तव में यह विद्या तो बड़ी अनूठी है।

● तूमड़ी में जल है

मारवाड़ में अकसर अकाल पड़ते ही रहते हैं सो एक बार अकाल पड़ा तो गाँव का बनिया शहर में जाकर एक सेठ के बेटे से अपनी बेटी की सगाई कर आया और सेठ से रुपये ले आया। लेकिन वास्तव में बनिये के कोई बेटी थी ही नहीं।

निश्चित दिन जनेत आ गई तो बनिये ने घर में विवाह-मंडप आदि बनवा लिये। फिर वह गाँव में वधू की तलाश में निकला। एक जगह उसने

एक 'मोडी' (सिर के बाल कटवाकर, साधु वेष बनाकर और भिक्षा माँग-कर खाने वाली स्त्री) को भिक्षा के लिए घूमती देखा। बनिये ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ घर चलो, मैं तुम्हें खूब मिठाई खिलाऊँगा, तथा दो रुपये भी दूँगा। तुम रातभर के लिए जैसा मैं कहूँ कर लेना और कुछ बोलना नहीं। 'मोडी' को यह सौदा बड़ा पसन्द आया और वह बनिये के घर आ गयी। बनिये ने उसे वधू बनाकर फेरे फेर दिये और सबेरा होते-होते जनेत विदा कर दी।

वर-वधू को पालकी में बिठलाकर सेठ खुशी-खुशी घर चला। रास्ते में सेठ ने पालकी के पास आकर अपने लड़के से कहा कि बहू से पूछ ले कि जलपान करेगी क्या? शर्त के अनुसार मोडी रात भर बोली नहीं थी, लेकिन अब शर्त पूरी हो चुकी थी अतः उसने पालकी से मुँह निकालकर कहा कि नहीं बच्चा, तूमड़ी में जल है और 'बाटी' काँख में है। मोडी को देखकर और उसकी बात सुनकर सेठ सन्न रह गया।

● कंजूस पंडत, छाकटो नोकर

एक पंडित ने एक नौकर रक्खा। पंडित बड़ा कंजूस था। वह शाम को एक वक्त ही भोजन बनाता था और नौकर को पेट भर रोटी नहीं देता था। नौकर ने सोचा कि ऐसे तो काम नहीं चलेगा, कोई न कोई युक्ति निकालनी चाहिए।

शाम को पंडित ने नौकर को खाने के लिए रोटियाँ दे दीं और फिर स्वयं चौका लगाकर भोजन करने के लिए बैठा। इतने में साँप-साँप करके नौकर चिल्लाया और उसने अपनी रोटियाँ जान-बूझकर पंडित के चौके में फेंक दीं। पंडित बोला कि नालायक, यह क्या किया? तू ने मेरा चौका बिगाड़ दिया; अब मुझे भूखा ही रहना पड़ेगा। यों कहकर पंडित ने अपनी थाली नौकर को दे दी कि ले ये रोटियाँ भी तू ही खा ले। नौकर ने तो इसी के लिए यह सब किया था। उसने भर पेट खाना खाया।

दूसरी शाम को पंडित फिर चौका लगाकर जीमने बैठा तो नौकर ने जाकर पंडित जी के पैर पकड़ लिये और उनसे क्षमा याचना करने लगा

कि पंडित जी मुझे क्षमा कर दीजिए, मेरे कारण आपको दिन भर भूखों मरना पड़ा। नौकर चौके के अन्दर आ गया था इसलिए पंडित जी का खाना खराब हो गया। नौकर की दुष्टता से पंडित जी जल-भुन गये और उन्होंने झल्लाते हुए नौकर से कहा कि अरे वर्णसंकर, आज भी तो तूने मुझे भूखा ही रख दिया, मुझे ऐसा कम्बखत नौकर नहीं चाहिए, जा भाग यहाँ से, अपना मुँह काला कर।

यों कहकर पंडित ने नौकर को छुट्टी दे दी।

● जयराम की माई

एक साधु भिक्षा माँगने के लिए जयराम सेठ की हवेली में गया। सामने ही जयराम सेठ की बहू बैठी थी। साधु बोला "जयराम की माई, चून घाल।" जयराम की स्त्री को साधु की यह बात बुरी लगी और वह साधु को भला-बुरा कहकर हवेली से बाहर निकालने लगी। शोर सुनकर पड़ोसी 'जीवे' की बहू बीच-बचाव करने के लिए आई। उसने जयराम की बहू से कहा कि बेचारे साधु को क्या पता था कि तुम्हारे पति का यह नाम है, इसने तो यों ही कह दिया। जीवे की स्त्री ने साधु का पक्ष लेकर उसका पिंड छुड़वाया तो साधु ने जीवे की स्त्री को आशीर्वाद देते हुए कहा, "माई तेरो पूत जीवो"। साधु की बात सुनकर जीवे की स्त्री भी चमकी, उसने कहा कि निगोड़ा वास्तव में ही लुच्चा है। यों कहकर दोनों ने साधु को धक्के देकर बाहर निकाल दिया।

● बीनणी कै तो पूँछ ?

एक गाँव में एक बनिया रहता था। गाँव में अकाल पड़ा तो बनिया शहर में गया और एक सेठ से एक हजार रुपये लेकर अपनी बेटी की सगाई उसके साथ कर आया।

निश्चित दिन गाँव में बरात पहुँची। बनिये ने अपने घर में बहुत ऊँचा माँडा छवा दिया था। बरात उसी को लक्ष्य करके उस घर की ओर चल पड़ी। लेकिन इधर बनिये ने एक अरथी बनाई और उसमें एक मृत कुतिया को बाँधकर बहुत से लोगों को साथ ले बरात के सामने चला।

बरात वालों ने पूछा कि यह क्या बात है तो लड़कीवालों ने कहा कि जिस लड़की की आपके यहाँ सगाई की गई थी और जिसका आज विवाह होना था वह अचानक मर गई। लेकिन अरथी जल्दी में बाँधी गई थी इसलिए कुतिया की पूँछ लटकती दिखलाई दे रही थी। सेठ ने पूछा कि यह क्या है तो बेटी के बाप ने उत्तर दिया कि यही तो बीमारी थी, अचानक ही लड़की के शरीर में पूँछ निकल आई और वह तुरंत मर गई।

निदान सारे बराती भी भावी वधू का दाह-संस्कार करने के लिए श्मशान तक गये।

● मैं रांड़ पड़ी कूवै में

एक गाँव में एक जाट जाटनी रहते थे। जाट खेत पर काम करता, जाटनी घर पर रहती। जाटनी चालाक थी, वह अपने लिए हमेशा चूरमे के दो लड्डू बनाकर अलग छुपाकर रख देती। जाट घर आता तो जाटनी उसे रूखी-सूखी रोटी और राबड़ी परोस देती। जाट अपनी स्त्री से कहता कि आ, तू भी जीम ले। इस पर जटनी कहती "मैं राँड पड़ी कूवै में तूँ तेरी खाले।" यही बात रोजाना होती।

नित्य-घी-चूरमा खाने से जाटनी मोटी हो गई तो जाट ने सोचा कि इस रहस्य का पता लगाना चाहिए। एक दिन जाट खेत से जल्दी घर आ गया। जाटनी घर पर नहीं थी। जाट ने चूरमे के लड्डू ढूँढ लिए और खा-पीकर चला गया। हमेशा की तरह वह फिर शाम को घर आया और जीमने के लिए बैठा तो जाटनी ने रूखी-सूखी रोटियाँ और राबड़ी जाट के आगे रख दी। जाट ने जाटनी से कहा कि आजा, तू भी जीमले। जाटनी ने उत्तर दिया, "मैं राँड पड़ी कूवै में, तूँ तेरी खाले।" इस पर जाट ने व्यंग्य से जाटनी को कहा कि आज उस कूवे में मैं पड़ गया हूँ सो रोटी खानी है तो खाले अन्यथा रात भर तारे गिनेगी। जाटनी जान गई कि आज रहस्य खुल गया है सो वह लज्जित हो गई और उसने रूखी-सूखी रोटियाँ खालीं।

● अड्डो ई उड़ा दियो

एक अफीमची की नाक पर मक्खी बैठ गई। अफीमची ने मक्खी से बहुत विनय की, उसकी खुशामद की कि बाईजी राज, उड़जा। मक्खी नहीं उड़ी। अफीमची ने मक्खी उड़ाई भी तो वह फिर आ बैठी। अफीमची को मक्खी की यह हरकत बड़ी नागवार महसूस हुई। उसने अपनी जेब में से चाकू निकाला और अपनी नाक काट डाली। फिर वह मक्खी से झुँझलाते हुए बोला कि ले हरामजादी, अब मैंने तेरे बैठने का अड्डा ही उड़ा दिया है, अब किस पर बैठेगी ?

अंख में दो पंख निकल्या

एक नवाब की शाहजादी ने प्रण कर रखा था कि जो उसकी पहेली का अर्थ बतला देगा वह उसी के साथ विवाह करेगी। अर्थ न बतलाने पर प्राणदंड की सजा थी। बहुत से राजा, राजकुमार और अन्य लोग पहेली का अर्थ न बतला सकने के कारण मृत्युदंड पा चुके थे।

एक गाँव में एक तेली अपनी बूढी माँ के साथ रहता था। उसने अपनी माँ से कहा कि मैं नवाब की शाहजादी के पास जाता हूँ, यदि मैंने अर्थ बतला दिया तो फिर आनन्द ही आनन्द है नहीं तो जो होगा होगा सो देखा जाएगा। माँ के मना करने पर भी बेटा घर से निकल पड़ा। रास्ते में उसने देखा कि एक ऊँट मरा हुआ पड़ा है। उसकी आँखें खुली पड़ी थीं, पलकों में ओस के कण चमक रहे थे जो अब झर-झर कर जमीन पर गिर रहे थे। सारा दृश्य देख कर तेली के मुँह से निकल पड़ा :

अंख में दो पंख निकल्या, जल चढ़ै है सूली।
के तो दो का तीन हो, नहीं जावै जड़ समूली॥

तेली ने सोचा कि बस, यही बात शाहजादी से पूछूँगा। यों सोचते-विचारते वह शाहजादी के पास पहुँच गया। शाहजादी ने तेली के लड़के से पूछा कि जब उसके थी तब तो कोई उसके पास नहीं आती थी अब नहीं रही तो सब भागी आती हैं। तेली को इसका कोई अर्थ नहीं सूझा तो वह झुंझला

कर बोला 'गधे का पूँछ'। तुम मेरी बात का जवाब दो :

अंख में दो पंख निकल्या, जल चढ़ै है सूली।
के तो दो का तीन हो नहीं जावै जड़ समूली॥

अर्थात् तुम्हारी पहेली का अर्थ तो मुझे आता नहीं। यदि तुम मेरे साथ शादी कर लो तो हम दो से तीन हो जाएँ नहीं तो हम समूल नष्ट हो जाएँगे। लेकिन शाहजादी को अपनी पहेली का उत्तर मिल गया था। गधे के जब तक पूँछ होती है वह मक्खियों को पूँछ से उड़ाता रहता है लेकिन पूँछ कट जाने पर हजारों मक्खियाँ आ आकर बैठ जाती हैं। तेली की बात का कोई उत्तर शाहजादी को नहीं आया अतः उसने हार मान कर तेली से शादी करली।

● जीजा, राम-राम

एक बनिया शहर में गया। भूख जोरों से लगी थी लेकिन पास में पैसा नहीं था। किसी से माँगने में भी संकोच होता था अतः बनिये ने सोचा कि अब तो कोई युक्ति निकालनी चाहिए। थोड़ी ही दूर चला होगा कि सामने एक हवेली दिखलाई पड़ी। हवेली के गोखे पर सेठ बैठा था। बनिये ने सेठ से कहा, जीजा, राम-राम। सेठ असमंजस में पड़ गया कि यह अपरिचित साला कहाँ से आ गया। फिर उसने पास ही खेलते हुए छोटे लड़के से कहा कि इन्हें घर में ले जा और अपनी माँ से कह दे कि तेरा भाई आया है। बनिया घर में गया तो सेठानी को देखकर बोला, 'भाभी, राम-राम'। सेठानी ने झट घूँघट निकाल लिया। वह पसोपेश में पड़ गई कि भाई उनका आया है या मेरा? उसने सोचा कि लड़के ने कहने में भूल करदी है। सेठानी ने उसे भोजन करवा दिया। भोजन करके वह बाहर निकला और सेठ से बोला कि मैं अभी एक आवश्यक काम से जा रहा हूँ, शीघ्र ही लौटूँगा।

इधर सेठ हवेली में गया तो उसने सेठानी से पूछा कि आज अपने भाई से क्या-क्या बातें हुईं? सेठानी ने कहा कि भाई मेरा था या आपका,

उसने तो मुझे देखते ही कहा, "भाभी, राम-राम"। सेठानी की बात सुनकर सेठ शीघ्रता से बाहर आया और उसने बनिये को अपने पास बुलवाकर पूछा कि यह क्या बात है ? बनिये ने उत्तर दिया कि अमुक गाँव का बनिया हूँ, भूख लग गई थी, लेकिन पास में पैसे नहीं थे, किसी से याचना करते शर्म आती थी अतः मैंने आप को जीजा बनाया। आपने भोजन के लिए मुझे घर में भेजा तो मैंने सेठानी को अपनी भाभी बनाई। यदि मैं उसका भाई बनता तो वह अपने मायके की अनेक बातें पूछती जिनका मेरे पास कोई उत्तर न था। लेकिन भाभी कह देने पर उसने कुछ नहीं पूछा और मैं भोजन करके बाहर निकल आया।

बनिये की बात सुनकर सेठ ने सोचा कि आखिर जाति-भाई है, बनिये का बेटा है सो उसने बात आई-गई कर दी।

● तेरै सें गेर्‌या भी कोनी जा

एक मियाँजी की बीबी बड़ी फूहड़ थी, लेकिन होशियारी बहुत जतलाती थी। एक दिन बीबी ने मियाँ से कहा कि मियाँजी, आप कहें तो आज थोड़ा हलवा पकालूँ। मियाँ बेचारा तो जानता था कि बीबी कैसी शऊरदार है लेकिन बीबी के आग्रह करने पर मियाँ ने हाँ भरली। बीबी हलवा पकाने बैठी। बीबी ने चूल्हे पर कड़ाही चढ़ाई और उसमें घी चीनी आटा और पानी डालकर चलाने लगी। लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी जब हलवा नहीं बना तो बीबी ने मियाँ से कहा कि मियाँजी, हलवा तो नहीं बनता, आप कहें तो लपसी बनालूँ। मियाँ बोला कि तुमसे लपसी भी नहीं बनेगी। बीबी ने उत्तर दिया कि वाह, लपसी क्यों नहीं बनेगी ? लपसी बनाने में भला क्या भेद है ? बीबी ने कड़ाही में थोड़ा आटा और डाला और फिर चलाने लगी लेकिन बहुत माथा-पच्ची करने पर जब लपसी भी नहीं बनी तो बीबी ने फिर मियाँ से कहा कि मियाँजी लपसी तो नहीं बनती लेकिन आप कहें तो इसका दलिया तैयार कर लूँ। मियाँ बोला कि बीबी तुमसे दलिया भी नहीं बनेगा। बीबी ने चिहुँक

कर उत्तर दिया कि वाह मियाँजी आप मुझे क्या समझते हो, क्या मैं दलिया भी नहीं बना सकती ?

बीबी फिर चूल्हे के पास बैठी। उसने कड़ाही में घी, पानी आटा आदि और डाल दिये लेकिन बीबी के लाख प्रयत्न करने पर भी दलिया नहीं बना और सारा गुड़ गोबर हो गया। बीबी पसीने से नहा गई। अन्त में हारकर बीबी ने मियाँ से कहा कि मियाँजी इसका तो कुछ नहीं बनेगा, आप कहें तो इसे उठाकर गली में फेंक आऊँ। मियाँ बोला कि बीबी, तुमसे फेंका भी नहीं जाएगा। इस पर बीबी ने फिर चमककर मियाँ से कहा कि वाह क्या तुम मुझे बिलकुल फूहड़ ही समझते हो ? यों कहते कहते बीबी आवेश में आ गई और कड़ाही को उठाकर ले गई। उसने आव देखा न ताव कड़ाही घर की छत पर ले जाकर गली में उलट दी। गली में से कुछ भलेमानस गुजर रहे थे, उनके सारे कपड़े खराब हो गये। वे उलहना देने के लिए मियाँ के पास आये और बोले कि मियाँजी आपकी बीबी तो बड़ी फूहड़ है। मियाँ ने हाथ पाँव जोड़कर उन्हें किसी प्रकार विदा किया और फिर बीबी की ओर मुखातिब होकर बोला कि बीबीजी सुना, मैंने तो नहीं कहा लेकिन राह चलते लोग कह गये कि बीबी बड़ी फूहड़ है।

● धम्मक रोटा कर ल्याऊँ ?

एक बीबी अपने मियाँ से बहुत प्यार दरसाया करती। बीबी मियाँ से कहती कि मियाँजी यदि आप परदेश चले जाएँ तो मैं आपका मुँह देखे बिना रोटी पानी भी नहीं खाऊँगी। परीक्षा लेने के लिए एक दिन मियाँ घर की छत पर छुपकर बैठ गया। मियाँ ने बीबी से कह दिया था कि मैं परदेश जा रहा हूँ अतः मियाँ को परदेश गया जानकर बीबी खाट में पड़ रही।

थोड़ी देर बाद बीबी की बहिन आई। उसने बीबी से कहा, "बीबी, कुछ खाये, मर ज्यावैगी।" बीबी ने उदासीनता से उत्तर दिया, "क्या खाऊँ भैण, मेरा पिया गया परदेश।" बहिन ने फिर पूछा, "धमक्क रोटा

कर ल्याऊँ ?" बीवी तो तैयार ही थी लेकिन उसने अनमनी होकर कहा, "कर ल्या भैण तू जाणै ।" बीवी की बहिन ने धमक्क रोटा बनाया और उसमें खूब घी और चीनी डाल कर बीवी को ला दिया । बीवी बड़े आराम से धमक्क रोटा गटका कर लेट गई ।

दूसरे दिन बीवी की बहिन फिर आई और पहले दिन की ही तरह बीवी से पूछा । "कुछ हलवापूड़ी कर ल्याऊँ ?" बीवी ने संतोष की साँस लेते हुए कहा, "करल्या भैण तू जाणै ।" बीवी की बहिन ने हलवा-पूड़ी करके बीवी को खिलाया और चली गई । तीसरे दिन बीवी की बहिन फिर आई और बीवी को चिल्ले-पूड़े बना के खिला गई । उधर मियाँ तीन दिन से भूखा बैठा था , उसके पेट में चूहे कूद रहे थे । बीवी शौच के लिए बाहर गई तो मियाँ छत पर से आकर नीचे बैठ गया । बीवी आयी तो मियाँ को देख कर पूछने लगी, "मियाँ तू कित गया था ?" मियाँ बोला, "बीबी परदेश गया था ।"

फिर बीवी और मियाँ के निम्न प्रश्नोत्तर हुए :

"मियाँ , तुझे क्या मिल्या ?"

"बीवी, एक सरप मिल्या ।"

"मियाँ, वह मोटा कैसा ।"

"बीबी, तेरै धम्मक रोटै जैसा ।"

"मियाँ, वो चालै कइयाँ ?"

"बीवी, तेरै हलवै में घी चालै जइयाँ ।"

"मियाँ वो चोगै कइयाँ ?"

"बीबी, तेरै चिल्लै-पूड़ा में सूसुवा उठै जइयाँ ।"

बीवी जान गई कि निगोड़े ने सारी बातें देख ली हैं । मियाँ को भी बड़ा गुस्सा आ रहा था । वह एक मोटा लट्ठ ढूँढ कर लाया और बीवी की कमर पर जमाते हुए बोला कि रंडी, तू तो कहा करती थी न कि मैं तुम्हारा मुँह देखे बिना रोटी-पानी भी नहीं खाऊँगी ।

● ल्या दो ई दे

एक दिन काजीजी ने ख़ुदा से अरज की कि या ख़ुदा तेरी इबादत करते और पाँच वक्त की नमाज़ गुज़ारते मेरी उम्र बीत चली लेकिन तू ने मुझे आज तक कुछ नहीं दिया। अब बुढ़ापे में इतना तो कर कि दूध पीने के लिए मुझे एक बकरी बख़्श दे।

रात को काज़ी जी ने सपने में देखा कि उनके घर पर एक उत्तम किस्म की बकरी बँधी है। बकरी को देख कर काजी जी बड़े प्रसन्न हुए, पर फिर दुविधा में पड़ गये, बकरी दूध पीने के लिए रख ली जाए अथवा अच्छी कीमत पर बेच दी जाए। अन्त में उन्होंने यही निर्णय किया कि बकरी को पूरी कीमत लेकर बेच दी जाए। उन दिनों साधारणतया बकरी की कीमत दो रुपये से अधिक नहीं होगी, लेकिन काज़ीजी ने पच्चीस रुपये में बकरी बेचनी निकाली। ग्राहक पाँच-दस रुपये से अधिक नहीं 'धामते' थे, अन्त में एक ऐसा ग्राहक भी आया जिसने बीस रुपये तक बकरी की कीमत लगा दी, लेकिन काज़ीजी पच्चीस पर अड़े रहे। अन्त में हुज्जत करते-कराते काज़ीजी की आँखें खुल गईं तो उन्हें बड़ा अफ़सोस हुआ। उन्होंने झट एक हाथ अपनी आँखों पर रखा और दूसरा हाथ फैला कर बोले, ला-ला दो रुपये ही दे।

● बलद घोड़ै की पिछाण कोनी

दो कुँजड़े सब्जी बेचने के लिए जाया करते थे। एक के पास एक बैल था सो वह बैल पर अपना सामान लादकर लाया-ले जाया करता। लेकिन दूसरे को सारा बोझ अपने सिर पर उठाकर ले जाना पड़ता था। दूसरा कुँजड़ा गाँव के ठाकुर के गढ़ में सब्जी बेचने जाया करता था। एक दिन उसने ठाकुर से अरज की कि अपना सामान ढोने के लिए मुझे एक बछेड़ा दिया जाए। ठाकुर ने कुँजड़े को एक बछेड़ा दिलवा दिया।

अब वह बछेड़े पर लाद कर सब्जी लाने लगा। बैल वाले कुँजड़े से वह पहले पहुँच कर सब्जी बेच देता था। सारे लोग सब्जी खरीद लेते

तो बैल वाला पहुँचता लेकिन फिर उसकी सब्जी नहीं बिकती। तब उसने ख़ुदा से अरज की कि ख़ुदावंद करीम, इस दुष्ट कुँजड़े का बछेड़ा मर जाय।

लेकिन संयोग की बात कि दूसरे दिन जब वह कुँजड़ा सोकर उठा, तो उसने देखा कि उसका बैल मरा पड़ा है। तब उसने आकाश की ओर हाथ उठाकर व्यंग्य पूर्वक ख़ुदा से कहा कि या ख़ुदा तुझे इतने दिन हो गये ख़ुदाई करते, अब तक बैल और घोड़े की पहिचान भी तुझे नहीं हुई ?

● राब तिहारो रोस जीवतड़ो भूलूँ नहीं

एक पंडित जी के घर में घाटा आ गया। 'राबड़ी' पी-पी कर वे किसी प्रकार अपने दिन गुज़ारते थे। पंडितजी के एक यजमान आगरा रहने लगे थे। एक दिन पंडितजी को ध्यान आया कि आगरे वाला यजमान आजकल बहुत मालदार है सो उसके यहाँ चला जाए।

पंडित जी सेठ के यहाँ पहुँचे तो सेठ ने उनकी बड़ी आव-भगत की। सेठानी ने सोचा कि तरह-तरह के साग-सब्जी तो नित्य बनते ही हैं आज पंडित जी की मनुहार किस चीज से की जाए ? सेठानी कभी साल छः महीने में शौकिया रावड़ी बनाया करती थी। सेठानी ने सोचा कि आज पंडित जी के लिए 'रावड़ी' बनानी चाहिए।

लेकिन पंडितजी तो 'राबड़ी' से ऊबकर ही यजमान के यहाँ पहुँचे थे। थाली में राबड़ी परोसी देख कर पंडितजी आसन पर से उठ खड़े हुए और राबड़ी को हाथ जोड़ते हुए बोले :

राब तिहारो रोस, जीवतड़ो भूलूँ नहीं।
छोड़ी थी सो कोस, आगै आई आगरै ॥

● एक चीज थे दे देयो

एक ब्राह्मण ने सेठ के पास आकर कहा कि सेठजी, लड़की का विवाह मँड गया है सो विवाह की सब तैयारी तो मैं खुद कर लूँगा, सारी चीजें मैं ले आऊँगा, लेकिन एक चीज आप को देनी होगी। सेठ ने कहा कि

कोई बात नहीं, जो चीज तुम्हें चाहिए वह विवाह से चार दिन पहले आकर ले जाना।

विवाह के चार दिन शेष रहे तो ब्राह्मण ने सेठ के पास जाकर कहा कि सेठ जी, विवाह के सिर्फ चार दिन रहे हैं सो वह चीज आप मुझे दे दीजिए। सेठ ने पूछा कि पंडित जी, आपको कौन सी चीज चाहिए? इस पर ब्राह्मण बोला कि और सब चीजें तो हो जाएँगी आप सिर्फ रुपये दे दीजिए। सेठ सोच-विचार करने लगा तो ब्राह्मण बोला कि सेठ जी, आपने कहा था कि विवाह के लिए एक चीज तुम्हें मैं दे दूँगा सो आप यही एक चीज दे दीजिए, शेष सब चीजें अपने आप आ जाएँगी।

लाचार ब्राह्मण को विवाह के लिए जितने रुपयों की आवश्यकता थी उतने रुपये देकर सेठ ने उससे अपना पीछा छुड़ाया।

● गधेड़ो आदमी बणग्यो पण...

एक मास्टर स्कूल में पढ़ाया करता था। रहने के लिए उसे कोई अच्छा घर नहीं मिला अतः वह एक कुम्हार के घर रहा करता था। कई लड़के पढ़ने के लिए कुम्हार के घर भी आया करते थे। एक दिन कुम्हार ने मास्टर से पूछा कि मास्टर जी, आपमें ऐसा कौन सा गुण है जो इतने सारे लड़के आपको हर वक्त घेरे रहते हैं? मास्टर ने कहा कि मैं गधे को आदमी बनाता हूँ, यही मेरे में विशेष गुण है, मास्टर की बात सुनकर कुम्हार ने कहा कि मास्टर जी, मेरे यहाँ भी एक ऐसा गधा है जो बड़ा बदमाश है। वह मेरे किसी काम का नहीं है अतः आप उसे आदमी बना दीजिए और अपनी फीस मुझसे ले लीजिए। मास्टर ने हाँ भर ली और कुम्हार ने गधा मास्टर को सौंप दिया।

कुछ दिन बीते तो कुम्हार मास्टर से रोज-रोज पूछने लगा कि मेरा गधा आदमी बना या नहीं। मास्टर ने सोचा कि कुम्हार की बेवकूफी का लाभ उठाना चाहिए सो उसने गधे को किसी दूसरे गाँव वाले के हाथ बेच दिया और कुम्हार के पूछने पर उससे कह दिया कि तेरा गधा आदमी बनने के लिए गया है। मास्टर ने कुम्हार से फीस के रुपये भी ले लिये।

कुछ दिन बाद कुम्हार ने फिर पूछा तो मास्टर ने कह दिया कि तेरा गधा आदमी बन गया है और आजकल वह शहर में तहसीलदार के पद पर है ।

कुम्हार और कुम्हारी तहसीलदार रूपी अपने गधे को लाने के लिए शहर पहुँचे । पूछते-पूछते वे तहसील तक चले गये। वहाँ उन्होंने चपरासी से पूछा कि तहसीलदार कौन सा है ? चपरासी ने बाहर से ही बड़ी मेज के सामने कुर्सी पर बैठे तहसीलदार को दिखाला दिया । कुम्हार ने कुम्हारी से कहा कि देख, है तो वही, वैसे ही लम्बे लम्बे कान हैं और वैसी ही चाल-ढाल है । कुम्हारी ने भी कुम्हार की बात की ताईद की । तब कुम्हार ने अपने 'गधे' के गले में डालने के लिए रस्सा तैयार किया और कुम्हारी ने एक कूँडे में मोठ भरे । कुम्हार रस्सा हाथ में लेकर दरवाजे के पास तैयार हो कर खड़ा हो गया और कुम्हारी 'गधे' को मोठ से भरा कूँडा दिखला कर मोठ चरने के लिए आवाज दे-दे कर पुकारने लगी । चपरासी ने मना किया तो दोनों चपरासी पर विगड़ने लगे कि मास्टर को इतने रुपये देकर तो हमने अपने गधे को आदमी बनाया है और अब यह यहाँ आकर बैठ गया । हम इसके गले में रस्सा डाल कर अपने घर ले जाएँगे और इससे काम लेंगे ।

कुम्हार और कुम्हारी की बेहूदगी पर तहसीलदार को बड़ा गुस्सा आया और उसने आकर दोनों को एक-एक लात लगा दी । तब कुम्हार ने कुम्हारी से कहा कि साला गधे से तहसीलदार बन गया तो भी दुलत्ती झाड़ने की आदत तो नहीं गई ।

● मूरख चोर

एक छोटे स्कूल में गुरु जी बच्चों को जोर-जोर से पुकार कर हिसाब पूछ रहे थे कि बालको, मेरे पास दस हजार रुपये थे जिनमें से दो हजार मैंने लड़की के विवाह में लगा दिये और दो हजार रुपये अन्य कार्यों में खर्च हो गये, तो बतलाओ अब मेरे पास कितने रुपये शेष रहे ? सारे लड़के एक साथ बोले कि गुरुजी अब आपके पास छः हजार रुपये शेष हैं । उसी

समय एक चोर पाठशाला के पास से गुजर रहा था। उसने सोचा कि छः हजार रुपये मेरे लिए तो बहुत हैं। आज रात को इसी घर में चोरी करूँगा।

शाम हुई तो गुरु जी तथा सारे बालक अपने-अपने घर चले गए। रात को चोर पाठशाला में घुसा लेकिन उसे कहीं रुपये नहीं मिले। किसी आले से स्याही की दवात गिरी तो चोर के कपड़े रँग गये और अँधेरे में अनजाने हाथ मारने से किसी आले से पट्टी गिरी तो चोर का सिर फूट गया। काफी देर तक हैरान होकर भी चोर के हाथ जब कुछ नहीं लगा तो वह अपनी मूर्खता पर पछताता हुआ वहाँ से चला कि यहाँ आकर तो खामखाह सिर फुड़वाया।

● भगतण की चतराई

एक बनिया तीर्थाटन के लिए जाने को हुआ तो उसके सामने यह समस्या खड़ी हो गई कि अपनी पूँजी किसके पास छोड़कर जाए। बनिये के घर से थोड़ी दूरी पर एक साधु रहता था जो बड़ा 'निरापेखी' (निरपेक्षी) बना हुआ था। बनिये ने सोचा कि अपने रुपये महात्मा जी के पास रख छोड़ने चाहिएँ। यों सोचकर बनिया अपने रुपये लेकर महात्मा के पास गया। महात्मा ने कहा कि हम तो मोह-माया से परे हैं किसी के रुपये पैसे को हाथ भी नहीं लगाते, लेकिन तुम ले आये तो उधर एक कोने में गाड़ जाओ और आकर वहीं से निकाल लेना। बनिये को और भी खातिरी हो गई और वह रुपये गाड़कर चला गया।

पीछे से साधु ने रुपये निकाल कर दूसरी जगह गाड़ दिये। बनिया तीर्थाटन से लौटा तो साधु साफ नट गया। कोई साक्षी भी नहीं था। बनिया उदास मुँह अपने घर लौट गया। बनिये के पड़ोस में एक वेश्या का मकान था। बनिये ने वेश्या से सारी बातें कहीं तो वेश्या ने बनिये को धीरज बँधाया कि तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारे रुपये दिला दूँगी। मैं साधु के पास जाती हूँ और तुम थोड़ी देर पीछे आकर अपने रुपये माँग लेना। यों कहकर वेश्या ने खूब अच्छे गहने कपड़े पहने और रथ जुतवा

कर मँगाया। फिर उसने दासी को बुलाकर सारी बात समझा दी और स्वयं गहनों की पेटी लेकर रथ में बैठ कर साधु के पास चली।

रथ झनझनाता हुआ साधु की कुटिया पर पहुँचा। वेश्या ने साधु को प्रणाम किया और बैठ गई। साधु के पूछने पर वेश्या ने कहा कि महात्मन्, मैं घर में अकेली हूँ, मेरे पति दिसावर गये हुए हैं; आजकल नगर में बहुत चोरियाँ हो रही हैं अतः आप मेरे गहनों की यह पेटी अपने यहाँ रख लीजिए, मेरे पति आ जाएँगे तो मैं ले जाऊँगी। आप कृपा कर इतना कष्ट मेरे लिए कीजिए। इतने में बनिया भी वहाँ आ गया और अपने रुपये माँगने लगा। साधु ने सोचा कि अब बनिये के रुपए नहीं दिये जाएँगे तो जेवरों की पेटी हाथ से निकल जाएगी। इसलिए साधु ने उदासीनता दिखलाते हुए बनिये से कहा कि बच्चा, जिस जगह तुमने रुपये गाड़े थे वहीं पड़े होंगे, खोजकर देखले। यों कहकर साधु ने हाथ के इशारे से बनिये को वह स्थान दिखला दिया जहाँ साधु ने बनिये के रुपये गाड़े थे। बनिये ने अपने रुपये निकाल लिए और साधु को प्रणाम कर चलता बना। इतने में वेश्या की दासी हाँफती हुई दौड़ी आयी और बोली, बाई जी, मालिक दिसावर से आ गये हैं, आप शीघ्र घर चलें। दासी की बात सुन कर वेश्या ने बड़ा हर्ष प्रकट किया और साधु से बोली कि महात्मा जी, यह आपके चरणों के दर्शन का ही पुण्य प्रभाव है कि मेरे पति, जिनकी मैं बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा किया करती थी घर आ गये हैं। अब जेवरों की पेटी यहाँ रखने की आवश्यकता नहीं। यों कहकर वेश्या ने प्रणाम किया और शरारतपूर्ण हँसी हँसती हुई रथ की ओर बढ़ गई। दासी ने जेवरों की पेटी उठाकर रथ में रखी और महात्मा जी टापते रह गये।

● नाई को ठोलो, बाणिये को टक्को

एक नाई ने एक सेठ की हजामत बनायी। नाई को शरारत सूझी और हजामत बनाने के बाद उसने सेठ के सिर में एक 'ठोला' मार दिया। सेठ को गुस्सा तो आया लेकिन वह गुस्से को पी गया और उसने इनाम

स्वरूप नाई को एक टका भी दे दिया। नाई के हाथ एक अच्छा गुर लग गया। अब वह जिसकी भी हजामत बनाता उसके सिर में एक 'ठोला' अवश्य मार देता।

एक दिन नाई ने एक ठाकुर की हजामत बनायी और हजामत बना कर नाई ने ठाकुर के सिर में भी एक 'ठोला' मार दिया। ठाकुर को यह सह्य नहीं हुआ। नाई की इस बदतमीजी पर उसे बड़ा गुस्सा आया। पास ही तलवार पड़ी थी सो ठाकुर ने झट तलवार निकाली और नाई का सिर भुट्टा सा उड़ा दिया।

● बड़ां की बड़ी बात

एक सेठ बहुत मालदार था। उसकी बेटी का विवाह मँडा। 'सजन-गोठ' के वक्त लड़की के बाप ने समधी को बुलाने के लिए दो-तीन बुलावे भेजे लेकिन समधी हर बार यही कहता रहा कि आ रहे हैं। बहुत देर होने लगी तो बेटी के बाप ने फिर बुलावा भेजा। इस पर बेटे के बाप ने खीझ कर कहा कि ऐसी क्या जल्दी है, सगाजी क्या मोहर, गिन्नी परोसेंगे ? सेवकों ने जाकर यह बात अपने मालिक से कही तो सेठ बोला कि चलो कोई बात नहीं।

लेकिन बेटे वाले जब जीमने के लिए बैठे तो सचमुच ही सारे बरातियों को मोहर और गिन्नियाँ परोसी गईं। देख कर बेटे का बाप सन्न रह गया। मोहर और गिन्नियाँ तो खाई नहीं जा सकती थीं। निदान बेटे के बाप ने समधी से क्षमा माँगी और बोला कि ये मोहर और गिन्नियाँ तो उठाइये और भोजन परोसिये। लेकिन बेटी के बाप ने कहा कि साह जी साहब, थाली में परोसी हुई चीज वापिस नहीं उठायी जाती, यह तो जूठन है, हम इसे उठा कर कहाँ रखें ? फिर बेटी के बाप ने अपने आदमियों से कहा कि इस जूठन को उठाकर भंगिन को डाल दो और इन्हें भोजन परोसो। सारी मोहर और गिन्नियाँ उठाकर भंगिन को डाल दी गईं और फिर बरातियों को मिठाइयाँ परोसी गईं।

● गड़वै सें भेर होगी

एक सुनार के घर के आगे खाली जगह पड़ी थी। एक खाती के माँगने पर सुनार ने वह जगह काम करने के लिए खाती को बतला दी। खाती ने अपना अडँगा फैलाते-फैलाते सारी जमीन रोक ली। सुनार को यह बात बहुत बुरी लगी लेकिन अब खाती वहाँ से हटने का नाम नहीं लेता था। खाती और सुनार में नित्य झगड़ा होने लगा।

राजा ने सुनार को एक गड़ुवा घड़ने के लिए दिया था लेकिन खाती से झगड़ा होने के कारण सुनार गड़ुवा नहीं घड़ सका। राजा के सेवक कई बार आये लेकिन सुनार से गड़ुवा नहीं घड़ा गया।

एक दिन राजा ने सख्त हुक्म दिया कि सुनार आज ही गड़ुवा घड़ कर पेश करे। उस दिन सुनार का खाती के साथ जोरों का झगड़ा हुआ था। सुनार को बड़ा गुस्सा चढ़ा हुआ था लेकिन राजा का हुक्म सुनकर वह गड़ुवा बनाने के लिए बैठा, लेकिन गुस्से में चाँदी को पीटता गया और काफी बड़ा पात बन गया। गड़ुवे की जगह भेर तैयार हो गई। इतने में राजा का बुलावा फिर आ गया। सुनार उसी भेर को लेकर दरबार में हाजिर हुआ। भेर को देखकर राजा को बड़ा गुस्सा आया और वह सुनार को कड़ा दंड देना ही चाहता था कि सुनार ने अरज की कि अन्नदाता, मेरा कसूर नहीं है :

पहली काम मैं खोटो कीन्यो,
घर माँग्यो खाती नैं दीन्यो।
घड़ताँ घड़ताँ हुई अबेर,
घड़ै हो गड़वो, होगी भेर ॥

● कीकर छोड़ो कैर पधारो

एक जाट ने हवेली बनवायी। उस जगह एक कीकर का तथा एक कैर का पेड़ था। जाट ने सोचा कि कीकर के वृक्ष को यदि कटवा कर इसके तख्ते चिरवा लिये जायँ तो हवेली के सारे किवाड़ इसी में बन

जाएँगे । लेकिन गाँव के लोगों ने कहा कि कीकर के वृक्ष में 'खेतरपाल' (क्षेत्र-पाल) का निवास है अतः वृक्ष को कटवाना नहीं चाहिए । अनिष्ट की आशंका से जाटनी ने जाट को वृक्ष काटने से मना कर दिया ।

जाट ने सोचा कि अब तो युक्ति से काम लेना चाहिए । दूसरे दिन सबेरे वह सोकर उठा तो बोला कि रात को सपने में मुझे 'खेतरपाल' दिखलायी पड़े और मुझसे कहने लगे कि इस कीकर के वृक्ष में रहते-रहते मेरा जी ऊब गया है अतः मैं कीकर के वृक्ष को छोड़कर इस कैर के गाछ में रहना चाहता हूँ । तब मैंने भी खेतरपाल से प्रार्थना की :

खेतर-पाळ बलिहारै थारै,
थोड़ो कारज अड़्यो हमारै ।
कीकर छोड़ो कैर पधारो,
इतरो कारज म्हारो सारो ।

तब 'खेतरपाल' बाबा प्रसन्न और संतुष्ट होकर कीकर को छोड़कर कैर में प्रवेश कर गये । अब कीकर के वृक्ष को काटने में कोई हानि नहीं है ।

● चमार आपकी माया सागै लेग्यो

एक चमार के पास सौ, सवा सौ रुपये थे । उन्हीं के बल पर वह बोहरा बना हुआ था । चमार ने किसी को पाँच रुपये और किसी को सात रुपये ब्याज पर दे रखे थे । एक बार वह बीमार हुआ तो उसने सारे रुपये इकट्ठे कर लिये । चमार को जब जीने की आशा नहीं रही तो उसने मन में सोचा कि लोग कहते हैं कि माया किसी के साथ नहीं चलती, लेकिन मैं कोई ऐसी तरकीब करूँ कि अपनी माया (पूँजी) को साथ ही ले चलूँ ।

चमार ने घरवालों से कहा कि मेरा मन राबड़ी पीने को करता है सो मेरे लिए बहुत सारी राबड़ी बना दो, यही मेरी अंतिम इच्छा है । अनिच्छा होते हुए भी घरवालों ने राबड़ी बना दी । चमार ने राबड़ी से

भरी थाली अपने पास रखी और फिर सारे लोगों को झोंपड़े से बाहर निकाल दिया। चमार ने किवाड़ बन्द कर लिये और रावड़ी के सहारे उन रुपयों को एक एक करके निगल गया। ऐसा करने से चमार की मृत्यु उसी दिन हो गई।

दाह-संस्कार के पश्चात् घर वालों ने सारे घर को छान मारा लेकिन उन्हें एक रुपया भी नहीं मिला। सारे लोग हैरान थे कि आखिर रुपये गये तो गये कहाँ? सारे गाँव के लोग कहते थे कि चमार के पास बहुत रुपये थे। रुपयों का कोई सुराग नहीं लगा तो घरवाले निराश हो गये।

लेकिन तीसरे दिन जब वे फूल चुगने के लिए मरघट पर गए तो जहाँ चमार के शव को जलाया गया था वहाँ राख को कुरदने पर उन्हें राख में चाँदी का एक डला मिला। अब लोगों की समझ में चमार की बात आई कि चमार अपने रुपयों को साथ ले जाना चाहता था लेकिन रुपये उसके साथ नहीं गए। उसकी पूँजी यहीं रह गई।

● राव कैऊँ क जोधो?

एक गाँव में राव और जोधा नाम के दो ठाकुर भाई रहते थे। एक चमारी अपने घर के आँगन में बैठी अपने छोटे बच्चे को खिला रही थी और लाड़ से कह रही थी कि 'तुझे राव कहूँ या जोधा, तुझे राव कहूँ या जोधा?' संयोग से ठाकुर उसी वक्त उधर से गुजरा। चमारी की बात उसके कानों में पड़ी तो उसने बाड़ के ऊपर से झाँका और घुड़ककर चमारी से पूछा कि क्या कहा? ठाकुर को सामने देख कर चमारी हक्की-बक्की रह गई। वह सहमती हुई बोली कि ठाकराँ, मैं तो इस निगोड़े को कह रही थी. "तन्नै साँप खावै क 'बोगो"। ठाकुर मन में जान गया कि चमारी सफेद झूठ बोल रही है लेकिन फिर कुछ सोचकर आगे बढ़ गया। चमारी के भी जी में जी आया।

● मेरै धणी नैं आंधो कर दे

एक छिनाल औरत थी। वह नित्य मन्दिर में जाकर देवी से प्रार्थना करती कि मेरे पति को अंधा करदे। एक दिन उसका पति देवी की

मूर्ति के पीछे छुप कर बैठ गया और अपनी स्त्री के प्रार्थना करने पर बोला कि अपने पति को खूब माल-मलीदा बना कर खिलाया कर, वह शीघ्र ही अंधा हो जाएगा। औरत प्रसन्न मन घर आई और उसी दिन से अपने पति को माल-मालीदा खिलाने लगी।

कुछ दिन बाद उसका पति बोला कि चूखली की माँ, मेरे कीं तो आजकल कम दिखायी देने लगा है, इसका क्या करण है ? पति की बात सुनकर वह मन ही मन बड़ी प्रसन्न हुई। वह अब मलीदे में और अधिक घी डालने लगी। परिणाम स्वरूप उसका पति कुछ ही दिनों में पूर्णतया 'अंधा' बन कर खटिया पर बैठ गया।

अब वह औरत अपने यार को बुला लाई और सारे घर का सामान बाँधकर उसके साथ भागने की तैयारी करने लगी। उसका पति अंधा बना सब कुछ देख रहा था। जब सारा साज सामान तैयार हो गया और दोनों चलने को हुए तब वह लाठी लेकर उठा। पहले उसने उस आदमी को खूब पीटा और जब वह भाग गया तो अपनी औरत पर पिल पड़ा और बोला कि रंडी, क्या तू इसीलिए नित्य मंदिर में जाया करती थी और देवी से प्रार्थना करती थी कि मेरे खसम को अंधा बना दे।

● लुगाई को के भोली

एक ठाकुर ने विवाह किया। ठुकरानी घर आयी तो उसने ठाकुर से कहा कि जब भी मेरे कमरे में आओ, खखारा करके आया करो, कभी बिना खखारा किये मत आना। ठाकुर वैसा ही किया करता लेकिन एक दिन उसने सोचा कि आज तो बिना खखारा किये ही चलें, देखें क्या होता है। ठाकुर ज्यों ही कमरे में घुसा, उसने देखा कि ठुकरानी सिंहनी बनी बैठी है। ठाकुर का कलेजा काँप गया, वह उलटे पैरों लौटा और घर से भाग निकला। चलते-चलते वह एक गाँव में पहुँचा। उसने देखा कि एक घर में दो स्त्रियाँ गाय दुह रही हैं, एक ननद है, दूसरी भाभी। भाभी दूध निकाल रही है और ननद बछड़े को पकड़े है। ननद ने भाभी से कहा कि भाभी, दूध की

धार जरा धीरे मारो, दूध के फेन इतने जोरों से उठ रहे हैं कि मुझे तो डर लगता है। ठाकुर ने उसकी बात सुनी तो मन ही मन कहने लगा कि यह लड़की कितनी भोली है, विवाह तो ऐसी स्त्री से करना चाहिए, मैं भी किस बला में फँस गया था।

वह घर उस गाँव के ठाकुर का था। ठाकुर घर में चला गया। घर के मालिक को उसने अपना परिचय दिया तथा साथ ही उस लड़की से विवाह करने की अपनी इच्छा भी व्यक्त कर दी। लड़की के बाप ने ठाकुर की बात स्वीकार कर ली और अपनी बेटी का विवाह उस ठाकुर के साथ कर दिया। अब ठाकुर वहीं रहने लगा।

उधर ठाकुर की पहली स्त्री को इस बात का पता चला तो वह सिंहनी बनकर उस गाँव में आयी और गाँव के एक ऊँचे टीले पर चढ़कर दहाड़ने लगी। ठाकुर जान गया कि यह सिंहनी कोई और नहीं उसकी पहली स्त्री ही है जो उसकी मौत बनकर यहाँ आयी है। वह डर के मारे काँपने लगा। ठाकुर की नई स्त्री ने पूछा तो ठाकुर ने पिछली सारी घटना कह सुनायी। सुनकर वह बोली कि तुम चिन्ता न करो, मैं अभी इसका काम तमाम करके आती हूँ। यों कहकर वह नौहत्था नाहर बन कर वहाँ से चली और सिंहनी का काम तमाम करके शीघ्र ही लौट आई। ठाकुर यह सब देखकर और भी डर गया। वह सोचने लगा कि कहाँ तो यह दूध के फेन से डरती थी और कहाँ इसका यह भयंकर कर्म? नारी जाति से उसे वैराग्य हो गया और वह साधु बनकर एक दिन चुपचाप घर से निकल गया।

● आं को घर कइंया बसैगो

एक जमाई ससुराल से अपनी पत्नी को विदा कराके ले चला तो वह रोने लगी। उसे रोते देख उसका पति भी रोने लगा और उन दोनों को रोते देखकर जमाई के साथ आया हुआ उसका दोस्त भी रोने लगा।

घरवालों ने सोचा कि अचानक ऐसी क्या बात हो गई जो तीनों ही रोने लगे हैं। पूछने पर लड़की ने कहा कि मैं तो अपने माँ-बाप से बिछुड़ रही हूँ इसलिए रो पड़ी। जमाई ने कहा कि अपनी पत्नी को रोते देख मुझे

भी रोना आ गया। तब दोस्त से पूछा गया तो वह बोला कि मैं इसलिए रोया कि ये पति-पत्नी जब दोनों ही रो रहे हैं तो भला इनका घर कैसे बसेगा ?

● हराम को बेटो

रेलगाड़ी सिट्टी देकर चल पड़ी तो एक बनिया हाँफता हुआ दौड़ा आया और एक डिब्बे में चढ़ने की कोशिश करने लगा। बनिये के पास तीन-चार छोटी मोटी गठरियाँ थीं लेकिन डिब्बे में पुलिस के कुछ सिपाही बैठे थे जो छुट्टी लेकर अपने घर जा रहे थे। वे बनिये को डिब्बे में घुसने नहीं दे रहे थे। बनिये ने एक हाथ से डिब्बे का हैंडल पकड़ लिया, गाड़ी की गति क्षण प्रतिक्षण बढ़ती जा रही थी। अब न वह गाड़ी से उतर सकता था न डिब्बे में घुस सकता था।

बनिये ने सिपाहियों से कहा कि मैं आपको बड़ी मजेदार बातें कहूँगा, आप मुझे अन्दर आ जाने दीजिए। बनिये को मनोरंजन का साधन समझ कैर सिपाहियों ने उसे अन्दर घुस जाने दिया। बनिये के जी में जी आया। सिपाहियों ने बनिये से पूछा कि सेठ जी इन गठरियों में क्या लाये हो ? बनिया बोला कि मैं चार पाँच साल बाद घर जा रहा हूँ, दिसावर गया था, लेकिन अब सुना है कि मेरी स्त्री को लड़का हुआ है सो उसके लिए गोंद, सोंठ और अजवायन आदि चीजें ले जा रहा हूँ।

बनिये की बात सुनकर सारे सिपाही ठहाका मार कर एक साथ ही हँस पड़े और बोले कि सेठ जी, आप पाँच साल बाद घर जा रहे हैं तो वह आपका लड़का कैसे हुआ ? वह तो हराम का लड़का है। सेठ बोला कि मैं उसे अपना कब कहता हूँ ? मैं भी तो उसे हराम का ही समझता हूँ। उसे पाल-पोस कर पुलिस में भरती करा दूँगा सो वह भी आप लोगों के साथ ही रहा करेगा।

सेठ के इस कटु व्यंग्य को सुनकर सारे सिपाही धरती कुरेदने लगे।

● आदमी बोली सें पिछाण्यो जावै

एक राजा अपने साथियों के साथ शिकार खेलने के लिए वन में गया।

राजा ने एक हिरन का पीछा किया लेकिन हिरन भाग कर ओझल हो गया। राजा उसकी खोज में आगे बढ़ता गया। पीछा करते-करते राजा को एक सूरदास साधु तपस्या करता हुआ दिखलायी पड़ा। राजा ने सूरदास से बड़े मीठे स्वर में पूछा कि हे सूरदास जी महाराज, इधर से कोई हिरन भागता हुआ निकला हो तो कृपया बतलाइये। सूरदास ने उत्तर दिया कि नहीं राजन्, इधर से कोई हिरन नहीं गया। थोड़ी देर पीछे उधर से राजा का मंत्री गुजरा और उसने भी सूरदास से पूछा कि सूरदास जी, इधर से कोई हिरन तो भागता हुआ नहीं निकला ? सूरदास ने उत्तर दिया कि नहीं दीवान जी, कोई हिरन नहीं निकला। थोड़ी देर बाद हवलदार आया और उसने रोब से पूछा कि क्यों सूरदास, इधर से कोई हिरन तो नहीं गया। साधु ने कहा नहीं हवलदार, कोई हिरन नहीं गया। अन्त में सिपाही आया और उसने बड़े कठोर स्वर में सूरदास से पूछा क्यों रे अन्धे, इधर से कोई हिरन तो नहीं गुजरा ? सूरदास ने उत्तर दिया कि नहीं सिपाही, नहीं गुजरा।

आगे जाकर सब लोग इकट्ठे हुए और सबने अपनी अपनी बात कही तो सूरदास की विज्ञता पर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सब फिर सूरदास के पास आकर पूछने लगे कि आपके नेत्र नहीं हैं लेकिन फिर भी आपने हम सबको कैसे पहिचान लिया ? इस पर सूरदास ने उत्तर दिया कि मैंने आपकी बोली से (बोलने के ढंग से) आप सबको पहिचान लिया।

● गादड़ां नैं सोड़ भराई

रामगढ़ के सेठ बहुत प्रसिद्ध हुए हैं। एक बार 'बीड़' (जंगल) में सियार बोलने लगे तो सेठ ने अपने इर्द-गिर्द रहने वाले ब्राह्मणों से पूछा कि गीदड़ क्यों बोल रहे हैं ? ब्राह्मणों ने कहा कि सेठ जी, गीदड़ भूखों मर रहे हैं इसलिए पुकार-पुकार कर भोजन माँग रहे हैं। सेठ ने कहा कि इनको भर पेट लड्डू खिलाओ। बहुत सारे लड्डू बने और ब्राह्मण सारे लड्डू अपने-अपने घरों को ले गये। दूसरे दिन गीदड़ फिर बोले तो सेठ ने पूछा कि गीदड़ आज क्यों बोल रहे हैं ? ब्राह्मणों ने उत्तर दिया कि गीदड़ जाड़े के मारे काँप रहे हैं, इसलिए बोल रहे हैं। सेठ के हुक्म से गीदड़ों के लिए बहुत सारी रजाइयाँ

बनायीं गईं लेकिन वे सब रजाइयाँ ब्राह्मण लोग अपने अपने घरों को ले गये। तीसरे दिन गीदड़ फिर बोले तो सेठ ने ब्राह्मणों से फिर पूछा कि आज गीदड़ फिर क्यों बोल रहे हैं ? इस पर ब्राह्मणों ने उत्तर दिया कि सेठ जी, आज सारे गीदड़ मिल कर आपको आशीर्वाद दे रहे हैं।

● चोखी साची कोनी होवै, न्याऊ साची होज्या

एक गरीब आदमी के पास पीतल की एक टोकनी थी। यह टोकनी ही उसकी संपत्ति थी, इसके अतिरिक्त उसके पास और कुछ न था। उस आदमी ने यह बात सुन रखी थी कि आदमी के मुँह से दिन भर में निकलने वाली बातों में से एक बात अवश्य सत्य हो जाती है। इसलिए वह एक दिन अपनी टोकनी को प्रातःकाल ही अपने सामने रखकर बैठ गया और एक लकड़ी से टोकनी को पीट-पीट कर कहने लगा कि 'हो जा सोने की, हो जा सोने की'। ऐसा करते-करते शाम हो गई लेकिन टोकनी सोने की न बनी। वह आदमी बहुत हैरान और परेशान हो चला था अतः क्रोध में आकर बोल पड़ा कि सोने की न बने तो न सही लोहे की ही बन जा और उसी वक्त पीतल की टोकनी लोहे की टोकनी में परिवर्तित हो गई।

● उलड़ो-उलड़ी

एक था उलड़ा, एक थी उलड़ी। उलड़ा खेत पर काम करने के लिए जाता उलड़ी उसके लिए 'छाक' (भोजन) लेकर जाती। उलड़े की माँ उसके लिए हमेशा खिचड़ी बनाती और उसमें बहुत सारा घी डालती। लेकिन उलड़ी को रास्ते में एक बन्दर मिलता और वह उलड़ी से कहता :

उलड़ी ए उलड़ी, उतार तेरी कुलड़ी,
पंपोल मेरी पूँछड़ी, खाऊँ तेरी खीचड़ी।

उलड़ी डर के मारे खिचड़ी की थाली उसके आगे रख देती और स्वयं बन्दर की पूँछ सहलाने लगती। बन्दर घी युक्त खिचड़ी स्वयं खा लेता और उलड़े के लिए थोड़ी रूखी-सूखी खिचड़ी छोड़ देता। वह बची-खुची खिचड़ी ले जाकर उलड़ी उलड़े को दे देती।

एक दिन उलड़े की माँ खुद छाक लेकर गई, उस दिन बन्दर ने खिचड़ी नहीं माँगी। खिचड़ी देखकर उलड़े ने अपनी माँ से कहा कि माँ, आज तू तो खिचड़ी में बहुत घी डाल कर लायी है, बाई तो हमेशा रूखी-सूखी खिचड़ी लाती है। उसकी माँ ने कहा कि मैं तो नित्य इतना ही घी डालती हूँ।

उलड़ी से पूछने पर सारा भेद खुला तो दूसरे दिन उलड़ा अपनी बहिन के पीछे-पीछे चला। उसने एक मोटा सोटा अपने साथ ले लिया। बन्दर तो हिला हुआ था ही, उलड़ी को देखकर उसने नित्य की तरह ही कहा :

उलड़ी ए उलड़ी, उतार तेरी कुलड़ी,
पंपोल मेरी पूँछड़ी, खाऊँ तेरी खीचड़ी।

बन्दर खिचड़ी खाने लगा तो उलड़े ने पीछे से एक सोटा उसकी पीठ में जमा दिया। बन्दर की कमर टूट गई और वह फिर कभी खिचड़ी खाने के लिए नहीं आया।

● मूनियो ठग

बहुत सारी स्त्रियाँ मिट्टी लाने के लिए खंदक पर गई थीं। वे आपस में बातें कर रही थीं। कोई कह रही थी कि आज मुझे मेरा भाई लेने के लिए आएगा, कोई कह रही थी कि मुझे मेरा बाप लेने के लिए आएगा। लेकिन एक स्त्री ने कहा कि मुझे तो बाँबी का साँप भी लेने के लिए नहीं आएगा। वहीं खंदक पर 'मोहनिया' नाम का ठग बैठा था, उसने सोचा कि इसे लेने के लिए मैं जाऊँगा। सारी स्त्रियाँ मिट्टी ले लेकर चल पड़ीं। मोह-निया उस स्त्री के पीछे पीछे हो लिया और उसके घर चला गया। घर पहुँच कर उसने उस स्त्री से कहा 'बाई, राम-राम'। इस अनजाने भाई को देखकर वह औरत चौंकी, उसने कहा कि मेरे तो कोई भाई-भतीजा था ही नहीं, तू कहाँ से आ गया? मोहनिया बोला कि मैं बहुत वर्षों बाद घर लौटा हूँ, जब मैं घर से गया था तब तू बहुत छोटी थी। बहिन अपना सारा सामान बाँध कर 'भाई' के साथ ऊँट पर सवार होकर पीहर चल पड़ी। थोड़ी देर बाद बहिन ने पूछा कि घर कब आएगा तो 'भाई' ने सिर्फ 'हूँ' कर दिया। हूँ-हाँ करते करते वे काफी दूर निकल गये तो मोहनिया बोला कि राँड,

कैसा घर आएगा ? मैं तो तुझे ठग कर लाया हूँ। मोहनिये की बात सुनकर वह बेचारी सन्न रह गई।

दोपहर को मोहनिया एक वृक्ष के नीचे ठहर गया और स्त्री से बोला कि चूरमा बना ले। स्त्री चूरमा बनाने लगी, मोहनिया इधर-उधर चला गया। स्त्री ने सोचा कि न जाने यह दुष्ट मेरी क्या गत बनाएगा, इससे अच्छा तो यही है कि मैं विष खाकर मर जाऊँ। उस स्त्री के पास अफीम था सो उसने अपने लड्डू में वह अफीम मिला दिया। दोनों जीमने बैठे तो मोहनिये को सन्देह हुआ कि राँड ने लड्डू में कुछ मिला न दिया हो। इसलिए मोहनिये ने अपना लड्डू उस स्त्री को दे दिया और उसका लड्डू स्वयं खा गया। लड्डू खाते ही मोहनिया बेहोश हो गया। स्त्री ने सोचा कि अब हिम्मत से काम लेना चाहिए। उसने मोहनिये के वस्त्र उतार कर स्वयं पहने और मोहनिये को एक बोरे में भरकर और बोरे को ऊँट पर लादकर आगे चल पड़ी। अन्धेरा होते होते मोहनिये का गाँव आ गया। मोहनिये के दोस्तों ने 'मोहनिये' से पूछा कि मोहनिया आज तो बहुत माल मार कर लाया है ? 'मोहनिये' ने कहा कि हाँ, यह तुम भी लो। यों कह कर उसने वह बोरा नीचे ढकेल दिया। फिर उस औरत ने अपने घर की राह ली मोहनिये के दोस्त ठग 'धन' के बोरे को उठा कर खुशी-खुशी घर आये। घर आकर प्रथा के अनुसार उन्होंने खूब दाल-चूरमा बनाया। सारे घर वाले खुश थे कि आज अनायास ही धन का बोरा मिल गया है।

बच्चे चूरमा लेजा-लेजाकर उस बोरे पर धम्म से बैठते और खुशी खुशी चूरमा खाते। बच्चों के बार बार ऊपर गिरने से मोहनिये का नशा दूर हुआ और उसने बोरे के एक छेद में से थोड़ा सा मुँह निकाल कर बच्चों से कहा कि थोड़ा चूरमा मुझे भी दो। बच्चे भय के मारे उछल पड़े और अपने बाप के पास जाकर बोले कि बाबा, धन के बोरे में तो 'बलाय' (बला) है। बोरे को खोलने पर ठगों ने मोहनिये को पहिचाना और उससे सारी हक़ीक़त पूछने लगे। मोहनिया बोला कि यारो, मैं तो एक राँड को ठग कर लाया था लेकिन वही मुझे ठग कर ले गई।

अब मोहनिया और उसके छः अन्य दोस्त उस 'राँड' को फिर से लाने के लिए चल पड़े। वह भी जानती थी कि वे लोग बदला लेने के लिए आएँगे। इसलिए वह अपने कोठे में एक तेज धार वाला चाकू लेकर बैठ गई, मोरी के किवाड़ उसने खुले छोड़ दिये। एक ठग ने देखने के लिए मोरी में मुँह डाला तो उस औरत ने बड़ी फुरती से उसकी नाक काट ली। ठग ने अपना मुँह बाहर निकाला और नाक पर हाथ रखते हुए बोला कि अरे मुझे तो बर्रै ने काट खाया। दूसरे ने मुँह डाला और उसकी भी वही गति हुई, वह भी नाक पर हाथ रखते हुए बोला कि मुझे तो मधुमक्खी ने काट खाया। सबसे पीछे मोहनिया ने मोरी में मुँह डाला, उसकी भी वही गत हुई तो उसने मुँह बाहर निकाल कर कहा कि अरे, मेरी तो नाक ही उड़ गई। अन्य साथियों ने कहा कि हमारी भी नाक उड़ गई लेकिन हमने सोचा कि अब किसी की नाक साबित रह गई तो वह हमें चिढ़ायेगा, इसलिए हमने पहले नहीं कहा।

सातों ठगों ने विचार किया कि अब हम किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रहे अतः चलकर खेती करेंगे और खेत में ही रहेंगे। यों विचार कर सातों ठग खेती करने लगे। इधर उस औरत ने सोचा कि उन ठगों का धन किसी प्रकार हथियाना चाहिए। उसने एक दिन चूरमे के सात लड्डू बनाये और प्रत्येक ठग की एक एक कटी नाक हर लड्डू में डाल दी। फिर वह लड्डू लेकर ठगों के घर चली। मोहनिये के घर पहुँच कर उसने मोहनिये की माँ से कहा, मौसी, राम-राम, भाई कहाँ गये हैं ? मोहनिये की माँ ने कहा कि वे तो खेत पर गये हुए हैं। औरत ने कहा कि मैं अपने भाइयों के लिए लड्डू लायी हूँ सो उन्हें दे आ। 'मौसी' लड्डू लेकर खेत पर गई और इधर उसने चूल्हे और चक्की के नीचे जो धन गड़ा था उसे खोदकर पोटली बाँधी और चल पड़ी। इधर मोहनिये वगैरह ने लड्डू फोड़े और हर लड्डू में एक-एक नाक देखी तो वे जान गये कि वही राँड आ पहुँची है। वे भागे-भागे घर आये तो उन्होंने घर की हालत देखकर अपने सिर पीट लिये। उन्होंने निश्चय किया कि उस कुलटा को घर नहीं पहुँचने देंगे, रास्ते में ही पकड़ेंगे। यों सोच कर उन्होंने शीघ्रता से उसका पीछा किया।

अँधेरा हो जाने के कारण वह औरत एक ऊँचे वृक्ष पर छुपकर बैठ गई थी। संयोग से सातों ठग भी उसी वृक्ष के नीचे आकर सो गये। आधी रात को मोहनिये की आँखें खुलीं तो उस औरत ने मोहनिये से कहा कि तुम अकेले ऊपर आ जाओ मैं तुम्हें आधा धन दे दूँगी। मोहनिया ऊपर गया और जैसे ही उसने कहा कि 'ला' वैसे ही उस औरत ने मोहनिये की जीभ काट डाली। मोहनिया, अललल ल ल करता धड़ाम से नीचे गिरा। नीचे सोये ठग चौंककर उठे, उन्होंने जाना कि कोई भूत-प्रेत है सो वे छहों उठ कर भागे। मोहनिया भी अललल अललल करता उनके पीछे भागा।

सबेरा होने पर ठगों ने मुड़कर देखा तो मोहनिया उनके पीछे भागा आ रहा था। ठगों ने पूछा तो मोहनिये ने इशारों से सारी बात बतलायी। अब सातों ठग सौगन्ध खा गये कि उस राँड के गाँव की तरफ पैर करके भी नहीं सोयेंगे।

● कह बधाऊ बात

एक सेठ ने एक बाड़ा बनवाया और उसमें 'बधाउड़े' को नौकर रखा। बाड़े का 'फलसा' (एक तरह का किवाड़) बहुत मजबूत करवाया गया था। एक रात को बाड़े में चोर घुसे लेकिन कुछ 'फलसे' के नीचे दब कर मर गये। वहीं बाड़े में एक बाबा जी धूना तापते थे सो कुछ उस धूने में गिर कर मर गये। बाड़े में एक शमी वृक्ष था जिस पर एक भारी शकट टँगा हुआ था, संयोग से वह गाड़ा नीचे गिर पड़ा और कुछ चोर उस गाड़े के नीचे दब कर मर गये। बाड़े में एक मोर और कौवा रहते थे। कुछ चोरों को उन्होंने मिल कर मार डाला। बधाउड़े को डर लगा और वह एक गोंदी के वृक्ष पर छुप कर बैठ गया। सबेरे सेठ आया तो सेठ और बधाउड़े में निम्न संवाद हुआ :

सेठ—"कह बधाउड़ा बात"
बधाऊ—सेठां फलसै मार्‌या सात।
सेठ—हैं, या के होणी,
बधाऊ—च्यार मार्‌या बाबो जी की धूणी।

सेठ---आगै ?

बधाऊ---पाँच च्यार मार्‌या लुहाराँ हारै गाड़ै ।

सेठ---और ?

बधाऊ---पाँच च्यार मार्‌या कागै और मोर ।

सेठ---तूँ कइयाँ बंच्यो बधाउड़ा मेरा बूँदी ?

बधाऊ---सेठाँ मैं चढ़ बैठ्यो गूँदी ।

● आखरी सबक

एक राजा का बेटा गुरुजी के यहाँ पढ़ने के लिए जाया करता था। जब पढ़ाई पूरी हो गई तो गुरु राजा के दरबार में गया। राजा ने गुरु का बहुत सम्मान किया और कुँअर की पढ़ाई के विषय में पूछा। गुरु ने उत्तर दिया कि राजन् और तो सारी पढ़ाई पूर्ण हो चुकी है, सिर्फ एक सबक देना शेष रहा है सो वह कल मैं दरबार में आपके सामने ही दूँगा।

दूसरे दिन यथासमय गुरु दरबार में उपस्थित हुए। उन्होंने राजकुमार को अपने पास बुलाया। राजकुमार गुरु के चरण छूकर उनके पास खड़ा हो गया। तभी गुरु ने राजकुमार को दो बेंत लगा दिये और कहा कि अब तुम्हारी पढ़ाई पूरी हो गई, अब तुम जा सकते हो। राजकुमार को कभी किसी ने जुबान से कड़ा शब्द भी नहीं कहा था। बेंत पड़ने से वह तिलमिला उठा। राजा को भी बड़ा गुस्सा आया। राजा ने गुरु से पूछा कि गुरुजी यह कौन सा सबक है ?

गुरु ने उत्तर दिया कि राजन् यही राजकुमार समय पाकर राजा बनेगा। आज का यह सबक राजकुमार को आजीवन याद रहेगा और किसी अपराधी को दंड देते वक्त खूब सोच समझ कर देगा। आज राजकुमार को बेंत की पीड़ा का अनुभव हो गया है अतः यह बर्बरता से घृणा करेगा। गुरु की बात सुनकर राजा सन्तुष्ट हो गया।

● भली भई पी मर गयो

एक स्त्री रात को अपने पति को दूध पिलाने के लिए कटोरा भर दूध

लायी, लेकिन दूध बहुत गरम था और स्त्री की आँखों में नींद घुली जा रही थी। उसने तकिये पर सिर रखा और सिर रखते ही गहरी निद्रा ने उसे आ दबाया। उधर दूध की गंध से आकर्षित होकर एक साँप आ निकला, उसने दूध में मुँह डाला, लेकिन उबलते हुए दूध से उसका फन जल गया और साँप वहीं मर गया।

बहुत देर बाद जब उस स्त्री की आँखें खुलीं और उसने साँप को देखा तो वह एक बार तो डर गई लेकिन फिर सारी बात उसकी समझ में आ गई और वह प्रसन्न होकर बोली :

भली भई पी मर गयो, नातर होती राँड।
पाड़्योसण देती ओल्मो, हाकिम देतो डाँड ॥

अर्थात् यह अच्छा हुआ कि साँप दूध पीकर मर गया अन्यथा यदि दूध पीकर चला जाता और शेष विषयुक्त दूध में अपने पति को पिला देती तो बड़ा अनर्थ हो जाता, मैं विधवा हो जाती, पड़ोसिन सहानुभूति जतलाने के बजाय उपालंभ देती और हाकिम दंड देता कि इस कुलटा ने अपने पति को दूध में विष पिलाकर मार दिया।

● बेरो मन्नैं ई कोनी

एक बार गाँव के लोगों को एक बड़ा टिड्डा मिल गया। पहले उन्होंने कभी टिड्डा देखा नहीं था अतः सब आश्चर्य में डूबे एक दूसरे से पूछने लगे कि यह क्या है, यह क्या है ? लेकिन जब कोई हल नहीं निकला तो वे अपनी समस्या का समाधान करवाने के लिए लाल-बुझक्कड़ के पास गये। गाँव के लोगों की बात सुनकर और टिड्डे को देखकर बुझक्कड़ जी पहले तो हँसे और फिर रोये। लोगों ने बुझक्कड़ जी से पूछा कि यह क्या माजरा है जो आप पहले हँसे और फिर रोये ?

बुझक्कड़ जी ने कहा कि मैं हँसा तो इसलिए कि तुम इतने बड़े-बड़े हो गये और तुम्हें यह भी पता नहीं कि यह क्या है, तुम्हारी इस नासमझी हेर मुझे हँसी आ गई और रोया इसलिए कि पता मुझे भी नहीं है कि यह है क्या ?

● हारेड़ो सिर कोनी राखूँ

ठाकुर और सेठ नदी के किनारे खड़े थे। नदी में एक बड़ा सन्दूक तैरता आ रहा था। ठाकुर ने कहा कि सन्दूक भरा हुआ है। सेठ ने कहा कि सन्दूक खाली है। ठाकुर ने शर्त लगाने के लिए कहा। दोनों में शर्त हो गई कि जीतने वाला हारने वाले का सिर काट ले। सेठ ने सोचा कि यदि सन्दूक भरा हुआ होता तो उसका कुछ भाग पानी में अवश्य डूबा रहता और वह इतनी शीघ्रता से आगे नहीं बढ़ता, अतः मैं अवश्य जीतूंगा। लेकिन ठाकुर ने और ही चाल चल रखी थी।

सन्दूक एक किनारे लगा और खोलने पर खाली मिला। ठाकुर न सेठ से कहा कि मैं शर्त हार गया हूँ अतः आप मेरा सिर काट लें। सेठ ने सोचा था कि ठाकुर पर एहसान जताकर उसे छोड़ दूंगा लेकिन ठाकुर नहीं माना। उसने सेठ से कहा कि मैं हारा हुआ सिर नहीं रख सकता। यह सिर अब आपका हो चुका है अतः या तो इसे काट लीजिए अन्यथा इसे खाने के लिए अन्न और बाँधने के लिए 'साफा' (पगड़ी) दीजिए। सेठ से ठाकुर का सिर काटा नहीं गया अतः वह ठाकुर को अन्न और पगड़ी देने लगा। ठाकुर हर महीने आकर महीने भर का अन्न ले जाता और छः महीने में एक साफा ले जाता।

सेठ का बेटा दिसावर से आया और उसने ठाकुर की लाग देखी तो बेटे ने बाप से पूछा कि अमुक ठाकुर क्या अपने यहाँ नौकरी करता है? बाप ने सारी बात बेटे को बतला दी। अगली बार जब ठाकुर आया तो सेठ के बेटे ने ठाकुर से पूछा कि क्यों ठाकुर साहब, आपका यह सिर हमारा है न? ठाकुर ने हाँ भरी तो सेठ के बेटे ने कहा कि आप कल आएँ, इस सिर में से हमें एक आँख निकालनी है सो कल निकालेंगे तथा एक ओर की मूँछ भी काटेंगे। दोनों चीजें हमें दिसावर भेजनी हैं सो आप कल अवश्य आ जाएँ। ठाकुर ने हाँ तो भर ली लेकिन फिर उस सेठ की हवेली में जीते जी कभी नहीं आया।

● अब आप सैं भी गयो

एक स्त्री एक साधु की सेवा किया करती थी। साथ में उसका पुत्र भी साधु की सेवा के लिए जाया करता था। एक दिन स्त्री ने साधु को कुछ फल और मिठाई लाकर दी और कहा कि महात्मा जी, आज मेरे बेटे की सगाई हुई है। साधु ने कहा कि सो तो अच्छी बात है लेकिन अब वह हमदरे से तो हो गया अर्थात् हमारी सेवा करने के लिए अब वह नहीं आएगा। कुछ दिन बाद स्त्री ने साधु से कहा कि महात्मा जी आज मेरे बेटे का विवाह है। महात्मा ने कहा कि अब वह घर वालों से भी गया। फिर एक दिन उस स्त्री ने महात्मा से कहा कि आज मेरा बेटा 'मुकलावा' (गौना) कर लाया है। यह सुनकर महात्मा ने कहा कि अब वह अपने यार-दोस्तों से भी गया अर्थात् अब वह यार दोस्तों की बजाय पत्नी के सान्निध्य में अधिक रहना चाहेगा। फिर एक दिन जब उस स्त्री ने आकर कहा कि आज मेरे बेटे के लड़का हुआ है तो महात्मा ने हँस कर कहा कि अब वह अपने से भी गया अर्थात् अब वह अपनी परवाह न करके बच्चे की सुख-सुविधा का अधिक ध्यान रखेगा।

● देख्यो तेरो तेल-फुलेल

एक महाजन एक तेली के कुछ रुपये माँगता था। तेली ने रुपये नहीं दिये तो महाजन ने हाकिम के पास फरियाद की। हाकिम ने तेली को बुलाया तो तेली ने तेल से भरा एक घड़ा हाकिम के घर भेज दिया। तब हाकिम ने महाजन से कह दिया कि रुपये होने से मिलेंगे, इस वक्त तेली के पास रुपये नहीं हैं। तब महाजन ने हाकिम के पैर छूने का बहाना करते हुए एक मोहर उसके पैर के नीचे सरका दी। तब हाकिम तेली को धमकाने लगा कि महाजन के रुपये देने पड़ेंगे। तेली ने सोचा कि हाकिम तेल का घड़ा भूल गया है अतः हाथ जोड़ कर बोला कि तेल देखो, तेल की धार देखो। हाकिम तेली का आशय समझ कर बोला कि देखा तेरा तेल फुलेल, मेरे तलवे से और ही लग गई है। यों कहकर हाकिम ने महाजन को तेली से रुपये दिलवा दिये।

● भोज को साढ़ू

एक ब्राह्मण के कन्या विवाह योग्य हो गई लेकिन ब्राह्मण के पास कुछ भी नहीं था और वह सर्वथा अनपढ़ था। ब्राह्मणी ने कहा कि तुम राजा भोज के पास जाओ और जैसा मैं कहूँ वैसा करना। ब्राह्मण पहले तो झिझका लेकिन ब्राह्मणी के अधिक कहने-सुनने पर जाने को तैयार हो गया। ब्राह्मणी ने अपने पति को सारी बात समझा दी।

ब्राह्मण ने दरबार में पहुँच कर आवाज लगायी कि मैं राजा भोज का साढ़ू हूँ। राजा ने ब्राह्मण को अपने पास बुलाया तो ब्राह्मण ने लोहे की एक शलाका राजा के सामने रख दी। राजा ने तुरन्त एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ ब्राह्मण को दिलवा दीं। ब्राह्मण मोहरें लेकर दरबार से चल पड़ा और चलते वक्त दरबार में रेत की एक मुट्ठी डालता गया। ब्राह्मण के चले जाने पर दरबारियों ने राजा से कहा कि महाराज यह ब्राह्मण तो बिल्कुल गँवार और नीच था। इसे तो दंड मिलना चाहिए था लेकिन आपने तो इसे बड़ा भारी पुरस्कार दिया है इसका क्या कारण है? तब राजा ने दरबारियों से समझाकर कहा कि संपत्ति और विपत्ति दोनों बहनें हैं। मेरा सम्बन्ध संपत्ति से हुआ और ब्राह्मण का विपत्ति से इस अर्थ में वह मेरा साढ़ू है। लोहे की शलाका मेरे सामने रखने से ब्राह्मण का तात्पर्य यह था कि राजा, मैं तुम्हें पारस समझकर आया हूँ अतः तुम इस लोहे को सोना कर दो और बालू की मुट्ठी डालने का मतलब यह था कि मेरे जाने के बाद जो मेरी निंदा करेगा उसके सिर में धूल है।

राजा की बात सुनकर सारे दरबारी चकित रह गए।

● गरु की पिछाण

एक महात्मा उपदेश दे रहे थे। उनके चारों ओर उनके चेले तथा अन्य बहुत से लोग बैठे उपदेश सुन रहे थे। महात्मा जी का सिर बिल्कुल घुटा हुआ था और चमक रहा था। वहीं एक आदमी खड़ा था जो महात्मा के सिर की ओर टकटकी लगाये था। महात्मा के घुटे हुए चमकदार सिर को देखकर उसका मन वश में नहीं रहा और उसने अवसर पाकर महात्मा

के सिर में एक 'ठोला' (हाथ की मुट्ठी बन्द कर, मध्यमा उँगली को मुड़े हुए रूप में ही बाहर कर उससे प्रहार करना) कस कर जमा दिया। उसकी दुष्टता देखकर महात्मा जी के चेलों को बड़ा क्रोध आया, उन्होंने उस आदमी को पकड़ लिया। वे चाहते थे कि उस दुष्ट को पीट-पीट कर उसकी जान निकाल दें।

लेकिन महात्मा शांत मुद्रा में बैठे रहे, उनके माथे में जरा भी बल नहीं आया। उन्होंने अपने चेलों को शांत करते हुए कहा कि कोई आदमी एक टके की हाँडी लेता है तो वह भी उसे खूब ठोक-बजाकर देखता है। लेकिन यह भाई तो मुझे गुरु बनाना चाहता है अतः उचित ही है कि यह पहले मेरी परीक्षा कर ले। मैं तो इसके विवेक की तारीफ़ करता हूँ, तुम व्यर्थ ही क्यों गुस्सा करते हो ?

महात्मा जी के इस व्यवहार का उस आदमी पर जादू का सा असर हुआ और वह उसी वक्त उनका शिष्य बन गया।

● कथा सुणनैं को फल

एक बनिया कभी कथा-भागवत आदि नहीं सुनता था। एक दिन वह मन्दिर में किसी काम से गया। वहाँ कथा हो रही थी। बनिये ने झट अपने दोनों कानों में उँगलियाँ डाल लीं लेकिन फिर भी उसे इतनी बात सुनायी पड़ ही गई कि किसी भी भूत-प्रेत या देवता की परछाईं जमीन पर नहीं पड़ती।

एक रात वह बनिया अपने घर में सोया था कि आधी रात को एक आदमी काले कपड़े पहनकर और भूत बनकर उसे मारने के लिए आया। बनिया पहले तो उसे देखकर डरा लेकिन जब उसने दीवार पर उस 'भूत' की परछाईं गिरती देखी तो उसे ध्यान आ गया कि वास्तव में यह भूत नहीं है। उसने हिम्मत कर ली और 'भूत' को मार डाला जो वास्तव में उसका एक शत्रु ही था।

बनिये ने सोचा कि कथा के दो अक्षर सुनने मात्र से मेरी जान आज बच गई है अब नित्य नियम से कथा सुना करूँगा।

● जुग देख कर जीणो है

एक आदमी बहुत ही गरीब था। पूँजी के नाम पर उसके पास सिर्फ एक पैसा शेष था। उसने एक पैसे की मूली ली और उसे ही खाता हुआ चल पड़ा। मूली के पत्ते तोड़ कर उसने अलग फेंक दिये। वह आदमी अपनी इस हीन दशा पर बहुत पछताता हुआ जा रहा था। संयोग से उसके पीछे-पीछे एक उससे भी गरीब आदमी आ रहा था। उसके पास एक पैसा भी नहीं था, भूख जोरों से लग रही थी अतः उसने वे मूली के पत्ते उठा लिए और उन्हें ही खाता हुआ चलने लगा। पहले आदमी ने पीछे की ओर मुड़ कर देखा तो उसे अपनी हीन अवस्था पर यह सोच कर संतोष हो गया कि खैर अपने से भी गरीब आदमी इस दुनिया में हैं। जिन पत्तों को मैंने फेंक दिया था यह बेचारा उन्हीं से अपना पेट भर रहा है।

● मियाँजी की बुगची

एक मियाँ जी कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक सूई पड़ी मिल गई। सूई को लेकर वे काजी के पास गये और उन्होंने काजी से पूछा कि राह में कोई गिरी हुई चीज मिल जाए तो उसे लेना जायज है अथवा नाजायज। काजी ने व्यवस्था दी कि उस चीज को उठाकर तीन बार जोर जोर से आवाज लगा देनी चाहिए कि अमुक चीज किसकी है ? यदि उस चीज का मालिक आवाज सुन कर आ जाए तो वह चीज उसे दे देनी चाहिए अन्यथा उस चीज को वह स्वयं रख ले। तीन आवाज लगा देने से वह चीज हलाल हो जाती है अन्यथा हराम होती है। मियाँजी ने बड़े जोर से तीन आवाजें लगा दीं कि यह सुई किसकी है। आवाज़ सून कर सूई का मालिक आया और मियाँजी ने उसे दे दी।

दूसरी बार मियाँ जी को राह में किसी राहगीर की गिरी हुई एक बुगची मिल गई। बुगची देखकर मियाँजी का मन चलायमान हो गया। उन्होंने क़ाज़ी की व्यवस्था के अनुसार 'यह बुगची किसकी है' की तीन आवाजें लगायी लेकिन उन्होंने 'बुगची' शब्द का उच्चारण बहुत धीमा किया और 'किसकी' शब्द को इतनी शीघ्रता से और ऐसे ढंग से कहा कि कोई कुछ समझे ही नहीं। इस प्रकार मियाँजी ने 'बुगची' हलाल बनाकर रख ली।

● खां सा'ब कै रिपिये का सो टक्का

एक मियाँ जी मोदी की दुकान पर सौदा लेने गये। मोदी से उन्होंने पूछा कि आटा क्या भाव ? मोदी ने कहा, एक रुपये का पाँच सेर। मियाँ जी ने मोदी से कहा अजीब मूर्ख हो, पाँच सेर के भाव तो सभी लेते हैं, मियाँजी चार सेर के भाव लेंगे। यों कहकर उन्होंने चार सेर के भाव से एक रुपये का आटा ले लिया। फिर मियाँ जी ने पूछा कि हलदी क्या भाव ? मोदी ने कहा कि एक रुपये की सवा सेर। मियाँ जी ने फिर मोदी को डाँटते हुए कहा, अजीब अहमक हो ? सवा सेर के भाव तो अन्य सभी लोग लेते हैं, मियाँ जी एक सेर के भाव लेंगे। मोदी ने सोचा कि आज अच्छा बेवकूफ फँसा है। मियाँ जी ने चार-पाँच रुपये का सौदा लिया जिसमें उन्होंने मोदी को एक-डेढ़ रुपया अधिक दे दिया। अन्त में मियाँ जी ने कहा कि टका किस भाव ? मोदी ने कहा कि एक रुपये के बत्तीस। इस पर मियाँ जी बिगड़ कर बोले कि चल बेवकूफ, रुपये के बत्तीस टके तो सभी लेते हैं, खां साहब के रुपये के सौ टके होते हैं, क्या तुझे इतना भी पता नहीं ? ला पाँच रुपये के टके भी दे दे। लाचार मोदी को पाँच रुपये के टके सौ के भाव देने पड़े।

● च्यार मूरख

चार मूर्ख अपने-अपने घर से पच्चीस-पच्चीस रुपये लेकर कमाने के लिए चले। चलते-चलते चारों एक तेली के घर पहुँचे। तेली के यहाँ एक बूढ़ा और बेकार बैल खड़ा था। तेली को पच्चीस रुपये देकर उन्होंने बैल खरीद लिया और चल पड़े। थोड़ी दूर चलने पर बैल ने पेशाब किया तो मूर्खों ने आपस में कहा कि इस बैल का पेट तो फूटा हुआ है, तेली ने हमें फूटा हुआ बैल देकर ठग लिया है। वे चारों वापिस तेली के पास गये और उससे झगड़ा करने लगे कि तुमने हमें फूटा हुआ बैल देकर ठग लिया। तेली ने कहा कि मेरा बैल छोड़ दो और यह भैंस ले लो। भैंस की कीमत डेढ़ सौ रुपये है। मूर्खों ने कहा कि हमारे पास तो सिर्फ सौ रुपये हैं। भैंस बाँझ थी, अतः तेली ने बड़ी खुशी से सौ रुपये लेकर भैंस उनको सौंप दी। चारों मूर्खों ने भैंस के पेट पर हाथ फेर कर तसल्ली कर ली की भैंस फूटी हुई नहीं है।

भैंस लेकर चारों मूर्ख चले। चलते-चलते पानी का एक छोटा नाला आया। पानी उसमें बहुत मामूली सा ही था लेकिन मूर्खों ने सोचा कि इस नदी में हम डूब जाएँगे। किसी ने भैंस की पूँछ पकड़ ली और किसी ने सींग और भैंस उन चारों को नदी पार ले गई। नदी पार कर लेने पर चारों ने सोचा कि हममें से कोई नदी में डूब न गया हो अतः वे आपस में गिनती करने लगे। जो भी गिनता वह अपने को छोड़कर शेष तीन को गिनता। बार-बार गिनती करने पर भी जब वे पूरे नहीं हुए तो उन्हें विश्वास हो गया कि एक आदमी नदी में अवश्य डूब गया है।

चारों मूर्ख रोने लगे। इतने में वहाँ एक आदमी आया और उसने पूछा कि तुम सब क्यों रो रहे हो ? मूर्खों ने कहा कि हम चार आदमी थे लेकिन नदी पार करने में एक आदमी नदी में डूब गया है, इसीलिए हम रो रहे हैं। आगन्तुक ने कहा कि यदि मैं चार आदमी पूरे कर दूँ तो तुम मुझे क्या पुरस्कार दोगे ? मूर्खों ने कहा कि तुम यह भैंस ले लेना। तब उस आदमी ने चारों को एक पंक्ति में खड़ा किया और पहले को एक जूता लगा कर बोला, 'एक' फिर दूसरे को जूता मारते हुए बोला 'दो' फिर तीसरे को जूता लगाते हुए कहा 'तीन' और फिर चौथे को जूता मारकर कहा 'चार'। चार आदमी पूरे हो गये तो चारों बड़े प्रसन्न हुए कि नदी में डूबा हुआ साथी वापिस आ गया। वह आदमी भैंस को लेकर चला गया और चारों मूर्ख बड़ी कमाई करके खुश होते हुए अपने घरों को लौट पड़े कि नदी में डूबा हुआ आदमी वापिस मिल गया।

● थें चोखा, थें भला

एक बनिया अपने गाँव को जा रहा था। रास्ते में उसे दो ठाकुर मिल गये। ठाकुरों ने सोचा कि बनिये से उसका माल छीनना चाहिए। दोनों बनिये के पास गये और उससे बोले कि सेठाँ, हम दोनों में कौन भला है, कौन बुरा ? ठाकुरों ने सोचा कि जिसे बुरा बताएगा वही बनिये के रुपये छीन लेगा। लेकिन बनिया उनकी चाल को समझ गया और उन्हें टालन

की चेष्टा करता हुआ एक से बोला "ठाकराँ थे भला," फिर दूसरे से कहा "थे चोखा" अर्थात् एक भले हैं दूसर अच्छे हैं। ठाकुर माने नहीं, वे बार-बार बनिये से पूछते और बनिया बराबर आगे बढ़ता जाता। वह एक ठाकुर को एक हाथ से और दूसरे को दूसरे हाथ से आगे धकेलता और यह कहता कि मेरे लिए आप भले हैं और आप अच्छे। यों कहते-कहते बनिया गाँव में पहुँच गया। उसकी दुकान नजदीक आ गई तो वह अपनी दुकान पर चढ़ गया और दोनों से बोला कि भले और अच्छे कहने से तुम्हें संतोष नहीं होता तो सुनो, एक नालायक और दूसरा कमीना। अब जाओ मेरा पीछा छोड़ो। दोनों ठाकुर अपना सा मुँह लेकर वहाँ से आ गये।

● छुलग सैं भी आगै गई

एक चमार एक सेठ के यहाँ काम धन्धा करने के लिए आया करता था। एक दिन चमार आया तो बड़ा उदास था। सेठ ने चमार से उदासी का कारण पूछा तो चमार ने कहा कि मेरी छोटी लड़की मर गई है। सेठ ने चमार को धीरज देते हुए कहा कि आज एकादशी का दिन है सो तुम चिन्ता मत करो, लड़की सीधी स्वर्ग गई है। इस पर चमार बोला कि सेठ जी, वह स्वर्ग में ही क्या, स्वर्ग से भी कहीं आगे गई होगी क्योंकि वह बड़ी 'अचपली' (चँपल) थी, स्वर्ग में टिकने वाली नहीं थी।

● होठ बड़ा सा कर दिया

एक चमार शहर में गया तो उसने हलवाई की दुकान पर लोगों को दही-बड़े खाते देखा। हलवाई बड़े बनाता जा रहा था और उपस्थित जन बड़े चाव से बड़े खा रहे थे। चमार ने पूछा कि यह क्या पदार्थ है? उत्तर मिला, 'दही-बड़े'। चमार का मन भी बड़े खाने का हुआ लेकिन पास में पैसे नहीं थे अतः उसने निश्चय किया कि घर चलकर बड़े जरूर खाऊँगा।

लेकिन घर जाते-जाते चमार बड़ों का नाम भूल गया। उसने चमारी से कहा कि मुझ 'बै' (वे) बना दे। चमारी कुछ समझी नहीं। दो-चार बार कहने पर भी जब चमारी नहीं समझी तो चमार को बड़ा गुस्सा आया और

उसने चमारी के मुँह पर दो चार थप्पड़ लगा दिये । बेचारी चमारी रोने लगी और रोते-रोते बोली कि निपूते ने मेरे होठ सुजाकर बड़े से बना दिये । इस पर चमार बोला कि राँड, इतनी मार खाकर तूने यह नाम बतलाया, पहले ही क्यों नहीं बतला दिया ।

● मेरी सास मंगावै चीज

सावन की तीज आयी तो सास ने बहू को बाजार से मेहँदी लाने के लिए भेजा (राजस्थान में तीज के अवसर पर सौभाग्यवती स्त्रियाँ हाथों में मेहँदी अवश्य रचाती हैं) लेकिन उसके पति का नाम मेहँदा था अतः वह पंसारी से मेहँदी का नाम लेकर माँगने में संकोच कर रही थी। मेहँदी लिये बिना घर जाना भी उचित नहीं था अत: सोच विचार कर उसने पंसारी से कहा :

सावण का सतरा गया, आई नुहेली तीज ।
घाल तराजू तोल दे, मेरी सास मंगावै चीज ।।

अर्थात् सावन के सतरह दिन बीत गये हैं और नवेली तीज आ गई है, मेरी सास ने चीज मँगाई है सो तराजू में डाल कर तोल दो ।

दुकानदार समझ गया और उसने स्त्री को मेहँदी तोलकर दे दी ।

● थारै पाव ई कोनी होगो...

एक बुढ़िया की आदत थी कि जब पास-पड़ोस के लोग खेत जोतने के लिए हल लेकर जाते तो बुढ़िया उन्हें अवश्य टोक देती । उन लोगों को बड़ा बुरा लगता ।

आषाढ़ का महीना आया, वर्षा हुई तो किसानों ने सोचा कि बुढ़िया अवश्य टोकेगी सो वे सब मिलकर उसके पास गये और उससे बोले कि दादी, हम जब अनाज निकालेंगे तो आधा-आधा मन अनाज तुझे दे देंगे, कल जब हम खेत को जाएँ तो टोकना मत । बुढ़िया ने हाँ भर ली । लेकिन दूसरे दिन सबेरे जब वे हल और बीज लेकर खेतों की ओर चले तो पीछे से बुढ़िया ने आवाज लगायी कि सुनो रे बीरो, तुम्हारे खेत में चाहे पाव भर अनाज भी नहीं होगा, मैं तो अपना आधा-आधा मन अनाज सबसे ले लूँगी ।

किसानों ने सोचा कि इस राँड को इसलिए तो आधा-आधा मन अनाज

देना किया था कि यह हमें टोके नहीं लेकिन इसने तो सर्वप्रथम ही टोक दिया।

● बोझ तो मरसी

एक जाट और मियाँ दोस्त थे। वे प्रायः आपस में कभी-कभी मज़ाक भी कर लिया करतेथे। एक दिन मियाँ ने जाट से कहा कि आओ तुक मिलाएँ। मियाँ बोला, 'जाट रे जाट, तेरे सिर पर खाट।" जाट ने जवाब दिया, 'मियाँ रे मियाँ, तेरे सिर पर कोल्हू।" इस पर मियाँ बोला कि "जट्ट, तेरी तुक जँची नहीं। जाट ने उत्तर दिया कि तुक चाहे न मिले लेकिन सिर पर कोल्हू का बोझ इतना रहेगा कि तेरी खोपड़ी पिलपिली हो जाएगी।

● यो बाल़ तों बाँको है

एक ठाकुर को रुपयों की आवश्यकता हुई तो उसने सेठ के पास जाकर कहा कि सेठ जी, मुझे दो सौ रुपये चाहिए। सेठ ने पूछा कि रुपयों के एवज में क्या रखोगे तो ठाकुर ने अपनी मूँछ का एक बाल उखाड़ कर दे दिया। सेठ ने बाल लेकर हिफ़ाजत से रख दिया और ठाकुर को रुपये दिलवा दिये।

वहीं सेठ की गद्दी में एक जाट बैठा हुआ था। उसन सोचा कि रुपये लेने का यह तो बड़ा सुन्दर और सस्ता तरीका है, इससे लाभ उठाना चाहिए। यों सोच कर जाट ने सेठ से कहा कि सेठाँ, मुझे भी दो सौ रुपये चाहिए। सेठ ने पूछा कि रुपयों के बदले में तुम क्या वस्तु रेहन रखोगे ? जाट ने भी अपनी मूँछ का एक बाल उखाड़ कर सेठ को दिया और कहा कि यह बाल रख लो। सेठ ने बाल को देखकर कहा कि चौधरी, यह बाल तो टेढ़ा है। सेठ की बात सुनकर जाट ने अपना मुँह सेठ के सामने करते हुए कहा कि सेठ जी, आपको जो बाल सीधा लगे वह ले लीजिए।

इस पर सेठ ने हँसते हुए कहा कि चौधरी इस तरह बाल देने वालों को रुपये नहीं मिलते।

● काकलासर तो आ ढ़ूक्या

बीकानेर के महाराज एक बार शादी करने के लिए काकलासर गये।

काकलासर एक बहुत छोटा और साधारण गाँव है। महाराजा हाथी पर थे और जिस घर में उनकी शादी होनी थी उस घर की पोली (पोल) बहुत नीची थी। 'तोरण मारने' के लिए काफी नीचे झुकने की आवश्यकता थी अतः उपस्थित लोगों ने प्रार्थना की कि अन्नदाता, नीचा, नीचा। वहीं एक चारण खड़ा था। उसने कहा कि बीकानेर के महाराजा काकलासर तो आ ढुकें अब और क्या नीचे होंगे अर्थात् कहाँ बीकानेर के महाराजा और कहाँ यह साधारण घर ?

● फेर के माँडै के लाय लगाणी है ?

एक बुढ़िया की यह आदत थी कि पास-पड़ोस में विवाह शादी होने पर वह बिना बुलाये ही उस घर में चली जाती और प्रायः न कहने योग्य बातें कह देती। एक दिन उसके पड़ोसी के घर में लड़की का विवाह था। लड़की के बाप ने बुढ़िया के पास जाकर कहा कि बुढ़िया माई, आज तू हमारे घर न आना, माँड़ा (थाम) रोपने के बाद मैं तुम्हें एक रुपया और सेर भर मिठाई यहीं भेज दूँगा। यह सुनकर बुढ़िया बोली कि तब भला मुझे तुम्हारे घर आकर क्या माँड़ै को आग लगानी है, तुम मिठाई और रुपया यहीं भेज देना।

● मुनीम और नौकर

एक सेठ के एक नौकर रहा करता था। वह प्रायः सोचा करता कि मैं बड़े तड़के उठकर बहुत रात गये तक इतना काम करता हूँ लेकिन मुझे सिर्फ दस रुपये महीना मिलता है और यह मुनीम केवल चार घंटे आकर गद्दे पर मसनद के सहारे बैठ जाता है कुछ करता-धरता नहीं फिर भी इसे तीन सौ रुपये माहवार मिलते हैं। एक दिन नौकर ने सेठ से अपने मन की बात कह दी तो सेठ को हँसी आ गई। सेठ ने कहा कि कल तुझे इस बात का उत्तर दूँगा।

दूसरे दिन सवेरे ही सेठ ने नौकर से कहा कि दरिया पर जाकर जरा देख तो कि आज क्या आया है? नौकर दौड़ा-दौड़ा गया और लौटकर बोला कि एक

जहाज आया है। सेठ ने पूछा कि जहाज में क्या है ? नौकर फिर भागा और खबर लाया कि जहाज में चावल भरे हैं। सेठ ने नौकर से पूछा कि कैसे चावल हैं ? किस भाव के हैं ? नौकर फिर जाने ही वाला था कि इतने में मुनीम जी आ गये। सेठ ने मुनीम से कहा कि मुनीम जी जरा देखो तो आज दरिया पर क्या आया है ?

मुनीम गया और उसने सारे चावल खरीद लिए। बाजार कुछ तेज था अतः मुनीम ने आठ आने मन का मुनाफा लेकर सारे चावल दूसरे व्यापारी को ऊपर के ऊपर बेच दिये और मुनाफे के पाँच हजार रुपये लाकर सेठ के आगे धर दिये। वह नौकर भी तब वहीं था। मुनीम ने सारी बात संक्षेप में सेठ को बतला दी, नौकर ने भी मुनीम की बात सुनी और तब सेठ ने अर्थ-पूर्ण दृष्टि से नौकर की ओर देखते हुए कहा कि देख, मुनीम जी को इस बात के लिए तीन सौ रुपये मिलते हैं।

● भलो और बुरो

एक भला आदमी कहीं कमाने के लिए जा रहा था। रास्ते में उसे एक बुरा आदमी मिल गया। वह भी उसके साथ हो लिया। दोनों दोस्त बन गये। रास्ते में प्यास लगी तो दोनों कुएँ पर पानी पीने के लिए गये और बुरे आदमी ने भले को कुएँ में धक्का दे दिया। बुरा वहाँ से चलता बना। कुएँ में गिरने पर भी भले को चोट नहीं लगी और वह कुएँ की कोठी पर बैठ गया। उस कुएँ में दो जिंद रहते थे जो सबेरा होने से पहले चले जाते थे और रात होने पर लौटते थे। रात को दोनों जिंद आये और आपस में बातें करने लगे। एक ने कहा कि आजकल मैं तो बादशाह की शाहजादी के शरीर में प्रवेश कर जाता हूँ और पेट भर लड्डू खाकर वहाँ से निकलता हूँ। दूसरे ने पूछा कि क्या तुम्हें वहाँ से कोई नहीं निकाल सकता तो पहले ने कहा कि नहीं, इसका रहस्य किसी को मालूम नहीं है, जिस वक्त मैं शाहजादी के शरीर में प्रवेश करूँ उस वक्त यदि कोई नर-रक्त की कार मेरे चारों ओर लगा दे तो मैं उस शरीर को छोड़कर अन्यत्र चला जाऊँ और फिर कभी उसमें प्रवेश न करूँ। दूसरे ने कहा कि आजकल मैं भी बड़े ठाट से

रहता हूँ, अमुक स्थान पर एक बड़ का वृक्ष है, वहीं एक दरार है उस दरार में से होकर मैं उस वृक्ष के नीचे चला जाता हूँ। वहाँ बड़ा खजाना गड़ा है, इतना अधिक धन वहाँ पड़ा है कि उसका कोई शुमार नहीं। पहले ने पूछा कि तुम वहाँ से कैसे निकल सकते हो ? दूसरे ने उत्तर दिया कि वहाँ से मुझे निकालने वाला कौन है ? यदि उस दरार में भैंसे का खून और उबलता हुआ तेल डाला जाए तो अलबत्ता मुझे वहाँ से भागना पड़ेगा, लेकिन इस रहस्य को कोई नहीं जानता। यों कहकर दोनों जिंद बड़े जोर से हँसे। भला आदमी पहले तो बहुत डरा लेकिन फिर सँभल कर बैठ गया। सबेरा होने से पहले ही दोनों जिंद चले गये।

दूसरे दिन कोई बनजारा अपनी 'बालद' के साथ उधर से गुजरा। बनजारे के सेवक कुएँ से पानी निकालने के लिए गये और उन्होंने भले आदमी को बाहर निकाल दिया। वह चलकर बादशाह के नगर में आया। बादशाह की शाहजादी में जिंद घुसा हुआ था और बादशाह के नौकर टोकरे भर-भर कर लड्डू ले जा रहे थे। 'भला' वहाँ पहुँचा और उसने कहा कि मैं शाहजादी को ठीक कर सकता हूँ। बादशाह ने कहा कि तुम यदि सचमुच ऐसा कर दोगे तो तुम्हें बहुत भारी पुरस्कार मिलेगा और इस शाहजादी का विवाह भी तुम्हारे साथ ही कर दिया जायगा। जिंद की बतलायी हुई तरकीब से ही 'भले' ने जिंद को वहाँ से सदैव के लिए भगा दिया और बादशाह ने अपने वचन के मुताबिक शाहजादी का विवाह उसके साथ कर दिया और उसे बहुत धन दिया। अब 'भला' वहाँ खूब आनन्द से रहने लगा।

एक दिन भला आदमी अपने सेवकों के साथ बाजार में घूम रहा था कि 'बुरा' उसे दिखलायी पड़ गया। उसकी दशा बहुत खराब हो रही थी, बाल बढ़े हुए थे, कपड़े फटे हुए थे और भूख के मारे 'बुरे' का बुरा हाल हो रहा था। भले न उसे पहचान लिया और कहा कि दोस्त, मेरे साथ आओ। वह बुरे को अपने महल में ले गया। बुरे की हजामत बनवाकर उसे नहलाया-धुलाया गया तथा पहनने को नये वस्त्र दिये गए। भले ने बुरे से कहा कि आओ खाना खाएँ लेकिन बुरे ने कहा कि मैं अभी खाना नहीं खाऊँगा तुम

खा लो। भला आदमी खाना खाकर चला गया और अपनी पत्नी से कह गया कि यह मेरा भाई है इसे खूब अच्छी तरह भोजन कराना। भले के जाने के बाद बुरे ने बादशाह की बेटी से कहा कि मैं यहाँ भोजन नहीं करूँगा क्योंकि जिस आदमी के साथ तुम्हारी शादी हुई है वह वास्तव में हमारे गाँव का चमार है। बुरे की बात सुनकर शाहजादी सन्न रह गई। बुरा वहाँ से चल दिया। इधर शाहजादी उदास मन अपने बाप के पास गई और उससे सारी बात कह दी।

बेटी की बात सुनकर बादशाह को भी बड़ा गुस्सा आया और उसने अपने दामाद को पकड़ मँगवाया और उससे पूछा कि सच-सच बतला कि तू कौन है? 'भले' ने कहा कि किसी समय मेरे पूर्वज यहाँ राज्य करते थे, मैं भी बादशाह का बेटा हूँ। यदि आपको यकीन न हो तो मेरे साथ चलिये, मैं अपने पूर्वजों का खजाना आपको दिखलाऊँगा। बादशाह तथा उसके कर्मचारियों को लेकर 'भला' उस बड़ के वृक्ष के पास पहुँचा। उसने भैंसे का खून और खौलता हुआ तेल उस दरार में डाला। जिंद भाग गया। खुदवाई करायी गई तो वहाँ अपार धन राशि मिली। बादशाह भी देखकर दंग रह गया। उसे यकीन हो गया कि सचमुच ही उसका दामाद किसी बड़े बादशाह का वंशज है।

बादशाह ने अपने दामाद को ही अपना उत्तराधिकारी बना दिया। एक दिन फिर 'बुरा' उसको मिला तो उसने पूछा कि तू बादशाह कैसे बन गया सो मुझे बतला। 'भले' ने सारी बात बतलायी तो बुरा भी जाकर उसी कुएँ में गिरा और कुएँ की कोठी पर बैठ गया। रात को दोनों जिंद इकट्ठे हुए और एक दूसरे का हालचाल पूछने लगे। एक ने कहा कि हाल बहुत बुरे हैं, जिस दिन हम दोनों बातें कर रहे थे उस दिन न जाने यहाँ कौन छिपा बैठा था सो उसने हमारी बातें सुन लीं और उसने जाकर मुझे शाहजादी के शरीर से सदा के लिए निकाल दिया। बादशाह तो टोकरे भर-भर कर लड्डू खिलाता था लेकिन साधारण आदमी तो ऐसा नहीं कर सकता और तुम्हारी कसम, उसी दिन से भूखों मर रहा हूँ। दूसरे ने कहा कि मेरा भी

यही हाल हुआ। इतने में बुरा बोल उठा कि मैं बादशाह कैसे बनूँ इसकी तरकीब मुझे बतलाओ। जिंदों ने सोचा कि शायद यही वह दुष्ट है, दोनों उस पर टूट पड़े और उसकी बोटी-बोटी चबा गये।

● डूम और चोर

एक डोम के झोंपड़े के सामने राख, मिट्टी और कूड़े का बड़ा ढ़ेर लग गया। डोमनी ने कहा कि इस कूड़े के ढेर को खुदवा कर अलग फिकवाओ। डोम ने उत्तर दिया कि रात को चोर चोरी करने के लिए इधर से ही जाया करते हैं और वे अकसर चिलम सुलगाने के लिए अपने झोंपड़े से सरकंडे निकाल लिया करते हैं अतः कूड़े का ढेर उन्हीं से हटवाऊँगा। डोम-डोमनी ने मिलकर युक्ति निकाली और रात को जब चोर आये तो डोम ने उन्हें सुनाते हुए डोमनी से पूछा कि इस बार फलाँ यजमान ने तुम्हें जो सोने के कड़े दिये थे वे कहाँ हैं? डोमनी ने कहा कि चुप भी रहो, कोई सुन लेगा। मैंने वे कड़े झोंपड़े के सामने वाले कूड़े के ढेर में छुपा रखे हैं जहाँ किसी को सन्देह नहीं होगा।

चोरों ने सोचा कि आज अच्छे मुहूर्त्त से आये थे जो सोने के कड़े अनायास ही मिल जाएँगे। चोरों ने पहले कूड़े के ढेर को कुरेदा लेकिन जब उन्हें कड़े नहीं मिले तो उन्होंने निश्चय किया कि इसे ढेर को उठाकर कहीं दूर डाल दें और फिर दिन में आकर कड़े देख लेंगे। यों निश्चय करके वे पोटलियाँ बाँध-बाँधकर राख ढोने लगे और सवेरा होने से पहले ही उन्होंने सारा ढेर साफ़ कर दिया। दूसरे दिन जब चोर राख बरसा-बरसा कर कड़े ढूँढ़ रहे थे तो डोम उधर से निकला। डोम ने खखारा किया, चोर सहमे। डोम ने कहा कि यजमान, हमारे पास कहाँ सोने के कड़े रखे थे, डोमनी कई दिन से कह रही थी कि इस कूड़े के ढेर को अलग फिकवाओ सो मैंने तो एक तरकीब निकाली थी, अब आप व्यर्थ ही क्यों परेशान होते हैं? चोर खिसिया कर रह गये। लेकिन रात को वे बदला लेने के लिए डोम के घर में घुसे, उधर डोम भी बेखबर न था। उसने एक जहरीला बिच्छू एक तंग मुँह के करवे में बन्द करके 'हटड़ी' (पुराने ढंग की आलमारी) में छोड़ दिया।

चोर आये तो डोम ने डोमनी से पूछा कि अमुक यजमान ने प्रसन्न होकर तुम्हें जो कीमती 'मूँदड़ा' (अँगूठी) दिया था वह कहाँ है। डोमनी ने धीरे से 'मूँदड़े' का पता बतला दिया। चोरों ने भी सुना। एक भागा-भागा गया और उसने करवे में उँगली डाली। बहुत समय से बन्द रहने के कारण बिच्छू क्रोध में भरा बैठा था उसन चोर की उँगली में काट लिया। वह हाय-तोबा मचाने लगा तो डोम ने व्यंग्य से कहा क्यों यजमान, सँकरा है क्या ? डोम को जगा हुआ जानकर चोर भाग गये लेकिन जिसकी उँगली में बिच्छू ने काट लिया था वह एक 'कुठले' में छुप गया।

डोम न चोर को छुपते हुए देख लिया। उसने डोमनी से कहा कि आज मुझे तो नींद नहीं आती है, हुक्का भर कर ला दे। डोम ने जान-बूझकर कुठले में ही कुल्ले किये, उसी में खखार डालता रहा और हुक्का पीकर उसने हुक्का भी कुठले में ही झाड़ दिया। चोर का शरीर झुलस गया लेकिन वह चुप मारे रहा। उसने सोचा कि डोम अनजाने ही यह सब कर रहा है। सबेरा हुआ तो डोमनी फिर डोम के लिए हुक्का ताजा करके लायी। डोम ने डोमनी की ओर जान बूझकर थूक दिया तो डोमनी नाराज होकर बोली कि, धनी, सवेरे-सबेरे यह क्या किया ? डोम बोला कि वाह, इतने में ही नाराज हो गई, जरा उस यजमान का धैर्य भी देखो कि रात भर से कुठले में बैठा चुपचाप सब कुछ सहन कर रहा है। डोम की बात सुनकर चोर कुठले में से निकला और उसन सौगन्ध खायी कि फिर कभी किसी डोम के घर चोरी करने के लिए नहीं जाऊँगा।

● सरवर-सुलतान और नफरे-नफरान

सरवर-सुलतान और नफरे-नफरान नाम के दो मुसलमान भाई कमाने के लिए चले। रास्ते में उन्हें एक जाट मिला। जाट ने कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ कमाने चलूँगा। सरवर-सुलतान ने जाट को दो रुपये दिये और कहा कि खाना बना ले। जाट ने खीर बनायी, लेकिन उसने सोचा कि सारी खीर मेरे हाथ लग जाए तो अच्छा रहे। यों सोचकर उसने आटे का एक 'किर-काँटिया' (जानवर विशेष जिसे मुसलमान अपना बैरी समझते हैं) बनाया

और उसे खीर में डाल दिया। जब जाट दोनों भाइयों को खीर परोसने लगा तो उसने जान-बूझकर 'किरकाँटे' को भी खीर के साथ उँडेल दिया और बोला कि अरे रे खीर में तो तुम्हारा दुश्मन पड़ा है। दोनों ने जाट से कहा कि सारा खाना फेंक दे। जाट ने कहा कि आप लोग खीर न खाएँ, फेंकने से क्या फायदा होगा, मैं खा लूँगा। जाट ने सारी खीर उदरस्थ कर ली। दोनों भाइयों ने जाट से कहा कि तेरा और हमारा साथ नहीं निभेगा, तू चला जा। जाट के जाने के बाद दोनों भाई वहाँ से चल पड़े और चलते-चलते शहर में आये। शहर में आकर उन्होंने एक मकान किराये पर लिया। फिर सरवर-सुलतान ने नफरे-नफरान से कहा कि मैं काम की तलाश में कचहरी जाता हूँ, तुम दलिया पका लेना।

नफरे-नफरान को दलिये में डालने के लिए नमक की आवश्यकता हुई लेकिन जब ढूँढ़ने पर भी उसे नमक नहीं मिला तो वह सरवर-सुलतान से पूछने के लिए कचहरी गया। वहाँ दोनों में इस प्रकार बातचीत हुई:

ओ भाई सरवर सुलतान,
क्यों भाई नफरे-नफरान ?
सफेद मोती बिन
काली हो रही है हैरान।

सफेद मोती से मतलब नमक से था और काली से मतलब काली हाँडी से था, जिसमें दलिया पक रहा था। सरवर-सुलतान ने नमक का पता बतलाया, "ऊपर बारी, नीचे ताख"। कोई दरबारी उनकी बातचीत का आशय नहीं समझा। लेकिन जब नफरे-नफरान घर आया तो उसने देखा कि एक कुत्ते ने हाँडी नीचे गिराकर फोड़ डाली है, हाँडी का 'गलवा' (गला) कुत्ते की गर्दन में है और कुत्ता जमीन पर गिरा हुआ दलिया चाट रहा है। यह सब देखकर नफरे-नफरान फिर कचहरी गया। दोनों में फिर निम्न बातें हुईं:

ओ भाई सरवर-सुलतान !
क्यों भाई नफरे-नफरान ?

गल कंठे चौड़े मैदान,
काली हो रही है हैरान ।

फिर सरवर-सुलतान ने अपने भाई को समझाया, "घर बूचे पर पलाण' अर्थात् बिना गले का जो एक घड़ा पड़ा है उसमें दलिया राँध ले । नफरे-नफरान घर आया और उसने घड़ा चूल्हे पर चढ़ाया, लेकिन दलिये को चलाने के लिए उसके पास जो 'डोई' थी वह घड़े में नहीं आती थी क्योंकि घड़े का मुँह बहुत सँकरा था । इसलिए नफरे-नफरान फिर दरबार में गया और बोला :

ओ भाई सरवर-सुलतान,
भाई ने पूछा—**क्यों भाई नफरे-नफरान ?**
उत्तर मिला—**बूचा नहीं लेता है लगाम ।**
इस पर आदेश हुआ—**'घर साले पर उलटा पलाण,**
अर्थात् 'डोई' को उलटी तरफ से काम में लो ।

• पिलगाण ल्यो पिलगाण

एक मियाँ जी को एक 'सेरू' (चारपाई की एक छोटी भुजा) मिल गया । मियाँ जी ने कहा कि यह तो पलँग ही है और वे उसे बेचने के लिए निकले । मियाँ जी आवाज लगाते थे :

दोय तो लमगाण नहीं हैं, एक नई है सिराण ।
च्यारूँ पाया मूल नहीं, पिलगाण ल्यो पिलगाण ।।

अर्थात् पलँग की दो लम्बी भुजाएँ नहीं है, एक छोटी भुजा नहीं है तथा चारों पाये तो कतई नहीं है, कोई पलँग लो, कोई पलँग लो ।

रूपांतर

दो ईस नहीं, दो सेरू नहीं अर तीन नहीं टिकावू ।
बीच को झकझोल नहीं या खाट है बिकावू ।।

• घोड़ी म्हारी ज़ीभ कै बाँधो

एक सेठ अपनी हवेली के चबूतरे पर बैठा था । उधर से एक ठाकुर

अपनी घोड़ी पर चढ़ा हुआ निकला। सेठ ने ठाकुर से कहा ठाकराँ, राम-राम। बस ठाकुर को और क्या चाहिए था। वह घोड़ी पर से उतर पड़ा और सेठ से पूछने लगा कि सेठजी, घोड़ी कहाँ बाँधी जाए ? सेठ जान गया कि ठाकुर से राम-रमी कर ली तो इसे ठहराना भी पड़ेगा अतः उसने ठाकुर से व्यंग्य के साथ कहा कि ठाकुर साहब घोड़ी मेरी जीभ से बाँध दीजिए क्योंकि यह चुपकी नहीं रही और इसने आप से राम-रमी की।

● जनानो पग तो टिक्यो

एक मियाँ जी बूढ़े हो चले लेकिन उनका विवाह नहीं हुआ। मियाँ जी विवाह करने के लिए बड़े इच्छुक थे लेकिन औरत उनके भाग्य में बदी ही नहीं थी। एक दिन एक मुर्गी मियाँ जी के घर में घुस गई तो किसी पड़ोसी ने कहा कि मियाँ जी आपके घर में मुर्गी घुस गई है। मियाँ जी ने इसे अपना अहोभाग्य माना और बोले कि शुक्र है ख़ुदा का जो आज मेरे घर में भी जनाना पैर तो टिका।

● मियों वफ़ात पाग्यो

जाट और मियाँ दोनों सेना में भर्ती हुए। मियाँ मारा गया और कुछ समय बाद जाट अपने घर लौटा। रास्ते में मियाँ का गाँव पड़ता था। जाट को भूख लग आई थी अतः उसने सोचा कि मियाँ के घर खाना खाता चलूँ।

मियाँ की बीबी के पास जाकर जाट ने कहा कि बीबी, तुम्हारे मियाँ ने 'विलायत' पायी है। बीबी ने सोचा कि मियाँ जी बड़ी तरक्की कर गये हैं अतः इसे शुभ संवाद मानकर बीबी ने जाट को खूब अच्छी तरह भोजन कराया। भोजन कर लेने के पश्चात् जाट ने बीबी से पूछा कि बीबी, तुम्हारे यहाँ जब कोई मर जाता है तो उसे क्या कहते हैं ? बीबी ने कहा कि वफ़ात पाना कहते हैं। बीबी की बात सुनकर जाट बोला कि तुम्हारे मियाँ ने तो वही पायी है। बीबी सुनकर सन्न रह गई। उसने जाट से कहा कि निगोड़े, पहले ही यह बात क्यों नहीं बतलायी ?

● बखत की सूझ

प्रथम विश्वयुद्ध में एक भारतीय राजा भी अँगरेजों की तरफ से मोर्चे पर गया था। लेकिन मोर्चे पर जाकर राजा घबड़ा गया। उसने सोचा कि किसी न किसी तरह अपने देश चलूँ तो अच्छा रहे, लेकिन छुट्टी मिलती न थी। कुछ सोच-विचार कर राजा ने अपने मंत्री को तार देकर पूछा कि मा जी (माताजी) कैसी हैं, तुरंत जवाब दो। मा जी तो सर्वथा स्वस्थ थीं। सभी को यह तार पाकर आश्चर्य हुआ लेकिन दीवान अपने मालिक का आशय समझ गया और उसने जवाब दिया कि मा जी सख्त बीमार हैं, कृपया फौरन आएँ। उस तार की बदौलत राजा को छुट्टी मिल गई और वह अपने राज्य में आ गया।

● तेरी मा नैं हिरणी कर देस्युं

एक जाट के लड़के की माँ बीमार हो गई। लड़का पास के शहर में गया और वहाँ से एक वैद्य को बुलाकर लाया। जाटनी से हिला-डुला भी नहीं जाता था। लेकिन वैद्य ने उसे देख-भालकर लड़के से कहा कि तू चिन्ता न कर, तेरी माँ को हिरनी बना दूँगा अर्थात् आज इससे चाहे हिला-डुला भी नहीं जाता है लेकिन दवा लेने से यह हिरनी की तरह भागने लगेगी। लेकिन लड़का वैद्य की बात सुनकर रोने लगा। वैद्य ने पूछा कि तू रोता क्यों है तो लड़के ने उत्तर दिया कि मेरी माँ मर जाएगी तो भी मेरे से तो चली जाएगी और यदि हिरनी बन जाएगी तो भी मेरे हाथ नहीं आएगी। दोनों प्रकार से ही मैं अपनी माँ से वंचित हो जाऊँगा, फिर तुम्हें किस बात के पैसे दूँ ? तुम अपने घर जाओ।

● जहानखाँ अर तुझे खाँ

एक मियाँ अपने मन में बड़ा तीसमारखाँ बना फिरता था, किसी को कुछ समझता ही न था। एक दिन उसे एक दूसरा मियाँ मिला। दूसरे ने उससे पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है तो पहले ने बड़ी अकड़ के साथ उत्तर दिया कि मेरा नाम जहानखाँ है, तुम्हारा क्या नाम है ? दूसरे ने उससे भी अधिक ऐंठ से कहा कि अरे, मेरा नाम नहीं जानता ? मेरा नाम तुझे-खां

अर्थात् तुझे खाने वाला है। दूसरे की बात सुन कर पहला मियाँ ढीला पड़ गया।

● पुराणो सो स्याणो

एक सेठ का व्यापार बहुत फैला हुआ था। कई दिसावरों में उसकी गद्दियाँ थीं। लेकिन सेठ के मरने के बाद उसके बेटे ने काम को अच्छी तरह नहीं सँभाला। उसने पुराने-पुराने सभी आदमियों को निकाल कर नये आदमी रख लिये। फलतः काम-काज बहुत ढीला हो गया।

एक दिन सेठ के बेटे पर दस हजार रुपये की दर्शनी हुंडी आ गई। गल्ले में रुपये थे नहीं लेकिन हुंडी का सिकरना बहुत आवश्यक था। लड़का उदास मुँह अपने घर गया तो उसकी माँ ने पूछा कि बेटा आज क्या बात है? बेटे ने सारी बात बतलायी तो माँ ने कहा कि रुपयों का बन्दोबस्त होने में कुछ समय लग जाएगा, तुम अपनी सारी शाखाओं को लिखो कि रुपये शीघ्र भेजें लेकिन तब तक हुंडी खड़ी नहीं रह सकती, इसलिए तुम अपने बूढ़े मुनीम को बुलवाओ।

बूढ़े मुनीम को बुलावा भेजा गया। मुनीम बहुत बूढ़ा हो चला था, जाड़े की ऋतु थी अतः कुछ समय पश्चात् बूढ़ा मुनीम रूई की मिरजई पहने और दुशाला ओढ़े जाड़े के मारे काँपता हुआ दुकान पर आया। मुनीम ने कहा कि आज तो बहुत जाड़ा पड़ रहा है, जरा सिगड़ी तो मँगवाओ। मुनीम के लिए सिगड़ी मँगवायी गई। हुंडी लाने वाले ने हुंडी मुनीम के हाथ में दी और मुनीम काँपते हुए हाथों से हुंडी पढ़ने लगा। मुनीम के हाथ ठंढ के मारे अब भी काँप रहे थे और हुंडी मुनीम के हाथों से छूट कर सिगड़ी में गिर पड़ी। हुंडी जल गई तो मुनीम ने हुंडी लाने वाले से खेद प्रकट करते हुए कहा कि भाई, हुंडी तो मेरे हाथ से गिर कर जल गई, अब तुम इसकी पैठ मँगवा लो। पैठ आते ही तुम्हें रुपये मिल जाएँगे।

हुंडी वाला आदमी यह नहीं जान सका कि मुनीम ने हुंडी जान-बूझकर सिगड़ी में डाली है। सेठ का फर्म बहुत बड़ा था और मुनीम का भी काफी प्रभाव था अतः उसने मुनीम से कहा कि मुनीम जी, कोई बात नहीं, पैठ

आ जाएगी। वह आदमी चला गया तो सेठ के बेटे ने मुनीम के पैर पकड़ लिए और उसे फिर बड़ा मुनीम बना दिया।

● गम बड़ी

एक जाट की औरत बदकार थी। वह हमेशा अपने पीहर में ही रहा करती, किसी प्रकार ससुराल नहीं जाती थी। एक बार उसका पति उसे लेने के लिए आया तो घर वालों ने उसे ससुराल भेज दी। रास्ते में जाटनी ने कहा कि मैं तो बहुत थक गई हूँ अतः रात भर इस कुएँ पर विश्राम लेना चाहिए। दोनों कुएँ पर ठहर गये। जाट को नींद आ गई तो जाटनी ने उसे कुएँ में गिरा दिया और स्वयं अपने पीहर आ गई। घरवालों के पूछने पर उसने कह दिया कि वह निगोड़ा मुझे सोती हुई छोड़कर कहीं चला गया। उधर जाट को भी दूसरे दिन किसी ने कुएँ से निकाल दिया और वह अपने घर चला गया। घर वालों के पूछने पर उसने कह दिया कि मेरी ससुराल वालों ने मेरी औरत को भेजा नहीं।

कई वर्ष बीत गये। जाटनी की युवावस्था बीत चली तो यारों ने उसकी सुधि छोड़ दी। जाट को भी इस बात का पता लग गया और वह फिर अपनी स्त्री को लाने के लिए अपनी ससुराल गया। अब जाटनी के लिए पीहर में कोई आकर्षण नहीं रह गया था अतः वह ससुराल आ गई। समय बीतता गया। जाट-जाटनी बूढ़े हो गये। बेटे पोतों से घर भर गया। जाट सम्पन्न था अतः घर में किसी बात की कमी न थी।

एक दिन जाटनी बिलोना बिलो रही थी और जाट अपनी गोद में पोते को लिए बैठा था। 'गम बड़ी रे गम बड़ी' कह कहकर जाट अपने पोते को खिला रहा था। जब ऐसा करते-करते बहुत देर हो गई तो जाटनी ने जाट से पूछा कि आज यह क्या रट लगा रहे हो? जाट ने बात टालनी चाही, लेकिन जाटनी नहीं मानी तो जाट बोला कि वास्तव में ही गम बहुत बड़ी चीज है, यदि मैं गम न खाता तो आज इतने बेटे पोते कहाँ से होते, क्या तुम उस रात की कुएँ वाली बात भूल गईं? जाटनी को सपने में भी गुमान नहीं था कि जाट उस बात को अपने मन में दबाये बैठा है। जाट के मुँह से

यह बात सुनकर जाटनी के मुँह से निकला 'हैं' और 'हैं' के साथ ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

● खोदसी जिको ई पड़सी

बादशाह और वज़ीर वेष बदलकर शहर में घूमने निकले। उन्होंने देखा कि एक लड़का गढ़ा खोद रहा है। वज़ीर ने पूछा कि लड़के तू गढ़ा क्यों खोदता है तो लड़के ने उत्तर दिया कि तुम्हें इससे क्या मतलब है? जो खोदेगा वही उसमें गिरेगा। लड़के का उत्तर सुन कर वजीर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने लड़के को अपने साथ ले लिया।

लड़के को घर लाकर वह पढ़ाने-लिखाने लगा। वजीर के भी उतना ही बड़ा लड़का था। दोनों साथ-साथ पढ़ते, लेकिन वज़ीर के लड़के से वह लड़का बहुत होशियार था। वज़ीर को ईर्षा हुई और उसने उस लड़के को जान से मरवा देने की ठान ली। वजीर कसाई के घर गया और उसने कसाई से कहा कि तुम्हारे पास एक लड़के को मांस लेने के लिए भेजूँगा सो तुम उसको मारकर उसकी बोटी-बोटी कर देना। वज़ीर ने घर आकर उस लड़के से कहा कि अमुक कसाई के घर जाकर सेर भर मांस ले आ। लड़का चला। घर से थोड़ी ही दूर पर वज़ीर का लड़का अन्य लड़कों के साथ 'चर भर' (एक राजस्थानी खेल) खेल रहा था। वज़ीर के लड़के ने आवाज देकर उस लड़के को अपने पास बुलाकर पूछा कि तू कहाँ जा रहा है? लड़के ने उत्तर दिया कि तुम्हारे पिता ने मुझे सेर भर मांस लाने के लिए कहा है सो लाने के लिए अमुक कसाई के घर जा रहा हूँ। वज़ीर के लड़के ने कहा कि तुम मेरे बदले यहाँ खेलो, मैं सात बाजी हार चुका हूँ, तुम खेल कर इनको हराओ, मैं मांस लाने जाता हूँ। वज़ीर का लड़का मांस लाने के लिए चला गया और वह लड़का चर-भर-खेलने लगा।

कसाई ने वज़ीर के लड़के को मारकर उसकी बोटी-बोटी कर डाली। इधर बहुत देर हो जाने पर भी जब वज़ीर का लड़का घर नहीं आया तो वज़ीर उसे ढूँढ़ने के लिए घर से बाहर निकला।

जिस लड़के को उसने मांस लाने के लिए कसाई के घर भेजा था वह

अन्य लड़कों के साथ बैठा चर-भर खेल रहा था। वज़ीर के पूछने पर लड़के ने उत्तर दिया कि आपका बेटा यहाँ चर-भर खेल रहा था। मैं इधर से गुजरा तो उसने मुझे पुकारकर कहा कि मैं सात बाजी हार गया हूँ सो मेरे बदले तुम खेलो, मांस लाने के लिए कसाई के यहाँ मैं जाता हूँ, सो मैंने तो सात बाज़ियाँ उतार कर इनके ऊपर सात बाज़ियाँ और चढ़ा दी हैं लेकिन वह तो अभी तक नहीं आया।

वज़ीर जान गया कि लड़के का क्या हाल हुआ होगा, उसके मुँह से निकल पड़ा कि वास्तव में जो खोदता है, वही उसमें पड़ता है।

● पीपल-तुलसी

एक थी सास और एक थी बहू। सास ने बहू से कहा कि मैं तीर्थाटन के लिए जा रही हूँ, तुम अपने यहाँ जो दूध-दही होता है वह बेच-बेचकर रुपये इकट्ठे कर लेना। सास चली गई।

चैत-बैसाख का महीना आया तो बहू सारा दूध दही ले जाकर पीपल और तुलसी में सींच देती और फिर खाली टोकनी लाकर घर रख देती। सास घर आयी तो उसने बहू से दूध और दही के रुपये माँगे। बहू ने कहा कि जी, मैं तो सारा दूध और दही पीपल-तुलसी में सींचती रही हूँ, मेरे पास रुपये नहीं है। लेकिन सास ने कहा कि चाहे जो भी हो मुझे तो रुपये देने पड़ेंगे। तब बहू पीपल और तुलसी के पास जाकर बैठ गई और उनसे बोली कि मेरी सास मुझसे दूध-दही के पैसे माँगती है। पीपल-तुलसी ने कहा कि बाई, हमारे पास रुपये-पैसे कहाँ हैं? ये कंकड़-पत्थर अवश्य पड़े हैं इन्हें भले ही उठा कर ले जा। बहू सारे कंकड़-पत्थर उठाकर घर ले आयी और घर लाकर उन्हें अपने कमरे में रख दिये। दूसरे दिन सास ने फिर रुपये माँगे तो बहू ने अपना कमरा खोला। बहू ने देखा कि सारे कंकड़-पत्थरों के हीरे-मोती बन गये हैं और कमरा जगमगा रहा है। बहू ने सास से कहा कि सास जी, अपने रुपये ले लो। हीरे-मोती आदि देखकर सास का भी मन चला। उसने कहा कि मैं भी पीपल और तुलसी सींचूँगी।

दूसरे दिन से सास जब दूध-दही बेच कर लौटती तो उन बरतनों में

पानी भर कर पीपल और तुलसी में डाल आती। जब कुछ दिन ऐसा करते-हो गये तो एक दिन सास ने बहू से कहा कि तू मेरे से दूध-दही के रुपये माँग। सास के कहने से बहू ने रुपये माँगे तो सास बोली कि मेरे पास रुपये कहाँ हैं ? मैं तो दूध-दही से पीपल और तुलसी को सींचती रही हूँ। फिर सास जाकर पीपल और तुलसी के नीचे बैठ गई और बोली कि मेरी बहू दूध-दही के रुपये माँगती है। पीपल-तुलसी ने उत्तर दिया कि हमारे पास रुपये कहाँ हैं ? ये कंकड़-पत्थर पड़े हैं सो चाहो तो भले ही ले जाओ। सास कंकड़-पत्थर लेकर खुशी-खुशी घर आयी और उसने कंकड़-पत्थर लाकर अपने कमरे में रख दिये। दूसरे दिन जब कमरे को खोला गया तो सास क्या देखती है कि सारा कमरा साँप और बिच्छुओं से भरा पड़ा है।

सास ने बहू से पूछा कि बहू, यह क्या बात है ? तू तो कंकड़-पत्थर उठा कर लायी थी उनके तो हीरे मोती बन गये और मैं जो कंकड़-पत्थर उठा कर लायी उनके साँप-बिच्छू बन गये ? बहू ने सहज भाव से उत्तर दिया कि सास जी, मैंने पीपल-तुलसी को शुद्ध मन से सींचा था सो कंकड़-पत्थरों के हीरे मोती बन गये और आपने लालच-वश ऐसा किया था अतः आपके लाये हुए कंकड़-पत्थरों के साँप-बिच्छू बन गये।

● मैं ही तो मा हूँ जद पूत खसमड़ा जी लियो

एक आदमी को सन्निपात हो गया। वैद्य उसे देखने के लिए आया। वैद्य ने यह देखने के लिए कि रोगी आदमी को पहिचानता है या नहीं, उसकी स्त्री को उसके पास बुलाया और उससे पूछा कि बतलाओ यह कौन है ? रोगी ने अपनी स्त्री को घूरकर देखा लेकिन रोग की प्रबलता के कारण वह उसे पहिचान नहीं सका। उसने अटक-अटक कर कहा कि यह . . . यह तो माँ है। पति की बात सुनकर स्त्री का रहा-सहा धीरज भी जाता रहा और वह निराश होकर बोली "मैं ही तो माँ हूँ तो पूत खसमड़ा जी लियो" अर्थात् यदि मैं ही माँ हूँ तब तो पूत-पति तुम जी लिए ?

● डाँस और हवा

एक बार डाँस और मच्छरों ने मिलकर विचार किया कि यह हवा हमें

बहुत सताती है। हम किसी के शरीर पर बैठकर उसका रक्त चूसने की चेष्टा करते हैं लेकिन हवा का एक झोंका आकर हमें तुरन्त उड़ा देता है।

विचार-विमर्श के बाद उन्होंने भगवान विष्णु के पास हवा की शिकायत की। विष्णु भगवान ने पवन को तलब किया। लेकिन जब सबूत देने के लिए मच्छरों को आवाज दी गई तो एक भी मच्छर हाजिर नहीं हुआ। चूँकि पवन विष्णु भगवान के न्यायालय में उपस्थित था अतः मच्छर वहाँ जाने की हिम्मत नहीं कर सके। मच्छरों के हाजिर न होने के कारण उनका मुकदमा अदम-पैरवी में खारिज कर दिया गया।

● राजा बहलोचन

राजा बहलोचन अपने बहुत से सेवकों के साथ शिकार खेलने के लिए वन में गया। शिकार का पीछा करते-करते राजा बहुत दूर निकल गया। उसके संगी-साथी सब पीछे रह गये, सिर्फ राजा का मंत्री उसके साथ रहा। शिकार हाथ से निकल गया और दोनों वन में भटक गये। संध्या हो गई तो दोनों एक बड़ के बड़े वृक्ष के नीचे ठहर गये। राजा ने मंत्री से कहा कि रात भर यहीं विश्राम करके सबेरे यहाँ से चलेंगे। पहले तुम सो जाओ, मैं पहरा लगाता हूँ। फिर मैं सो जाऊँगा तुम पहरा देना। मंत्री सो गया और राजा पहरा देने लगा। आधी रात हुई तो राजा ने मंत्री को जगाया और स्वयं सो रहा।

राजा को गहरी नींद में सोते देख मंत्री ने सोचा कि राजा का कुँअर अभी बहुत छोटा है, यदि मैं राजा को मार डालूँ तो राज्य के सारे अधिकार मेरे हाथ में आ जाएँगे, जैसा मैं चाहूँ कर सकूँगा। जब राजकुमार बालिग होगा तब देखा जाएगा। यों सोचकर मंत्री ने सोते हुए राजा का सिर काट डाला और उसके घोड़े को भी मार दिया।

बड़ के ऊपर एक बनिया छिपा बैठा था। वह दिसावर से अपने घर को लौट रहा था और संध्या हो जाने के कारण इसी बट वृक्ष पर रात काटने के लिए बैठ गया था। मंत्री के इस जघन्य कर्म को देखकर बनिया सिहर उठा, वह और भी सिमट कर गया बैठ गया। ऐसा करने में वृक्ष के कुछ

पत्ते हिले तो मंत्री ने ऊपर की ओर देखा, लेकिन जब उसे कुछ दिखलायी नहीं दिया तो उसने सोचा कि कोई लंगूर होगा। यों सोचकर मंत्री ने विशेष ध्यान नहीं दिया।

सवेरा होने पर मंत्री अपने घोड़े पर सवार होकर नगर की ओर चल पड़ा। रास्ते में राजा के सेवक उसे मिले तो मंत्री ने बड़ी उदास मुद्रा बना कर कहा कि महाराज को एक शेर ने मार डाला। मंत्री की बात सुनकर सभी को बड़ा रंज हुआ। नगर भर में शोक छा गया।

शिशु राजकुमार राजा बना और मंत्री सारा राज्य-कार्य चलाने लगा। अब मंत्री जो चाहता, करता। समय पाकर राजा बालिग हुआ और अब वह स्वयं राज-काज देखने लगा। वह रात्रि को प्रायः वेष बदलकर नगर में घूमा करता। एक दिन आधी रात को वह एक घर के पास छुपा बैठा था तो उसे पति-पत्नी का वार्त्तालाप सुनायी पड़ा। पति कमाने के लिए दिसा-वर जा रहा था, पत्नी अपने पति से कह रही थी कि तुम जल्दी लौटना, मुझे भूल मत जाना। पत्नी की बात सुनकर पति ने कहा :

कटि केहर मृग लोचनी, तस्कर की सी तक्क।
मैं कस भूलूं कामणी बहलोचन बड़ सक्ख॥

अर्थात् तुम्हें और बड़ वाली उस घटना को जहाँ राजा बहलोचन की हत्या हुई थी मैं कभी नहीं भूल सकता। राजा ने दोहा सुना और सुनते ही उसके दिल में हलचल मच गई। वह उसी वक्त लौट गया और सेवक को भेज कर उसने उस मनुष्य को बुलवाया। यह आदमी वही बनिया था जो राजा की हत्या के समय बड़ पर छुपा बैठा था। बनिया भय के मारे काँपने लगा तो राजा ने उसे अभयदान देकर पूछा कि सारी बातें मुझे सत्य सत्य बतलाओ। बनिये ने आँखों देखी सारी घटना सत्य-सत्य सुना दी। राजा को रात भर नींद नहीं आई।

सवेरा होते ही राजा ने मंत्री को बुलवा भेजा। मंत्री के आने में कुछ देर हुई। राजा को पल-पल भारी हो रहा था, उसने दूसरा और तीसरा बुलावा भेजा। मंत्री जान गया कि आज राजा को अपने बाप की मृत्यु का

भेद ज्ञात हो गया है। उसने अपने बेटों को बुलाकर सारी बात समझायी और उन्हें साथ लेकर वह राजा के पास पहुँचा। राजा के पूछने पर मंत्री सारी घटना सुनाने लगा। जब राजा की हत्या का प्रसंग आया तो मंत्री के बेटों ने कहा कि अरे हत्यारे, तूने यह क्या दुष्कर्म किया ? ऐसे धर्मात्मा और न्यायी राजा को तू ने अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर मार डाला, जिस राजवंश का नमक खाते-खाते अपनी पीढ़ियाँ गुजर गई उस वंश के राजा की तू ने हत्या कर डाली, हमारा यह कलंक कैसे धुलेगा, तू हमारा बाप नहीं कसाई है, हम ऐसे हत्यारे को जीवित देखना नहीं चाहते। यों कहकर मंत्री के बेटों ने अपने बाप को छुरों से वहीं मार डाला। राजा को विश्वास हो गया कि मंत्री के बेटे बहुत भले हैं, यह दुष्ट ही ऐसा था जिसे उसकी करनी का फल मिल ही गया। यों सोचकर राजा का क्रोध शांत हो गया और उसने मंत्री के बड़े लड़के को दीवान बना दिया।

एक नहीं दो

एक राजा के दो मंत्री थे। एक दिन राजा की सवारी निकली, दोनों मंत्री साथ थे। जब राजा की सवारी एक सेठ की दुकान के सामने से गुजरी तो सेठ ने झुककर मुजरा किया। राजा ने सेठ की ओर दो उँगलियाँ उठा कर कुछ पूछा। इसके उत्तर में सेठ ने राजा की ओर एक उँगली उठा दी।

उक्त सेठ पहले बहुत मालदार था और दरबार में उसकी बड़ी पूछ थी लेकिन आज कल सेठ की आर्थिक स्थिति यहाँ तक गिर गई थी कि दो जून रोटी भी मय्यसर नहीं होती थी। दो उँगलियाँ दिखलाकर राजा ने सेठ से यही पूछा था कि क्या दोनों वक्त रोटी मिल जाती है लेकिन सेठ ने एक उँगली उठाकर राजा से कहा था कि नहीं एक वक्त ही रोटी मिल पाती है। राजा और सेठ में बातें हो गईं, लेकिन दोनों मंत्री कुछ नहीं समझे। उन्होंने सोचा कि सेठ पुराना दरबारी है और राजा ने सेठ से पूछा है कि मंत्री एक चाहिए या दो। इसके उत्तर में सेठ ने कहा कि मंत्री तो एक ही चाहिए।

दोनों मंत्रियों के कलेजों में उथल-पुथल मच गई कि राजा किसे रखेगा और किसे निकालेगा। दोनों मंत्री बारी-बारी से सेठ के पास पहुँचे। सेठ

उनकी बात ताड़ गया। उसने प्रत्येक मंत्री से पचास-पचास हजार रुपये ले लिये और दोनों को ही आश्वासन दे दिया कि तुम्हें नहीं हटाया जाएगा।

कुछ दिनों बाद उसी प्रकार राजा की सवारी फिर निकली। इस बार राजा ने सेठ की ओर एक उँगली उठाकर पूछा कि क्या आज कल भी एक जून ही खाना मिलता है? इस पर सेठ ने राजा की ओर दो उँगलियाँ उठा दीं। दोनों मंत्री खुश हो गये कि सेठ ने दोनों को मंत्री-पद पर बनाये रखने की सिफारिश कर दी।

मिंयें की सीरणी

एक मियाँ कहीं जा रहा था। चलते-चलते उसने खुदा से मिन्नत मानी कि या खुदा, मुझे कहीं एक रुपया पड़ा मिल जाए तो मैं तुम्हारे नाम की चार आने की 'सीरणी' (प्रसाद) बाँट दूँ। खुदा की कुदरत कि मियाँ को थोड़ी दूर चलने पर ही एक जगह कुछ पैसे पड़े मिल गये। मियाँ ने सोचा कि मेरी प्रार्थना मंजूर हो गई और उसने पैसे उठा लिए लेकिन गिनने पर जब वे सिर्फ बाहर आने हुए तो उसने बड़ी संजीदगी से कहा कि या खुदा तू भी कितना बेविश्वासी है, तू ने मेरा इतना भी विश्वास नहीं किया जो चार आने के पैसे अग्रिम ही काट लिए।

अैई पत्थर जुवानी में पड़्या था

एक मियाँजी बड़े दुबले-पतले से थे लेकिन कहने को बड़े तगड़े बनते थे। एक दिन मियाँ जी कहीं जा रहे थे कि कमजोरी के मारे चलते-चलते ही डगमगा गये। लेकिन अपनी कमजोरी बुढ़ापे के सिर मढ़ते हुए बोले, "हाय बुढ़ापा"। फिर मियाँजी ने इधर-उधर देखा कि कोई दूसरा तो नहीं है और फिर ठंढी साँस लेकर अपने आप पर ही हँसते हुए बोले कि जवानी में भी भला ऐसा क्या था कि जिस पर नाज किया जा सके, यही पत्थर जवानी में पड़े थे।

बाकी को गोट बधग्यो

एक गाँव में मूर्ख ही मूर्ख बसते थे। वे अपनी हर समस्या लाल बुझक्कड़ से हल करवाते क्योंकि उनकी समझ में लाल बुझक्कड़ ही इस पृथ्वी पर

सबसे समझदार व्यक्ति थे। एक रात को एक हाथी उस गाँव में से होकर निकला। सबेरे जब गाँव के लोगों ने हाथी के खोज (पद-चिह्न) देखे तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि आज यह कौन जानवर इधर से गुजरा है? पैरों के निशान भी इतने बड़े हो सकते हैं यह तो हमारी कल्पना में भी नहीं आता। सब मिलकर बुझक्कड़ जी के पास गये। बुझक्कड़ जी ने खोज देख कर कहा:

जाणन हाला जाण्या, के जाणै अण जाण।
पगाँ कै चाकी बाँध कर, कूद गया मिरघाण ॥

अर्थात् जानने वाले जान गये, बेचारे 'अनजान' (मूर्ख) भला इन बातों को क्या जाने? हिरन अपने पैरों में चक्की के पाट बाँध-बाँध कर कूद गये हैं, ये निशान उन्हीं के हैं।

फिर सारे लोग उन चिह्नों के सहारे-सहारे आगे बढ़े तो उन्हें हाथी खड़ा दिखलायी पड़ा। सारे लोगों ने लाल बुझक्कड़ से फिर पूछा कि यह क्या है? लाल बुझक्कड़ ने तुरन्त उत्तर दिया कि मूर्खों, इतना भी नहीं जानते? यह अमावस्या की काली-पीली रात है, जितनी बीती, सो बीती, शेष का 'गोट' बँध गया अर्थात् अमावस्या की काली-पीली रात जो व्यतीत होने से बच रही वह सिमट, सिकुड़ कर ठोस रूप में सामने दिखलायी पड़ रही है।

● ऊपर सैं बाबोजी दीखै

एक बाबाजी एक जाट के खेत में से नित्य रात को सिट्टे, मतीरे आदि तोड़ कर ले आया करते थे। बाबाजी ने अपनी चरण पादुकाएँ इस तरकीब से बना रखी थीं कि उनके पद चिह्न गधे के पद चिह्न जैसे अंकित होते थे। खेत का मालिक यही सोचता कि कोई गधा खेत चर जाया करता है। एक रात खेत का मालिक गधे को पकड़ने के लिए खेत में छुपकर बैठ गया। आधी रात को बाबाजी आये और सिट्टे तथा मतीरे तोड़कर चलने लगे। जाट ने बाबाजी को पकड़ा तो सारा रहस्य खुल गया। जाट ने कहा:

गटमण गटमण माला फेरै,
अै तो काम सिधांका।

ऊपर सैं बाबोजी दीखै,
नीचै खोज गधां का ।

अर्थात् मैं तो समझता था कि गधा खेत चर जाता है लेकिन यह सब तो बाबाजी की कारस्तानी है जो माला फेरते हैं और बाबाजी का वेष बनाये हैं। किन्तु नीचे जिनके गधे की खोज हैं।

● क्युँई कमायो ई है

एक पंसारी रात को अपनी दुकान में सोया करता था। एक रात कोई आदमी पंसारी के पास एक रुपये की चीजें लेने के लिए आया। पंसारी ने एक रुपये का सौदा दे दिया और ग्राहक रुपया देकर चलता बना। लेकिन वास्तव में ग्राहक ने रुपये की बजाय ताँबे का टका दिया था (पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के ताँबे के टकों का प्रचलन था जो आकार में रुपये के बराबर होते थे) पंसारी को रात को कम दिखलायी पड़ता था और प्रकाश भी नहीं था अतः उसने टके को ही रुपया समझ कर ले लिया था।

सबेरे पंसारी के लड़के ने कहा कि पिताजी आप कहते हैं कि मैंने रात को रुपये का सौदा दिया था लेकिन यहाँ तो सिर्फ एक टका ही रखा है। मालूम होता है कि दुष्ट ग्राहक रुपये के बदले टका ही दे गया है। इस पर पंसारी ने कहा कि बेटा तब भी कोई हर्ज नहीं, हमने तो कुछ कमाया ही है। मैंने टके के बदले एक पैसे का ही धन दिया है।

● मरद तो इकदंता ही भला

एक मियाँजी की बीबी गुजर गई तो बुढ़ापे में 'नाता' करके दूसरी बीबी लाये। इतनी देर तक तो मियाँ साहब दूल्हा बने हुए थे और अपने बुढ़ापे को किसी हद तक छुपाये थे। उनके मुँह में सिर्फ एक दाँत शेष रहा था। घर आकर उन्होंने नई बीबी से कहाः

मरद तो इकदंता ही भला

अर्थात् मर्द तो वही जिसके मुँह में सिर्फ एक ही दाँत हो। लेकिन बीबी के मुँह में एक भी दाँत बाकी नहीं बचा था। उसने तपाक से उत्तर दिया

कि मियाँजी वाह, मुँह में हाड का क्या लाड, मुँह तो एकदम सफम-सफा (सफाचट) ही अच्छा। बीवी की बात सुनकर मियाँजी शेखी बघारना भूल गए।

● दोनूं कानी जीत

एक सेठ के यहाँ एक जाट नौकर था। सेठ नित्य दरबार में जाया करते। एक दिन जाट ने सेठ से कहा कि मैं भी आपके साथ चला करूँगा। सेठ ने कहा कि वह बादशाह का दरबार है और तुम जट्ट (मूर्ख) हो, सो कहीं कुछ बेअदबी कर बैठे तो लेने के देने पड़ जाएँगे। जाट ने सेठ से कहा कि मैं कुछ भी नहीं बोलूँगा।

जाट अब सेठ के साथ दरबार में जाने लगा। दोपहर को एक काज़ी बादशाह को कुरान पढ़कर सुनाया करता था। एक दिन काज़ी ने बादशाह से कहा कि हुजूर, आज के सातवें दिन रोज कयामत होगी। काज़ी की बात सुनकर जाट से नहीं रहा गया। वह बोल पड़ा कि काज़ी झूठ कहता है, कयामत नहीं होगी। बादशाह को जाट की बात नागवार गुज़री, सेठ भय से काँपने लगा लेकिन जाट अपनी बात पर अड़ा रहा। अन्त में यह शर्त तय हुई कि यदि कयामत हो जाए तो जाट दस हजार रुपये काज़ी को दे और यदि कयामत न हो तो काज़ी जाट को दस हजार रुपये दे। काज़ी की ओर से बादशाह ने रुपयों की हाँ भर ली लेकिन सेठ ने जाट की हाँ नहीं भरी तब जाट ने सेठ को अलग ले जाकर कहा कि इस सौदे में घाटा नहीं है, यदि प्रलय हो गई तो न काज़ी बचेगा और न हम, फिर कौन किससे रुपये लेगा? और यदि प्रलय नहीं हुई तो हमको दस हजार रुपये मिल जाएँगे। बात सेठ की समझ में आ गई, उसने जाट की ओर से रुपये देने की हाँ भर ली।

सातवें दिन न प्रलय होनी थी, न हुई और सेठ को दस हजार रुपये मिल गये।

● जाट हाली गद-गदी

एक जाट के पीता हुआ। बच्चा दो-तीन महीने का हो गया तो उसकी

माँ ने बच्चे को घर के आँगन में सुला दिया। शाम को जाट खेत से घर आया, पोते को देखकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। जाट के हाथ में 'जेळी' (एक लाठी जिसके दो सींग लगा दिये जाते हैं और जिनमें पिरोकर घास इधर उधर ले जाई जाती है) थी। कुछ देर तक तो वह बच्चे को खड़ा खड़ा देखता रहा फिर उसने बच्चे को गुदगुदा कर हँसाने की ग़रज से 'जेळी' के दोनों सींग बच्चे के पेट में लगाये और 'सींगों' से गुदगुदाने लगा। लेकिन 'जेळी' के नोकदार सींगे बच्चे के पेट को फाड़कर दूसरी ओर निकल गये।

मूरख नौकर

एक मुख्तार साहब ने एक नौकर रखा। मुख्तार साहब ने नौकर से कहा कि मैं कचहरी जाता हूँ, तुम मेरे पीछे-पीछे आना, रास्ते में कोई चीज गिर जाए तो वह भी उठा लाना। मुख्तार साहब घोड़े पर चढ़कर कचहरी को चले और नौकर उनके पीछे-पीछे हो लिया। थोड़ी दूर जाकर घोड़े ने लीद की और नौकर ने लीद उठाकर रूमाल में बाँध ली। मुख्तार साहब कचहरी में जाकर अन्य मुख्तारों के साथ बैठ गये। तभी नौकर ने हाजिर होकर मुख्तार साहब के सामने रूमाल पेश किया और कहा कि जनाब, और कोई चीज तो नहीं गिरी, घोड़ा अपने पीछे यह लीद डाल आया था सो हाजिर है। नौकर की बात सुनकर मुख्तार साहब का मुँह उतर गया।

दूसरे दिन उन्होंने नौकर से कहा कि तू घर पर ही रहा कर। कोई काम हो तो कचहरी में आकर मुझसे कह दिया कर। एक दिन बीबी ने नौकर से कहा कि कचहरी जाकर मुख्तार साहब से कहो कि घर में आटा और लकड़ी कतई नहीं हैं सो आटा और लकड़ी दिलवा दें। नौकर कचहरी गया और उसने मुख्तार साहब को देखकर दूर से ही आवाज लगायी कि मुख्तार साहब, बीबीजी ने कहा है कि घर में आटा और लकड़ी नहीं हैं। मुख्तार साहब को बड़ा बुरा लगा और उन्होंने घर आकर नौकर को समझाया कि कचहरी जाकर बेवकूफ की तरह मत चिल्लाया कर, जो कुछ कहना हो अकेले में धीरे से कहा कर। नौकर ने कहा हुजूर, बहुत अच्छा।

संयोग से एक दिन मुख्तार साहब के घर में आग लग गई। बीबी ने

नौकर से कहा कि फौरन जाकर मुख्तार साहब को खबर करो कि आग बुझाने का प्रबन्ध इसी वक्त करें। नौकर गया तो उसने देखा कि मुख्तार साहब अन्य लोगों से घिरे बैठे हैं और काम में लगे हुए हैं। नौकर एक ओर बैठ गया। शाम को जब सारे लोग चले गये तो एकान्त पाकर नौकर ने कहा कि मुख्तार साहब, आपके घर में आग लग गई है, मैं कब से आया बैठा हूँ, लेकिन आपके हुक्म के मुताबिक मैंने एकान्त में ही आपसे यह बात कही है।

नौकर की बात सुनकर मुख्तार साहब ने सिर पीट लिया और उसी वक्त उसको छुट्टी दे दी।

● बण्यों बणायो घर ढह्ग्यो

एक तेली तेल से भरा हुआ घड़ा लिये जा रहा था। रास्ते में उसे शेख-चिल्ली मिल गया। तेली ने शेखचिल्ली से कहा कि यह घड़ा तुम बाजार तक ले चलो, मैं तुम्हें दो आने दे दूँगा। शेखचिल्ली ने घड़ा अपने सिर पर ले लिया और तेली के साथ चल पड़ा।

चलते-चलते शेखचिल्ली सोचने लगा कि तेली से दो आने लेकर अंडे लाऊँगा। अंडों में से बच्चे निकलेंगे और थोड़े ही समय में वे अच्छी मुर्गियाँ बन जाएँगीं। उन मुर्गियों को बेचकर एक बकरी ले आऊँगा। बकरी के बहुत से बच्चे होंगे, उन सबको बेचकर भैंस लाऊँगा और फिर भैंस बेचकर बीबी लाऊँगा। बीबी के बच्चे होंगे और वे आकर मुझसे कहेंगे कि अब्बा-जान, चलो अम्मा खाना खाने को बुलाती हैं। लेकिन मैं बड़ी ऐंठ के साथ एक बच्चे को चाँटा जड़ते हुए कहूँगा कि चल बे, भाग जा यहाँ से, अभी नहीं खाएँगे। शेखचिल्ली इन सब विचारों में इतना डूब गया था कि उसे घड़े का ध्यान ही नहीं रहा और बच्चे को चाँटा लगाने के लिए जैसे ही उसने हरकत की, तेल का घड़ा धम्म से जमीन पर आ गिरा। तेली बिगड़ कर बोला कि अरे यह क्या कर दिया, तेल का घड़ा फोड़ दिया? इस पर शेखचिल्ली अफसोस जाहिर करता हुआ बोला कि—तेरा तो घड़ा ही फूटा है, यहाँ तो बना बनाया घर ही ढह गया।

भगतण की सीख

एक सेठ बहुत मालदार था। सेठ का बेटा वेश्या के यहाँ जाने लगा और धीरे-धीरे उसने सारा धन वेश्या को ठगा दिया। जब उसके पास कुछ भी नहीं रहा तो वेश्या ने सेठ के बेटे को घर से निकाल दिया। सेठ के बेटे को बड़ा दुख हुआ और उसने वेश्या से कहा कि मैंने तुझे बेशुमार धन दिया है सो यादगार के लिए मुझे कोई सहिदानी तो दो। वेश्या ने एक बाल उखाड़ कर सेठ के बेटे को दे दिया।

सेठ का बेटा पछताता हुआ वेश्या के घर से चला। वह सोचने लगा कि इतना धन खोकर मुझे एक बाल मिला है सो इसे यत्न से रखना चाहिए। यह सोचकर वह सुनार के पास गया और बोला कि इस बाल को एक तावीज में मढ़ दो। सुनार ने सोचा कि यह बाल अवश्य ही करामाती है सो बाल को मुँह में पकड़ कर तावीज को ठीक करने लगा। सुनार ने बाल का थोड़ा सा हिस्सा अपने मुँह में कुतर कर रख लिया और शेष को तावीज में मढ़ दिया। अब सुनार ने सोचा कि सेठ के बेटे से बाल के गुण पूछने चाहिएं। सुनार के पूछने पर सेठ के बेटे ने आदि से अंत तक की सारी घटना कह सुनाई और बोला कि यह बाल उस निर्लज्ज वेश्या ने याद स्वरूप दिया है। बाल की कहानी सुनकर सुनार को ग्लानि हो गई और वह थू-थू करके बाल के टुकड़े को थूकने लगा।

बिरामण को धरम है

एक ब्राह्मण एक सेठ के यहाँ आया जाया करता था। सेठ कंजूस था। एक दिन ब्राह्मण आया तो सेठ ने पूछा कि क्यों पंडितजी, स्नान कर आये क्या? ब्राह्मण ने स्नान नहीं किया था इसलिए उसने संकोच के साथ कहा कि नहीं सेठजी, स्नान नहीं किया है। लेकिन ब्राह्मण के मन में यह धोखा हुआ कि यदि आज स्नान करके आया होता तो सेठ अवश्य ही कुछ न कुछ देता।

सेठ से कुछ पाने की आशा में ब्राह्मण दूसरे दिन तड़के ही उठा और नहा-धोकर तिलक छापा लगाकर प्रसन्न चित्त सेठ के यहाँ पहुँच गया। सेठ ने ब्राह्मण से पूछा कि क्यों पंडितजी स्नान कर आये? पंडितजी ने तपाक

से उत्तर दिया कि हाँ सेठ साहब, स्नान ध्यान करके आ रहा हूँ। ब्राह्मण की बात सुनकर सेठ ने निर्लिप्त भाव से कहा अच्छा किया पंडितजी, नहाना धोना तो ब्राह्मण का धर्म है।

यों कहकर सेठ अपने काम में लग गया और ब्राह्मण पछताता हुआ अपने घर लौटा कि व्यर्थ ही बड़े तड़के उठा और ऐसी ठंड में स्नान किया।

● जीकारै बतलावणों

नववधू घर में आयी तो सास ने बहू को समझाया कि अपने घर की यह रीति है कि सबको 'जी' (आदर सूचक शब्द) कह कर बतलाना चाहिए। बहू ने सास की आज्ञा शिरोधार्य कर ली।

एक दिन भैंस के पाड़े ने बहू की नयी साड़ी पर 'पोटा' (गोबर) कर दिया। बहू इस बात का उपालंभ देने के लिए सास के पास पहुँची और कहने लगी, "सासुजी, थारीजी, भैंसजी कोजी पाडोजी म्हारीजी नयीजी साड़ीजी परजी पोटोजी करजी दियोजी।" बहू की बात सुनकर सास ने बहू से कहा कि बहू, बावली तो नहीं बन गई है, इस प्रकार क्या कह रही है? बहू ने कहा कि सास जी, आपने ही तो कहा था कि सबको 'जी' कहकर पुकारना चाहिए, मैं तो आपकी आज्ञा का पालन ही कर रही हूँ।

● मूँग ल्यो मूँग

एक सेठ ने नफा कमाने के लिए मूंग खरीदे। लेकिन संयोग से मूँगों में बहुत घाटा लग गया। सेठ का मन बहुत खिन्न हुआ। वह अपनी ससु-राल गया तो सास ने दामाद के लिए मूँग-चावल बनवाये। दामाद जीमने के लिए बैठा और सास जिमाने लगी। सास बारबार अपने दामाद से कहती कि कुँअर जी, मूँग लीजिए मूँग। दो-चार बार तो सेठ ने ध्यान नहीं दिया लेकिन फिर उसने सोचा कि मुझे मूँगों में बड़ी हानि उठानी पड़ी है इसलिए शायद सास ताना मार रही है। अतएव अगली बार जब सास ने दामाद से कहा कि कुँअर जी, मूँग लो तो सेठ तुनक कर बोला कि सासजी, क्या ताना मार रही हो, मूँग लिये नहीं या लेंगे नहीं, घाटा-नफा तो यों ही चलता रहता है।

● आप ई ल्यासी

एक ठाकुर वस नाम का ठाकुर था। घर में दो जून खाने को रोटियाँ भी नहीं थीं। वृद्ध हो चला था लेकिन वाल बच्चा भी नहीं हुआ था। वृद्धावस्था में ठकुरानी गर्भवती हुई। ठाकुर मजदूरी करके किसी प्रकार पेट भरता था।

एक दिन ठाकुर तालाव से पानी का घड़ा भरकर घर लौट रहा था कि सामने से एक औरत आती हुई मिली। औरत ने ठाकुर से कहा कि ठाकुराँ, आपके घर तो कुँअर जन्मा है और आप यहाँ घूमते हैं। औरत की वात सुनकर ठाकुर ने कंधे पर से घड़ा उतार कर वहीं रख दिया और वोला कि जव लड़का हो गया है तो वह अपने आप ही पानी लाएगा, मैं तो वहुत दिनों तक पानी लाता रहा और ठाकुर घड़े को वहीं रख कर अपने घर आ गया।

● मोंठाँ को घाटो

एक सेठ के वेटे ने नफा कमाने के लिए मोठ भरे लेकिन मोठ का भाव वहुत गिर गया। सेठ के वेटे ने नौ सेर के भाव से मोठ खरीदे थे लेकिन मोठ का भाव गिरकर नौघड़ी (एक घड़ी = ५ सेर) अर्थात् एक मन पाँच सेर का हो गया। तव उसने अपने चाचा से कहा, "देखो चाचा, मोठों के करी, लिया था नौ सेर बेच्या नौ धड़ी।" मोठों के घाटे में सेठ के बेटे की सारी पूँजी खत्म हो गई और सारा जेवर भी चला गया लेकिन घाटे की पूर्ति फिर भी नहीं हुई। तव सेठ का बेटा पश्चात्ताप करता हुआ बोला :

> **तिलड़ी तोड़ तिलाँ में दीनी,**
> **मोहन माला मोठाँ में।**
> **सीस फूल साई में दीन्यो,**
> **औरूँ घाटो मोठाँ में॥**

● लिछमी थिरकोनी रैवै

एक सेठ बहुत मालदार था। एक दिन सेठ को लक्ष्मी सपने में दिखलायी दी और उसने सेठ से कहा कि अब मैं तुम्हारे यहाँ से जाऊँगी। सेठ ने लक्ष्मी से प्रार्थना की कि तुम मेरे यहाँ अधिक नहीं तो छः महीने और ठहर जाओ। लक्ष्मी ने सेठ की बात मानकर उसके यहाँ छः मास और रहना स्वीकार कर लिया।

सेठ ने हरिद्वार में गंगा के किनारे एक हवेली बनवायी और अपने सारे धन को जवाहरातों में बदल कर जवाहरातों को लकड़ी के शहतीरों में भरवा दिया और फिर उन शहतीरों को हवेली में लगा दिया। अब सेठ निश्चिंत हो गया कि मेरा धन कहीं नहीं जा सकता। लेकिन छः महीने पूरे होने पर सेठ को फिर सपने में लक्ष्मी दिखलायी दी और उसने सेठ से कहा कि तुम्हारी माँग पूरी हो गई है अब मैं तुम्हारे यहाँ से अमुक हलवाई के यहाँ जाऊँगी।

दूसरे ही दिन वर्षा के साथ बड़ा भयंकर तूफान आया। गंगा का पानी बहुत दूर तक फैल गया। सेठ का मकान गिर गया और जवाहरातों से भरे शहतीर गंगा में बह चले। सेठ को बड़ा रंज हुआ। वह शहतीरों के पीछे पीछे दौड़ पड़ा। शहतीर बहते-बहते किनारे लगे और मछुवों ने शहतीरों को बाहर निकाल लिया। वहीं उक्त हलवाई ने अपनी दुकान कर रखी थी। मछुवों ने वे शहतीर हलवाई को बेच दिये। पीछे पीछे सेठ आया और उसने हलवाई को आदि से अन्त तक की सारी घटना कह सुनायी।

सेठ की बात सुनकर हलवाई बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने सेठ से कहा कि मैं आधा धन तुमको दे दूँगा। लेकिन सेठ ने उत्तर दिया कि अब यह धन मेरे पास नहीं रहेगा, यदि रहता तो जाता ही क्यों। हलवाई सेठ को भोजन करवाने के लिए अपने घर ले गया। हलवाई ने प्रसन्न मन सेठ को भोजन करवाया और राह में खाने के लिए हलवाई ने सेठ को चार लड्डू भी दिये। हलवाई ने चारों लड्डुओं में चार कीमती लाल छुपा दिंये, लेकिन सेठ को इसका कुछ पता नहीं था। सेठ लड्डू लेकर अपने घर

की ओर चला। नदी पार करने के लिए उसने एक नाव किराये पर ली और घर पहुँचा। घर पहुँचकर सेठ ने देखा कि वहाँ तो कुछ भी नहीं रह गया है। सारी चीजों को चोर उठा ले गये थे। सेठ के पास नाविकों को देने के लिए पैसे भी नहीं थे अतः उसने चारों लड्डू मजदूरी स्वरूप नाविकों को दे दिये। नाविकों ने सोचा कि लड्डू खाकर क्या होगा यदि इन लड्डुओं के बदले अनाज ले जाएँ तो सारे बाल बच्चों का पेट भर जाएगा। यों सोच कर उन्होंने चारों लड्डू लाकर उसी हलवाई को दे दिये और उनके बदले में अनाज ले गये। हलवाई ने सोचा कि यह लक्ष्मी मेरे भाग्य में लिखी है इसे दूसरा कौन ले सकता है?

● लग-लग घोटा धाम दड़ा-दड़

एक गाँव में दो भाई रहते थे। पहले तो दोनों में बड़ा प्रेम था लेकिन जब दोनों के विवाह हो गये तो देवरानी जेठानी में खटपट चलने लगी। फलतः दोनों भाई अलग-अलग रहने लगे। एक दिन छोटे ने अपनी स्त्री से कहा कि मैं कमाने के लिए जा रहा हूँ सो मुझे चूरमे के चार लड्डू बनादे।

चूरमे के लड्डू लेकर वह कमाने चला। चलते-चलते भूख लग आई तो वह एक कुँएँ पर बैठ गया। उसने चारों लड्डू अपने सामने रखे और फिर बोला कि एक खाऊँ, दो खाऊँ, तीन खाऊँ, या चारों को खा जाऊँ? उस कुएँ में चार भूत रहते थे। उन्होंने सोचा कि आज हम चारों का काल आ गया है। चारों भूत हाथ जोड़े उसके सामने आकर खड़े हो गये और उससे प्रार्थना करने लगे कि हमको मत खाओ, हम तुम्हें चार अलभ्य वस्तुएँ देंगे। छोटा पहले तो उनको देखकर डरा लेकिन फिर उसने हिम्मत कर ली। उसने भूतों को डाँटते हुए कहा कि जल्दी से लाओ, देखूँ तो क्या चीज़ें हैं।

भूतों ने उसे एक चलनी, एक कड़ाही, एक दरी और एक लग-लग घोटा दिया। चलनी से माँगने पर वह मनचाहा अनाज देती थी और कड़ाही माँगने पर मनचाही मिठाइयाँ दे देती थीं। दरी पर बैठ कर दरी को हुक्म देने से वह अपने ऊपर बैठने वाले को चाहे जहाँ ले जाती थी और लग-

लग घोटे को आज्ञा मिलते ही वह चाहे जिसको पीट देता था। भूतों ने उसको सारी क्रिया बतला दी और फिर वे चारों कुएँ में चले गये।

चारों चीजें पाकर वह खुश होता हुआ घर की ओर चल पड़ा। रास्तें में वह एक बुढ़िया के घर ठहरा। बुढ़िया ने कहा कि मेरे पास खाने पीने को कुछ भी नहीं है। छोटे ने कहा कि तुम इसकी चिन्ता मत करो। छोटे ने चलनी से अनाज माँगा तो वहाँ अनाज का ढेर लग गया, कड़ाही से मिठाई माँगी तो मिठाइयों का ढेर लग गया। दोनों खा पीकर सो रहे लेकिन बुढ़िया को नींद नहीं आई। छोटे के सो जाने पर उसने कड़ाही और चलनी बदल ली। छोटा सवेरे उन बदली हुई चीजों को लेकर ही चल पड़ा। घर पहुँचने पर छोटे ने अपनी बहू से कहा कि मैं ऐसी चलनी और कड़ाही लाया हूँ जो माँगने पर मनचाहा अनाज और मिठाई देती हैं। लेकिन जब वह अनाज और मिठाई माँगने बैठा तो उसे कुछ भी नहीं मिला। छोटे की बहू खिलखिला कर हँस पड़ी। छोटा जान गया कि यह सब बुढ़िया की कारस्तानी है। वह लग-लग घोटा लेकर बुढ़िया के घर पहुँचा और उसे मार-पीट कर असली कड़ाही और चलनी ले आया। अब वह खूब आराम से रहने लगा।

एक बार छोटा अपनी दरी पर बैठकर हरिद्वार की सैर को गया तो बड़े की बहू ने कोतवाल से शिकायत की कि मेरा देवर न जाने कहाँ से इतना धन मारकर लाया है। हरिद्वार से लौटते ही कोतवाल के आदमी छोटे को पकड़कर कोतवाली ले गये। छोटे ने सारी बातें सचसच बतला दीं लेकिन कोतवाल नहीं माना। तब छोटे ने लग-लग घोटे से कहा, "लग लग घोटा, धाम दड़ा दड़" लग-लग घोटे ने कोतवाल की मरम्मत करनी शुरू की। अब कोतवाल को यह बात जँच गई कि यह आदमी वास्तव में ही भूतों से सब चीजें लाया है। कोतवाल ने छोटे से माफी माँगी और उसे घर जाने के लिए कह दिया।

● गुरू-चेलो

एक गुरु अपने शिष्य के साथ एक कमरे में सो रहा था। गुरु ने

चेले से कहा कि जरा बाहर देखकर तो आओ कि वर्षा हो रही है कि नहीं। लेकिन चेला आलसी था उसने कहा, "आयी थी बिल्ली, पूँछ थी गीली" अर्थात् बिल्ली अभी यहाँ आयी थी सो उसकी पूँछ भीगी हुई थी, इससे यह मालूम होता है कि—बाहर वर्षा हो रही है। तब गुरु ने चेले से कहा कि दीपक बुझा दो। गुरु की आज्ञा सुनकर चेला बोला कि गुरुजी आँखें बंद कर लीजिए और दीपक बुझ गया समझ लीजिए। तब गुरु ने चेले से कहा कि अच्छा कमरे के किवाड़ तो बंद कर लो। गुरु का हुक्म सुन कर चेला तपाक से बोला, गुरुजी दो काम मैंने कर दिये, एक आप कर दीजिए।

● राणी कै घुचरियो जलम्यो

एक राजा के दो रानियाँ थीं, लेकिन दोनों के कोई संतान नहीं हुई तो राजा ने तीसरा विवाह और कर लिया। तीसरी रानी गर्भवती हुई और यथा समय उसने एक सुन्दर राजकुमार को जन्म दिया। लेकिन दोनों रानियों को इससे बड़ी डाह हुई और उन्होंने पूर्व योजना के अनुसार छल से नवजात शिशु को उठवाकर घूरे पर फिंकवा दिया और उसकी जगह कुतिया का एक पिल्ला लाकर सुला दिया। राजा को जब मालूम हुआ कि नयी रानी को पिल्ला जाया है तो उसे नयी रानी से बड़ी घृणा हो गई और उसने नयी रानी को दुहाग दे दिया।

उधर नयी रानी की दासी ने नन्हें राजकुमार को घूरे पर से उठाकर एक खाती के घर पहुँचा दिया। खाती के भी कोई संतान नहीं थी अतः वह राजकुमार को बड़े लाड़ से पालने लगा। जब राजकुमार तीन-चार साल का हो गया तो खाती ने उसे एक काठ का घोड़ा बना दिया। एक दिन दासी लड़के को महल में ले गई। लड़का अपने घोड़े से कहने लगा कि मेरे प्यारे घोड़े, मैं तुझ पर सवार होता हूँ, तू आकाश में उड़ चल। राजा ने भी लड़के की यह बात सुनी। बच्चे की नादानी पर उसने हँसते हुए कहा कि कहीं काठ का घोड़ा भी उड़ता है? इस पर पास ही खड़ी दासी ने राजा से कहा कि पृथ्वीनाथ, जब रानी के पिल्ला जन्म ले सकता

है तो फिर काठ का घोड़ा क्यों नहीं उड़ सकता ? राजा को कोई बात याद आई और वह गंभीर हो गया । उसने दासी से पूछा कि सच-सच बतला यह क्या बात है ? दासी ने सारा रहस्य खोल दिया । राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने राजकुमार को उठाकर अपनी गोद में ले लिया । बड़ी रानियों की दुष्टता पर उसे बड़ा क्रोध आया और उसने दोनों को दुहाग दे दिया । छोटी रानी को राजा ने अपनी पटरानी बना ली और फिर उसने दासी और खाती को भी बड़ा पुरस्कार दिया ।

● राजा बीर बिकरमादीत

एक साहूकार के चार बेटे थे । वे कमाने के लिए दिसावर जाने लगे तो अपनी माँ से कह गये कि बहुओं को घर से बाहर मत निकलने देना । सास बहुओं को घर से बाहर नहीं जाने देती थी । लेकिन कुछ दिनों बाद सावन की तीज आयी । मोहल्ले की सारी स्त्रियाँ नये कपड़े पहनकर और शृंगार कर के मेले में जाने लगीं तो बहुओं का भी मन ललचाया और वे सास के मना करने पर भी मेले में चली गईं । मेले में से एक राक्षस छोटी बहू को उठा ले गया । बेचारी सास बहुत रोयी कलपी लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला । बेटे घर आये तो सास ने बहाना किया कि छोटी बहू पीहर गई है लेकिन आखिर सारा रहस्य खुल गया । साहूकार का छोटा बेटा अपनी बहू को लाने के लिए राक्षस के घर पहुँचा लेकिन राक्षस ने उसे पत्थर का बना दिया । उसके तीनों बड़े भाई भी राक्षस से बदला लेने के लिए गये लेकिन वे भी पत्थर के बन गये । घर में अब चार स्त्रियाँ ही शेष रहीं । एक रात को सास घर में बैठी रो रही थी कि राजा विक्रमादित्य पहरा देता हुआ उधर आ निकला । पूछने पर साहूकार की स्त्री ने सारी बात आदि से अंत तक राजा को बतला दी । राजा ने साहूकार की स्त्री को धीरज बँधाया और फिर महल को लौट गया । सारा कार्य मंत्री को सम्हलाकर राजा राक्षस की खोज में चल पड़ा ।

चलते-चलते वह एक दूसरे राक्षस के घर पहुँच गया । घर में उस वक्त राक्षस की युवा लड़की ही थी । उसने राजा से कहा कि तू यहाँ क्यों आया, मेरा बाप आते ही तुझे मारकर खा जाएगा । राजा ने कहा कि इसका उपाय तू ही कर । राक्षस की बेटी ने राजा को 'मोम की मक्खी' बनाकर दीवार पर चिपका दिया । राक्षस शाम को घर आया तो उसने अपनी बेटी से कहा कि आज तो मनुष्य की गन्ध आ रही है । बेटी ने तुनककर कहा कि यहाँ तो मैं बैठी हूँ सो मुझे खाले । तू ने बारह बारह कोस में जीवित मनुष्य को नहीं छोड़ा फिर मेरे पास कौन आता ? मैं विवाह योग्य हो गई लेकिन तेरे से इतना नहीं बनता कि एक आदमी को जीवित छोड़ देता और मेरा विवाह उसके साथ कर देता । राक्षस ने अपनी भूल स्वीकार की और फिर अपनी बेटी से बोला कि तू किसी आदमी को ले आ, मैं उसी के साथ तेरा विवाह कर दूँगा । राक्षस की बेटी ने अपने बाप से वचन लेकर राजा को प्रकट कर दिया । राक्षस का मन तो बहुत चला लेकिन वचनबद्ध होने के कारण उसने अपनी बेटी का विवाह राजा के साथ कर दिया । दूसरे दिन राक्षस बाहर गया तो राजा ने राक्षस की बेटी को अपने आने का प्रयोजन बतलाया । राक्षस की बेटी ने कहा कि वह राक्षस बड़ा बलवान है । फिर उसने राजा को बतलाया कि राक्षस के घर से थोड़ी दूर पर एक बुढ़िया की झोंपड़ी है, तुम उस बुढ़िया के पास चले जाओ, वह तुम्हें सारी तरकीब बतला देगी ।

राजा बुढ़िया के पास पहुँचा । बुढ़िया बड़बड़ाने लगी तो राजा ने उसे सोने की एक मोहर दे दी । बुढ़िया राजी हो गई और उसने राक्षस के घर में जाने की युक्ति राजा को बतला दी । राक्षस सबेरा होने से पहले ही बाहर चला जाता था और शाम को घर आता था । दूसरे दिन राजा उस राक्षस के घर में गया । साहूकार के बेटे की बहू आँगन में बैठी रो रही थी और चारों लड़के पत्थर के बुत बने खड़े थे । राजा ने बहू को धीरज बँधाया और कहा कि राक्षस जब आये तो उससे पूछना कि तेरी मृत्यु कैसे होगी । राजा फिर बुढ़िया के घर चला गया ।

शाम को राक्षस आया तो उसने देखा कि साहूकार के बेटे की बहू आँगन में लोट-पोट हो रही है तथा हाय-तोबा कर रही है। राक्षस से पूछने पर उसने कहा कि मेरे पेट में बड़ा दर्द हो रहा है। राक्षस ने बहुत उपाय किये लेकिन दर्द नहीं गया।

साहूकार के बेटे की बहू ने राक्षस के कहा कि तुम सबेरा होते ही चले जाते हो, कहीं मर गये तो इस उजाड़ जंगल में मेरा रक्षक कौन होगा? राक्षस ने हँस कर कहा कि मेरी मृत्यु बाहर नहीं पड़ी है, तीन समुद्र पार एक बड़ा पर्वत है। पर्वत की एक बड़ी गुफा में एक पिंजड़ा टँगा है, पिंजड़े में एक सुग्गा बैठा है, यदि उस सुग्गे को कोई मार डाले तो मैं मर सकता हूँ, लेकिन वहाँ कोई नहीं पहुँच सकता। यों कहकर राक्षस बड़े जोर से हँसा।

दूसरे दिन राजा आया तो बहू ने राजा को सारी बात बतला दी। बड़ी मुसीबतों को झेलता हुआ राजा उस पर्वत पर पहुँचा। उसने सुग्गे का पिंजड़ा अपने हाथ में लिया और वहाँ से लौट पड़ा। जब से राजा के हाथ में पिंजड़ा आया था, राक्षस का मन डाँवाडोल हो रहा था। अब वह बाहर नहीं जाता था।

पिंजड़ा लेकर राजा उस राक्षस के घर पहुँचा। उसने राक्षस से कहा कि इन चारों मूर्तियों को फिर से आदमी बना दे अन्यथा तुझे अभी मार डालूँगा, तेरी मृत्यु मेरे हाथ में है। राक्षस लाचार था, उसने चारों को आदमी बना दिया। अब राजा ने कहा कि इस स्त्री को इन चारों के साथ भेज दे। मृत्यु के भय से राक्षस ने राजा के कहे अनुसार सब काम कर दिये। तब राजा ने सुग्गे की गर्दन मरोड़ दी और राक्षस धड़ाम से जमीन पर गिर गया, उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

तब राजा विक्रमादित्य साहूकार के बेटों, छोटे बेटे की बहू और अपनी विवाहिता राक्षसी को लेकर घर आ गया और सब आनन्द-पूर्वक रहने लगे।

● गंगा और जमना

गंगा और जमुना दो बहनें थीं। एक दिन वे एक साहूकार के खेत से होकर गुजर रही थीं कि जमुना ने गेहूँ की एक बाल तोड़ ली। गंगा ने जमुना से कहा कि यह तुमने क्या किया ? साहूकार से बिना पूछे उसके खेत में से बाल तोड़ली, तुम्हें इसका प्रायश्चित्त करना होगा। गेहूँ की बाल में बारह दाने गेहूँ के निकले। गंगा ने कहा कि तुम साहूकार के घर जाकर बारह वर्ष उसकी नौकरी करो, तभी इस पाप का प्रायश्चित्त होगा।

जमुना साहूकार के घर गई और साहूकार से बोली कि मुझे नौकरानी रख लो लेकिन मैं चार काम नहीं करूँगी एक तो जूठे बरतन नहीं मलूँगी, दूसरे सेज नहीं बिछाऊँगी, तीसरे झाड़ू नहीं लगाऊँगी और चौथे दीपक नहीं जलाऊँगी। साहूकार ने चारों बातें मान लीं और जमुना वहाँ नौकरी करने लगी।

बारह वर्ष बीतने पर कुंभ का मेला आया तो साहूकार अपनी पत्नी के सहित कुंभ स्नान को चला। जमुना ने कहा कि वहाँ मेले में मेरी बहिन गंगा तुम्हें मिलेगी सो यह सोने का टका उसको दे देना, लेकिन जब वह गोरी-गोरी कलाइयों में हरे रंग का चूड़ा पहने हाथ पसारकर ले तभी देना अन्यथा नहीं। यों कहकर जमुना ने सोने का टका साहूकार को दे दिया।

मेले में गंगा ने गोरी-गोरी कलाइयों में हरा-हरा चूड़ा पहने हाथ पसारकर जमुना का दिया हुआ टका साहूकार से ले लिया और साथ ही साहूकार से कहा कि मेरी बहिन जमुना से कह देना कि बारह वर्ष पूरे हो गये हैं सो वह आ जाए। साहूकार ने घर जाकर सारी बात जमुना को कह सुनायी। जमुना उस वक्त पानी-घर में पानी भर रही थी। साहूकार की बात सुनकर जमुना वहीं सहस्र धारा होकर बहने लगी। अब साहूकार और उसकी स्त्री ने जाना कि जमुना कोई साधारण स्त्री न थी। वह तो साक्षात् जमुना जी थीं अतः वे पश्चात्ताप करने लगे कि हे जमुना माता,

हमने तुम से बारह वर्षों तक सेवा करवायी सो हमारा प्रायश्चित्त कैसे उतरेगा। यों कहकर साहूकार दम्पति औंधे मुँह पड़ गये।

उधर जमुना गयी तो गंगा ने पूछा कि तू साहूकार दम्पति को धीरज देकर आयी है कि नहीं ? जमुना ने कहा कि मैं तो जैसे खड़ी थी वैसे ही आ गई। इस पर गंगा ने कहा कि तू साहूकार दंपति को दिलासा देकर आ। तब जमुना माई ने साहूकार दंपत्ति को सपने में दर्शन दिये और कहा कि तुम दोनों उठो, तुम्हें कोई पाप नहीं लगा है, मैंने तुम्हारे खेत में से एक बाल तोड़ ली थी उसी का प्रायश्चित्त करने के लिए तुम्हारे यहाँ आयी थी, तुम दोनों की मुक्ति हो जाएगी। तब वे दोनों प्रसन्न मन से उठे और उनका घर धन-धान्य से भर गया।

● हणमान जी की सेवा

एक स्त्री नित्य हनुमानजी के मन्दिर जाया करती। वह सवा सेर आटे का रोटा पकाकर अपने साथ ले जाती और हनुमानजी से कहती :

"लाल लंगोटो, काँधै सोटो,
ल्यो बालाजी, खाओ रोटो।
मैं थानैं देऊँ तणापै में,
थे मन्नै देयो बुढ़ापै में॥

यों कहकर वह हनुमान जी को भोग लगा दिया करती। यों करते-करते बहुत वर्ष बीत गये। स्त्री बूढ़ी हो चली, घर में बहू आयी तो उसने सास से कहा कि सासजी, हम इस प्रकार नित्य सवा सेर का रोटा नहीं दे सकते। बहू ने सास को अलग एक झोंपड़ी में बिठला दिया। बेचारी बुढ़िया भूखी ही सो रही। दूसरे दिन हनुमानजी आये और बुढ़िया से बोले, बुढ़िया माई, क्यों सो रही है ? "उठ ! लाल लंगोटो, काँधै सोटो, हाथ में चूरमो रोटो, ले खाले। तू मन्नै दियो तणापै में (तरुणावस्थामें) मैं तन्नै देऊँ बुढ़ापे में।" बुढ़िया उठ बैठी और उसने चूरमा खा लिया। अब हनुमानजी नित्य आते और बुढ़िया को रोटी खिला जाते। एक दिन बहू ने अपने बच्चों से कहा

कि जाओ, देखो तो सही कि बुढ़िया मर गई या जीवित है। बच्चों ने आकर अपनी माँ से कहा कि माँ, दादी तो मोटी ताजी बैठी है। बहू के घर में अन्नदाता बैर पड़ गये अर्थात् घर में खाने को अनाज का दाना भी नहीं रहा तो बहू सास के पास गई और सारी बात पूछने लगी। सास ने कहा कि तूने हनुमान जी महाराज का रोटा बंद कर दिया तेरे घर में टोटा आ गया और मुझे तो हनुमानजी नित्य रोटा खिला जाते हैं।

तब बहू ने सास के पैर पकड़कर माफी माँगी और बोली कि आप घर चलें, आप भी हनुमानजी को प्रसाद चढ़ाएँ और हम सब भी चढ़ाया करेंगे।

● इल्ली-घुणियों

एक इल्ली थी और एक था घुन। इल्ली ने घुन से कहा कि आओ कार्तिक स्नान करें। घुन ने उत्तर दिया कि तू तो दाख, छुहारों में रहती है लेकिन मैं तो मोठों में ही रहता हूँ सो मैं तो हरे-हरे सिट्टे खाकर और वर्षा का पानी पीकर ही रह लूँगा, तुम कार्तिक स्नान का पुण्य लूटो।

राजा की लड़की हर प्रातः कार्तिक स्नान को जाती थी सो इल्ली उसके पल्ले से चिपककर उसके साथ नित्य स्नान कर आती। कार्तिक का महीना पूरा हुआ और कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को इल्ली और घुन दोनों मर गये। अगले जन्म में इल्ली तो राजा के घर लड़की हुई और घुन उसी राजा के यहाँ मेढ़ा बना। राजा की लड़की सयानी हुई। दूसरे राजा से उसका विवाह हो गया। जब राजा की लड़की विदा होने लगी तो उसके रथ के बैल अड़ गये। राजा ने राजकुमारी से पूछा कि बेटी तुम्हें क्या चाहिए? राजकुमारी ने कहा कि यह मेढ़ा मुझे दे दीजिये। राजा ने सोने की साँकल से मेढ़े को रथ से बाँध दिया।

नयी रानी महल में चली गई और मेढ़े को महल के नीचे सीढ़ियों के पास बाँध दिया। रानी जब महल से उतरती तो मेढ़ा रानी से कहताः

रिमको झिमको श्याम सुन्दर बाई,
थोड़ो पाणीड़ो प्याई ये पाणीड़ो प्याई।

इस पर रानी उत्तर देती:

मैं कैऊँ थी रे, तूं सुणै थो रे
न्हाई म्हारा घुणिया कातिकड़ो न्हाईरे
कातिकड़ो न्हाई ।

अर्थात् मैं तुमसे कहा करती कि तू कार्तिक स्नान कर, लेकिन तूने नहीं किया ।

इस प्रकार उन दोनों में नित्य वार्तालाप होता। रानी की देवरानी—जेठानियों ने राजा के कान भरे कि राजाजी, आप रानी लाये हैं अथवा कोई जादूगरनी ? मनुष्यों से तो बातें सभी करते हैं लेकिन यह तो जानवरों से बात करती है। राजा ने छुपकर रानी और मेंढ़े की बातें सुनीं फिर वह रानी से बोला कि सच-सच बतला यह क्या बात है अन्यथा तुझे जान से मारूँगा। रानी ने आदि से अन्त तक सारी बात कह सुनायी। राजा ने पूछा कि क्या वास्तव में कार्तिक स्नान का इतना पुण्य होता है ? रानी ने कहा कि हाँ। इस पर राजा बोला कि चलो हम दोनों भी जोड़े से कार्तिक स्नान करेंगे ताकि अगले जन्म में हमें और भी अधिक पुण्य मिलेगा।

●गाय को पुन्न

एक सेठ बड़ा कंजूस था। उसने अपने जीवन में कभी दान-पुण्य नहीं किया अलबत्ता उसने एक ब्राह्मण को एक गाय दान में दी जो सवा पहर जीने के बाद मर गई। मरने के बाद सेठ को धर्मराज के सामने पेश किया गया। धर्मराज ने खाते-बही देखने के बाद सेठ से कहा कि तूने अपने जीवन में कोई पुण्य नहीं किया सिर्फ एक ब्राह्मण को एक गाय तूने दी थी जो सवा पहर जीने के बाद मर गई सो यह गाय हाजिर है, सवा पहर तक तुम इससे जो चाहो काम ले सकते हो।

धर्मराज की बात सुनकर सेठ ने गाय से कहा कि गऊ माता, तुम इस धर्मराज को अपने सींगों में उठाओ और पटको तथा सवा पहर तक

यही क्रम चलने दो। गाय धर्मराज की ओर लपकी तो धर्मराज भय के मारे भाग खड़े हुए। आगे-आगे धर्मराज, पीछे-पीछे गाय और उन दोनों के पीछे सेठ भागा। भागते-भागते धर्मराज विष्णु भगवान के पास पहुँचा, शेष दोनों भी वहीं पहुँच गये। विष्णु भगवान ने धर्मराज से पूछा कि आज यह क्या बात है ? धर्मराज ने हाँफते-हाँफते संक्षेप में सारी बात कह दी। तब विष्णु भगवान ने सेठ से कहा कि सवा पहर बीत गया, अब तुम वापिस नरक में जाओ। विष्णु भगवान की बात सुनकर सेठ ने हाथ जोड़ कर कहा कि प्रभो, आपके दर्शन से तो जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जाते हैं तो क्या मेरे पाप नहीं कट गए ? अब भला मैं किसलिए नरक में जाऊँगा। तब भगवान विष्णु ने सेठ को स्वर्ग में भेज दिया।

●चालाक गादड़ो

जंगल में एक ऊँट मर गया था। एक गीदड़ मांस के लालच में ऊँट के मृत शरीर में घुस गया और वहीं बैठा-बैठा कई दिन तक मांस खाता रहा। मांस खा-खाकर गीदड़ मोटा हो गया। अब उसने सोचा कि चलो बाहर निकलें, लेकिन ऊँट का चमड़ा धूप पड़ने से सिकुड़कर बहुत सख्त हो गया था और लाख कोशिश करने पर भी गीदड़ बाहर नहीं निकल सका। गीदड़ ने सोचा कि अब तो यहीं मरना पड़ेगा।

थोड़ी देर बाद गीदड़ ने देखा कि चार-पाँच आदमी उसी रास्ते से गुजर रहे हैं। गीदड़ ने उन्हें पुकारा और जब वे पास आ गये तो उनसे बोला कि तुम सब मिलकर मुझे बाहर निकालो, मैं तुम्हें एक बहुत ही जोरदार बात बतलाऊँगा। चारों पाँचों आदमियों ने पानी के घड़े लाकर मृत ऊँट पर डाले, जिससे उसका चमड़ा कुछ भीग गया। फिर उन्होंने बड़ी कोशिश करके गीदड़ को बाहर निकाला। गीदड़ ने बाहर निकल कर चैन की साँस ली और फिर बोला कि सुनो बात इतनी ही कहनी है कि भूलकर भी ऊँट के इस चमड़े में मत घुस जाना अन्यथा तुम से निकला

नहीं जाएगा। यों कहकर गीदड़ एक ओर को भाग गया और सब मुँह बाये ताकते रह गये।

भली याद दिराई

एक मियाँ जी अपनी बीबी के सामने बहुत शेखी बघारा करते थे। एक दिन मियाँजी ने अपनी बीबी से कहा कि बीबी कभी कोई मरदानगी दिखाने का काम पड़े तो मुझे अवश्य बतलाना। मेरी मरदानगी देखकर तुम चकित रह जाओगी।

दूसरे ही दिन बीबी ने मियाँजी की परीक्षा लेने की ठान ली। बीबी ने मियाँजी को पुकारा कि मियाँजी जल्दी से आओ, घर में साँप निकल आया है। मियाँजी साँप का नाम सुनकर काँपने लगे, उन्होंने वहीं से कहा कि बीबी, मुहल्ले में से किसी मर्द को बुलवाओ। मियाँजी की बात सुनकर बीबी बोली कि मियाँजी, यह क्या कहते हो, मर्द तो आप ही हैं। बीबी की बात सुनकर मियाँ ने वहीं से उत्तर दिया कि वाह भली याद दिलायी, साँप के सिर पर एक ऐसा सोटा लगाऊँगा कि साँप वहीं ढेर हो जाएगा।

दरज़ी की बेटी

एक दर्जी की बेटी विवाह योग्य हो गई तो उसने अपने बाप से कह दिया कि अपनी पसंद का वर मैं स्वयं ही चुन लूँगी। कई आदमी आये लेकिन दर्जी की बेटी ने उन्हें सीने-पिरोने के कार्य में अयोग्य सिद्ध कर दिया। एक दिन दो आदमी साथ आये, उनमें से एक आदमी दर्जी की बेटी के मन भा गया। उसने दोनों को एक एक चोली सीने के लिए दी और कहा कि जो पहले चोली सी देगा उसी के साथ मैं विवाह कर लूँगी लेकिन एक शर्त यह है कि दोनों को सूई में धागे पिरोकर मैं दूँगी।

दोनों चोलियाँ सीने के लिये बैठ गये। जो आदमी उसे पसन्द था उसकी सूई में वह छोटा धागा पिरोती और दूसरे की सूई में बड़ा। दूसरे

आदमी को वड़े धागे के कारण कपड़े में से सूई निकालने में देर लगती थी अतः पहले ने चोली जल्दी तैयार कर दी। शर्त के अनुसार उसी के साथ दर्जी की बेटी का विवाह हो गया और इस प्रकार अपनी चतुराई से वह मनपसन्द वर पाने में सफल हो गई।

चौधरण और मियाँ

एक जाट और मियाँ पड़ोसी थे। जाट संपन्न था लेकिन मियाँजी के घर फाके पड़ते थे। एक दिन भूख के मारे वेहाल होकर मियाँ जाट के घर गया। घर में जाट की स्त्री थी। मियाँ ने जाटनी से कहा कि भाभी, सेर भर बाजरी तो दो कि जिसका आटा बनाकर बच्चों को कुछ खिला पिला दूँ, आज तीन दिन से फाके पड़ रहे हैं। लेकिन जाटनी सर्वथा नट गई। मियाँ मन मारकर अपने घर आकर पड़ रहा। वात आयी गयी हो गई।

एक दिन जाटनी का छोटा लड़का घर में वड़ी ऊधम मचा रहा था। जाटनी तंग आकर उसे मारने के लिए दौड़ी तो लड़का घर से निकलकर गली में भाग चला, जाटनी भी उसके पीछे भागी। सामने से उसे मियाँ आता दिखलायी पड़ा। जाटनी ने घूँघट नीचा किया और मियाँ से पुकार कर कहा कि देवर, इस मुए को पकड़कर इसके एक चाँटा जमाना, इस पाजी ने आज वड़ा तंग किया है। मियाँ तो उधार खाये बैठा ही था, उसे पिछली बात भूली न थी। उसने आव देखा न ताव, लड़के के गाल पर एक थप्पड़ इतने जोर से मारा कि लड़का गश खाकर वहीं गिर पड़ा।

लड़के की हालत देखकर जाटनी को बड़ा रंज हुआ। उसने रोष-पूर्वक मियाँ से कहा कि यह क्या किया ? बच्चे को कहीं इस प्रकार मारते हैं ? मैंने तो यों ही ऊपर के मन से कहा था। लेकिन मियाँ तो जला-भुना बैठा था। उसने जाटनी को फटकारते हुए कहा कि क्या तुम सबको अपने जैसा ही समझती हो जो सेर भर बाजरे के लिए नट गई ? मैं तुम्हारी कही हुई बात थोड़े ही जाने देता था, तुमने एक थप्पड़

के लिए कहा मैं चार थप्पड़ लगा दूँ, मुझे भला क्या मालूम था कि तुम ऊपर और नीचे दो मन रखती हो ।

लाचार जाटनी ताव खाकर रह गई ।

● तेरा करम ई तन्नै कुटावै

एक डोम भूखा था । पास में बाजरे के सिवाय अन्य कोई वस्तु न थी अतः भूख के मारे सूखा बाजरा ही चबाने लगा । भूख जोर से लगने के कारण डोम को बाजरा बड़ा स्वादिष्ट लगा और बाजरे की तारीफ़ करता हुआ बोला कि लोग खामखाह ही बाजरे को कूटते हैं, पीसते हैं और पोते हैं, इसे तो यों ही खाया जाए तो बड़ा अच्छा है ।

सूखा बाजरा अधिक चबा जाने के कारण डोम को अतिसार हो गया और वह पाखाने फिरता-फिरता तंग आ गया और खीझकर बोला कि अरे बाजरे, तेरे करम ही तुझे कुटवाते हैं अन्यथा न तुझे कोई कूटे न कोई पीसे ।

● बहू नटण हाली कुण

एक स्त्री मोहल्ले की एक हवेली में छाछ माँगने के लिए गयी । घर की मालकिन घर में नहीं थी । बेटे की बहू ने कह दिया कि आज छाछ नहीं है । वह स्त्री लौट गई । राह में घर की मालकिन मिली तो स्त्री ने कहा कि आज तो तुम्हारे घर छाछ लाने के लिए गई थी लेकिन तुम्हारी बहू नट गई । सास ने कहा कि बहू नटने वाली कौन होती है ? तुम मेरे साथ घर चलो । वह स्त्री सास के साथ फिर उसके घर गई । घर जाकर सास ने बहू से कहा कि मेरे होते तू ना करने वाली कौन होती है ? फिर उसने छाछ लेने के लिए अपने साथ आई हुयी स्त्री से कहा कि मेरे रहते बहू नटने वाली कौन होती है, अब मैं तुम्हें नटती हूँ, जाओ अपने घर, छाछ नहीं है ।

● कैंईं को खत फाटतो होसी

एक बनिया गाँव के ठाकुर के कुछ रुपये माँगता था । कई बार तकाजा

करने पर भी जब ठाकुर ने रुपये नहीं दिये तो सेठ ने ठाकुर को खरी-खोटी सुनायी। ठाकुर ने कहा कि आज शाम को अपना खाता लेकर कोटड़ी आ जाना। बनिया शाम होते ही खाता बही लेकर ठाकुर के घर जा पहुँचा। बनिये ने ब्याज जोड़कर ठाकुर को कुल रकम बतला दी। उधर ठाकुर ने कुछ ढोलिनियों को बुला रखा था सो उसने ढोलिनियों से कहा कि ढोल बजाओ। ढोल बजने लगे तो ठाकुर ने अपने आदमियों को इशारा किया। उन्होंने सेठ की मरम्मत करनी शुरू कर दी। जब सेठ अधमरा हो गया तो ठाकुर ने कहा कि हमारा खत फाड़ दो अर्थात् कुल रकम पाने की फारखती दे दो। सेठ ने फारखती देकर अपना पीछा छुड़ाया और घर आ गया।

कुछ दिन बाद ठाकुर की कोटड़ी में फिर ढोल बजे तो किसी ने सेठ से पूछा कि आज ठाकुर के यहाँ किस बात के ढोल बज रहे हैं? सेठ आप बीती को भूला न था अतः खिसिया कर बोला कि किसी बनिये का खत फट रहा होगा।

● हिये को आँधो

एक सिंह जंगल में भूखा बैठा था, उसे कोई शिकार नहीं मिला था। गीदड़ ने सिंह के पास आकर कहा कि मैं आपके लिए शिकार ढूँढ़ कर लाता हूँ। गीदड़ गया तो उसन एक मोटे-ताजे गधे को चरता देखा। गीदड़ ने गधे से कहा कि यहाँ चरने को क्या धरा है, तुम मेरे साथ आओ मैं तुम्हें चरने के लिए हरी घास बतलाऊँगा; तथा एक बात और भी है, जंगल के राजा केशरी का मंत्री मर गया है अतः मैं राजा से तुम्हें मंत्री बना लेने के लिए भी सिफारिश कर दूँगा। हरी घास चरने और मंत्री बनने के सपने देखता हुआ गधा गीदड़ के साथ चल पड़ा। शेर ने गधे को दूर से ही देखा और वह गधे की ओर दौड़ा। गधा प्राण बचाकर भागा। गीदड़ ने सिंह से कहा कि आपने व्यर्थ ही जल्दबाजी में शिकार को खो दिया, गधा तो आपके पास आ ही रहा था। खैर, अब मैं दुबारा जाता हूँ, इस बार आप जल्दबाजी न करना।

गीदड़ फिर गधे के पास गया और ताना मारते हुए बोला कि तुम तो निरे गधे ही रहे, तुम राजाओं की रीति को भला क्या जानो। राजा तो तुम्हारी अगवानी के लिए आ रहा था। अब जंगल का राजा मेरे ऊपर नाराज़ हो गया है कि तुम किस गँवार को ले आये, जिसे इतनी भी तमीज नहीं। मैंने किसी प्रकार राजा को शान्त कर दिया है, तुम चलो और राजा के पैरों पर गिर कर माफी माँगो, राजा तुम्हें अवश्य मंत्री बना लेगा।

गधा फिर गीदड़ के साथ हो लिया। इस बार सिंह चुपचाप बैठा रहा लेकिन जैसे ही गधे ने झुक कर माफी माँगी शेर उस पर टूट पड़ा और गधे को चीर फाड़ डाला। तब गीदड़ ने सिंह से कहा कि महाराज, गधा एक अपवित्र जानवर होता है, दिन रात घूरों पर चरता रहता है अतः आप पहले स्नान कर आइए। सिंह स्नान करने गया तो गीदड़ ने गधे की आँखें और कलेजा निकाल कर खा लिया। सिंह आया तो उसने गीदड़ से पूछा कि इसकी आँखें और कलेजा कहाँ हैं ? गीदड़ ने उत्तर दिया कि महाराज, इसके हिया और दिया अर्थात् कलेजा और आँखें तो थी ही नहीं। यदि होतीं और यह हिया से सोचता और दिया से देखता तो एक बार बचकर भी दुबारा मरने के लिए क्यों आता ?

● स्याणी बहू

एक स्त्री अपनी बूढ़ी सास को ठीकरे में भोजन दिया करती और उस ठीकरे को नित्य फोड़ डालती। जब उसके बेटे की बहू आयी तो सास उसे ठीकरे में रोटी डाल कर दे देती और कहती कि जा अपनी 'दादस' (सास की सास) को रोटी दे आ। बहू रोटी दे आती और ठीकरे को लाकर रख देती। इस प्रकार बहुत से ठीकरे इकट्ठे हो गये। एक दिन सास ने बहू से कहा कि बहू, व्यर्थ ही इतने ठीकरे क्यों इकट्ठे कर लिए हैं, इन्हें फेंक दिया कर। बहू ने कहा कि सासजी, दादसजी के मरने के बाद मुझे भी तो आपको रोटियाँ देनी हैं, मैं नित्य नये ठीकरे कहाँ से लाया करूँगी, इन्हीं ठीकरों में आपको खाना दे दिया करूँगी।

बहू की बात सुनकर सास की आँखें खुल गईं और वह अपनी सास से अच्छा व्यवहार करने लगी।

● मूरखाँ की सधगी

राजा भोज कवियों को बहुत पुरस्कार दिया करता था। चार मूर्ख भी इनाम पाने के लिए राजा के पास चले। उन्हें एक गाँव के बाहर एक हाथी खड़ा दिखलायी दिया। हाथी को देखकर एक मूर्ख बोला, मेरी कविता तो बन गई है, यों कहकर उसने एक पंक्ति सुनाई—

बटोड़ो सो तो गुड़तो जाय।

दूसरा बोला : **थापक थड़िया जैंरा पाय।**

तीसरे ने कहा : **आगै पाछै पूँछ हिलाय।**

लेकिन चौथे से कुछ नहीं बन पड़ा। तीनों ने कहा कि हम तुझे पुरस्कार में हिस्सा नहीं देंगे।

राजा भोज ने नाराज होकर कालिदास को निकाल दिया था सो कालिदास वेष बदले वहाँ बैठा था। उसने चारों की बातें सुनी और फिर बोला कि चौथा चरण मैं बना देता हूँ लेकिन इसको पुरस्कार में हिस्सा अवश्य देना। यों कहकर कालिदास ने चौथा चरण कहा "श्याम घटा मुख मूला खाय।"

कविता पूरी हो गई और चारों मूर्ख दरबार में उपस्थित हुए। राजा को कविता सुनाई गई :

बटोड़ो सो तो गुड़तो जाय।
थापक थड़िया जैंरा पाय।
आगै पाछै पूँछ हलाय।
श्याम घटा मुख मूला खाय।

कविता सुनकर राजा ने कहा कि पहले तीन चरण तो ठीक हैं चौथा चरण ठीक नहीं है। चारों ने कहा कि चौथा चरण हमारा बनाया हुआ

नहीं है। राह में एक मूर्ख मिल गया था सो उसी ने हमारी कविता का सत्यानाश कर दिया है। राजा जान गया कि वह 'मूर्ख' कालिदास के अतिरिक्त और कोई नहीं है। कालिदास के बिना राजा को कल नहीं पड़ती थी। उसने मूर्खों से उसका पता ठिकाना पूछा। चारों मूर्खों से राजा को कालिदास का पता मिल गया था इसलिए वह उन पर बहुत प्रसन्न हुआ और उन्हें पुरस्कार देकर विदा किया।

खाती और जाटणी

एक जाटनी चक्की की मायनी लगाने के लिए खाती को अपने घर बुलाकर लायी। खाती मायनी लगाने लगा, जाटनी पानी की 'दोघड़' (दो घड़े) लाने चली गई। खाती मूर्ख था, उसने मायनी जोर से ठोंकी तो चक्की के पाट के दो टुकड़े हो गए। यह देखकर खाती हड़बड़ाकर उठा। छीके पर घी की हँडिया रखी थी और नीचे चूल्हे में दूध की 'कढ़ावनी' (हँडिया) रखी थी। खाती हड़बड़ाकर उठा तो घी की हँडिया से उसका सिर टकराया और घी की हाँडी नीचे रखी हुई दूध की हाँडी पर जा गिरी। दोनों हाँडियाँ फूट गईं और दूध तथा घी राख में मिल गये। अब तो खाती और भी गड़बड़ा गया और उतावली में बाहर की ओर भागा। शीघ्रता में उसने बाड़े का 'फलसा' झटके के साथ अलग किया तो 'फलसा' पास ही रखे हुए पानी के घड़ों पर जा गिरा। घड़े फूट गये और खाती सिर पर पैर रख कर भागा लेकिन घर से निकलते ही उसे जाटनी मिल गई। उसने पूछा कि क्या चक्की में मायनी ठोक दी है? खाती न हाँ भरी और भागने को हुआ। जाटनी ने कहा कि मेरे साथ आ, तुझे अनाज दूँगी। लेकिन खाती क्या मुँह लेकर आता। वह किसी प्रकार अपना पीछा छुड़ाकर भागना चाहता था। जाटनी ने उसका पल्ला पकड़ा तो खाती ने झटके के साथ अपना पल्ला छुड़ाया और शीघ्रता से चल पड़ा। झटका लगने से जाटनी के सिर पर से दोनों घड़े उसके हाथों पर होते हुए जमीन पर गिर गये जिससे घड़े भी फूट गये और जाटनी का नया चूड़ा भी टुकड़े-टुकड़े हो गया। जाटनी ने क्रोध में भर कर खाती से

कहा कि निपूते, तुझे रो लूँ। खाती ने भी मुड़कर उत्तर दिया कि रोएगी तो घर पर जाकर।

●चिडी और चिड़ो

एक चिड़ी थी और एक था चिड़ा। चिड़ी को मिला चावल और चिड़े को मिलां मूँग। दोनों ने खिचड़ी वनायी। चिड़ी पानी लाने के लिए गई पीछे से चिड़ा खिचड़ी खाकर बाहर चला गया। चिड़ी पानी लेकर आयी तो चिड़ा भी लौट आया। चिड़ी के पूछने पर चिड़े ने कहा कि मैंने तो खिचड़ी नहीं खायी, चिड़ी भी यही कह रही थी कि मैंने भी खिचड़ी नहीं खायी। अन्त में चिड़ी ने कहा कि दोनों कच्चे सूत के धागे के सहारे कुएँ में लटककर परीक्षा दें। जिसने खिचड़ी खायी है वह कुएँ में गिर जाएगा। पहले चिड़ी सूत के धागे के सहारे लटकी, लेकिन वह कुएँ में नहीं गिरी। तब चिड़ा लटका और वह कुएँ में गिर गया। अब चिड़ी वहीं बैठकर पश्चात्ताप करने लगी कि खिचड़ी की खातिर मैंने अपने चिड़े को कुएँ में डाल दिया।

इतने में एक बिल्ली वहाँ आ गई। बिल्ली के पूछने पर चिड़ी ने सारी बात बतला दी। बिल्ली ने कहा कि मैं तेरे चिड़े को वाहर निकाल दूँगी लेकिन शर्त यह है कि चिड़े को बाहर निकाल कर मैं खा जाऊँगी। चिड़ी ने हाँ भर ली। बिल्ली ने चिड़े को बाहर निकाला और चिड़ी से बोली कि अब मैं इसे खाती हूँ। चिड़ी ने कहा कि ऐसी भी क्या जल्दी है, इसके पर तो सूख जाने दो। थोड़ी देर बाद बिल्ली ने फिर कहा कि अब खाऊँ? चिड़ी ने कहा कि चिड़े के पर अभी कुछ गीले हैं। इधर चिड़ी ने बिल्ली को बातों में लगाया और उधर चिड़ा फर्र से उड़ गया। पीछे पीछे चिड़ी भी उड़ गई और बिल्ली अपना सा मुँह लेकर रह गई।

●जाट को न्याव

एक ठाकुर नौकरी की तलाश में दिसावर जाने लगा तो उसने अपने घर की सार सँभाल अपने पड़ोसी सुनार को दे दी। घर में सिर्फ ठकुरानी

ही थी और कोई नहीं था सो सुनार ने ठकुरानी को अपनी बना ली। सुनार अब ठकुरानी के पास नित्य आने लगा।

उधर दो तीन साल बाद ठाकुर घर को लौटा। ठाकुर के पास एक ऊँट था और वह चार सौ रुपये कमाकर लाया था। रास्ते में प्यास लगी तो वह एक बावड़ी पर पानी पीने के लिए ठहरा। वहीं एक जाट पानी पीने के लिए आया। जाट के कपड़े अत्यन्त साधारण और मैले से थे। ठाकुर के पूछने पर जाट ने अपना परिचय दिया कि मैं फलाँ गाँव का जाट हूँ और एक जगह न्याय करके अपने गाँव को लौट रहा हूँ। जाट न्यायाधीश की पोशाक देखकर ठाकुर को हँसी आ गई। ठाकुर ने भी जाट को अपना परिचय दिया। ठाकुर ने जाट से कहा कि तुम मेर साथ ऊँट पर चढ़ जाओ, राह में तुम्हारा गाँव पड़ेगा सो वहीं तुम्हें उतार दूँगा। दोनों ऊँट पर सवार होकर चल पड़े। रास्ते में ठाकुर न जाट से कहा कि चौधरी, कोई बात कहो। जाट ने उत्तर दिया कि ठाकराँ, बातों के पैसे लगते हैं, मैं एक बात कहने के सौ रुपये लेता हूँ। ठाकुर ने जाट को सौ रुपये दिये और बात सुनी, "स्त्री का विश्वास नहीं करना चाहिए।" ठाकुर ने जाट को दो सौ रुपये और देकर दो बातें और सुनी, एक यह कि काने आदमी से राम-राम नहीं करना चाहिए और दूसरी यह कि किसी से कोई काम करवाया जाए तो उसकी मजदूरी पहले तय कर लेनी चाहिए, यों कहकर काम कदापि नहीं करवाना चाहिए कि तुम काम कर दो, मैं तुम्हें खुश कर दूँगा।

जाट का गाँव आ गया तो ठाकुर ने जाट को उतार दिया। जाट ने ठाकुर से आग्रह किया कि एक वक्त मेरे घर खाना खाकर जाओ। ठाकुर वहाँ ठहर गया। जाट ने ऊँट को 'फूस' डलवा दिया और ठाकुर को भी अच्छी तरह भोजन करवाया। दिन ढलने लगा तो ठाकुर ऊँट पर सवार होकर अपने गाँव को चल पड़ा। रास्ते में ही ठाकुर का खेत पड़ता था। ठाकुर ने सोचा कि लगे हाथ खेत को भी सम्हालते चलें। ठाकुर के खेत में एक बहुत ऊँची 'जाँटी' (शमीवृक्ष) थी जो दूर से ही दिखलायी पड़ती थी। ठाकुर को 'जाँटी' नहीं दिखलायी पड़ी तो वह खेत में गया। खेत में जाकर

ठाकुर ने देखा कि कोई आदमी 'जाँटी' को जड़ मूल से उखाड़ कर ले गया है और जाँटी को उखाड़ने से जो गढ़ा बन गया है उसमें मतीरे की एक बेल लगी हुई है और बेल पर एक अच्छा मतीरा लगा है।

ठाकुर अपने घर आ गया। ठाकुर को आया देख मुहल्ले के अन्य लोग भी आ गये, सुनार भी आया। सबने ठाकुर से कुशल क्षेम पूछी। ठाकुर के घर के आगे बैठ कर सब लोग चिलम पीने और बातें करने लगे। बातों ही बातों में ठाकुर ने कहा कि आज तो मतीरा खाने की इच्छा है सो कोई मतीरा लाकर खिलाओ। सुनार ने ठाकुर से कहा कि जेठ के महीने में भला मतीरा कहाँ मिल सकता है? ठाकुर और सुनार में विवाद हो गया और दोनों में शर्त लग गई। यदि ठाकुर सुनार को मतीरा खिला दे तो ठाकुर के पीछे से जितना खर्च ठाकुर के घर में लगा है वह सारा सुनार बरदाश्त करे अन्यथा ठाकुर के घर में जिस चीज को सुनार हाथ लगा दे वह ठाकुर की हो जाए। शर्त लग जाने के बाद सब लोग इधर उधर चले गये।

मौका पाते ही सुनार ने संक्षेप में सारी बात ठकुरानी से कही और यह भी कह दिया कि ठाकुर से मतीरे का भेद पूछकर मुझे बतला। ठकुरानी ने कहा कि रात को ठाकुर से पूछकर बतलाऊँगी, तुम घर से बाहर खड़े रहना। रात हुई तो ठाकुर और ठकुरानी खाना खाकर सो रहे। बातों बातों में ठकुरानी ने ठाकुर से मतीरे का भेद पूछा। ठाकुर ने बहुत टाला लेकिन ठकुरानी नहीं मानी, बोली कि मुझे ही नहीं बतलाओगे तो और फिर किसको बतलाओगे? सबेरा होते ही तो तुम सुनार को मतीरा खिला ही दोगे, रात रात में क्या होता है, मैं किसे कहने जाऊँगी। ठाकुर ने मतीरे का रहस्य ठकुरानी को बतला दिया। ठाकुर हारा थका था सो गहरी नींद में सो गया। ठकुरानी उठी और पेशाब करने के बहाने बाहर जाकर मतीरे का रहस्य सुनार को बतला आई। सुनार रातों रात ठाकुर के खेत में गया और मतीरे को बेल सहित उखाड़कर ले आया।

सबेरा हुआ तो ठाकुर, सुनार और गाँव के बहुत से लोग ठाकुर के खेत पर गये लेकिन मतीरा तो पहले ही गायब हो चुका था। ठाकुर शर्त

हार गया। सुनार ने मूँछों पर ताव दिया। ठाकुर ने सुनार से दस दिन की मोहलत माँगी। वह उदास मुँह घर आया।

ठाकुर मन में जान गया कि ठकुरानी ने ही सारा काम बिगाड़ा है, लेकिन उसने ठकुरानी से कुछ नहीं कहा और ऊँट पर सवार होकर अपने दोस्त जाट के घर चल पड़ा। उस वक्त जाट घर पर नहीं था, कहीं न्याय करने के लिए गया हुआ था। जाट की स्त्री ने ठाकुर की आवभगत की। ठाकुर खाना खाकर गाँव में निकल गया। रास्ते में एक काना आदमी मिला तो ठाकुर ने उससे राम-रमी की। काना बोला कि ठाकराँ, मैंने सौ रुपये में आपके पास अपनी एक आँख गिरवी रखी थी सो आप अपने रुपये ब्याज सहित ले लें और मेरी आँख मुझे दे दें। काने की बात सुनकर ठाकुर चकराया। उसने फिर अपनी भूल महसूस की। काने को ठाकुर ने कह दिया कि मैं अमुक जाट के घर ठहरा हूँ तुम वहीं आ जाना। ठाकुर फिर आगे बढ़ा। उसने सोचा कि एक जूता फट गया है सो इसकी मरम्मत करवा लूँ। जूते गाँठने वाले चमार को ठाकुर ने अपना फटा हुआ जूता दिया और कहा कि इस जूते की मरम्मत ठीक से कर दे, मैं तुझे खुश कर दूँगा। चमार ने जूता ठीक कर दिया तो ठाकुर ने एक रुपया चमार को देते हुए कहा कि लो अब तो खुश हो न ? ठाकुर ने सोचा कि मैं दो आने की मजदूरी के बदले चमार को एक रुपया दे रहा हूँ सो यह बहुत खुश होगा लेकिन चमार ने कहा कि नहीं, मैं खुश नहीं हुआ। तब ठाकुर उसे दो रुपये देने लगा लेकिन चमार खुश नहीं हुआ। अन्त में ठाकुर ने चमार को दस रुपये देकर खुश करना चाहा फिर भी चमार खुश नहीं हुआ। ठाकुर ने तीसरी बार अपनी गलती महसूस की। उसने चमार से कहा कि मैं अमुक चौधरी के घर ठहरा हूँ, तुम वहीं आ जाना, वहीं मैं तुमको खुश कर दूँगा।

ठाकुर लौटकर जाट के घर पहुँचा तो उसने देखा कि चौधरी आ गया है तथा काना और चमार भी वहीं बैठे हैं। ठाकुर ने जाट से राम-रमी की और सारी घटना आदि से अन्त तक कह सुनाई। जाट ने ठाकुर को ढ़ाढ़स बँधाया और कहा कि सब काम ठीक हो जाएगा। फिर काने आदमी

की बात सुनकर जाट ने कहा कि व्याज सहित तुम्हारी तरफ एक सौ साठ रुपये बनते हैं सो रुपये दे दो और अपनी आँख ले लो। काने आदमी ने कहा कि इस वक्त मेरे पास एक सौ दस रुपये हैं सो वे तो ले लो बाकी रुपये अभी ला देता हूँ लेकिन पहले मेरी आँख तो मुझे दिखलाओ। काने की बात सुन-कर जाट ने जाटनी से पुकार कर कहा कि 'हटड़ी' (पुराने ढंग की अलमारी जो दो दीवारों के जोड़ में जगह रख कर बनाई जाती थी।) के कुल्हड़ में बहुत सी आँखें पड़ी हैं सो उसमें से इसकी आँख निकालकर ला दो। जाटनी ने अपनी छोटी लड़की के हाथ कुल्हड़ में से हिरन की एक आँख निकालकर भेजी लेकिन काने ने कहा कि यह आँख मेरी नहीं है। जाटनी ने दूसरी आँख भेजी, लेकिन काने ने उसे भी स्वीकार नहीं की। इसी प्रकार जाटनी ने चार पाँच बार कुल्हड़ में से आँखें निकालकर भेजीं लेकिन काना हर बार ना करता गया। तब जाटनी ने खीझकर अन्दर से ही पुकारा कि कुल्हड़ में तो बहुतेरी आँखें पड़ी हैं, तुम इसकी दूसरी आँख निकाल कर भेज दो तो उसकी जोड़ी मिला-कर आँख निकाल दूंगी, यों कुछ पता नहीं चलता। जाटनी की बात सुनकर काना चकराया और वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया।

अब चमार की बारी आई। जाट ने चमार से कहा कि ठाकुर तुझे एक जूता गाँठने की मजदूरी स्वरूप दस रुपये देता है, फिर तू और क्या चाहता है? लेकिन चमार ने उत्तर दिया कि मैं खुश नहीं हूँ। तब जाट ने कहा कि बादशाह के शाहजादा हुआ है और आज मैं बादशाह को बधाई देने के लिए जा रहा हूँ, बोल तू खुश है कि नहीं। चौधरी की पहुँच दरबार तक थी, चमार भी इस बात को जानता था। चौधरी की बात सुनकर वह दुविधा में पड़ गया, उसने सोचा कि बादशाह के गुस्से से मुझे कोई बचाने वाला नहीं अतः चमार ने कहा कि चौधरी मैं बहुत खुश हूँ। यों कहकर चमार भी चलता बना।

चमार के जाने के बाद चौधरी ने ठाकुर से कहा कि तुम घर पर जाकर घर के आँगन में एक बहुत ऊँचा चबूतरा बनवा लो लेकिन चबूतरे पर चढ़ने

के लिए सीढ़ियाँ मत बनवाना। जिस दिन सुनार की दी हुई अवधि पूरी होगी मैं स्वयं ही तुम्हारे घर आ जाऊँगा। फिर चौधरी ने ठाकुर को वे रुपये दे दिये जो उसने काने आदमी से लिये थे।

ठाकुर ने घर आकर एक ऊँचा चबूतरा बनवाया। यथा समय चौधरी भी आ गया। चौधरी ने ठकुरानी को चबूतरे के ऊपर बिठला दिया और एक बाँस की बनी सीढ़ी चबूतरे से सटाकर सीधी खड़ी कर दी। फिर चौधरी ने ठाकुर के घर की सारी चीजें निकलवा कर आँगन में रख दीं। सुनार और गाँव के अन्य लोग भी ठाकुर के घर आ गये। सुनार ने आँगन में रखी सारी चीजें देखीं और फिर उसने घर का कोना-कोना छान मारा लेकिन उसे ठकुरानी कहीं नहीं दिखलाई पड़ी। तब ठकुरानी ने ऊपर से खखारा किया। सुनार जान गया कि ठकुरानी ऊपर है। वह बड़ी सावधानी से बाँस की सीढ़ी के सहारे ऊपर चढ़ने लगा लेकिन वह थोड़ा ही ऊपर चढ़ा था कि सीढ़ी उलटने लगी। गिरने के भय से सुनार ने अपने दोनों हाथों से सीढ़ी को थाम लिया। तभी पास खड़े चौधरी ने सुनार का हाथ पकड़ा और कहा कि तुमने सीढ़ी को हाथ लगाया है अतः शर्त के अनुसार यह सीढ़ी अपने घर उठा ले जाओ। अन्य लोगों ने भी चौधरी की बात का समर्थन किया। लाचार सुनार सीढ़ी उठाकर अपने घर को गया।

सभी ने चौधरी के न्याय की प्रशंसा की। चौधरी ने वे तीन सौ रुपये जो उसने पहले बात कहने के बदले ठाकुर से लिए थे ठाकुर को लौटा दिये। ठाकुर ने कहा कि चौधरी वास्तव में ही तुम सच्चे न्यायकर्ता हो, तुम्हारे मैले कुचैले कपड़ों को देखकर उस दिन मुझे हँसी आ गई थी लेकिन अब मैं अपनी भूल के लिए तुमसे माफी माँगता हूँ।

● कालज़ो दे जिको बेटो भी दे देवै

एक साहूकार निःसंतान था। साहूकार दंपति इस बात से बड़े दुखी थे। वह साहूकार एक महात्मा की सेवा करने के लिए जाया करता था। महात्मा ने साहूकार को कह दिया था कि सात जन्म में भी तेरे पुत्र नहीं होगा। साहूकार का दुःख इस बात से और भी बढ़ गया था। साहूकार की

स्त्री अपने पति से भी अधिक दुखी रहती। एक रात को दोनों अपने घर में सो रहे थे कि एक साधु गली में से आवाज लगाता गुजरा, "एक-एक रोटी, एक-एक बेटा; दो-दो रोटी, दो-दो बेटा।" साहूकार की स्त्री को सोच के मारे नींद नहीं आई थी। साधु की आवाज सुनकर वह उठकर रसोई घर में गई। रसोई घर में एक बची हुई रोटी पड़ी थी। साहूकार की स्त्री ने वह रोटी ले जाकर साधु को दे दी। उसी रात साहूकार की स्त्री गर्भवती हुई और नौ महीने बाद उसके घर पुत्र जन्मा। जिस महात्मा ने साहूकार से कहा था कि तेरे सात जन्म में भी पुत्र नहीं लिखा है साहूकार उसके लिए नित्य रोटी लेकर जाया करता था। आज साहूकार देरी से पहुँचा तो महात्मा ने इसका कारण पूछा। साहूकार ने कहा कि महात्मन्, आपकी कृपा से मेरे घर लड़के का जन्म हुआ है, इसी कारण आज देर हो गई। साहूकार की बात सुनकर महात्मा चौंका। उसने रोषपूर्वक कहा कि तेरे सात जन्म में भी लड़का नहीं लिखा है, फिर यह क्योंकर हुआ ? मैं तो झूठा पड़ गया। मैं भगवान विष्णु से इसका कारण पूछूँगा। साहूकार और महात्मा में ये बातें हो ही रही थीं कि इतने में वहाँ नारदजी आ पहुँचे। महात्मा से पूरी बात सुनकर नारदजी ने कहा कि मैं विष्णु लोक को जा रहा हूँ सो भगवान से पूछकर मैं तुम्हें इसका उत्तर दूँगा।

नारद विष्णु-लोक पहुँचे तो क्या देखते हैं कि भगवान विष्णु हाय-तोबा मचाये हैं, उन्होंने नारदजी को देखते ही कहा कि नारद, मेरे पेट में बड़ी पीड़ा है यदि तुम किसी मनुष्य का कलेजा ला सको तो मेरी पीड़ा दूर हो सकती है, अन्य किसी भी उपाय से यह पीड़ा नहीं जाएगी। नारदजी उलटे पैरों कलेजा लाने के लिए लौट पड़े। पहले-पहल वे उसी महात्मा के पास गये लेकिन महात्मा ने कहा कि अपनी-अपनी जान सबको प्यारी है, भगवान का पेट दुखता है तो क्या मैं अपना कलेजा निकाल कर दे दूं ? महात्मा के इन्कार करने पर नारद अन्यत्र गये लेकिन किसी ने कलेजा देना स्वीकार नहीं किया। घूमते-घामते रात हो गई। आधी रात को वही रोटी माँगने वाला साधु नारदजी को दिखलाई पड़ा। नारदजी ने उससे

भी भगवान के पेट दर्द की बात कही। भगवान के पेट में दर्द है और वह मेरे कलेजे से जा सकता है, यह बात सुनते ही साधु ने अपने चिमटे से अपना वक्ष चीर डाला और कलेजा नारद को दे दिया। नारद भागे-भागे विष्णु भगवान के पास पहुँचे तो क्या देखते हैं कि वे तो लक्ष्मी के साथ चौसर खेल रहे हैं। नारद को देखते ही भगवान ने पूछा कि नारदजी, कलेजा किसने दिया ? नारद ने कहा कि भगवन्, एक साधु रात को रोटी माँगता फिरता था, आपके पेट-दर्द की बात सुनते ही उसने तुरन्त अपना कलेजा निकाल-कर दे दिया। तब विष्णु भगवान ने नारद से कहा कि जो अपना कलेजा इस प्रकार दे सकता है वह बेटा भी दे सकता है। यह सही है कि साहूकार के भाग्य में बेटे का मुँह देखना नहीं बदा था लेकिन बेटा मैंने नहीं उसी साधु ने दिया है।

नारद लौट पड़े। जब उन्होंने सारी घटना उस महात्मा को आकर सुनाई तो उसने लज्जा से अपना सिर झुका लिया।

● लंका तो त्रेता में ही बलगी

एक सुनारी के पास कुछ सोना था। उसने सोचा कि ससुराल में देवर या जेठ को गहना गढ़ने के लिए सोना दूँगी तो वे कुछ खोट अवश्य मिला देंगे अतः जब अपने माइके जाऊँगी तो अपने बाप से गहना बनवा लूँगी। यों सोचकर जब वह पीहर गई तो सोने को अपने साथ लेती गई। अपने बाप को सोना देकर उसने कहा कि बापू, मुझे अमुक-अमुक गहने बना दो। बाप ने कहा कि हाँ बाई, पहले तेरा काम होगा पीछे किसी और का। यों कहकर उसने अपने बेटे को सोना दिया और कहा कि बहिन के गहने पहले बना दो। लेकिन फिर सुनार के मन में यह बात आई कि भाई कहीं बहिन का लिहाज न रख जाए। इसलिए उसने बेटे को चेताने के लिए कहा कि राजा रामचन्द्र सबको एक बराबर समझते थे। लेकिन बेटे ने पहले ही जितना सोना निकालना था उतना सोना उड़ा लिया था अतः बाप को संतोष दिलाने के लिए बोला कि लंका को तो हनुमानजी ने त्रेता में ही जला डाला था। बेटे की बात सुनकर बाप ने सन्तोष की साँस ली।

काठ की पुतली

चार दोस्त थे, खाती, दर्जी, सुनार और ब्राह्मण। एक बार चारों कमाने के लिए साथ-साथ निकले। संध्या हुई तो चारों एक वृक्ष के नीचे ठहर गये। चारों ने तय किया कि प्रत्येक आदमी एक पहर जागकर पहरा दे। पहले-पहल खाती पहरे पर बैठा और शेष तीनों सो गये। खाती को नींद सताने लगी तो उसने अपने औजार निकाले और काठ की एक पुतली बनाने लगा। अपना पहरा समाप्त होते-होते खाती ने एक बहुत सुन्दर काठ की पुतली तैयार कर दी। फिर उसने दर्जी को जगाया और स्वयं सो गया। दर्जी ने पुतली देखी तो उसके जी में आया कि पुतली को कपड़े पहना दिए जाएँ तो यह बहुत खूबसूरत लगने लगेगी। यों सोचकर दर्जी ने एक सुन्दर पोशाक बनाकर पुतली को पहना दी। दर्जी का पहरा पूरा हो गया तो उसने सुनार को जगाया। सुनार ने अपने पहरे में पुतली को गहने बनाकर पहनाये और फिर वह ब्राह्मण को जगाकर सो गया। ब्राह्मण ने पुतली को देखकर कहा कि कितनी सुन्दर पुतली है, लेकिन यह बेजान है। यदि मैं इसमें प्राण डाल दूँ तो यह परी जैसी लगने लगेगी। ब्राह्मण ने अपनी मंत्र विद्या के बल से पुतली में प्राण डाल दिये और अब वह पुतली एक सुन्दर युवती बन गई।

सबेरा हुआ तो चारों आदमी आपस में झगड़ने लगे। प्रत्येक यही कहता था कि युवती पर मेरा अधिकार है और मैं इसके साथ विवाह करूँगा। झगड़ते-झगड़ते जब काफी देर हो गई तो उधर से एक आदमी निकला। उसने चारों से झगड़ने का कारण पूछा तो उन्होंने सारी बात कह सुनाई और यह भी कहा कि हम तुम्हें पंच बनाते हैं, तुम जो फैसला करोगे वही हमें मंजूर होगा। चारों की बात सुनकर आगन्तुक ने कहा कि खाती ने पुतली बनाई और ब्राह्मण ने उसमें प्राणों का संचार किया अर्थात् उन दोनों ने इस युवती का निर्माण किया अतः खाती और ब्राह्मण इस युवती के जनक हैं। दर्जी ने इसे कपड़े पहनाये सो विवाह के वक्त मामा अपनी भानजी

के लिए कपड़े लाता है अतः दर्जी इसका मामा हुआ। विवाह के समय वर की ओर से वधू के लिए गहने लाये जाते हैं और सुनार ने उसे आभूषण पहनाये हैं अतः वास्तव में वही इसको पत्नी रूप में पाने का अधिकारी है।

फैसले के अनुसार युवती का विवाह सुनार से हो गया।

● दूदो-दूदी

एक था दूदा, एक थी दूदी। एक दिन दूदा ने दूदी से कहा कि दूदी, बाज औरतें ऐसी सयानी होती हैं कि अपने घर में ही चिपकी बैठी रहती हैं और एक तुम हो कि दिन भर गाँव में हाँडती (व्यर्थ घूमना) रहती हो। दूदी ने कहा कि कल से मैं भी ऐसा ही करूँगी। दूसरे दिन दूदी बाजार गई और बहुत सा गोंद खरीदकर लाई। घर आकर उसने सारा गोंद पानी में घोला और फिर सारे बदन पर गोंद का लेप करके खंभे से चिपक गई। शाम को दूदा घर आया तो उसने दूदी को पुकारा कि दूदी किवाड़ खोलो। दूदी ने आवाज लगाई कि मैं तो यहाँ चिपकी बैठी हूँ। दूदा घर की दीवार फाँदकर अन्दर आया और दूदी से बोला कि यह तुमने क्या कर रखा है? दूदी ने उत्तर दिया कि तुम्हारे कहे अनुसार घर में चिपकी बैठी हूँ।

दूदे ने दूदी से कहा कि दूदी तूने इतना गोंद व्यर्थ खोया और नाहक परेशान हुई, बाज स्त्रियाँ ऐसी होती हैं कि पानी पर मलाई जमा देती हैं। दूदी ने कहा कि उँह, इसमें क्या है, ऐसा तो मैं भी कर सकती हूँ। दूदा बाजार गया तो दूदी ने पानी के सारे बरतन खाली कर दिये और 'पैंडे' (पानी घर) को पानी से भर दिया। फिर उसने रूई के तमाम कपड़े (रजाइयाँ आदि) उधेड़ कर उनकी रूई निकाली और रूई को पानी पर तैरा-तैराकर मलाई जमाने लगी। शाम को दूदा घर आया तो उसने दूदी को पुकारा कि दूदी किवाड़ खोलो। दूदी ने वहीं से उत्तर दिया कि मैं तो इस वक्त पानी पर मलाई चढ़ा रही हूँ बीच में नहीं उठ सकती। दूदा घर की दीवार लाँघकर अन्दर आया तो दूदी की करतूत देखकर बोला कि दूदी यह क्या कर रही हो? दूदी ने तपाक से उत्तर दिया कि पानी पर मलाई जमा रही हूँ न?

बूढ़ा ठंढ़ी साँस लेकर बोला कि बूढ़ी यह तो अच्छा किया लेकिन इस जाड़े की रात में क्या ओढ़कर सोएँगे, सारी रात ठिठुरते ही बीतेगी।

● कामदेव को बल

एक गाँव में एक पंडितजी कथा बाँचा करते थे। कथा समाप्त होने पर वे कहा करते कि 'कामदेव में दस हजार हाथियों का बल होता है।' एक दिन एक साधु ने जो कि कथा सुन रहा था पंडितजी को चुनौती दी कि या तो अपने कथन को सिद्ध करो अथवा कथा बाँचना बंद करो। पंडितजी बेचारे बड़ी दुविधा में पड़े। उन्होंने तो सुनी-सुनाई बात कह दी थी। घर आये तो बड़े उदास, खाना-पीना सब भूल गये। ब्राह्मणी भी सुनकर चिन्ता में डूब गई।

दूसरे दिन ब्राह्मण की युवा लड़की अपनी ससुराल से पीहर आ गई। उसने सारी बात अपनी माँ से जानकर अपने पिता से कहा कि आप खाना खाइये, मैं इस बात को सिद्ध कर दूँगी। दूसरे दिन लड़की ने खूब बढ़िया रसोई बनवाई। मिठाइयाँ, केशर, इलायची और विविध प्रकार के मेवों से युक्त करके चाँदी की वरकों से सजाई गई। उसने स्वयं नहा धोकर खूब श्रृंगार किया। शाम हुई तो बन-ठनकर भोजन की थाली को सुगंध में सने हुए वस्त्र से ढाँक कर तथा केवड़ा युक्त पानी की सुराही लेकर बाबा की मढ़ी की ओर चल पड़ी। वर्षा की ऋतु थी, बादल उमड़-घुमड़ रहे थे। बिजलियाँ चमक रही थीं। वह मढ़ी तक पहुँची तो कुछ बूँदा-बाँदी शुरू हो गई। बिजली की चमक में वह बाला ऐसी लगती थी मानो वर्षा के साथ इन्द्र की अप्सरा धरा पर उतर आई हो। लड़की ने बाबा से कुछ क्षण मढ़ी में ठहरने की आज्ञा माँगी तो बाबा ने सहर्ष आज्ञा दे दी। बाबा ने पूछा कि ऐसी अंधेरी रात और वर्षा में कहाँ जाओगी? लड़की ने कहा कि मुझे एक साधु महात्मा की सेवा में जाना है और यह भोजन का थाल भी उन्हीं के लिए ले जा रही हूँ, अब तो मुझे जाना ही होगा, वे मेरी राह देख रहे होंगे। बार-बार बिजली की चमक में उस बाला को देखने से बाबा का मन

चलायमान हो गया और वह लड़की से वहीं ठहरने का आग्रह करने लगा। बहुत अनुनय करने पर लड़की कमरे में चली गई। बाबा ने मिठाई का थाल और उस परी जैसी बाला को अपने कब्जे में जाना तो मस्त हो गया। लड़की ने भय प्रकट करते हुए कहा कि आप बाहर जाकर देख आइये कि कोई है तो नहीं? बाबा ज्यों ही बाहर गया लड़की ने कमरे के किवाड़ बन्द करके अन्दर से साँकल लगा ली। बाबा आया तो उसने बहुत मिन्नतें कीं, बहुत डराया धमकाया, लेकिन लड़की ने किवाड़ नहीं खोले, तब क्रुद्ध होकर वह बोला कि रंडी! आज मैं तुझे किसी भी हालत में नहीं छोड़ूँगा, और कमरे की छत पर जाकर चिमटे से छत में छेद करने लगा। चिमटा काफी बड़ा और मजबूत था फिर भी दीवार में छेद करते-करते बाबा पसीने से तर-बतर हो गया।

फिर भी बाबा का उत्साह निरंतर बढ़ ही रहा था। अन्त में बाबा ने छत में सूराख निकाल ही लिया और अन्दर उतरने लगा। लेकिन सूराख कुछ कम चौड़ा रह गया था और बाबा का शरीर कंधों के पास आकर उसमें अटक गया। अब न वह नीचे ही उतर सकता था और न बाहर ही निकल सकता था, वहीं अधर में झूलने लगा। लड़की ने किवाड़ खोले और सरपट अपने घर की ओर भाग चली। घर जाकर उसने अपने पिता से कहा कि अब आप गाँव के लोगों को साथ लेकर मढ़ी पर जाइये और बाबा से पूछिए कि 'काम' का बल कितना है?

ब्राह्मण गाँव के बहुत-से लोगों को साथ लेकर मढ़ी पर पहुँचा। बाबा की अजीब गति बनी हुई थी। ब्राह्मण ने पूछा कि बाबा! अब बतलाइये कि कामदेव में दस हजार हाथियों का बल होता है या नहीं, तो साधु ने शर्म से गर्दन नीची कर ली और कहा कि मुझे बाहर निकालो, कामदेव में दस हजार हाथियों का ही नहीं असंख्य हाथियों का बल होता है।

● सेर पर सवा सेर

एक आदमी चोरी से दूसरे के बाग़ में से आम लाया करता था। आम-

के वृक्ष के पास पहुँचकर वह कहता कि अम्बसार, अम्बसार, ले लूँ दो चार। फिर अपने से ही कह देता "ले ले दस, बीस, यार।" मालिक ने एक दिन छुपकर उसे पकड़ लिया और अपने लट्‌ठ से कहा—"लट्‌ठसार, लट्‌ठसार! देऊँ दो चार" और फिर अपने से ही कहा—"दे दे दस बीस यार।" उसने ज्यों ही दो तीन लट्‌ठ उसके जमाये तो वह घिघियाने लगा और फिर कभी आमों की चोरी न करने की प्रतिज्ञा करके चला गया।

● लापरवाही दुखदाई

एक बार एक राजा शिकार खेलते-खेलते जंगल में बहुत दूर निकल गया। संगी-साथी सब पीछे छूट गये। प्यास के मारे राजा का दम निकलने लगा। तभी एक ग्वाले ने अपनी 'दीवड़ी' (पानी रखने का पात्र) से राजा को पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर ग्वाले को एक पीपल के पत्ते पर ६० गाँव बकसीस लिख दिए। ग्वाले ने पत्ता वहीं कहीं रख दिया। पत्ते को उसकी बकरी चर गई, तब वह रोने लगा और बोला—

काईं कहूं कछु कयो न जाय,
कयां बिनां पण रह्यो न जाय।
मन की बात मन में रही,
साठ गांव बकरी चर गई ॥

(क्या कहूं कुछ कहा नहीं जाता और बिना कहे रहा भी नहीं जाता। साठ गाँवों को बकरी चर गई और साठ गाँवों का मालिक बन कर ठाट से रहने की बात मन की मन में ही रह गई।)

गंगाजी जायेंगे

एक जाट के दो लड़के घर में सोये हुए थे। एक छत पर सोया था, दूसरा नीचे आँगन में। चाँदनी रात में सफेदी किया हुआ घर चमक रहा था, सो चार चोर घर में घुस गये। ऊपर वाले ने चोरों को देख लिया और नीचे सोये अपने छोटे भाई नारायण को सम्बोधित करके पुकारने लगा—"नाराण्या भई नाराण्या, गंगाजी तो जायेंगे।" नारायण ने समझ लिया

कि जरूर कोई खटका है, इसलिए उसने भी नीचे से पुकारा—गंगाजी तो जायेंगे पर घर किसको संभलायेंगे? फिर ऊपर वाले ने कहा—"चरखो बेच्यो,पूणी बेची, घर को आग लगायेंगे।" फिर नीचे वाले ने पूछा—घर को आग लगायेंगे पर मारग में क्या खायेंगे? तब ऊपर वाले ने कहा—मारग में क्या खायेंगे ? भाई! चोरी करके खायेंगे। उस ठण्डी रात में जोर जोर से बार बार दुहरायी जाने वाली उनकी ये आवाजें दूर दूर तक सुनाई पड़ रही थीं! पुलिस कोतवाल ने 'चोरी करके खायेंगे' सुना तो झट उधर ही आ निकला, और उनकी आवाज में आवाज मिलाकर बोला—चोरी करके खाओगे तो जूत फड़ाफड़ पाओगे। कोतवाल को आया देख चोर और भी दुबक गये। तभी ऊपर वाले ने कहा कि आप को जूते ही मारने हैं तो वे चारों उधर दुबके हुए हैं, उन्हें ले जाइये। कोतवाल ने चारों चोरों को गिरफ्तार कर लिया। तब चोरों ने सोचा कि ये तो गंगाजी नहीं गये, हमें ही गंगाजी भेज दिया।

● अन देखी, अन सुनी

एक खतरानी के घर पर चार बटाऊ आ गए। उन्होंने भोजन के लिए कहा तो खतरानी बोली कि पहले कोई अन देखी, अन सुनी बात सुनाओ तो भोजन मिलेगा अन्यथा नहीं। तब तीन तो कुछ नहीं बोले, चौथा बोला—

कुत्तो बैठ्यो हाटक तोलै ताकड़ी,
आकां लाग्या आम, फरासां काकड़ी,
कीड़ो करै सिणगार, हाथी परण कूं,
ऊँट फिरै बीचाल सलाह करण कूं,
पाणी लागी आग, बुझावै तुण तुणी,
सुण खतराणी बात, अण देखी अण सुणी।

कुत्ता दूकान पर बैठा तखड़ी से तौल रहा है, आक के पौधे में आम और फरास में ककड़ी लगी हैं। चींटी हाथी से विवाह करने के लिए श्रृंगार कर रही है और ऊँट सलाह करने के लिए बिचौलिया बनकर फिर रहा है।

पानी लगी आग तुनतुनी बुझा रही है। हे खतरानी, यह अनदेखी और अनसुनी बात सुनो।

तब उसने प्रसन्न होकर चारों को भोजन करा दिया।

● मतलब और सिद्धांत

एक बार बड़ा भारी तूफान आया तो खेत पर काम करते हुए जाट और जाटनी बिछुड़ गये। जाट ने मनौती मानी कि मुझे अपनी जाटनी मिल जाए तो मैं एक ब्राह्मण का भोजन करा दूंगा। उधर जाटनी ने भी यह मनौती मानी कि यदि मेरा जाट मुझे मिल जाए तो मैं एक ब्राह्मण को भोजन करा दूँगी। लेकिन जब दोनों मिल गये तो जाटनी ने कहा कि चाहे मैं तुम्हें मिलूं या तुम मुझे मिलो एक ही बात है, इसलिए एक ही ब्राह्मण को भोजन कराया जाएगा। निश्चयानुसार जाटनी रसोई बनाने लगी। इतने में एक खाती वहाँ आ गया। खाती के पूछने पर जाटनी बोली कि आज ब्राह्मण देवता को जिमाऊँगी। खाती के मुँह में पानी भर आया, बोला—'सौ पुर्जा एक पाती, सौ बामण एक खाती।' तब जाटनी खाती को जिमाने की तैयारी करने लगी। इतने में एक तेली आ गया, सारी बात जानकर वह बोला—'सौ बटुआ एक थैली, सौ खाती एक तेली।' फिर पंडा आ गया तो वह बोला—'सौ झंडी एक झंडा, सौ तेली एक पंडा।' फिर नाई आया तो वह बोला—'सौ खाडा एक खाई, सौ पंडा एक नाई।' तब जाटनी ने कहा कि तुझे ही जिमाऊँगी, जा स्नान करके आजा। उधर नाई स्नान करने गया, इधर जाट आगया। जाट को पूछने पर जब सारी बात मालूम हुई तो वह बोला कि इतना तो सब ठीक है, लेकिन आगे और है—'सौ पीढ़ा एक खाट, सौ नाई एक जाट।' तब दोनों बैठ कर जीम लिए और नाई मुँह धोया ही रह गया।

● मूरख बेटो

एक धनी सेठ का लड़का मूर्ख था। कमाना कजाना कुछ जानता नहीं था। संगी साथियों के बार-बार टोकने पर घर से बहुत-सा धन लेकर

कमाने चला। उसकी मा ने उसे मांडळ गढ़ न जाने के लिए कहा था, लेकिन घूमता-घामता वह वहीं जा पहुँचा और सारा धन खो दिया। उसकी स्थिति बहुत खराब हो गई, अब भीख माँगने के सिवा उसके पास और कोई उपाय नहीं था, किन्तु भीख मांगना भी वह नहीं जानता था। तब किसी आदमी ने उसकी स्थिति जानकर उसे एक दोहा बना दिया :—

घर घोड़ी दोय भैंसज दूजै, घरै सुलखणी नार।
माता बरजै पूत नैं बेटा मांडलगढ़ मत जाय
क' बारै टामक बाजै॥

घर पर घोड़ी है, दो भैंसें दूध देती हैं, सुलक्षणा पत्नी है। माँ ने कहा कि बेटा माँडल गढ़ मत जाना।

यह दोहा बोलकर घर-घर भीख माँगने लगा। घूमते-फिरते वह एक दिन अपने ही घर आ गया। अपने पति की-सी आवाज सुनकर उसकी पत्नी बरतन माँजती हुई दौड़ी-दौड़ी बाहर आई! उसने पति को पहिचान लिया। उसकी सास ने कहा, "धणी घरे आयो हुवै ज्यूं इत्ती कांई उछांछळी होगी?" (बहू, इतनी उतावली हो रही हो जैसे पति घर आ गया हो।

तब उसने कहा—जी हाँ यही बात है:—

कंसवो मांजण हूँ गई, हंसबो रह्यो न जाय!
मांडलगढ़ स्यूं पूत पधाला, दाढ़ी मूँछ मुंडाय
क' बारै टामक बाजै॥

बरतन माँजती हुई मैं बाहर गई तो देख कर हँसे बिना नहीं रहा जाता। आपके सुपुत्र दाढ़ी मूंछ मुड़वा कर माँडलगढ़ से पधारे हैं।

● खतराणी अर पांडियो

पर्व का दिन आया तो एक वेश्या ने एक ब्राह्मण को जिमाने की सोची। लेकिन कोई भी ब्राह्मण वेश्या के घर जीमने को तैयार नहीं हुआ। अंतः वह खतराणी का वेष बनाकर एक ब्राह्मण रूपी भाँड़ को घर लिवा लाई।

जब वह जिमा चुकी तब उसने कहा कि ब्राह्मण देवता, मैं तो दरअसल एक वेश्या हूँ, खतरानी नहीं, लेकिन कोई ब्राह्मण वेश्या के घर जीमना स्वीकार नहीं करता इसलिए वेष बदलकर आपको लिवा लाई थी। तब उस ब्राह्मण रूपी भाँड़ ने कहा कि मैं भी ब्राह्मण नहीं हूँ, भाँड़ हूं। भांड़ को कोई जिमाता नहीं, इसलिए मैंन सोचा कि आज पर्व का दिन है, ब्राह्मण बनकर ही जीमा जाए, अतः तुम धोखा न करो :

तूं खतरानी मैं पांडियो, तूं बेस्यां मैं भांड ।
तेरै जिमाय, मेरै जीमे, पत्थर पड़सी रांड ।।

यद तू खतरानी है तो मैं ब्राह्मण हूँ और तू वेश्या है तो मैं भांड़ हूँ। तेरे जिमाने और मेरे जीमने में तो पत्थर ही पड़ेंगे।

● सेठ और बामण

एक सेठ के घर के पड़ोस में एक ब्राह्मण रहता था। सेठ का कारोबार बहुत अच्छा चलता था। ब्राह्मण ने सोचा कि सेठ से पूछना चाहिए कि वह इतना धन कैसे कमाता है। अतः वह सेठ के पास गया और सेठ से पैसा कमाने का उपाय पूछा तो सेठ ने कहा कि पंडितजी! मैं तो व्यापार करता हूँ, उसीसे पैसा बढ़ता है, आप भी व्यापार किया करें। ब्राह्मण ने पूछा कि किस चीज का व्यापार करूँ, तो सेठ ने कहा कि आप ब्राह्मण हैं अतः पत्रे छपवा लीजिए। सेठ की सलाह मानकर ब्राह्मण ने पत्रे छपवा लिए। लेकिन जिन लोगों के पत्रे सदैव से चलते थे उनके आगे इन पत्रों को भला कौन पूछता? उधर साल खत्म होने को आया तब ब्राह्मण ने रोते हुए कहा:—

विणज करो रे वाणियों, म्हे विणजां सैं धाया।
अबकै जै पतड़ा विकै, तो औरूं गंगा न्हाया।।

हे बनियो, इस व्यापार को तुम्ही करो। हम तो इस व्यापार से अघा गए। यदि इस बार पत्रे बिक जाएं तो बस गंगा नहाये समझिये।

● जाट और बाणियों

एक जाट एक बनिये के पास एक बाज लाया और उसे कौवा बतलाकर

चार आने में बेच गया। दूसरी बार कसूंभा लाया और उसे फूस के भाव दे गया। बनिये ने सोचा कि जाट मूर्ख है, लेकिन जाट जान बूझकर बनिये को ठगने के लिए ऐसा कर रहा था। अतः कुछ दिन बाद वह एक लोहे की छड़ पर सोने का पत्तर चढ़ा कर लाया। बनिये ने सोना समझकर उसे ले लिया। अब जाट की बन आई। दूसरे दिन वह सारंगी बजाता हुआ बनिये की दूकान के सामने से गाता हुआ निकला :

काग कै साटै बाज दियो,
चारै कै साटै कसून्नम।
पण ख़बर पड़ैगी ता दिन्नम,
लम लोट बिकैगा जा दिन्नम।

काग के बदले तुम्हें बाज दे दिया और घास के बदले कसूंभा दे दिया, लेकिन तुम्हें खबर उस दिन पड़ेगी जिस दिन लम लोट को बेचोगे।

लम लोट से उसका मतलब उसी लोहे की छड़ से था।

● बाणियों अर ठाकर

एक बार एक सेठ गेहूँ जमा करने के लिए गेहूँ का कोठा भर रहा था। सेठ का एक जाना-पहचाना ठाकुर वहाँ आ गया। ठाकुर ने आधा दाना गेहूँ का कोठे में डालते हुए कहा कि सेठजी! इसमें आधा गेहूँ मेरा भी है। सेठ ने हँसकर कह दिया कि हाँ—हाँ, आधा गेहूँ आपका भी है। तब ठाकुर ने सेठ की वही में यह बात लिखवा दी और अपने गाँव चला गया। दो-तीन साल बाद अकाल पड़ा तो गेहूँ का भाव बहुत महँगा हो गया। सेठ ने गेहूँ बेचने के लिए कोठा खुलवाया तो ठाकुर भी आ बैठा और बोला कि सेठजी! कोठे में आधा गेहूँ मेरा है और आधा आपका। सेठ ने आना-कानी की तो ठाकुर ने सबके सामने सेठ की वही मँगवाकर दिखला दी, जिसमें लिखा हुआ था कि आधा गेहूँ ठाकुर का है। निदान हारकर सेठ को आधा गेहूँ ठाकुर को देना पड़ा।

बाणियों अर गीहूँ की खरीद

बात उस वक्त की है जब सिर्फ नकद रुपयों का ही चलन था, नोटों का नहीं। एक सेठ गेहूँ खरीदने के लिए रुपये लेकर अनाज की किसी बड़ी मंडी में गया। वहाँ जाकर किसी धर्मशाला में ठहर गया। शौच के लिए जंगल जाने का विचार किया तो सोचा कि रुपयों को कहाँ रखा जाए। साथ ले जाने में चोर-डाकुओं का भय था। धर्मशाला में भी किसी अनजान के पास रुपया रखकर जाया जाए? अतः वह दुविधा में पड़ गया। अन्त में सोच-विचार कर रुपयों को अपने खाने की रोटियों के साथ लपेट कर आले में रख गया। थोड़ी देर में वापिस आया तो रुपये वहाँ नहीं मिले। सेठ के होश उड़ गये और इधर-उधर हड़बड़ाया-सा देखने लगा। थोड़ी दूर पर देखा कि एक कुतिया रोटियाँ खा रही है और पास ही उसकी फटी गठड़ी पड़ी है और रुपये बिखरे पड़े हैं। कुतिया रोटियों के लालच से सेठ की गठड़ी उठाकर ले गई थी। तब सेठ के जी में जी आया और रुपयों को चुगता हुआ बोला—

अक्कल नहीं ही फैमही,
फैम सैं अक्कल लागी।
दो रोटी अर सो मण गीहूं,
गंडकड़ी ले भागी।।

जाट अर रींछ

एक जाट नदी के किनारे खड़ा था। दूर से उसे कोई काली चीज नदी तैरती दिखलाई दी। जाट ने सोचा कि कोई बढ़िया काले रंग की कंबल है अतः उसे निकालने के लिए नदी में कूद पड़ा और तैरते-तैरते उसके पास पहुँचा। लेकिन जब उसने उस काली चीज को हाथ से कसकर पकड़ा तो उसे मालूम हुआ कि यह तो कंबल नहीं काला रीछ है। रीछ जाट से लिपट गया तब जाट रोता हुआ कहने लगा—

कर घाल्यो लख कामली,
तकी बिलूमी तन्न।
जल ऊंडो थल है नहीं,
वीतै सो जाणै मन्न।।

मैंने तो काली कंवल समझ कर हाथ डाला था लेकिन यह तो और ही बला निकली, जल बहुत गहरा है पैर रखने को जगह नहीं है। जो मुझ पर बीत रही है उसे मेरा मन ही जानता है।

● धृतराष्ट्र का बेटा क्यूं मर्‌या

राजा धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्र महाभारत के युद्ध में मारे गए तो राजा बहुत विलाप करने लगा कि मैंने ऐसा कौन सा पाप किया था जिस के कारण मेरे सौ के सौ पुत्र मारे गए? तब लोगों ने समझाया कि राजन्! इस जन्म में तो नहीं लेकिन न जाने किसी पूर्व जन्म में आपसे ऐसा कोई पाप बन पड़ा हो जिसके कारण आपको यह सब देखना पड़ा है। तब धृत-राष्ट्र ने कहा कि मुझे अपने पिछले सौ जन्मों का तो सारा हाल मालूम है, मेरे से तो सौ जन्मों में भी ऐसा पाप नहीं हुआ था। तब श्री कृष्णने कहा कि राजन्! यह सत्य है कि सौ जन्मों में भी तुमसे ऐसा पाप नहीं हुआ था लेकिन इससे एक जन्म पूर्व ही तुमसे एक ऐसा अपराध हो गया था कि जिस के कारण तुम्हारे सारे पुत्र मारे गए उस जन्म में भी तुम राजा थे। एक हंस और हंसनी तुम्हें अपने सौ बच्चे सम्हला गए थे कि यहाँ वर्षा न होने के कारण हम किसी अच्छे स्थान की तलाश में जा रहे हैं और वापिस आकर अपने बच्चों को ले जायेंगे। तुमने उन बच्चों की सम्हाल अपने ऊपर ले ली थी। एक दिन तुम्हारे रसोइये ने हंस के एक बच्चे को तुम्हारे भोजन में पकाकर तुम्हें खिलाया तो तुमने रसोइये की बहुत बड़ाई की कि आज खाना बहुत स्वादिष्ट बना है और तब रसोइये ने एक-एक करके सारे बच्चे तुम्हें खिला दिए। जब वे खत्म हो गए तो तुम्हें खाना वैसा अच्छा नहीं लगता था। इस का कारण जब रसोइये ने तुम्हें बतलाया

तो हंस के बच्चों को खा जाने का तुमने बहुत पश्चाताप किया लेकिन तब क्या हो सकता था? हंस और हंसनी जब आये और उन्हें सारी बात मालूम हुई तो उन्होंने बहुत दुःखित होकर तुम्हें शाप दिया कि जिस प्रकार आज हम अपने एक सौ बच्चों को रो रहे हैं उसी प्रकार कभी तुम भी अपने एक सौ बेटों को रोओगे। सो राजन्! आज उनका वह शाप सत्य हो गया है।

● बामण अर संख

एक ब्राह्मण ने भगवान् की बहुत सेवा-पूजा की! भगवान् ने प्रसन्न होकर उसे एक छोटा-सा शंख दिया और कहा कि इस शंख की पूजा करके तुम जो भी चीज शंख से मांगोगे वही तुम्हें प्राप्त हो जायगी। ब्राह्मण शंख पाकर निहाल हो गया। उसने अपने रहने के लिए अच्छा-सा मकान बनवा लिया, खाने-पीने और पहिनने-ओढ़ने की सभी मनचाही चीजें उसने शंख से प्राप्त कर लीं। अचानक उसकी बदली हुई दशा को देखकर उसके पड़ोसी को डाह हो गई। उसने अपनी स्त्री को ब्राह्मण के घर इसका भेद लाने के लिए भेजा। ब्राह्मण की स्त्री ने उसे सारी बात बतला दी। एक दिन मौका पाकर वह शंख को चुरा ले गई। अब तो ब्राह्मण बड़ी मुश्किल में पड़ गया। उसने और कोई उपाय न देखकर फिर से भगवान की आराधना की। भगवान ने दुबारा दर्शन दिएऔर कहा कि ऐसी अलभ्य वस्तु को इस प्रकार लापरवाही से नहीं रखना चाहिए था, खैर, इस बार तुम्हें एक बड़ा शंख देता हूँ जिससे तुम्हें मिलेगा तो कुछ नहीं लेकिन तुम्हारा वह शंख वापिस आ जायगा। ब्राह्मण ने शंख लाकर उसकी पूजा की और उससे सौ रुपये माँगे तो शंख ने बड़ी जोरदार आवाज में कहा, सौ ले, दो सौ ले, हजार ले, दस हजार ले। लेकिन दिया एक पैसा भी नहीं। इसी प्रकार वह ब्राह्मण जब कोई एक वस्तु उससे माँगता तो वह उसे कई वस्तुएँ देने की घोषणा करता, लेकिन देता कुछ भी नहीं। पड़ोसी ने देखा कि अपने पास वाला शंख तो छोटा है और माँगने पर सिर्फ एक ही वस्तु देता है और

ब्राह्मण जो शंख अब लाया है वह सौ रुपये माँगने पर दस हजार देता है। इसलिए उसने फिर अवसर पाकर बड़ा शंख चुरा लिया और छोटा वहीं रख आया। घर आकर उसने शंख से एक घोड़ी माँगी तो शंख ने कहा, एक घोड़ी ले, दो घोड़ी ले, दस घोड़ी ले, ऊँट ले, हाथी ले। लेकिन देने को वहाँ क्या था? जब वह पछताने लगा तो शंख ने कहा—

बाही संखी सोहनी, मैं हूं संख ढपोल।
देण लेण नैं कुछ नहीं, हामल भरूं किरोड़।।

● लोभी पंडत

एक पंडित बड़ा लोभी था। एक दिन उसकी स्त्री ने बाजार से एक नारियल लाने के लिए उसे कहा। पंडित ने बाजार में जाकर एक दुकानदार से पूछा तो उसनें एक नारियल की कीमत चार पैसे बताई। पंडित ने कहा कि चार पैसे तो बहुत हैं, तीन पैसे में देना हो तो दे दो। दुकानदार ने कहा कि तीन पैसे में आगे मिलते हैं। पंडितजी आगे चले। अगले दुकानदार नें नारियल की कीमत तीन पैसे बताई तो पंडितजी ने पूछा कि कहीं दो पैसे में भी नारियल मिल सकता है क्या? दुकानदार ने कहा कि आगे मिलेगा। पंडितजी फिर आगे गये तो वहाँ उन्होंने एक पैसे में नारियल मिलने का स्थान पूछा। दुकानदार ने कहा कि आगे नारियल के वृक्ष हैं, उन पर चढ़कर नारियल तोड़ लीजिए, कुछ भी नहीं लगेगा। पंडितजी को यह बात बहुत अच्छी लगी और आगे जाकर नारियल के वृक्ष पर चढ़ गए। पंडितजी का पैर फिसला तो दोनों हाथों से वृक्ष की डाल को पकड़ लिया। जहाँ पंडितजी लटक रहे थे उसके ठीक नीचे एक बहुत बड़ा गड्ढा था, जिसमें गिरते ही उनका प्राणान्त हो जाता। पंडितजी को वहाँ लटके जब बहुत देर हो गई तो उधर से एक महावत अपने हाथी पर चढ़ा हुआ निकला। पंडितजी ने उससे प्रार्थना करते हुए कहा कि मुझे नीचे उतार दो, मैं तुम्हें एक सौ रुपये दूंगा। महावत अपने हाथी को वहाँ ले गया, परन्तु उसने ज्योंही पंडितजी के पैरों को पकड़ा, हाथी नीचे से सरक कर अलग जा खड़ा

हुआ। अब दोनों लटक गए। फिर एक ऊँट वाला आया। दोनों ने उसे सौ-सौ रुपये देने की बात कहकर उन्हें उतारने की प्रार्थना की। लेकिन महावत की तरह ही वह भी लटक गया, फिर एक घुड़सवार आया और उसकी भी वही गति हुई। अब चारों वृक्ष से लटकने लगे। घुड़सवार ने पंडित से कहा कि पंडितजी! आप हाथ नहीं छोड़ देना, मैं आपको एक हजार रुपये दूँगा। पंडितजी ने सोचा कि एक हजार रुपये कितने होते हैं? उसने खुशी से दोनों हाथ फैलाकर ज्योंही कहा कि एक हजार रुपये तो इतने होते हैं, चारों खड्डे में गिर पड़े और मर गये। तभी किसी ने कहा—

अति लोभ न कीजिए, लोभ पाप की धार।
एक नारेल कै कारणै पड़्या कुवै में च्यार॥

अधिक लोभ नहीं करना चाहिए लोभ पाप की धार है। इसी लोभ के कारण एक नारियल की खातिर चार मनुष्य कुएं में गिर पड़े।

● आखड़्या पण पड़्या कोनी

दो भाई थे। उनमें बड़ा प्रेम था, लेकिन घर में स्त्रियों की नहीं बनती थी। इसलिए अलग-अलग रहते थे। एक बार बड़े भाई के घर भोज हुआ। छोटे भाई को भी न्योता दिया गया, लेकिन उसकी भौजाई ने उसे बुलावा न देने दिया। (राजस्थान में न्योता देने के बाद बुलावा न दिया जाय तो जीमने के लिए नहीं जाया जाता) लेकिन बड़े भाई की मजबूरी को समझ कर वह जीमने के लिए चला गया। भोजन में चावल और मूँग बनाये गए थे। जीमने के लिए पंगत बैठी तो चावल और मूँग परोसे गये। जब ऊपर से घी डालने की बारी आई तो बड़ा भाई घी का बरतन लेकर चला। औरों को घी डालते-डालते जब वह छोटे भाई से कुछ ही दूरी पर रहा तो उसने सोचा कि भाई को घी डालने से पत्नी बहुत रुष्ट होगी अतः उसने ठोकर खाकर गिर पड़ने का उपक्रम किया और गिरते-गिरते घी का पात्र छोटे भाई की थाली में थोड़ा औंधा दिया, जिससे काफी घी थाली में परोसे हुए मूँगों में जा गिरा। तब किसी ने कहा—

भाई कै भाई मन भायो, विना बुलावै जीमण आयो।
आखड़ियो पण पड़ियो नाहीं, घी ढ़ुल्यो तो मूंगां मांहीं।।

भाई भाई में प्रेम था अतः वह विना बुलावा दिये भी जीमने के लिए आ गया। ठोकर खाने पर भी भाई गिरा नहीं और घी ढुलका भी तो मूंगों में ही पड़ा बाहर नहीं गिरा।

● आपां दोनूं एक

दो ठाकुर भाई थे। घर में बहुत अभाव था। सामने से पाहुने आते दिखलाई पड़े तो दोनों ने विचारा कि घर में तो कुछ है नहीं, इन्हें क्या खिलायेंगे? एक भाई ने कहा--

तूँ उठा तरवारड़ी, मैं राख स्यूं टेक।
पांवणा आप कै घरां जासी, आपां दोनूं एक।।

अर्थात् तू तलवार उठाले, और हम आपस में दिखावे के लिए लड़ने लगें। पाहुने हमें आपस में लड़ते देखकर लौट जाएंगे। फिर अपने तो दोनों एक हैं हीं।

सो आपस में दोनों लड़ने लगे। पाहुने दूर से ही इन्हें लड़ते देखकर लौट गये।

● डूमणी और टमकोर

एक डोम की स्त्री अपने यजमान की शादी में टमकोर गई थी। उसने अपना 'भाखला' (ओढ़ने का वस्त्र) हवेली के बाहर ही चबूतरे पर रख दिया और अन्दर चली गई। वहाँ उसे कुछ मिला नहीं। खाली हाथ बाहर आकर देखा तो उसका 'भाखला' भी गायब था। तब उसने कहा--

आई ही कुछ और नैं, होय गई कुछ और।
बखल गमायो गांठ को, देख चली टमकोर।।

मैं तो यहाँ कुछ प्राप्ति की आशा से आई थी लेकिन यहाँ तो कुछ और ही हो गया। टमकोर को खूब देखा, गांठ का 'भाखला' भी गुम हो गया।

● ऊंघै ही विछायो लाद्यो

एक ब्राह्मग के यहाँ एक हरहाई गाय थी। दूध कुछ देती नहीं थी। किसी को चोट पहुँचा देती, किसी का अनाज खा जाती। उस गाय के कारण ब्राह्मण बड़ी दुविधा में पड़ा हुआ था। मोल कोई लेता नहीं और ब्राह्मग होने के कारण कसाई को वह देना नहीं चाहता था। एक दिन गाय एक खाई में गिरकर मर गई। गाँव के किसी आदमी ने इसकी सूचना दी तो ब्राह्मण के सिर से मानो स्वतः ही बला टल गई। उसने कहा—

वांगड़ गाय विड़ै में वासो।
नित उठ रवै जीव नैं सांसो।।
दूध दही मैं कदे न खाद्यो।
ऊंघै हीं विछायो लाद्यो।।

अर्थात् गाय दूध कुछ देती नहीं थी और उसके मारे नित्य साँसत में फंसा रहता था। यह अच्छा हुआ कि सहज ही गाय से पीछा छूट गया जैसे किसी निद्रालू व्यक्ति को बिछी-बिछाई सेज मिल जाए।

● ओरूं जांट चढ़सी जिको सीरणी बोलसी

एक वनिया जाँट के वृक्ष पर साँगर तोड़ने के लिए चढ़ गया। वृक्ष पर बड़े-बड़े मकोड़े थे, जो वनिये को काटने लगे। वृक्ष पर से उतरना उसके लिए दूभर हो गया तब उसने देवता की मनौती मानी कि यदि इस वृक्ष पर से उतर जाऊँ तो तुम्हारी सवा पाँच आने की सीरनी (प्रसाद) बाँटूं। यों कहकर वह वृक्ष पर से उतरने लगा। जब आधी दूर उतर आया तो देवता से कहा कि सवा पाँच आने की तो नहीं लेकिन अढ़ाई आने की सीरनी जरूर बाँट दूँगा। यों दूरी के साथ-साथ सीरनी की रकम भी कम होती गई और अन्त में जब बनिया वृक्ष पर से उतर गया तो बोला—

ओरूं जाट चढ़सी जिको सीरणी बोलसी।

अर्थात् फिर कभी जो जाँट पर चढ़ेगा वह देवता का प्रसाद बोलेगा। न मैं फिर कभी जाँट पर चढूंगा और न प्रसाद बोलने की नौबत आएगी।

कंजूस जाटणी

एक जाटनी एक बार पोकरजी (पुष्करजी) स्नान करने के लिए गई। पंडे ने दक्षिणा माँगी तो जाटनी ने कहा कि इस वक्त तो कुछ नहीं है, कभी घर आना तब दूँगी। अवसर पाकर पंडा उसके घर गया तो वह उसे अपने बाड़े के बाहर खड़ा होने के लिए कहकर खुद बाड़े में गई और एक छोटा सा भेड़ का बच्चा जो कि बहुत बीमार था और मरने वाला हो रहा था बाड़े के ऊपर से पंडे की ओर फेंक कर बोली कि लो यह दक्षिणा ले जाओ। पंडा उसे लेकर थोड़ी ही दूर गया था कि वह मर गया। जब वह लौट कर आया तो देखा कि जाटनी भेड़ के बच्चे को देकर पश्चाताप कर रही है—

क्यूं मैं बातां में आवूं, क्यूं मैं पोकर जावूं।
क्यूं मैं में-में करतो लरड़ियो बाड़ पर कै बगावूं।।

अर्थात् क्यों तो मैं किसी की बातों में आती और क्यों पुष्करस्नान के लिए जाती और क्यों मुझ में में करते हुए भेड़के बच्चे को बाड़ के ऊपर से फेंकना पड़ता ?

भूरी भैंस और कुम्मो बल़द

एक जाट के पास एक बैल था और एक थी भैंस। भैंस का नाम भूरी था और बैल का नाम था कुम्मा। घी और दूध के लालच से जाट भैंस को खूब खिलाता-पिलाता लेकिन बैल को भूखा रखता। जब वर्षा की ऋतु आई और खेत जोतने के लिए बैल की आवश्यकता हुई तो जाट बैल की खुशामद करने लगा। तब बैल ने उत्तर दिया—

खल़ काकड़ा भूरी खाती, घी को देती लुम्मो।
इन्दरियो घररायो जद अब याद आयो तनैं कुम्मो।।

भूरी भैंस तुम्हें घी का लोंदा देती इसलिए खल और बिनौले तो तुम उसे खिलाया करते और मुझे भूखा रखते। अब जबकि इन्द्र गरजने लगा और खेत जोतने की आवश्यकता पड़ी तो तुम्हें कुम्मा बैल याद आया है।

● अंधेर नगरी

एक गुरु और चेला घूमते-घामते एक नगर में पहुँचे। नगर का नाम पूछने पर एक आदमी ने कहा—

अंधेर नगरी अणबूझ राजा।
टकै सेर भाजी, टकै सेर खाजा।।

वे दोनों नगर में गए तो उन्हें मालूम हुआ कि वास्तव में ही वहाँ हर चीज टके सेर बिकती है। हलवाई से पूछा तो, हलवाई ने कहा—

टकै सेर लड्डू, टकै सेर पेड़ा।
टकै सेर हलुआ, टकै सेर पेठा।।

सारी ही चीजें टके सेर देखकर चेले ने सोचा कि यहाँ रहकर मौज उड़ाई जाए, क्यों दर-दर भटका जाए? इससे अच्छी जगह दुनिया में और नहीं हो सकती। गुरु ने उसे बहुत समझाया, लेकिन चेला वहाँ से जाने को राजी न हुआ। तब गुरु यह कहकर चला गया कि मुसीबत पड़े तो याद कर लेना। इधर चेला माल खा-खाकर कुप्पा होने लगा। एक दिन एक चरवाहे की भेड़ एक दीवार के गिरने से मर गई। उसने राजा के पास पुकार की। राजा ने मालिक मकान को तलब किया तो उसने कहा कि महाराज, राज ने दीवाल कमजोर बना दी इसलिए वह गिर पड़ी, इसमें मेरा क्या दोष है? जब राज को बुलाया गया तो उसने कहा कि अन्नदाता, मजदूर ने गारे में अधिक पानी डाल दिया इससे दीवाल कमजोर रह गई सो कसूर उसी का है, मेरा नहीं। तब मजदूर को बुलाया गया तो उसने कहा कि पृथ्वीनाथ, शहर कोतवाल का प्रबंध ठीक नहीं है इसीसे बड़े-बड़े जानवर मरते हैं। अब कोतवाल को याद किया गया तो उसने सारा दोष मन्त्री के सिर मढ़ दिया। मन्त्री कोई उचित उत्तर न दे सका, इसलिए राजा ने उसे फाँसी पर लटकाने का हुक्म दे दिया। मन्त्री दुबला पतला था, फाँसी का फँदा उसके गले में फिट नहीं बैठा, तो राजा ने हुक्म दिया कि जिसके गले में यह फंदा फिट बैठे उसीको फाँसी दे दी जाए।

ऐसे आदमी की तलाश में दौड़-धूप शुरू हुई तो हलवाई की दूकान पर उसी चेले को पकड़ लिया गया। चेला बहुत चकराया। राजा के सिपाही उसे घसीटते हुए फाँसी की ओर ले चले। तब चेले ने गुरु को याद किया। गुरु ने आकर सारा मामला पूछा और चेले के कान में कुछ कहा। तब दोनों फाँसी पर लटकने के लिए आपस में लड़ने लगे। गुरु ने कहा कि मैं फाँसी चढ़ूँगा, चेले ने कहा मैं। जब उन्हें ऐसा करते-करते कुछ देर हो गई तो राजा ने पूछा कि क्या बात है? तब गुरु ने कहा कि महाराज, इस वक्त बहुत उत्तम मुहूर्त्त है। इस मुहूर्त्त में जो फाँसी चढ़ता है वह सारी पृथ्वी का एकछत्र सम्राट् होता है। यह सुन कर राजा ने कहा कि तुम सब लोग अलग हो जाओ। ऐसे उत्तम मुहूर्त्त में हम खुद फाँसी पर चढ़ेंगे। गुरु और चेला तो वहाँ से चम्पत हो गए और राजाजी फाँसी पर लटक गए।

● तन्नैं कहगो जिको मन्नैं भी कहगो

एक बुढ़िया अपने सामान की गठरी बाँधे चली जा रही थी। पास से एक घुड़सवार निकला। बुढिया ने घुड़सवार से अपनी गठरी घोड़े पर रखने के लिए कहा। लेकिन घुड़सवार ने कहा कि बुढ़िया-माई और घुड़सवार का भला क्या साथ? और यह कहकर वह आगे निकल गया। थोड़ी दूर जाने पर उसने सोचा कि यदि बुढ़िया की गठरी घोड़े पर रखकर के भाग चलूँ तो बुढ़िया क्या कर लेगी, सारा माल अपना ही हो जायगा। यह सोचकर उसने लौट कर बुढ़िया से कहा कि माई! ला तेरी गठरी मैं अपने घोड़े पर रख कर ले चलता हूँ। लेकिन उधर बुढ़िया ने भी सोच लिया था कि यह घुड़सवार गठरी को घोड़े पर रखकर भाग जाता तो मैं क्या कर सकती थी? उधर घुड़सवार के मन में खोट आया, इधर बुढ़िया के मन में, अतः उसने गठरी देने से इनकार करते हुए कहा—

तन्नैं कहगो जिको मन्नैं भी कहगो।

जिसने तुझसे कहा उसने मुझसे भी कह दिया।

दूध का दूध पाणी का पाणी

गाँव की एक गूजरी शहर में दूध बेचने जाया करती थी। रास्ते में एक छोटी-सी नदी पड़ती थी। गूजरी जितना दूध घर से लाती थी उतना ही पानी और मिला लेती थी। दूध देते कई दिन हो गए तो हिसाब करवा के दूध के सारे रुपये एक दिन ले आई। नदी के किनारे आकर दूध का बरतन धोने लगी थी कि इतने में एक बन्दरिया आई और रुपयों की पोटली उठाकर भाग गई । गूजरी ने देखा तो चिल्लाने लगी। बन्दरिया पोटली लेकर एक वृक्ष पर चढ़ गई और पोटली से एक रुपया लेकर गूजरी की तरफ फेंका और दूसरा नदी में। इसी प्रकार वह एक रुपया गूजरी की तरफ फेंकती गई और दूसरा नदी में। गूजरी को उसके दूध के रुपये मिल गए थे और पानी के पैसे नदी में चले गए। इसी बात को लक्ष्य करके वहाँ खड़े किसी आदमी ने कहा:—

बाँदरी भोली गूजरी स्याणी ।
दूध का दूध (अर) पाणी का पाणी ।।

बन्दरिया भोली थी और गूजरी बहुत सयानी थी लेकिन फिर भी बन्दरिया ने सच्चा न्याय कर दिया अर्थात् गूजरी को उसके दूध के रुपये दे दिये और पानी के रुपये पानी में फेंक दिये ।

जाट का बेटा

एक जाट के दो लड़के थे, एक था भोला दूसरा था चालाक। पिता के धन के नाम पर घर में सिर्फ एक भैंस थी और एक कम्बल। चालाक भाई की पंचों में चलती थी। अतः जब बँटवारा हुआ तो पंचों ने फैसला दिया कि दिन में कम्बल को भोला रक्खे और रात को सयाना। इसी प्रकार भैंस का अगला हिस्सा भोले का और पिछला सयाने का अर्थात् भोला भैंस को चराये और सयाना दूध निकाल ले। इस प्रकार कई दिन बीत गए। बेचारा भोला रात को ठिठुरता और दिन में भैंस को खिलाता-पिलाता। एक दिन भोले ने किसी समझदार आदमी के आगे अपना दुखड़ा रोया तो

उसने कहा कि दिन में तो कम्बल तेरे पास रहता ही है। अतः शाम होने से पहले उसे भिगोकर रख दिया कर और जब सयाना दूध निकालने बैठे तो भैंस के सिर पर दो-चार लट्ठ जमा दिया कर, क्योंकि भैंस का अगला हिस्सा तो तेरा है ही। दूसरे दिन भोले ने वैसा ही किया तो सयाना बिगड़ा, लेकिन वह कुछ कर नहीं सकता था। फिर पंचायत हुई और इस बार फैसला हुआ कि रात को दोनों भाई कम्बल ओढ़ लें और भैंस का आधा-आधा दूध बाँट लिया करें।

● जाट और घोड़ी

एक जाट के पास एक हजार भेड़ें और बकरियाँ थीं। उन्हें बेचकर वह कुछ ऊँट ले आया और फिर उसने सब ऊँटों को बेचकर एक घोड़ी खरीद ली। एक दिन घोड़ी बीमार हुई और मरने लगी तो जाट चिल्ला चिल्लाकर रोने लगा कि मेरे एक हजार पशु मर रहे हैं। लोगबाग इकट्ठे हुए तो उन्होंने कहा कि तू कितना झूठा है जो एक घोड़ी के बजाय एक हजार जानवर बतलाता है, इस पर जाट ने रोते हुए कहा कि तुम्हें क्या मालूम ? मैंने एक हजार भेड़ और बकरियाँ बेचकर यह घोड़ी खरीदी थी। अतः इसके मरने का अर्थ उन एक हजार भेड़ बकरियों का मरना ही तो हुआ।

● सेठ और मोती

एक सेठ के पास एक जौहरी मोती बेचने के लिए लाया। मोती बड़े सुन्दर और कीमती थे। सेठ का मन ललचा गया और उसने एक मोती छुपा लिया। जौहरी ने मोती गिने तो एक दाना कम हुआ। उसने सेठ से कहा तो सेठ ने उसे धत्ता बतला दिया कि तेरे से कई गुने अधिक मोती मेरे पास हैं, मैं क्या तेरा एक दाना चुरा कर रख लेता ? लेकिन जौहरी न माना। उसने हाकिम के पास फरियाद की। हाकिम ने सेठ को बुलवाया तो सेठ ने मोती लेने से साफ इन्कार कर दिया। तब हाकिम ने पेशकार को अपने पास बुलाकर उसके कान में कुछ कहा। पेशकार सेठ के घर गया और सेठानी से बोला कि हाकिम ने सेठ को चोरी के अपराध में फाँसी

की सजा देनी निश्चित की है, यदि आप वह मोती मुझ दें तो मैं सजा माफ करवा सकता हूँ। सेठानी ने तुरन्त मोती लाकर पेशकार को दे दिया। पेशकार ने मोती लाकर चुपचाप हाकिम को दे दिया। हाकिम ने जौहरी से कहा कि क्या तुम अपना मोती पहिचान सकते हो? तब जौहरी ने कहा कि कितने ही मोतियों में वह दाना मिला हो, मैं निकाल लूँगा। तब हाकिम ने वह मोती अन्य बहुत से मोतियों के ढेर में मिला दिया, लेकिन जौहरी ने कुछ ही समय में उसे ढूँढ़ निकाला। तब हाकिम ने सेठ से पूछा कि सेठजी! यह मोती आपके पास कहाँ से आया? सेठ का मुँह शर्म से झुक गया और मोती जौहरी को दे दिया गया।

● साधु और सेठ कै बेटै की बहू

एक दिन एक सेठ के घर में एक साधु आया। उसने लड़के की बहू से पूछा कि तुम्हारे कुल का आचार क्या है तो उसने कहा कि महाराज, सब बासी खाते हैं। फिर पूछा कि आपके पति, पुत्र और श्वसुर की आयु क्या है? तब बहू ने बतलाया कि पति की उम्र एक साल की है, पुत्र की चार साल की है और श्वसुरजी तो अभी पालने में ही झूलते हैं। सेठ को दोनों की बात सुनकर बड़ा आश्चर्य और क्रोध हुआ। वह साधु के पीछे-पीछे गया और उसके निवास-स्थान पर पहुँच कर उसने पूछा कि मेरी पुत्रवधू ने जो आपसे निरर्थक बातें कही हैं उनका क्या प्रयोजन है? साधु ने सेठ को शांत करते हुए कहा कि वे बातें निरर्थक नहीं, सार्थक हैं। उसने जो कहा कि सब बासी खाते हैं, इसका मतलब यह है कि पिछले जन्म के किये हुए सत्कर्मों का फल ही भोग रहे हैं। अगले जन्म के लिए पुण्य-संचय नहीं कर रहे हैं। पति की उम्र एक साल की बतलाने का तात्पर्य यह है कि एक साल से वह पुण्य कार्यों की ओर लगा है तथा पुत्र माँ की देख रेख में रहने के कारण चार-पाँच साल से पुण्य कार्यों में प्रवृत्त हो गया है। जब से पुण्य कार्यों में लगा जाए तभी से जीवन का आरम्भ समझना चाहिए। अस्तु, और आप तो अभी पालने में ही झूल रहे हैं। तब सेठ की आँखें खुल गईं।

हाथ कमाया कामड़ा

कोजाजी भक्त ने बुढ़ापे के कारण अपने गाँव पालड़ी में ही एक बावड़ी खुदवाई। वहीं तीर्थ-स्नान कर लेते। उनके चेलों ने वहाँ प्याजों की खेती की तो प्याज बहुत बड़े बड़े हुए। एक प्याज तो सवा मन का हुआ। उनके चेले ने मना करने पर भी वह प्याज जोधपुर दरबार को दिखानें के लिए भेज दिया। दरबारियों ने राजा के कान भरे और उनके कहने से राजा ने पालड़ी गाँव को 'खालसा' करने का हुक्म दे दिया। तब कोजाजी ने कहा—

हाथ कमाया कामड़ा, किण नें दीजै दोष।
कोजैजी री पालड़ी, कांदै लीन्ही खोस।।

हमनें अपने हाथों से ही ऐसा काम कर लिया, किस को दोष दें। कोजा जी के पालड़ी गाँव को एक प्याज ने उनसे छीन लिया।

पुरुष चिरत

राजा भोज एक बार घूमता-घामता जंगल में निकल गया। उसे भूख बड़े जोरसे लग आई तो राजा एक 'रांधण' के घर भोजन करने लगा। राजा के सुन्दर शरीर को देखकर वह कामातुर हो गई और उसने राजा से उसकी इच्छा पूरी करने की प्रार्थना की। राजा ने उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी तो उसने हल्ला मचा दिया। बात बिगड़ती देखकर राजा ने हाँ भर ली, पर इतने में वहाँ लोग-बाग आ गए। पूछने पर 'रांधण' ने कहा कि यह बटाऊ बड़े बड़े ग्रास ले रहा है, इसके गले में ग्रास अटक गया तो यह हत्या मुझे लगेगी। बस इसीलिए तुम लोगों को बुलाया, अब जाओ। तब राजा ने कहा कि भाइयो! ठहरो, कहीं फिर दुबारा आप लोगों को न बुलाना पड़े, इसलिए मैं भी साथ ही चलता हूँ। यों कहकर राजा उनके साथ हो लिया और वह ताकती ही रह गई।

● भैंस कै आगे बीण

एक जाट अपनी ससुराल गया। ससुराल वालों ने जँवाई के लिए नरम-नरम छोटे-छोटे फुलके बनाये। जाट जीमने बैठा तो एक-एक फुलके का एक-एक ग्रास करने लगा। पत्नी ऊपर बैठी देख रही थी, उसने पति की ओर दो उँगलियाँ करके इशारा किया कि एक फुलके के दो ग्रास तो करो। लेकिन पतिदेव ने समझा कि वह दो फुलके का एक ग्रास करने के लिए कह रही है, अतः उसने वैसा ही करना शुरू कर दिया। भोजन करके बैठा तो एक गांधी अतर बेचने के लिए वहाँ आ गया। उसने अतर की शीशी पेश की तो जँवाई ने समझा कि भोजन के बाद लेने की कोई हाजमा वस्तु है, अतः हथेली में भरकर पी गया, पर मुँह कड़वा हो गया, सो थू थू करने लगा। पत्नी मन ही मन बोली—

> रे गांधी मति अंध तू अतर दिखावत काहि।
> करि फुलेल को आचमन कड़वो कह विसराइ।।

रात को पत्नी ने समझाया कि यह तो कपड़ों पर जरा-जरा सी लगाने की चीज थी, खाने की नहीं। दूसरे दिन गांधी ने शहद की शीशी सामने रक्खी तो उसने सारे शरीर और कपड़ों पर उसे चुपड़ लिया। तब सारी स्त्रियाँ हँसने लगीं तो उसकी पत्नी ने कहा—

> रे गांधी भोरो भयो, पांच पुणी कहै अट्ठ।
> अतर मधु अंतर किसो, सूल यां ही दो घट्ट।।

इत्र का आचमन करके और उसे कड़वा बतलाकर जो इत्र की बुराई कर रहा है, हे बुद्धि से हीन गंधी तू उसे इत्र किसलिए दिखला रहा है?

● कंजूस जाट-जाटणी

एक जाट और जाटनी बड़े कंजूस थे। आये हुए बटाऊ को खाना भी नहीं खिलाते थे। एक दिन एक बटाऊ आया तो जाटनी पानी लाने के बहाने घर से निकल गई और जाट मूँज कूटने के बहाने से बाहर चला

गया। लेकिन लेकिन बटाऊ भी बड़ा चालाक था। वह भी वहीं बैलों की 'ल्हास' में घुसकर सो रहा। जब जाटनी और जाट ने देखा कि अब काफी देर हो गई है और बटाऊ निराश होकर चला गया होगा तब दोनों घर आये। जाटनी ने कहा—

मैं किसी, क स्याणी।
देख बटाऊ, चली गई पाणी।

मैं कितनी सयानी हूँ कि बटाऊ को आया देखकर पानी लाने चली गई।

तब जाट ने कहा—

मैं किसो क स्याणो।
कूट्यो मूंज पुराणो।।

मैं भी कैसा सयाना हूँ जो बटाऊ को देख कर पुराना मूंज कूटता रहा। बटाऊ ने तब दोनों की बात सुनकर कहा—

मैं किसोक ऊंदो, सोयो ल्हास में मूंदो।
बात होसी खोटी, पण खाकर जास्यूं रोटी।।

मैं भी कैसा शैतान हूं कि इतनी देर 'ल्हास' में औंधा सोया रहा। बात तो बुरी ही होगी लेकिन जाऊंगा रोटी खा कर ही।

● दोय सूती पड़ी रै दोय सूती पड़ी

एक चमार अपनी ससुराल गया तो ठाकुर से बँदूक माँगकर ले गया। ससुराल की स्त्रियों ने सोचा कि बन्दूक भरी हुई नहीं है अतः वे जँवाई को चिढ़ाने के लिए गीत गाने लगी—

तेरी रीती पड़ी रै तेरी रीती पड़ी।

तेरी बन्दूक खाली पड़ी है।

चमार को गीत सुनकर रंग आया और उसने बन्दूक दाग दी, जिससे दो स्त्रियाँ मर गईं। तब चमार स्त्रियों की तुक में तुक मिलाकर गाने लगा—

दोय सूती पड़ी रै दोय सूती पड़ी ।
देखो, दो सो गई हैं। (बन्दूक खाली नहीं है।)

गंगो चमार

एक चमार के बहुत ऋण हो गया तो गांव के लोगों ने सोचा कि चमार ऋण चुकाए बिना ही भाग जायगा। वे लोग उसके घर गए तो चमार ने कहा कि मैं ऐसे कभी नहीं जाऊँगा, सारे पंचों से राम-राम करके जाऊँगा। दूसरे दिन होली थी। चमार ने उसी शाम को अपनी पत्नी और लड़के को दूसरे गाँव भेज दिया। घर में जो थोड़ा बहुत सूत था वह उसने अपनी कमर के चारों ओर लपेट लिया और होली के दिन पंचों के पास जाकर बोला—

सांजी तो संज्या गई, साथ बसंतो पूत।
गंगो तो अब जात है, बांध कड़्यां कै सूत।
पंचो राम राम।

उसका खुद का नाम गंगा तथा पत्नी और पुत्र का नाम सांजी और बसंता था, लेकिन गाँव वाले यही समझे कि इसने आज होली का स्वाँग बना रखा है और इसलिए उन्हें सन्देह नहीं हुआ।

● नाम भलो लैटूरो

एक जाटनी के पति का नाम लैटूरा था। साथ की स्त्रियाँ उसे चिढ़ाया करतीं कि भला यह भी कोई नाम है? अपने पति से कहो कि कोई अच्छा सा नाम रखले। एक रोज वह जाटनी बाहर गई तो उसने देखा कि बहुत से लोग एक मुरदे की अरथी को ले जा रहे हैं। पूछने पर पता लगा कि अमरसिंह नाम का कोई व्यक्ति मर गया है। आगे चली तो देखा कि एक आदमी भागा जा रहा है, पूछने पर पता चला कि यह शूरसिंह है, दो आदमी इसका पीछा कर रहे हैं अतः यह डर के मारे भागा जा रहा है। आगे चलने पर एक और आदमी मिला जिसकी 'चौवर' छिन गई थी और इस कारण वह दुःखित हो रहा था। कुछ और आगे गई तो एक लक्ष्मी नाम

की स्त्री झाड़ू लगा रही थी। तब वह लौट आयी औरअपने साथ की स्त्रियों से कहा कि मेरे पति का यही नाम उत्तम है। क्योंकि—

अमरो तो मैं मरतो देख्यो, भाजत देख्यो सूरो।
चोदर तो मैं खुसती देखी, लाछ बुहारै कूड़ो।
आगै हूं पाछो भलो, नाम भलो लैटूरो॥

अमर को मैंने मरते औरशूर को भागते देखा। "चौधर" (न्याय करने का हक) मैंने छिनती हुई देखी और लक्ष्मी को झाड़ू लगाते देखा। आगे से पीछा ही भला है और मेरे पति का लैटूरा नाम ही अच्छा है।

● नट विद्या आज्या, जट विद्या कोनी आवै

एक बार नटों ने राजा के यहाँ तमाशा किया तो राजा ने उन्हें खूब इनाम दिया। एक जाट भी वहीं बैठा था, उसने नटों से कहा कि जो काम मैं कर सकता हूँ वह तुम नहीं कर सकते। नटों ने कहा कि वाह क्या बात करते हो? भला बताओ तो ऐसा कौन सा काम है? जाट ने कहा कि दुबारा आओगे तब बतलाऊँगा। वर्षा की ऋतु आई तो जाट के खेत में मतीरियाँ लगने लगीं। उसने एक अच्छी सी मतीरी देखकर उसे नाल समेत एक घड़े में डाल दिया। वह अन्दर ही अन्दर बढ़ती रही और बढ़कर एक बड़ा मतीरा बन गया। दूसरी बार नट आये तो जाट ने वह घड़ा लाकर राजा के सामने रखा और कहा कि महाराज! यह मतीरा इस घड़े में मैंन डाल दिया है, अब आप इन नटों से कहें कि बिना घड़े को फोड़े यह मतीरा निकाल दें। नटों ने अपनी हार स्वीकार कर ली और कहा—

नट विद्या आज्या, पण जट विद्या कोनी आवै।

● गोड़ में फोड़

एक गाँव में एक जगह ब्रह्म-भोज हो रहा था। एक मियाँ भी ब्राह्मण का वेष बनाकर भोजन कर आया। द्वार पर बैठे दक्षिणा देने वाले लोगों को सन्देह हुआ तो उन्होंने उससे पूछा कि तू कौन है? उसने कहा 'बम्मन'।

उन्होंने फिर पूछा कि कौनसा बामन ? उत्तर मिला 'गौड़ बामन'। तब उन्होंने पूछा कि गौड़ तो है लेकिन गोत्र क्या है? तब तो मियाँ चकराया। और बोला, 'या खुदा गोड़ में भी झोड़ है।'

तब उन लोगों ने उसे पहिचान लिया और मार-पीट कर बाहर निकाल दिया। आगे जाकर मियाँ ने अपने साथियों से कहा कि इन हिन्दुओं के यहाँ जीमना तो आसान है लेकिन दक्षिणा पाने में बड़ी मुश्किल पड़ती है।

● कुटार गाय को दान

एक यजमान ने ब्राह्मण को गाय दान में दी। गाय के दूध तो कुछ था नहीं लेकिन खाने में बहुत तेज थी। पड़ोसियों के बाड़ों में भी घुस जाती थी। तब ब्राह्मण ने यजमान से कहा—

जिसी देई तूं गाय, जिसो तेरो जिवड़ो जाणै।
जिसो पिवां म्हे दूध, बिसो तनैं मिलसी आगै।।

(जैसी गाय तू ने हमें दी है वह तू अपने दिल में जानता है। और जैसा दूध हम यहाँ पी रहे हैं वैसा ही आगे तुम्हें मिलेगा)

● पूरिया ही पूरिया है

कहते हैं कि एक बार सीकर दरबार ने ब्राह्मणों को ब्रह्म-भोज दिया। उनका चरवादार पूरिया नायक भी वेष बदल कर पंगत में आ बैठा। जब दरबार भोजन परोसने के लिए स्वयं आये तो उन्होंने पूरिये को पहिचान लिया और कड़ककर पूछा कि अरे पूरिया........? पूरिये ने झुककर कहा कि अन्नदाता! यहाँ तो अधिकतर मेरी जाति के पूरिये ही पूरिये बैठे हैं। आपने मुझे पहिचान लिया है इसलिए भले ही दंड दें। दरबार निरुत्तर हो गए।

● मियांजी खाई

एक मियाँ अंधा था। एक बार किसी भोज में भर पेट खीर खाकर अपने घर जा रहा था। रास्ते में एक खाई पड़ी। दूर से किसी ने देखा तो

आवाज लगाई कि मियाँजी! खाई, मियाँजी! खाई। मियाँ ने कहा कि हाँ भाई, खूब खाई। इससे पहले कि वह आदमी फिर आवाज लगाकर समझाये, मियाँजी खाई में गिर पड़े और खत्म हो गये।

सेठां, ऊंट लेल्यो

एक बनिया थोड़ी सी पूँजी लगाकर अपना कारोबार करता था। एक दिन एक आदमी ऊँट लाया और बोला कि 'सेठां, ऊंट लेल्यो'। बनिये ने कहा कि हाँ भाई! ले लेंगे, इसे दुकान में घुसा दो। उसने कहा कि कहीं ऊँट भी दुकान में घुसता है? तब बनिये ने कहा कि जो चीज दुकान में ही नहीं घुस सकती उसका मैं लेकर क्या करूँ—

चारो चरै मींगणां करै।
वीं को बाणियों के करै॥

अर्थात् मैं ऐसे ऊँट को लेकर क्या करूं जिसे नित्य खाने के लिए चारा चाहिए और जो चारा खाकर सिर्फ मेंगने कर दे। मैं तो ऐसी चीज खरीद सकता हूँ जो मुझे लाभप्रद हो।

बिवाई की पीड़

एक जाट अपनी ससुराल गया। उसके पैर में बिवाई फट गई थी। रात को बिवाई की पीड़ा के कारण वह रोने लगा। उसने बहुत चाहा कि वह न रोये क्योंकि ससुराल वाले सुनेंगे तो क्या कहेंगे? लेकिन वह अपने को रोने से न रोक सका। तब उसने सोचा कि सबेरे ससुराल के आदमी जब यह जानेंगे कि मैं सिर्फ बिवाई के दर्द के कारण रो रहा था तो वे मेरी हँसी उड़ायेंगे। यह सोच कर उसने अपनी आँख फोड़ ली। सबेरे जब ससुराल वालों ने पूछा कि रात को क्यों रो रहे थे, तो उसने कहा कि आँख में बड़ी पीड़ा थी और पीड़ा के मारे आँख भी चली गई है तो उन लोगों ने कहा कि हम तो यह समझे कि जँवाई साहब के पैर में बिवाई फट गई है, तभी वे इतना रो रहे हैं। तब तो जाट व्यर्थ ही आँख फोड़ लेने का पछतावा करने लगा।

● फोग अर राजा रायसिंह

बीकानेर नरेश रायसिंह बादशाह अकबर की आज्ञा से दक्षिण-विजय के लिए गए थे। वहाँ उन्हें अपने देश का 'फोग' वृक्ष दिखलाई पड़ा। वे फोग को देखकर तुरन्त घोड़े से उतर पड़े, उनकी आँखें अपने देश के वृक्ष को देखकर छलछला आईं। 'फोग' को उन्होंने गले लगाया और यह दोहा कहा—

तूं सहदेसी रूंखड़ो, म्हे परदेसी लोग।
म्हाँनैं अकबर तेड़िया, तूं कत आयो फोग ?

तू स्वदेश का रूख है और हम तो परदेशी हैं। हे भाई, हमें तो अकबर द्वारा बलात् भेजे जाने के कारण यहाँ आना पड़ा। लेकिन तू यहाँ कहाँ और कैसे आ गया ?

● दुनिया सुआरथ की है

जोधपुर महाराज जसवंतसिंह जी को बढ़िया पोशाकों और आभूषणोंका बड़ा शौक था। व बहुत कीमती आभूषण अपने शरीर पर धारण किया करते थे। उन्होंन अपने प्रधान मंत्री को आदेश दिया था कि जब मैं मरूँ तो मेरे आभूषण वगैरह शरीर से उतारे न जाएँ। महाराजा श्वाँस खींचकर समाधि लगाना भी जानते थ। एक बार वे परीक्षा लेने के लिए कुछ समय के लिए समाधिस्थ हो गए। सबने समझा कि महाराज स्वर्ग सिधार गए। अतः मंत्रियों ने उनके बहुमूल्य आभूषण वगैरह उतार लिए और देखने में वैसे ही किन्तु साधारण कीमत के आभूषण उन्हें पहिना दिय। इतने में महाराजा की समाधि टूटी और उन्होंने असलियत को भाँप लिया। सांसारिक स्वार्थ-परता से वे क्षुब्ध हो उठे और उन्होंने यह दोहा कहा—

खाया सोई खरचिया, दीन्यां सोई सत्थ।
जसवंत धर पोढ़ाणियां, माल बिराणै हत्थ।।

(आदमी जो खाता है वह खर्च कर लेता है और जो दूसरों को देता है वही साथ जाता है। जमा करने का कोई लाभ नहीं है। जसवंत को जमीन पर लिटा दिया गया और सारा माल दूसरों के हाथों में चला गया)

● उतावळो सो बावळो

एक ब्राह्मणी ने एक नेवला पाल रखा था। एक दिन वह अपने छोटे बच्चे को सुलाकर पानी लाने गई और नेवले को बच्चे की रखवाली पर छोड़ गई। इतने में एक काला नाग वहाँ आया और बच्चे की ओर बढ़ने लगा। नेवला उसपर झपटा और थोड़ी ही देर में उसने साँप को मार डाला। फिर मालकिन को यह सूचना देने के लिए वह बाहर दरवाजे पर आ गया। मालकिन आई और उसने नेवले के मुँह में खून लगा देखा तो उसने समझा कि इसने बच्चे को मार डाला है। उसने क्रोध में आकर एक बड़ा पत्थर उस पर पटक दिया, जिससे वह वहीं मर गया। अन्दर जाकर उसने देखा तो बच्चा सोया पड़ा था और पास ही मरा हुआ एक काला नाग पड़ा था। वह सारी बात समझ गई और पछताने लगी लेकिन अब पछताने से क्या हो सकता था ?

● पढ्यो पण गुण्यो कोनी

एक पंडित का बेटा काशीजी से ज्योतिष पढ़कर आया। उसके पिता का दरबार में आना-जाना था। उसने राजा से इस बात की चर्चा की तो राजा ने उसे ससम्मान दरबार में बुलाया। राजा ने परीक्षा लेने के लिए उससे पूछा कि बतलाइये मेरे हाथ में क्या है ? पंडित के लड़के ने हिसाब लगाकर बतलाया कि आपके हाथ में कोई गोल वस्तु है, फिर कहा कि उसमें छेद भी है तथा वह पत्थर है। लेकिन राजा ने कहा कि उस चीज का नाम बतलाइये। पढ़ाई से जितना जाना जा सकता था वह तो पंडित के लड़के ने ठीक-ठीक बतला दिया। अब नाम बतलाने का काम तो उसकी सहज बुद्धि पर निर्भर करता था। उसने बहुत सोचा लेकिन कोई नाम ऐसा

ध्यान में नहीं आया। अन्त में चक्की के पाट पर उसका ध्यान गया। उसने सोचा कि चक्की का पाट, गोल भी होता है, उसमें छेद भी होता है और पत्थर तो वह है ही। अतः झट से बोल उठा कि आपके हाथ में चक्की का पाट है। राजा के साथ ही सारे दरबारी भी हँस पड़े। तब राजा ने उससे कहा कि आप पढ़े तो अवश्य हैं लेकिन अभी गुने नहीं हैं। आपने यह नहीं सोचा कि एक राजा के पास दरबार में चक्की के पाट का क्या काम? और वह हाथ की मुट्ठी में आ ही कैसे सकता है?

● गोदी हालो गेर कर पेट हालै की आस करै

एक स्त्री के एक बच्चा था। वह चाहती थी कि उसके और बच्चे हों। अतः एक ढोंगी साधु के पास जो कि बड़ा महात्मा बन रहा था गई। साधु ने उसकी बात सुनकर कहा कि तू यदि इस बच्चे की बलि अमुक देवता को चढ़ा दे तो तेरे दूसरा लड़का हो जायेगा। उसके कहने पर जब वह बलि चढ़ाने को तैयार हुई तो किसी दूसरी स्त्री ने उसे समझाया कि तू यह क्या मूर्खता कर रही है? तेरी गोद में जो लड़का है उसे तो तू मार रही है और दूसरे की आशा कर रही है। यदि साधु के कहने के अनुसार दूसरा बच्चा हो भी गया तो यह तो चला जाएगा ही और दूसरा न हुआ तब क्या करेगी? तब वह मान गई।

● बाबै सैं ई बाई

एक जाट की लड़की बहुत वाचाल थी। लड़ने-झगड़ने में बहुत तेज थी। जाट ने सोचा कि ऐसी झगड़ालू लड़की के साथ शादी करना कौन पसन्द करेगा? अतः एक दिन जब पास के गाँव के एक जाट ने उससे शादी करने की बात कही तो वह बहुत खुश हुआ और उसने अपनी लड़की की शादी उससे कर दी। शादी होने के बाद जब वे लोग विदा होकर जा रहे थे तो जाट ने जो पापड़ व अन्य खाने-पीने की वस्तुओं से भरकर मटके दिये थे वे बैलगाड़ी में खड़खड़ाने लगे। जाट दूल्हे ने कहा कि ये कौन बड़-

बड़ा रहे हैं, इन्हें कह दो कि चुप हो जाएँ नहीं तो इन सब को मार डालूँगा। मुझे जरा भी बड़बड़ाहट पसन्द नहीं है। लेकिन मटके भला क्या मानते? अतः वह लाठी लेकर गाड़ी से उतरा और उसने सारे मटके भड़ाभड़ फोड़ डाले। जाट की स्त्री आतंकित हो गई। उसके मन में भय समा गया कि जरा भी बड़बड़ाने से यह मेरी कमर तोड़ डालेगा। वह पति के आँख के इशारे से ही काम करने लगी। जब कोई पाहुना उसके घर आता तो जाट उसे आँख के इशारे से समझा देता कि इसे खिचड़ी में घी डालना है या तेल। दाहिनी आँख से इशारा करने पर वह घी डाल देती और बाईं आँख से इशारा करने पर तेल डालती। एक दिन उसका पिता (बाबा) अपनी बेटी से मिलने आया। जब खाना खाने बैठा तो जाट ने बाईं आँख का इशारा किया। जाट की स्त्री को उसके इस व्यवहार से बड़ा दुःख हुआ और वह बोल उठी—बाबै सूँ ई बाईं।

अर्थात् मेरे बाप के लिए भी तुम बाईं आँख से इशारा करके उसे खिचड़ी में घी की बजाय तेल डालने को कह रहे हो।

● अनोखी पिछाण

एक राजा की कन्या बाल विधवा थी। एकान्त महल में रहकर शास्त्र-चिंतन करके समय काटा करती। एक दिन सोमवती अमावस्या को उसने नगर के सारे ब्राह्मणों को भोज दिया। जब सारे ब्राह्मण भोजन पाकर चले गए तो एक अंधा ब्राह्मण बहुत देर से राजकन्या के उस बाग में आ टिका, जहाँ ब्रह्म-भोज हुआ था। वह एक मालती के वृक्ष के नीचे बैठ गया। उसी वृक्ष के फूल पर एक भौंरा गुंजार कर रहा था। पंडित ने उसके गुंजन को सुनकर कहा—

"मदोन्मत्त शंख-ध्वनि"

इसी पद को वह बार-बार दोहराने लगा। राजकन्या की दासी वहाँ आई तो उसने वह पद अपनी मालकिन को जाकर सुनाया। राजकन्या ने कहा कि इस पद को गाने वाला अवश्य ही जन्मान्ध है। दासी ने पूछा

कि आपने कैसे जाना तो राजकन्या ने कहा कि मालती का पुष्प शंख के आकार का होता है, ऊपर से पतला नीचे से मोटा । भौंरा पतले भाग पर बैठकर गुंजार करता है, लेकिन शंख उस तरफ से नहीं बजता। पंडितजी ने केवल सुना है कि मालती का पुष्प शंख के आकार का होता है, देखा नहीं। देखा होता तो वे यह पद नहीं कहते। दासी ने पंडितजी से जाकर पूछा तो पंडितजी ने कहा कि मैं अवश्य ही जन्मान्ध हूँ, लेकिन आपकी बाईजी भी निश्चय ही बाल विधवा है। उसे यह नहीं मालूम कि मदोन्मत्त पुरुष उलटा-सुलटा नहीं देखते।

● अनोखो न्याव

ऐक दिन शहर-कोतवाल ने राजा भोज के सामने चार चोरों को पेश किया। एक से राजा ने कहा कि भले आदमी, यह काम तेरे लायक न था और उसे दरबार से चले जाने को कह दिया । फिर दूसरे का हाथ पकड़कर उससे कहा दुष्ट, तुमने बहुत अनुचित किया और उसे भी छुट्टी दे दी। तीसरे को साधारण दण्ड देकर निकाल दिया । चौथे आदमी को उसके नाक, कान कटवा कर, कालामुँह करके और गधे पर चढ़ाकर शहर में घुमाने का हुक्म दिया। एक ही अपराध के लिए भिन्न-भिन्न दण्ड देने पर दरबारियों को आश्चर्य हुआ तो राजा ने कहा—"कल चारों की गुप्त रिपोर्ट मँगवाई जाए।" दूसरे दिन गुप्तचरों ने आकर बतलाया कि पहला आदमी तो घर पर जाकर विष खाकर मर गया। दूसरा नगर छोड़कर चला गया। तीसरा किसी को अपना मुँह नहीं दिखलाता और चौथे की कथा तो बड़ी विचित्र है। जब लगभग सारा शहर उसे घुमा चुके तो सामने उसकी स्त्री मिल गई। उसने अपनी स्त्री से कहा कि रासभ पर सवार हो कर शहर के तीन दरवाजे तो नाप आया हूँ, थोड़ा शहर फिरना बाकी है। अभी इन मूजियों से पीछा छुड़ाकर आता हूँ । जाकर पानी गरम कर और हलुआ बना। बहुत लोग मेरे पीछे हो गए, इन लोगों ने नीचे गिराने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन गिरा नहीं, कदाचित् गिर जाता तो इज्जत

धूल में मिल जाती । चारों जनों की कथा सुनकर सारे दरबारी राजा के न्याय की प्रशंसा करने लगे।

● फ़क़ीर की सीख

एक साहूकार कमाने के लिए विदेश गया। घर पर केवल उसकी स्त्री और एक दासी थी। एक दिन साहूकार की स्त्री बड़ी कामातुर हो गई, वह छत पर गई और उसने दूर जंगल में शौच के लिए जाते हुए एक फ़क़ीर को दासी के द्वारा घर बुलाया। घर आ जाने पर उसने दासी को इशारा किया कि इन्हें ऊपर के कमरे में ले चल। फ़क़ीर ऊपर चढ़ने लगा तो उसका मिट्टी का बधना दीवाल से टकराकर टूट गया। फ़क़ीर रोने लगा तो सेठानी ने कहा कि साईं साहब! रोते क्यों हो? मैं तुम्हें चाँदी का बधना बनवा दूँगी। तब फ़क़ीर ने कहा कि माई, मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि इसी बधने ने अब तक मेरे अदब को देखा था अब किसी दूसरे बधने को दिखलाना होगा। फकीर की बात सुनकर सेठानी को ज्ञान हो गया कि फकीर दूसरे बधने को भी अपना अदब नहीं दिखाना चाहता और मैं तो पर पुरुष को सब कुछ दिखलाने को तैयार हो गई । उसने फ़क़ीर को दूसरा बधना देकर विदा कर किया।

● खिचड़ी अर खाचिड़ी

एक जाट बीमार था। वैद्य से दवा लेने के लिए शहर में गया तो वैद्य ने दवा दे दी और खाने के लिए खिचड़ी बतला दी । जाट खिचड़ी-खिचड़ी करता हुआ अपने गाँव की ओर चला। थोड़ी दूर जाने पर खिचड़ी-खिचड़ी के बदले खाचिड़ी-खाचिड़ी कहने लगा। रास्ते में एक किसान का खत आया, फसल पकी खड़ी थी, किसान चिड़ियों को उड़ा रहा था और उधर जाट बोला, "खा चिड़ी खा चिड़ी"। किसान को गुस्सा आया और उसने जाट को दो चार थप्पड़ जमा दिए। तब जाट ने पूछा कि मुझे क्या कहना चाहिए तो किसान बोला 'उड़ती जाओ उड़ती जाओ' कहता चला जा। जाट वैसे ही कहते हुए आगे बढ़ा। थोड़ी दूर पर एक बहेलिये ने चिड़ियों को फँसाने

के लिए जाल फैला रक्खा था। उसकी आवाज सुनी तो उसने भी जाट को पीटा और कहा 'आते जाओ फँसते जाओ, आते जाओ फँसते जाओ' कह। जाट वैसे ही कहता हुआ आगे बढ़ा। थोड़ी दूर पर चार चोर चोरी के माल का बँटवारा कर रहे थे। जाट की बात सुनकर उन्हें बड़ा क्रोध आया और उन्होंने उसकी खूब मरम्मत बनाई। फिर उससे कहा कि मूर्ख, ऐसा कह कि ऐसा दिन कभी न आए, ऐसा दिन कभी न आए। जाट वही मंत्र रटता हुआ आगे चला तो सामने से एक बारात आती दिखलाई दी। बारात वालों ने उसकी बात सुनी तो कहा कि अरे दुष्ट! ऐसा क्यों कहता है? फिर उसे खूब पीटा और कहा 'भगवान् ऐसा दिन सबको दिखाए' यों कह। जाट फिर उस नये मंत्र का जाप करता हुआ आगे बढ़ा तो सामने से एक शव को ले जाते हुए कुछ लोग दिखलाई पड़े। वह अपनी बात को दुहराता हुआ पास से गुजरा तो उन लोगों ने उसकी खूब पिटाई की। इस प्रकार रास्ते भर पिटते-पिटते वह घर पहुँचा। जाटनी ने पथ्य के विषय में पूछा तो जाट बोला कि उस पथ्य का नाम लेने से तो इतना पिटा हूँ, खाने पर क्या दशा होगी यह राम ही जाने।

● झूठ कोनी बोलै

एक सेठ बहुत मालदार था। उसके एक लड़का था जिसके हाथ कोहनी तक के थे, पैर घुटनों तक के। आँख में मोतियाबिन्द था। कानों से बहरा था। यदा-कदा उसे मिरगी आ जाया करती थी। लड़का बड़ा हुआ तो सेठ को उसकी शादी की फिक्र हुई। उसने अपने नाई को सगाई करने के लिए भेजा। नाई योग्य लड़की की तलाश में निकला। घूमते-घामते एक शहर में एक साधारण हैसियत वाले सेठ के घर ठहरा। बातचीत में नाई ने सेठ को बतलाया कि हमारा सेठ करोड़पती है तथा उसके यह एक ही लड़का है । उम्र १६–१८ के बीच है । सेठ ने अपनी लड़की की शादी उससे करनी स्वीकार कर ली तो नाई बोला कि सेठजी! मैं झूठ तो बोलता नहीं, आप सारी बातें जो मैं कहूँ लिख लीजिए। एक तो यह कि लड़का

पैदल नहीं चलता है। तब सेठ ने कहा कि उनके बहुत रथ, पालकी आदि सवारियाँ हैं, फिर भला पैदल चलने की क्या बात है? तब नाई ने कहा कि लड़का अपने हाथ से कोई काम नहीं करता है, तब सेठ ने कहा कि उनके सैकड़ों नौकर हैं फिर हाथ से काम करने की अवश्यकता ही क्या है। फिर नाई ने कहा कि लड़का सबको एक निगाह से देखता है, तो सेठ ने कहा कि यह शीलवान् की बात है। नाई ने आगे कहा कि लड़का किसी की सुनता नहीं है। तब सेठ ने कहा कि यह दाना आदमी की बात है। नाई ने अन्त में कहा कि लड़का अपनी नींद सोता है और अपनी नींद ही जगता है। तब सेठ ने कहा कि यह मन-मौजी की बात है। जब सारी बातें लिख ली गईं तब नाई वापिस अपने सेठ के यहाँ आ गया। बारात धूमधाम से चल पड़ी। वर-पक्षवालों ने बड़ी चतुराई से दूल्हे के ऐबों को छुपाए रक्खा। लेकिन जब पंडित ने दूल्हे को हथलेवे के लिए हाथ बढ़ाने को कहा तब सारी पोल खुल गई। कन्या-पक्षवाले बिगड़ने लगे तो नाई ने कहा कि सारी बातें लिखकर तय हुई हैं, आप सब देख लीजिए। मैंने लिखवाया है कि लड़का अपने पैरों से चलता नहीं, हाथ से कोई काम करता नहीं, आँखों से देखता नहीं, कानों से सुनता नहीं। इनमें कौन सी बात झूठ है? इतने में लड़के को मिरगी आ गई और वह वहीं लुढ़क गया। तब नाई ने कहा कि अंतिम बात मैंने यह लिखाई है कि लड़का अपनी नींद सोता है, अपनी नींद उठता है। अब यह सो गया है, कोई इसे उठा सके तो उठाए? जब स्वयं उठेगा तभी उठेगा। लाचार कन्या-पक्षवालों ने अपनी हार मान ली और लड़की की शादी उसी से कर दी।

● कुण बडी ?

एक बार लक्ष्मी और सरस्वती में विवाद हो गया। लक्ष्मी ने कहा कि मैं बड़ी हूँ, सरस्वती ने कहा कि मैं बड़ी हूँ। दोनों ने अपने-अपने करतब दिखलाने का निश्चय किया। सरस्वती ने एक ब्राह्मण के शरीर में प्रवेश किया तो ब्राह्मण महाविद्वान् बन गया। एक नगर में जाकर उसने एक

स्थान पर व्याख्यान दिया तो लोग मंत्र-मुग्ध से हो गए। नगर भर में उसके वक्तृत्व की धूम मच गई। नगरसेठ ने सुना तो वह उसको अपन यहाँ सम्मानपूर्वक ले आया और उससे वहीं ठहर कर नित्य अपने अमृतमय भाषण से सबको तृप्त करने का आग्रह किया। ब्राह्मण ने कहा कि मैं जिस स्थान पर ठहरूँगा उसे छोड़कर दूसरे स्थान पर नहीं जाऊँगा, बस यही मेरी शर्त है। नगरसेठ ने बड़ी खुशी से ब्राह्मण की शर्त मान ली और उसे एक बहुत ही सुविधाजनक स्थान में ठहरा दिया। नित्य दोपहर को ब्राह्मण का प्रवचन वहाँ होता और नगरसेठ और उसके परिवार के लोगों के साथ नगर के अन्य लोग भी एकाग्रचित्त होकर प्रवचन सुनते। चूँकि ब्राह्मण के शरीर में स्वयं सरस्वती विराजमान थीं इसलिए उसके व्याख्यान में ऐसा माधुर्य और सम्मोहन था कि लोग अपने शरीर की भी सुध भूल जाते थे। एक दिन जब पंडितजी का प्रवचन चल रहा था तो एक बड़ी बदसूरत सी बुढ़िया वहाँ चिल्लाती हुई आई कि मैं प्यास के मारे मर रही हूँ, कोई ठंडा पानी पिला दे। प्रवचन में विघ्न किसी को सह्य नहीं था। नगरसेठ ने अपने नौकर से कहा कि बुढ़िया को पानी पिलाकर शीघ्र दूर कर। नौकर वहाँ गया तो बुढ़िया ने कहा कि मैं तो स्वयं नगरसेठ के हाथ से पानी पीऊँगी और किसी के हाथ से नहीं। नौकर ने जाकर सेठ से निवेदन किया तो सेठ ने अपनी पुत्र-वधू को भिजवा दिया। उसने जाकर बुढ़िया से निवेदन किया कि माजी, आप पानी पीजिए, मैं बहुत ठंडा, मीठा जल आपके लिए लाई हूँ। बहुत आग्रह करने पर बुढ़िया ने अपने झोले से एक रत्न-जटित सोने का प्याला निकाला और उसमें पानी लेकर पीने लगी। उसने प्याला होठों से लगाया और फेंक दिया। वह चिल्लाने लगी कि अरे बाप रे, मेरे तो कंठ जल गए, क्या सेठ के घर में ठंडा पानी भी नहीं है। सेठ की पुत्र-वधू ने दूसरी बार जल लाकर पीने को कहा तो दूसरी बार भी बुढ़िया ने वैसा ही एक प्याला अपने झोले से निकाला और उसी प्रकार फेंक दिया। सेठ की पुत्र-वधू बड़ी चकित हुई कि इस बुढ़िया के पास ऐसे बहुमूल्य प्याले कहाँ से आए और किस लापरवाही से यह इन प्यालों को फेंक रही है।

उसने अपनी सास को जाकर सारी बात कही। वह आई और उसके साथ भी वही बात हुई। बुढ़िया ने दो तीन प्याले और अपने झोले से निकालकर फेंक दिये। तब उसने जाकर अपने पति से सारी बात कही। नगरसेठ विघ्न पड़ने से बड़ा झुँझलाया हुआ बुढ़िया के पास आया, लेकिन जब उसने धरती पर पड़े प्यालों की ओर देखा तो उस की सारी झुंझलाहट आश्चर्य में बदल गई। जमीन पर पड़े उस एक प्याले की कीमत सेठ की सारी दौलत से अधिक बैठती थी। नगरसेठ ने बड़ी नम्रता से बुढ़िया को शीतल जल पिलाया। बुढ़िया ने जल पीकर एक और प्याला फेंक दिया। सेठ ने बुढ़िया से कहा कि माजी! आप यहीं ठहर कर इस घर को पवित्र करें। यहाँ आपको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। बुढ़िया ने कहा कि मैं यहाँ ठहर तो सकती हूँ लेकिन उसी कमरे में ठहरूँगी जहाँ यह ब्राह्मण ठहरा हुआ है, अन्य किसी स्थान में नहीं। यदि मुझे ठहराना चाहते हो तो पहले इसे यहाँ से निकालो। नगरसेठ ब्राह्मण को वचन दे चुका था, लेकिन इधर बुढ़िया भी हठ पकड़े हुए थी। लाचार सेठ ने ब्राह्मण को किसी दूसरे कमरे में ठहरने को कहा। ब्राह्मण ने बहुत कुछ कहा पर सेठ ने नहीं माना तो ब्राह्मण अपना बोरिया-बिस्तर लेकर वहाँ से चल दिया। नगरसेठ सपरिवार उस बदसूरत बुढ़िया की परिचर्या में लग गया। थोड़ी देर बाद बुढ़िया ने कहा कि मैं अब कुछ देर सोना चाहती हूँ, तुम सब बाहर चले जाओ। सारे लोग बाहर चले गए। थोड़ी देर बाद नगरसेठ फिर अन्दर गया तो न तो वहाँ बुढ़िया थी और न एक भी प्याला था। लेकिन लक्ष्मी और सरस्वती के विवाद का फैसला हो चुका था।

● चाबी तो मेरै कन्नै है

एक बुढ़िया ने अपने सारे रुपये एक छोटे से डिब्बे में रखकर डिब्बे को ताला लगा दिया और चाबी अपने पास सम्हाल कर रखने लगी। एक दिन बुढ़िया सो रही थी कि एक उच्चका आया और बुढ़िया का डिब्बा उठा ले गया। बुढ़िया जग उठी और उसे सारी बात मालूम हुई तो उसने

बड़े इतमीनान से कहा कि डिब्बा ले गया तो क्या हुआ, चाबी तो मेरे पास ही है।

● टीरी-टीरी, मटोरो-मटोरो

एक लड़का तुतलाकर बोलता था। उसकी एक लड़की से शादी होनी तय हुई। संयोगवश लड़की भी तोतली थी। जब फेरे फिर रहे थे तो लड़के को पास ही एक कीड़ी चलती हुई दिखलाई दी। लड़का झट बोल उठा, (कीड़ी-कीड़ी) टीरी-टीरी। लड़की ने भी कीड़ी को देखा और उसने सोचा कि यह तो (बड़ी चींटी) मकोड़ा है, अतः वह भी बोल उठी, मटोरो-मटोरो। बैठे हुए सारे लोग हँस पड़े।

कुत्तो अर साधु

राजा भोज के गगनमहल के फाटक पर एक कुत्ता पहरे पर नियुक्त था। वह 'साधु' को देखकर अधिक भौंका करता था। एक दिन एक साधु आया तो कुत्ता बड़े जोर से उसकी तरफ भौंकने लगा। साधु ने कहा कि अरे ऐब-दार! क्यों भौंकता है? तब कुत्ता बोला कि महात्मन्! मेरे में क्या ऐब है? तब साधु ने कहा कि एक तो रात्रि को भौंक-भौंककर मालिक को जगाता रहता है, दूसरे पैर ऊँचा करके पेशाब करता है, तीसरे रास्ते में लेटता है और चौथे साधु को देखकर विशेष भौंकता है। तब कुत्ते ने कहा कि महाराज! ये चारों तो मेरे दोष नहीं, गुण हैं। रात्रि के समय मुझे यम के दूत दिखलाई पड़ते हैं तब भौंक कर मालिक को जगा देता हूँ। मालिक जागता है तो ईश्वर का नाम लेता है और यम के दूत अन्यत्र चले जाते हैं। दूसरे यह धरती सबकी माता है इसलिए इसपर सीधे पेशाब न कर आड़ से पेशाब करता हूँ। रास्ते में इसलिए सोता हूँ कि अनगिनत साधु-संत राह से गुजरते हैं; किसी का भी पैर लगजाए तो मुक्ति हो जाए, और साधु को देखकर इसलिए भौंकता हूँ कि साधु होकर भी तुम दर-दर माँगते फिरते हो। क्या ईश्वर तुम्हें खाने को न देगा? कुत्ते की बात सुनकर साधु को ज्ञान हो गया और वह भीख माँगना छोड़कर बदरिकाश्रम को चल दिया।

मगरमच्छ अर बांदरो

एक मगरमच्छ और बन्दर दोस्त थे। मगर नदी में रहता और बन्दर नदी किनारे एक जामुन के पेड़ पर। बन्दर हमेशा मगर को मीठे जामुन तोड़ कर दिया करता। एक दिन मगर कुछ जामुन अपनी स्त्री के लिए घर ले गया। मगर की स्त्री ने जामुन खाये तो उसे बड़े स्वादिष्ट लगे। उसने मगर से कहा कि तुम्हारा दोस्त इन मीठे जामुनों को रोज खाता है। जब ये जामुन ही इतने मीठे हैं तो उसका कलेजा न जाने कितना मीठा होगा? अतः मुझे उसका कलेजा लाकर दो। दूसरे दिन मगर बंदर के पास गया और उससे कहा कि दोस्त, आज तुम्हें तुम्हारी भाभी याद कर रही है। तुम हमेशा मुझे जामुन खिलाते हो, आज वह तुम्हें अपने हाथ से खाना खिलायेगी। बन्दर उसकी पीठ पर बैठकर उसके घर चला। जब घर नजदीक आने लगा तो मगर ने बन्दर से कहा कि यार, सच तो यह है कि तुम्हारी भाभी ने तुम्हारा कलेजा माँगा है और इसीलिए मैं तुम्हें घर ले चल रहा हूँ। बन्दर उसकी बात सुनकर एक बार तो सिहर उठा, लेकिन फिर सम्हलकर बोला कि दोस्त मगर, तुम भी निरे मूर्ख हो। यह बात तुमने मुझसे पहले ही क्यों न कही? तुम जानते हो कि हम तो एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर लम्बी लम्बी छलांगें लगाते हैं, अतः कलेजे के गिर पड़ने का डर रहता है और इसलिए उसे जामुन के वृक्ष पर ही सुरक्षित टाँगे रखता हूँ। यदि कलेजा ही चाहिए तो वृक्ष तक वापिस चलो। मगर उसकी बातों में आ गया और उसे जामुन के वृक्ष तक ले गया। बन्दर ने एक छलांग लगाई और वृक्ष पर जा बैठा और मगर से कह दिया कि जाओ भाभी से कह दो कि दोस्त का कलेजा इतना सस्ता नहीं है। मगर खाली हाथ घर लौटा और अपनी स्त्री से उसने सारी बात कही। पति की मूर्खता पर वह बड़ी क्रुद्ध हुई लेकिन फिर दूसरी तरकीब सोचने लगी। उसने एक योजना बनाई और पाँच सात दिन बाद योजनानुसार मगर नदी के किनारे जाकर चुपचाप मुर्दे की तरह लेट गया। मगर की स्त्री पति की मृत्यु पर जोर-जोर

से विलाप करने लगी। मगर की स्त्री ने सोचा था कि बन्दर अपने दोस्त की स्त्री के पास उसे धीरज बँधाने अवश्य आयेगा और तब उसे पकड़ लूँगी। बन्दर आया मगर पेड़ की डाल पर से ही बोला कि भाभी! बड़े अफसोस की बात है कि भाई की असमय ही मृत्यु हो गई और मृत्यु भी बड़े अजीब ढंग से हुई है। जब मगर की स्त्री ने पूछा कि अजीब ढंग से कैसे, तो बन्दर बोला कि जब कोई मगर मरता है तो और तो उसके सारे शरीर से प्राण निकल जाते हैं लेकिन पूँछ में अटके रहते हैं, इसलिए वह पूँछ को बहुत देर तक पटकता रहता है। लेकिन मगर भाई तो पूँछ को जरा भी नहीं हिलाता। बन्दर की बात सुनकर मगर ने अपनी पूँछ थोड़ी सी हिलाई और तब बन्दर ने हँसकर कहा कि भाभी, क्यों इतने फरेब करती हो; देवर का कलेजा यों हाथ नहीं आने का। इतना कहकर बन्दर दूसरे वृक्ष पर छलाँग लगा गया।

● गादड़ै की उगाई

एक ठाकुर एक तेली के रुपये माँगता था। ठाकुर ने तेली को कई बार कहलवाया कि रुपये भिजवा दो लेकिन जब तेली ने रुपये नहीं भेजे तो ठाकुर स्वयं घोड़ी पर चढ़कर तेली के घर चला। रास्ते में एक टीले पर एक गीदड़ बैठा था। उसने कहा, 'ठाकराँ! जै रामजी की, आज किन्नैं चाल्या, आओ चिलम तमाखू तो पील्यो।' ठाकुर ने कहा कि अमुक तेली के रुपये माँगता हूँ, सो उसके घर जा रहा हूँ। लौटते वक्त तुम्हारे पास ठहरूँगा। ठाकुर तेली के घर पहुँचा तो शाम हो गई। ठाकुर ने घोड़ी वहीं बाँध दी और खुद सो रहा। घोड़ी गर्भवती थी और रात को उसने एक सुन्दर बछेड़े को जन्म दिया। ठाकुर तो सो रहा था अतः तेली ने बछेड़े को ले जाकर अपनी घानी से बाँध दिया। सवेरे ठाकुर उठा तो तेली ने पाँच-सात दिन में रुपये देने का वायदा कर उसे विदा कर दिया। ठाकुर घोड़ी पर सवार होकर चलने लगा तो घोड़ी अँटने लगी। वह बछेड़े को छोड़कर जाना नहीं चाहती थी। लेकिन ठाकुर को इस बात का पता नहीं था अतः वह उसे चाबुक मार-मार कर चलाने लगा। ठाकर टीले पर बैठे

गीदड़ के पास पहुँचा तो गीदड़ ने कहा, "ठाकराँ! घोड़ी अंटै कियां है? घोड़ी तो व्यागी दीखै। ई को बछेरियो कठै है?" घोड़ी अंट क्यों रही है, लगता है घोड़ी ब्या गई है लेकिन इस का बछेड़ा कहाँ है? तब ठाकुर को अपनी भूल मालूम हुई और वह फिर तेली के घर चला। तेली के घर की तरफ़ रुख करते ही घोड़ी सरपट दौड़ चली। ठाकुर ने तेली के घर जाकर देखा तो बछेड़ा घानी के पास बँधा हुआ था। ठाकुर ने तेली से बछेड़ा माँगा तो तेली बोला कि ठाकुर! आपका दिमाग तो नहीं फिर गया है? यह बछेड़ा तो मेरी घानी के जन्मा है। मेरी घानी हर साल एक बछेड़ा प्रसव करती है। तेली ने दो गवाह भी बना रक्खे थे, उन्होंने भी तेली की हाँ में हाँ मिलाई। लाचार होकर ठाकुर वहाँ से लौट पड़ा और फिर गीदड़ के पास आया। गीदड़ ने सारी बात सुनकर कहा कि तुम हाकिम के पास फरियाद करो। हाकिम गवाह माँगे तो मुझे पेश कर देना। ठाकुर ने वैसा ही किया। हाकिम ने तेली को तलब किया तो तेली ने बछेड़े को घानी से पैदा हुआ बतलाया। अपने कथन की पुष्टि में उसने दो गवाह भी पेश कर दिए। तब हाकिम ने ठाकुर से अपना गवाह पेश करने के लिए आज्ञा दी। ठाकुर ने कहा कि हुजूर आदमी तो कोई है नहीं, लेकिन एक गीदड़ सारी बात को सही-सही जानता है। तब हाकिम ने दूसरे दिन गीदड़ को पेश करने का हुक्म दिया। ठाकुर ने आकर गीदड़ से सारी बात कही। दूसरे दिन गीदड़ चलने को हुआ तो उसने कीचड़ में लेट लगाकर अपने शरीर को कीचड़ से लथपथ कर लिया और फिर राख में लोट गया। इस प्रकार अजीब सूरत बना कर गीदड़ कचहरी में हाजिर हुआ और वहाँ बैठकर ऊँघने लगा। हाकिम ने जब दो तीन-बार पुकारा कि गीदड़सिंह! अपनी गवाही दो, तब गीदड़ उठा, लेकिन फिर ऊँघने लगा। तब हाकिम ने कड़क कर कहा कि गीदड़ सिंह! यह क्या स्वाँग बना रक्खा है तुमने? इस वक्त भी क्या नींद सता रही है? तब गीदड़ ने सम्हलते हुए कहा कि हुजूर! रात को समुद्र में आग लग गई थी और रात भर उसे बुझाता रहा तब जाकर वह काबू में आई। नींद और थकावट के कारण

बदन टूट रहा है। हाकिम ने उसकी बात सुनी तो हँसने लगा और बोला कि कहीं समुद्र में भी आग लग सकती है ? तब गीदड़ गंभीर हो गया और बोला कि हुजूर ! समुद्र में आग नहीं लग सकती तो क्या घानी भी बछेड़ा प्रसव कर सकती है ? हाकिम गीदड़ की चतुराई पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने तेली को दंड दिया और बछेड़ा ठाकुर को दिलवा दिया।

● पंढ्यो पण गुण्यो कोनी

एक वैद्य अपने लड़के को वैद्यक सिखाया करता था। उसने अपने लड़के को बहुत-से चिकित्सा-ग्रन्थ पढ़ाये और तब एक दिन एक रोगी के घर उसे भी साथ ले गया। रोगी की हालत पहले दिन से बहुत खराब थी। वैद्य ने उसकी नाड़ी देखी और साथ ही रोगी के पलंग के नीचे पड़े नारंगी के छिलकों को भी देख लिया। तब उसने रोगी के घर वालों से कहा कि इसे वात-प्रकोप हो गया है। मालूम होता है कि तुम लोगों ने इसे खाने के लिए नारंगी दी है। घर वालों पर इस बात का बड़ा असर हुआ कि वैद्यजी नाड़ी देखकर खाई हुई चीज़ बतला देते हैं। उन्होंने अपनी भूल स्वीकार कर ली तब वैद्यजी कुछ दवा देकर चले गए। घर जाकर वैद्यजी ने अपने लड़के को बतलाया कि नारंगी का अनुमान तो पलँग के नीचे पड़े छिलकों को देखकर लगाया गया था। दूसरे दिन उन्होंने अपने लड़के को उक्त रोगी के यहाँ भेजा। वैद्य के लड़के को कल जैसी कोई चीज आज दिखलाई नहीं दी। हाँ, रोगी के पलँग से थोड़ी दूर पर ऊँट की कूंची (ऊँट पर कसने की जीन) और गद्दे रखे हुए थे और ऊँट वहाँ नहीं था। तब वैद्य के लड़के ने सोचा कि ऊँट के गद्दे और कूँची तो यहाँ रक्खे हैं लेकिन ऊँट नहीं है लगता है कि रोगी आज ऊँट को खा गया हैं। इसलिए वह रोगी की नाड़ी देखकर बोला कि मालूम होता है आज यह ऊँट खा गया है। सुनकर पास खड़े हुए सारे लोग हँसने लगे।

दया-मया भाजगी

एक स्वामीजी के कृपानाथ नाम का एक चेला और दया तथा मया

नाम की दो चेलियाँ थीं। स्वामीजी वृद्ध हो चले थे और चेला नवयुवक था, अतः एक दिन मौका पाकर वह दया मया को ले उड़ा। अब स्वामीजी अकेले रह गये। एक दिन स्वामीजी का एक श्रद्धालु भक्त स्वामीजी के पास दर्शनार्थ आया और उसने सहज-भाव से ही पूछा कि महाराज ! दया मया हैं न ? स्वामीजी दुःखित तो थे ही अतः कुछ बोले नहीं। तब आगन्तुक ने फिर कहा, क्यों महाराज ! कृपा तो है न ? तब स्वामीजी झल्लाकर बोले कि उस दुष्ट कृपले ने ही तो सारा खेल खराब कर दिया, वही उन दोनों को ले भागा।

● भरग्या अर डूबग्या

एक जाट और मियाँ पड़ोसी थे। एक दिन बहुत तड़के दोनों साथ-साथ हल जोतने घर से चले। अंधेरा तो था ही जाट का पैर राह में पड़े गोबर पर पड़ा और उसका पैर गोबर में लिपट गया। तब जाट ने कहा कि अरे हम तो भर गय। फिर दोनों आगे बढ़ गय। उस साल जाट के बहुत अन्न हुआ और मियाँ के बहुत थोड़ा। बात-चीत के सिलसिले में मियाँ ने ज़ाट का पैर गोबर में 'भर' जाने की बात बीबी से कही। तब बीबी न सोचा कि ज़ाट को अच्छे शकुन हुए थ इसलिए उसका घर अन्न से भर गया। दूसरी बार जब दोनों घर से निकले तो उसके पहले ही बीबी ने बहुत सारा गोबर अपने घर के आगे डाल दिया। मियाँ का पैर गोबर पर रपटा तो बोला, या खुदा डूब गये। तब जाट ने कहा कि 'इस बार तुम्हारे मुँह से 'डूब गये' निकला है तो वास्तव में तुम अपने को 'डूब गये' ही समझो।

● काकोजी अंटी में है

एक आदमी एक बनिये की दुकान पर एक रुपये का बाजरा लेने के लिए गया। दुकान पर बनिये का लड़का था। उसने सोचा कि यह आदमी बाजरा तुलवाकर रुपया उधार लिखवायेगा।

उसने उसे टालने की नीयत से कहा कि दुकान पर 'काकोजी' नहीं हैं, वे आयें तब आना। तब उसने अंटी से रुपया निकालकर लड़के को दिखलाया और कहा कि यह रहे काकोजी, ला बाजरा दे।

● एक जोर अर दो ज़ोर

एक आदमी ने एक बनिये की दुकान से एक रुपये का बाजरा उधार लेना चाहा। तब बनिये ने कहा कि ऐसा नहीं होगा, क्योंकि इस वक्त तो जोर (बल) में अपने दोनों बराबर हैं। इधर मैं और मेरा बाजरा तथा उधर तुम और तुम्हारा रुपया। मैं बाजरा दे दूँ तो मेरे पास सिर्फ एक जोर रह जायेगा और तुम्हारे पास तीन जोर अर्थात् तुम, रुपया और बाजरा होंगे। फिर मैं तुम्हें नहीं जीत सकूँगा। अतः बाजरा लेना हो तो रुपया दो, और बाजरा लो।

● कुण सो घणों चत्तर है ?

चार दोस्तों में विवाद हो गया कि उनमें कौन अधिक चतुर है। इसका फ़ैसला करवाने के लिए चारों नवाब के पास चले। रास्ते में उन्हें एक पद-चिन्ह दिखलाई दिया तो एक ने कहा कि यह स्त्री के पैर का चिन्ह है, थोड़ी दूर जाने पर दूसरा बोला कि यह स्त्री अवश्य घर वालों से लड़-झगड़ कर आई है। तब तीसरा बोला कि यह स्त्री गर्भवती है और चौथा बोला कि यह स्त्री मुरीद जाति की है। फिर चारों आगे बढ़े तो उन्हें एक जानवर का पद-चिन्ह दिखलाई पड़ा। एक ने कहा कि यह पद-चिन्ह ऊँट का है, दूसरे ने कहा कि इस पर काफी बोझ लदा होना चाहिए, तीसरे ने कहा कि अवश्य ही इस पर गुड़ लदा होगा, तब चौथा बोला कि यह ऊँट बाईं आँख से काना होना चाहिए। इस प्रकार वे बातें करते चले जा रहे थे तो दो आदमी उनके पास पीछे से दौड़े-दौड़े आये और उनमें से एक ने पूछा कि क्या कोई स्त्री इधर से गुज़री है ? तब उन्होंने कहा कि स्त्री को तो नहीं देखा, उसका पद-चिन्ह अवश्य देखा

है। फिर उन्होंने पूछा कि क्या वह स्त्री घर से लड़कर आई थी? क्या वह गर्भवती है और क्या वह मुरीद जाति की है? उनकी बातें सुनकर आगन्तुक को पूरा विश्वास हो गया कि इन लोगों ने मेरी स्त्री को अवश्य छिपा रक्खा है। अतः वह भी उनके साथ हो लिया। तब एक दूसरे आदमी ने अपने ऊँट के विषय में पूछा और उन चारों के द्वारा उपरोक्त जानकारी देने पर उसे भी विश्वास हो गया कि इन्हीं लोगों ने ऊँट को भी छिपा लिया है। अब छहों आदमी नवाब के पास चले। दोनों आदमियों ने नवाब से स्त्री और ऊँट दिलवाने की प्रार्थना की। तब उन चारों ने कहा कि सरकार! हमने न स्त्री को ही देखा है और न ऊँट को ही। हम चारों आदमी आपके पास इस बात का फ़ैसला करवाने के लिए आ रहे थे कि हम चारों में कौन अधिक चतुर है। रास्ते में हमने एक पद-चिन्ह देखा तो एक ने कहा कि यह स्त्री के पैर का निशान है। दूसरे ने कहा कि यह स्त्री घर वालों से लड़कर आई है, क्योंकि उन पद-चिन्हों को देखने से मालूम होता था कि थोड़े-थोड़े कदम चलकर स्त्री मुड़-मुड़कर पीछे की ओर देखती रही है कि पीछे से कोई आ तो नहीं रहा है। आगे उस स्त्री के टीले पर बैठने के निशान थे और जब वह वहाँ से उठी तो दोनों हथेलियाँ जमीन पर रखकर उठी है। इससे हमने अनुमान लगाया कि वह अवश्य ही गर्भवती है। जहाँ वह बैठी थी वहीं एक नीले रंग का धागा भी मुँह से थूका हुआ पड़ा था और इसी कारण हमने सोचा कि वह मुरीद जाति की स्त्री है। फिर उन्होंने ऊँट के बारे में बतलाया कि ऊँट के पैर के निशान बालू में काफी धँसे हुए से थे इसलिए हमने सोचा कि ऊँट पर काफी वज़न लदा हुआ है। ऊँट के पद चिन्हों के पास कहीं-कहीं गुड़ के छोटे-छोटे टुकड़े पड़ गये थे जिन पर चींटियाँ लगी हुई थीं इसलिए हमने सोचा कि ऊँट पर गुड़ लदा हुआ होगा। रास्ते के दाहिने हाथ की तरफ के वृक्ष ऊँट के द्वारा चरे हुए थे लेकिन बाईं ओर के वृक्षों को उसने मुँह भी नहीं लगाया था, बस इसी बात से हमने यह अन्दाज़ लगा लिया कि ऊँट एक आँख से काना

है। नवाब ने उन सबको दूसरे दिन हाज़िर होने के लिए कहा। दूसरे दिन दरबार लगा तो नवाब ने एक बन्द मुँह का बरतन उन चारों को दिखलाया और उनसे पूछा कि बतलाओ इसमें क्या है? तब उन चारों में से एक ने कहा कि गोल है, दूसरे ने कहा लाल है, तीसरे ने कहा दानेदार है और चौथे ने कहा कि अनार है। बरतन को खोला गया तो उसमें से अनार ही निकला तब नवाब ने उन दोनों आदमियों से कहा कि तुम जाकर अपनी खोई चीजों को अन्यत्र तलाश करो, इनके पास नहीं हैं। फिर नवाब ने उन चारों को अपने यहाँ भोजन करने के लिए कहा। शाम को चारों भोजन करने बैठे तो एक ने कहा कि यह तो कुत्ते का मांस है, दूसरा बोला कि वह भी मरे हुए कुत्ते का, तीसरा बोला कि ये चावल भी श्मशान भूमि में पैदा हुए हैं तब चौथा बोला कि नवाब भी कुत्ते का मूत है। नवाब उनकी बातों को सुनकर बड़ा हैरान हुआ। जाँच करवाने पर तीनों की बातें सत्य निकलीं तो चौथे की बात की सत्यता मालूम करने के लिए वह अपनी माँ की छाती पर कटार निकालकर बैठ गया और उससे सारी बात सच-सच बतलाने को कहा तो उसकी माँ ने कहा कि जब मैं ऋतुमयी थी तब लेटी हुई थी और एक कुत्ता मेरे पेट पर पेशाब कर गया था। तब नवाब ने उन चारों के पास आकर कहा कि तुम मेरे जन्म से पहले की बात बतला रहे हो अतः मेरे से तुम्हारा फैसला नहीं होने का।

● धन बिना कदर कोनी

मियाँ नूरमुहम्मद के पास पहले बहुत धन था लेकिन धीरे-धीरे वह गरीब हो गया। अब उसकी बीवी भी बात-बात पर उसका निरादर कर दिया करती थी। एक दिन उसकी बीबी ने कहा कि अरे, बैठा क्या करता है जाकर भैंस को जंगल में चरा ला। इस बात से वह बहुत दुःखित हुआ और कहने लगा—

कभी क कहती नूर महम्मद, कभी क कहती हे नूरा।
अब तो रंडी यूं उठ बोली, भैंस चराल्या बे नूरा॥

अर्थात् जब मेरे पास धन था तब तो मेरी स्त्री मुझे नूर मुहम्मद आदि सन्मान सूचक संबोधन से पुकारती थी लेकिन आज जब कि मैं गरीब हो गया हूँ तो यह रंडी मुझे बे नूरा कहकर सम्बोधित करती है।

● भान ससुरो—भान ज़ंवाई

'भान' नाम के एक आदमी ने अपनी लड़की की शादी जिस लड़के से की संयोग से उसका भी नाम 'भान' ही था। तब किसी मसख़रे ने कहा—

भान ई सुसरो, भान जंवाई।
भान की बेटी, भान नैं ब्याई॥

अर्थात् भान ही श्वसुर है और भान ही दामाद है, भान ने अपनी बेटी का विवाह भान (स्वयं) से ही कर लिया है।

● बकरी की चतराई

एक बकरी ने किसी तरह एक जंगल में अपना राज्य जमा लिया और वह उस जंगल की रानी बनकर रहने लगी। अपने रहने के लिए उसने एक बहुत ऊँची काँटों की बाड़ बना ली। एक दिन उसके पास दो गीदड़ आये और उन्होंने बकरी से कहा कि मौसी! हमें थोड़ी धरती खेती करने के लिए दे दो, उपज का आधा भाग हम तुम्हें दे देंगे। गीदड़ों ने सोचा कि बकरी जब लगान वसूल करने आयेगी तब उसे चीर फाड़ डालेंगे। लेकिन उनकी यह बात किसी तरह बकरी को मालूम हो गई और वह लगान लाने के लिए नहीं गई। अगली साल दो 'जिनावर' बकरी के पास आये और उन्होंने खेती के लिए जमीन माँगी। बकरी ने उन्हें जमीन तो दे दी लेकिन उसने सोचा कि ऐसे क्यों कर निभेगा? अतः वह एक कुतिया के दो बच्चों को उठा लाई और उन्हें अपना दूध पिला-पिलाकर खूब होशियार बना लिया; जब लगान देने की बारी आई तो 'जिनावरों' ने बकरी को कहला भेजा कि आकर अपना लगान ले जाओ। लेकिन उनकी योजना यही थी कि बकरी के आते ही उसका काम तमाम कर

देंगे। बकरी भी दोनों कुत्तों को साथ लेकर बड़ी शान से लगान वसूल करने के लिए चली। गीदड़ों और 'जिनावरों' ने बकरी के साथ दो बड़े बड़े कुत्तों को आते देखा तो वे जान बचाकर भागे और सारा अन्न बकरी ने अपने कब्जे में कर लिया।

● दसखत डागलै सूकै है

एक सेठ का लड़का कुछ पढ़ा लिखा न था। गोबर के उपले पाथ कर छत पर सुखा दिया करता था, बस, वह इतना ही जानता था। सेठ का बड़ा नाम सुनकर कोई लड़की वाला उसकी सगाई करने के लिए आया तो उसने पूछा कि कंवरजी कितने पढ़े हुए हैं तो घर वालों ने कहा, "कंवरजी का दसखत तो डागलै सूकै है।" लेकिन आगन्तुक छत पर देखने के लिये गया तब (पहले राजस्थान में काठ की पाटी पर हरूफ जमाये जाते थे। काठ की पाटी को मुलतानी मिट्टी से पोत कर सुखा लिया जाता था और तब उस पर हरूफ जमाये जाते थे) उसे असलियत मालूम हुई और वह चुप-चाप अपने घर चला गया।

● जाट की बैदंग

एक जाट अपने खेत में काम कर रहा था। थोड़ी दूर पर उसका ऊँट चर रहा था। चरते-चरते एक तूँबा ऊँट के गले में अटक गया। न वह तूँबा गले से नीचे उतरता था और न बाहर ही निकलता था। ऊँट की हालत बहुत खराब हो गई। जाट ने देखा कि अब ऊँट अवश्य मर जायेगा। तभी संयोग से एक आदमी उधर से निकला और उसने सारी स्थिति को समझ लिया। उसने एक पत्थर लिया और जिधर तूँबा अटका हुआ था वहाँ जोर से मारा। तूँबा फूट गया और ऊँट के पेट में चला गया। ऊँट स्वस्थ हो गया। जाट ने सोचा कि वैद्यक तो बस इतना ही है। वह खेती छोड़कर वैद्य बन गया। पास के गाँव में गया तो वहाँ एक बुढ़िया बीमार थी। उसके गले में एक बड़ी गाँठ निकली हुई थी और इस कारण उसकी हालत चिन्ताजनक बनी हुई थी। जाट ने कहा कि मैं वैद्य

हूँ और इसे अभी ठीक कर दूँगा। घरवालों ने उसे चिकित्सा करने की अनुमति दे दी। तब वह एक बड़ा-सा पत्थर उठाकर लाया और उसे बुढ़िया के गले पर दे मारा। बुढ़िया एक चीख़ के साथ वहीं ढेर हो गई। घर वाले उसकी मूर्खता पर बहुत क्रोधित हुए लेकिन अब क्या हो सकता था? सारे लोग अरथी लेकर श्मशान घाट की ओर चले। आग की हँड़िया उस जाट के गले में लटका दी गई। (राजस्थान में चिता प्रज्वलित करने के लिए आग हँडिया में डलाकर ले जाने की प्रथा है) आग की गरमी से उसकी छाती पर दाग़ पड़ गए। वह किसी तरह वहाँ से पिंड छुड़ाकर दूसरे गाँव में गया तो वहाँ भी एक आदमी बीमार था। वैद्य ने कहा कि इसका इलाज तो मैं अभी कर दूँगा लेकिन आग की हँड़िया मैं कदापि गले में नहीं डालूँगा।

● बे रुत की चीज

एक जाट का लड़का अपनी ससुराल गया। यद्यपि जेठ का महीना था तथापि ससुराल वालों पर रोब जमाने की नीयत से वह गरम कोट पहनकर गया और साथ में एक कीमती कम्बल भी ले गया। ससुराल वाले उसका तात्पर्य समझ गये और उन्होंने एक बड़े अँगीठे में बहुत सारे दहकते हुए कोयले लाकर उसके आगे रख दिये। जब उसने पूछा कि यह क्या करते हो तो ससुराल वालों ने कहा कि कंवर जी! आपको जाड़ा बहुत लगता है इसलिए आग तापने के लिए यह अँगीठा आपके सामने रक्खा गया है। तब उसे अपनी भूल मालूम हुई और वह लज्जित हो गया।

● हर कठै, मन कठै

एक मौलवी नमाज़ पढ़ने के लिये अपनी चादर बिछाकर उस पर खड़े थे। शाम हो चली थी। उसी वक्त एक कामातुर युवती जो कि अपने उपपति के पास जा रही थी, उधर से गुजरी। उसने मौलवी की चादर को नहीं देखा और उस पर पैर रखती हुई चली गई। इससे

मौलवी को बड़ा क्रोध आया और उसने सोचा कि लौटते वक्त उस दुष्टा की खबर लूँगा। गुस्से के मारे उसने नमाज भी नहीं पढ़ी। बहुत देर बाद जब वह लौटी तो मौलवी उस पर बरस पड़ा और उसे पीटने के लिये उतारू हो गया, तब उस युवती ने कहा—

नर राँची जान्यो नहीं, तैं कस लख्यो सुजान।
पढ़ि कुरान बौरो भयो, नहिं राँच्यो रहमान॥

(हे सुजान, मैं तो मनुष्य में अनुरक्त थी इसलिए मेरा ध्यान तुम्हारी चादर की तरफ नहीं गया, लेकिन तुम तो खुदा से लौ लगाए थे फिर भला तुमने कैसे जाना कि मेरा पैर चादर पर पड़ गया है। तुम तो बस कुरान पढ़कर घमंड में भूल हुए हो, वास्तव में तुम्हारा मन ईश्वर में लगा नहीं।)

दोहा सुनकर मौलवी के ज्ञाननेत्र खुल गये, उसने स्त्री से क्षमा माँगी और फिर सच्चे मन से खुदा की इबादत करने लगा।

● कदरदान ई कदर करै

एक बार एक चित्रकार एक चित्र बनाकर राजा के पास ले गया। राजा ने उसे पचास रुपये दिये। तब चित्रकार ने पूछा कि महाराज, आपने चित्र की कीमत दी है या मुझे गरीब जानकर रुपये दे दिये हैं। तब राजा ने कहा कि चित्र में क्या धरा है? हमने तो तुमको गरीब जानकर ही रुपये दिये हैं। तब चित्रकार अपना चित्र लेकर वहाँ से चला आया। रास्ते में उसे एक गरीब सा आदमी मिला। उसने चित्र देखा तो वाह-वाह कर उठा। उसने कहा कि इस चित्र की कीमत दस हजार रुपये भी कम है। तब चित्रकार ने पूछा कि भला ऐसी इसमें क्या बात है? तब वह बोला कि चित्र में एक गूजरी सिर पर पानी का घड़ा लिये चली जा रही है, उसके पैर में काँटा लग गया है सो उसके दर्द से उसके नाक में बल पड़ गया है। वह दाँतों से ओंठों को दबाये सीत्कार करती सी चली जा रही है। पीड़ा के कारण इसके रोम-रोम में बल पड़ा हुआ है।

बस इसी बात पर मैं रीझ गया हूँ। चित्रकार उसकी कद्रदानी पर बहुत खुश हुआ। उस आदमी के पास सिर्फ एक रुपया ही था, वही चित्रकार ने चित्र की कीमत स्वरूप ले लिया और सन्तुष्ट होकर चला गया।

● भायलाजी, म्हानैं भी खिलाओ

एक जगह बहुत से चूहे खेल रहे थे। वहाँ एक चूहा और आया, उसने कहा कि 'भायलाजी, भायलाजी, मन्नै ई खिलाओ'। (मित्रो मुझे भी अपने साथ खेलने दो) तब अन्य चूहों ने कहा कि तुम्हारी पूँछ बहुत लम्बी है, पहले इसे कटवाकर आओ तब खिलायेंगे। चूहा खाती के पास अपनी पूँछ कटवा कर आया और फिर उन चूहों से अपने साथ खिलाने की प्रार्थना की। चूहों ने कहा कि तुम्हारी पूँछ से तो खून टपक रहा है, अतः अपनी पूँछ फिर से जुड़वाकर आओ तब खिलायेंगे। चूहा फिर खाती के पास गया और उसने खाती से कहा कि या तो मेरी पूँछ जोड़ दो अन्यथा मैं तुम्हारी करौती उठा ले जाऊँगा। खाती ने कहा कि पूँछ नहीं जुड़ सकती, तब चूहा उसकी करौती ले भागा। आगे गया तो चूहे ने देखा कि एक स्त्री हाथों से घास काट रही है। उसने कहा कि हाथों से क्यों घास काटती है, यह मेरी करौती ले ले। वह करौती से घास काटने लगी तो करौती टूट गई और तब चूहा करौती के बदले उसकी हँडिया ले भागा। चूहा आगे गया तो उसने देखा कि एक स्त्री जूते में दूध दुह रही है। चूहे ने अपनी हँडिया उसे दूध दुहने के लिये दे दी। लेकिन भैंस ने एक लात फटकारी और हँडिया फूट गई। तब चूहे ने कहा कि या तो मेरी हँडिया दे नहीं तो तेरी भैंस ले जाऊँगा। स्त्री के पास हँडिया थी नहीं, इसलिए चूहा भैंस को ले भागा। चूहा भैंस को लेकर आगे चला तो उसने देखा कि एक दूल्हा अपनी बहू को पैदल लिए जा रहा है। चूहे ने दूल्हे से कहा कि अपनी लाडी (बहू) को पाडी (भैंस) पर चढ़ा ले। बहू भैंस पर चढ़ गई। आगे नदी आई। भैंस नदी में बह गई और चूहा पाडी के बदले लाडी

लेकर घर आया। घर आकर उसने अपनी माँ को पुकारा, माँ जल्दी किवाड़ खोल, मैं बहू लाया हूँ।

● जै होता मैं घड़ा घड़ूला

एक गड़रिया जंगल में बकरियाँ चराया करता था। गड़रिये की स्त्री वहीं कुएँ पर पानी भरने आया करती। गड़रिये की स्त्री तो अपने पति को जानती थी, लेकिन गड़रिया उसे नहीं पहचानता था। जब वह पानी भरने आती तो वह भी अपनी बकरियों को पानी पिलाने वहीं आ जाता और उसकी तरफ़ देखकर यह दोहा बोला करता—

•आम का जोबन आम निमोली नीम का जोबन सूवा'।
मरद का जोबन पान फूल, पणिहार का जोबन कूवा ॥

आम का यौवन तभी सार्थक है जब उसमें आम लगें। नीम का यौवन तभी है जब उसमें निमोलियां लगें और सुग्गे वृक्ष पर आ आ कर बैठें। मरद अपने यौवन को तरह तरह के पान फूलों से सजाता है लेकिन पनहारी का यौवन तो कुआँ ही है।

एक रात गड़रिया जंगल में ही अपनी कम्बल ओढ़े सोया था, तब वह स्त्री उसके पास गई और उसकी कम्बल के एक कोने को पकड़ कर उसे उघाड़ना चाहा तो गड़रिये ने सोचा कि कोई बकरी होगी, अतः वह बोला, 'चै भूरती' और उसने कम्बल को कसकर दबा लिया। फिर उसने दूसरी तरफ़ से कम्बल उतारना चाहा तो फिर गड़रिये ने, 'चै कालती' कहकर कम्बल कसकर लपेट लिया। इस प्रकार करते-करते सबेरा होने को आया तो गड़रिये की स्त्री चली गई। दूसरे दिन जब दोनों कुएँ पर मिले तो गड़रिये ने अपना वही दोहा कहा—

आम का जोबन आम निमोली नीम का जोबन सूवा।
मरद का जोबन पान फूल, पणिहार का जोबन कूवा ॥

तब उस औरत ने कहा—

अर्थ–अरे जंगल में बसने वाल हिजड़े रसिक तुम ने चोरी करना नहीं जाना। रात भर गोरी तुम्हारे इर्द गिर्द घूमती रही और तुमने चै चैं करके रात बिता दी।

चोदू रसिया जंगल बसिया, न कर जाणी चोरी।
चै चै करताँ रात बिताई, रात्यूं घूमी गोरी॥

इस दोहे को सुनकर गड़रिये को अपनी भूल मालूम हुई और तब अपनी झेंप मिटाने के लिये उसने कहा––

"कूवा रै तूं चक्कम चक्की, बैल जुवैगा धोरी।
जै कूवै का लक्कड़ होता, तो लिपटती गोरी॥"
जै होता मैं घड़ा घड़ूला, गोडै चढ़, छतियाँ पर चढ़ता
सिर पर चढ़ता खड़्या खड़्या।

अर्थ––अरे कुएं, मजबूत बैल तुम्हारे जुतेंगे लेकिन यदि लकड़े की जगह मैं तुम्हारे ऊपर लगा होता तो गोरी मेरे से लिपटती। और यदि मैं घड़ा होता तो घुटनों, और वक्ष का स्पर्श करता हुआ गोरी के सिर पर चढ़ता।

तब औरत ने कहा––

जै तूं होता घड़ा घड़्ला, गोडै चढ़, छतियाँ पर चढ़ता
सिर पर चढ़ता खड़्या खड़्या।
पकड़ कान चूल्है पर धरती,
जद तूं बलता पड़्या पड़्या।

यदि तू घड़ा होता तो घुटनों और वक्ष का स्पर्श करता हुआ सिर पर चढ़ता। लेकिन जब मैं कान पकड़ कर चूल्हे पर चढ़ाती तब तू चूल्हे पर पड़ा पड़ा जलता भी तो।

तब गड़रिये ने फिर कहा––

पकड़ कान चूल्है पर धरती,
जद मैं बलता पड़्या पड़्या।
पण जद तूं न्हावण नैं जमती
यार देखता अड़्या अड़्या।

यह सही है कि मैं चूल्हे पर पड़ा जलता लेकिन जब तू कपड़े उतार कर स्नान करने बैठती तब तेरे सौन्दर्य को देखने का आनन्द भी तो मैं ही उठाता।

यह सुनकर गडरिये की औरत लज्जित होकर घर चली गई।

● दुनिया टिकण दे कोंनी

एक साधु रास्ते से कुछ हटकर सोया हुआ था। अपने सिरहाने के लिए उसने बालू का एक तकिया-सा बना लिया था। पानी भरने के लिये उधर से कुछ पनिहारिनें गुजरीं तो उनमें से किसी ने कहा कि यह साधु हो गया, लेकिन फिर भी ऐश करना चाहता है। साधु ने यह बात सुनी तो मिट्टी को समतल कर दिया और पड़ रहा। पनिहारिनें लौटीं तो फिर उनमें से एक ने कहा कि साधु हो गया लेकिन गुस्सा नहीं गया, कितना तुनक मिजाजी है? तब बेचारा साधु वहाँ से उठकर किसी निर्जन स्थान में चला गया।

● राजा सांसण नैं ब्याही

एक राजा एक साँसी जाति की स्त्री पर मोहित हो गया और उसे अपनी रानी बनाकर अपने नगर में ले आया। राजा की आज्ञा से उसके लिये विविध प्रकार के भोज्य पदार्थ बनाये जाते थे लेकिन वह सब सुखों के होते हुए भी सूख-सूख कर काँटा बनती जा रही थी। राजा के पूछने पर एक दिन उसने कहा कि मेरे लिये एक अलग महल बनवा दीजिए। राजा ने महल बनवा दिया तो वह अकेली ही उसमें रहने लगी। दासियाँ भोजन के थाल महल में रख जातीं लेकिन उन्हें वहाँ ठहरने की

आज्ञा नहीं थी। थोड़े ही दिनों में रानी खूब हृष्ट-पुष्ट हो गई। इसका कारण यह था कि उसे घर-घर माँगने की आदत थी और रानी बनने के बाद उसका वह काम छूट गया था और फलतः वह दुबली होने लगी थी। यहाँ एकान्त में उसे अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर मिल गया। वह खाने की चीजों को महल के आलों में रख देती थी और फिर एक आले के पास जाकर कहती, 'माई' तेरा बचिया जीवे, एक ठंडी बासी रोटी का टुकड़ा दिला।' फिर उस आले से रोटी लेकर खा लेती थी। तब दूसरे आले के पास जाकर उसी क्रिया को दुहराती। एक दिन राजा के कहने से एक दासी ने छुपकर सारी लीला देख ली तब सारा रहस्य प्रकट हो गया।

● ख़ुदा की ख़ुदाई

एक दिन एक मियाँ नमाज़ पढ़कर कह रहा था कि या ख़ुदा तेरी ख़ुदाई को कोई नहीं जानता। वहीं एक जाट खड़ा था। उसने कहा कि ख़ुदा की ख़ुदाई को मैं जानता हूँ। मियें ने कहा कि तू निरा बेवकूफ़ है, बड़े-बड़े पैग़म्बर भी उसकी ख़ुदाई को नहीं जानते तू देहाती जट्ट भला क्या जाने? लेकिन जाट ने कहा कि शर्त बद ले। यदि तू हार गया तो तेरे घर का सारा सामान मैं ले लूँगा अन्यथा मेरे घर का सारा सामान तुम ले लेना। दोनों में शर्त लग गई। तब दोनों दिल्ली के बादशाह के पास फ़ैसला करवाने के लिये गये। जाट ने कहा कि बादशाह सलामत यमुना किनारे चलिए, मैं वहीं आपको ख़ुदा की ख़ुदाई दिखलाऊँगा। जब वे तीनों यमुना किनारे पहुँचे तब जाट ने नदी की ओर हाथ करके कहा कि यह ख़ुदा की ख़ुदाई है या मियाँ के बाप की। जाट की चतुराई देख कर दोनों हैरान हो गए। बादशाह ने जाट के हक में फ़ैसला दिया और जाट को मियाँ के घर का सारा सामान मिल गया।

मियों कुमाण नैं गयो

एक दिन एक बीबी ने अपने मियाँ से कहा कि तुम कुछ कमा कजाकर नहीं लाते तो मैं तुम्हें हमेशा कहाँ से रोटी खिलाती रहूँ। मियाँ ने कहा कि आज मुझे चार लड्डू बना दो, मैं कमाने के लिए जाऊँगा। बीबी ने लड्डू बना दिये और मियाँ उन्हें अपने अँगोछे में बाँध-कर कमाने के लिए चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर मेह बरसने लगा तो वहीं एक हवेली के बाहर गोखे पर बैठ गया। भूख लगी तो चारों लड्डू खा लिए और फिर चिलम पीने लगा। पास ही उसे एक गधा कोने में दुबका हुआ दिखलाई पड़ा तो मियाँ ने सोचा कि खुदा ने सवारी भेजी है। अपना भीगा हुआ सूथन जो कि बीबी से माँग लाया था गधे की गर्दन पर सूखने के लिए डाल दिया और स्वयं उसकी पीठ पर चढ़ बैठा। मियाँ थोड़ी ही दूर गया था कि एक पानी का नाला आया। गधे ने मियाँ को नाले में पटक दिया और भाग गया। मियाँजी का सूथन गधे के गले में ही लटका चला गया और स्वयं मियाँजी कीचड़ में लथपथ हो गए। उनके जूते भी वहीं रह गए। तब मियाँजी 'लाहौल' कहते हुए घर की ओर चले। घर जाकर बड़े जोर से बीबी को पुकारा तो बीबी ने समझा कि मियाँ को कोई खज़ाना हाथ लग गया है सो इतनी जल्दी वापिस आ गया है। इसलिए बोली कि 'आये की जाऊं बल, (बलिहारी')। तब मियाँ ने कहा कि 'सूथन गया गधे के गल'। सूथन की बात सुनकर बीबी को बड़ा गुस्सा आया और वह बोली 'मर निपूता' तब मियाँ ने बाहर से ही कहा 'वहीं गए दोनूं जूता'। तब बीबी ने फिर पूछा, 'यह क्या कहाणी?' तब मियाँ ने कहा, 'धोऊं डाढ़ी, ल्या पाणी।'

● च्यारूं ई एक सी

एक ब्राह्मण के चार लड़कियाँ थीं। वे चारों ही तुतला कर बोलती थीं। इसलिए कहीं उनकी सगाई नहीं होती थी। एक दिन ब्राह्मण

ने लड़कियों से कहा कि मैं तुम्हारी सगाई करने के लिए बाहर जा रहा हूँ। मेरे पीछे से कोई मेहमान आये तो उसे खाना खिला देना लेकिन बोलना नहीं। ब्राह्मण गया तो पीछे से दो आदमी अपने लड़कों की सगाई करने के लिए उस ब्राह्मण के घर आये। ब्राह्मण घर में था नहीं। लड़कियों ने दाल भात बनाकर उन्हें भोजन करने के लिए बिठला दिया। जब वे खाना खाने लगे तो बड़ी लड़की ने पूछा, "क्यूं, दाल तोखीं होई हैनीं?" तब दूसरी ने कहा, "तोखी क्यूं कोनी होती?" तब तीसरी ने कहा, "बाई, बापूजी बरजग्या हा नी क थे बोयो मतना।" तब चौथी ने कहा, "बाई देखले मैं तो कोनी बोई हूँ।" आने वालों ने जान लिया कि चारों ही तोतली हैं और उन्होंने खाना खाकर अपना रास्ता लिया।

(पहली न पूछा, 'क्यों दाल अच्छी बनी है न ?' इस पर दूसरी ने कहा, 'अच्छी क्यों न बनती ?' तीसरी बोली, 'बापू मना कर गये थे न कि बोलना मत।' इस पर चौथी ने कहा 'देख लो मैं तो नहीं बोली हूँ।')

● सी--चरी

एक ठाकुर ने एक चारण को एक बकरी दी। चारण बकरी लेकर किसी दूसरे ठाकुर के यहाँ कुछ और पाने की आशा से गया। लेकिन वह ठाकुर बहुत कृपण था। उसने सोचा कि इस चारण की बकरी चुरानी चाहिए, इसलिए उससे बोला कि बारहट जी, बकरी उधर बाँध दीजिए। चारण ठाकुर की चाल को समझ गया था इसलिए उसने कहा कि ठाकराँ, मैं तो बकरी को रात-दिन अपने पास ही रखता हूँ। शाम हुई तो ठाकुर ने चारण को सोने के लिए एक कमरा बतला दिया। माघ का महीना था और कमरा बहुत ठंडा था। ठाकुर ने उसे ओढ़ने बिछाने के लिये कुछ दिया नहीं था। कमरे के बाहर दरवाजे में उसने इस नीयत से कुंडा लगवा दिया कि रात को जाड़े के मारे बारहट मर जायेगा तो बकरी अपने रह जाएगी। बारहट के पास ओढ़ने के लिये सिर्फ एक साधारण सी चादर थी। जब वह जाड़े के मारे ठिठुरने लगा तो उसने कोने में पड़ी

हुई चक्की के पाट को सिर पर रख लिया और कमरे में चक्कर काटने लगा। रात भर वह इसी प्रकार चक्कर लगाता रहा जिससे जाड़ा भाग गया और उसके शरीर से पसीना चूने लगा। सबेरा होने को हुअ तो बारहट अपनी चादर तानकर सो गया। सबेरे ठाकुर ने किवाड़ खोले और बारहट को ठाठ से सोया देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। ठाकुर ने झूठी समवेदना प्रकट करते हुये कहा कि हम तो रात आपको कंबल देना भूल गये। इस पर चारण ने कहा कि कम्बल की आवश्यकता ही क्या थी? यह बकरी बड़ी करामाती है, रात भर यह मेरे जाड़े को चरती रही और मैं आनन्द पूर्वक सोया रहा। तब ठाकुर ने कहा कि यह बकरी हमें दे दीजिये और इसकी जो कीमत आप लेना चाहें हमसे ले लीजिये। बारहठ ने पहले तो बहुत ना-नुकर किया लेकिन फिर ठाकुर को दो सौ रुपये लेकर बकरी दे दी। बारहठ रुपये लेकर चलता बना। शाम को ठाकुर ने बकरी को अपने पास बाँध लिया और कम्बल रजाई सब अलग रखवा दिए। लेकिन ठाकुर सोया तो थोड़ी ही देर में उसे ठंड बहुत सताने लगी। तब उसने रजाई और कम्बल मंगवाकर ओढ़े, लेकिन चारण की चालाकी पर उसे बड़ा क्रोध आया। सबेरा होते ही वह घोड़ी पर चढ़कर चारण की खोज में चल पड़ा। चारण पास के ही किसी गाँव में रात भर ठहर गया था, सबेरा होते ही वह भी वहाँ से चल पड़ा। उसे आशंका थी कि ठाकुर जरूर आयेगा अतः जल्दी-जल्दी चला जा रहा था, लेकिन ठाकुर जल्दी ही चारण के नज़दीक आ पहुँचा। उसने दूर से ही बारहठ को आवाज़ दी। बारहठ को और तो कोई उपाय नहीं सूझा, नजदीक ही झाड़ी में एक रीछ छुपा हुआ था सो उसके ऊपर जा बैठा और लगा उसे दौड़ाने। इस भागा-दौड़ी में उसकी न्यौली फट गई और उससे निकल-निकलकर रुपये जमीन पर गिरने लगे। इतने में ठाकुर ने बारहठ को आ पकड़ा और बिगड़कर बोला कि तूने मेरे साथ धोखा किया है। तब बारहठ ने कहा कि ठाकुर साहब मैंने तो आपके बहुत कहने से बकरी आपको दे दी अन्यथा मैं किसी हालत में बकरी आपको नहीं देता। आपने सोते वक्त

बकरी को धूप खेया था या नहीं, यदि नहीं तो बकरी ने भी अपना काम नहीं किया होगा। ठाकुर ने सोचा कि भूल हमारी ही है अतः वह नम्र हो गया। फिर उसने रीछ के बालों से रुपये गिरते देखे तो पूछा कि बारहठजी ! यह क्या तमाशा है ? तब बारहठ ने कहा कि ठाकुर साहब, मैं इस रीछ के दस हजार रुपये माँगता हूँ और यह हर साल मुझे एक हजार रुपये देता है। रुपये लेने के लिए ही तो मैं यहाँ आया था। तब ठाकुर ने कहा यह रीछ मुझे दे दो और बदले में घोड़ी ले लो। बारहठ ने बहुत आनाकानी की लेकिन ठाकुर के बहुत कहने-सुनने पर उसने घोड़ी ले ली और ठाकुर को रीछ पर बैठा दिया। बारहठ ने धरती पर गिरे हुए रुपये उठाये और घोड़ी पर चढ़कर नौ दो ग्यारह हो गया। इधर रीछ ठाकुर से लिपट गया और उसके सारे कपड़े फाड़ डाले। बड़ी मुश्किल से ठाकुर उससे पीछा छुड़ाकर अपने घर आया।

● बलगड़ को जेवड़ो, खीसी को मूसल

एक जाट और ठाकुर मित्र थे। जाट के पास काफ़ी पैसे थे, लेकिन ठाकुर बिलकुल भूखा था। ठाकुर के गाँव से जाट का गाँव कोई दो कोस की दूरी पर था। ठाकुर प्रायः एक दो दिन से जाट के घर चला जाता और वहीं दो जून खाना खा लिया करता। जाटनी को यह बात बड़ी बुरी लगती, लेकिन जाट उसकी एक न सुनता। एक दिन जाटनी ने जाट से कहा कि ठाकुर तो हमेशा ही तुम्हारे घर आता है, एक दिन तो तुम भी उसके घर जाओ। बहुत कहने-सुनने पर जाट ठाकुर के घर गया। जाट को आया देखकर ठाकुर बहुत संकोच में पड़ गया कि इसे क्या खिलायेंग ? और यदि नहीं खिलायेंग तो हमेशा के लिय इसके घर जाना बन्द हो जायगा। फिर ठाकुर ने शिष्टाचार दिखलाते हुए जाट का स्वागत किया और उसे हुक्का भरकर दे दिया। जाट हुक्का पीने लगा, तब ठाकुर ने कहा कि मैं एक जरूरी काम से बाहर जा रहा हूँ, थोड़ी देर

में आ जाऊँगा। घर से बाहर निकलकर ठाकुर दो चार दुकानदारों के पास गया और उनसे कहा कि मुझे रसोई का थोड़ा सामान दे दो, पैसे फिर दे दूँगा अन्यथा मेरी रोटी सदैव के लिये बन्द हो जायेगी। तब उन लोगों ने कहा कि तुमने पहले वाले पैसे भी अभी तक नहीं दिये हैं अतः हम कोई चीज उधार नहीं देंगे। लेकिन तुम्हें एक तरकीब ऐसी बता देते हैं कि जिससे साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। उन्होंने ठाकुर से पूछा कि जाट और उसके बाप का नाम क्या है? ठाकुर ने बतलाया कि जाट का नाम हेमा है और इसके बाप का नाम खेमा था। तब उन लोगों ने कहा कि तुम चलो, और थोड़ी देर में हम लाठियाँ लेकर आ रहे हैं। हम कहेंगे कि इसके बाप ने हमारे बाप को मारा था। अतः आज इसे मारकर बदला लेंगे। तुम हमें रोकने के लिये लाठी लेकर हमारा सामना करना और जाट को पीछे से भगा देना। ठाकुर को यह सलाह पसन्द आई और वह जाट के पास आकर गप मारने लगा। थोड़ी देर में वे लोग लाठियाँ लेकर आये और उन्होंने ठाकुर से कहा कि तुम्हारे घर में हमारा शत्रु हेमला जाट छुपा हुआ है, उसे बाहर निकाल दो, इसके बाप खेमले ने हमारे बाप को मारा था, आज इसे मारकर भरपूर बदला लेंगे। तुमने कुछ गड़बड़ की तो आज तुम्हारी भी खैर नहीं है। यों कहकर उन्होंने दो चार लाठियाँ इधर-उधर पीटीं। जाट ने सोचा कि हो सकता है मेरे बाप ने इनके बाप को मारा हो। तब ठाकुर ने जाट से कहा कि मेरे जीते जी ये लोग तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकेंगे। लेकिन ये लोग सात आठ आदमी हैं और मैं अकेला हूँ इसलिये अच्छा होगा कि जब तक मैं इन्हें रोकूँ तुम पीछे बाड़ पर से भाग जाओ। जाट को यह बात जँच गई और तब ठाकुर अपनी लाठी लेकर उन्हें ललकारता हुआ फलसे के पास आ गया। उन्होंने दो चार लाठियाँ आपस में बजाईं और जाट पीछे से कूदकर अपने घर भाग गया। उसने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। जाटनी ने पूछा तो जाट ने कहा कि आज ठाकुर न होता तो वे लोग मुझे जान से मार डालते। दोस्त हो तो ऐसा हो। अब कभी आये

तो उसकी और अधिक आव-भगत करना। जाटनी ठाकुर की चाल को समझ गई, लेकिन कुछ बोली नहीं। उसने सोचा कि अब तरकीब से काम लेना चाहिये। अगली बार ठाकुर आया तो जाटनी ने उसका अधिक सत्कार किया और उसे पलंग पर बैठाकर स्वयं भी पलंग से नीचे बैठ गई। थोड़ी ही देर में जाटनी सिसक-सिसककर रोने लगी तो ठाकुर ने पूछा कि भाभी! आज क्या बात है? जाटनी ने कहा कि देवर! बात यह है कि जिस दिन तुम्हारा भाई तुम्हारे गाँव गया था, उसी दिन से न जाने उसे क्या हो गया है कि अपने परायों को भी पहचानता नहीं है। वह एक रस्सा और एक मूसल लिये दिन भर घूमता रहता है और जो भी उसके सामने आ जाता है उसे रस्से से बाँधकर मूसल से मार डालता है। ठाकुर ने यह बात सुनी तो बहाना बनाकर वहाँ से भाग निकला। जाटनी ने कहा कि तुम्हारे लिये खाना बना देती हूँ, लेकिन ठाकुर वहाँ नहीं रुका। थोड़ी देर बाद जाट आया तो जाटनी ने कहा कि आज तुम्हारा दोस्त नाराज़ होकर चला गया है, वह मुझसे "एक बलगड का जेवड़ा और खीसी का मूसल" माँगता था, लेकिन मैंने दिये नहीं। तब जाट बहुत क्रोधित हुआ और एक मजबूत रस्सा और मूसल लेकर ठाकुर को देने के लिए उस के पीछे दौड़ा। ठाकुर ने उसकी आवाज सुनी और उसे पीछा करते देखा तो और भी तेजी से भागा। इधर जाट बहुत दूर तक तो उसके पीछे दौड़ता रहा लेकिन जब ठाकुर का गाँव नज़दीक आने लगा तो यह सोचकर कि वहाँ उस दिन वाले बैरी तैयार हैं, अपने घर लौट आया।

● मूलोजी

एक बार एक सेठ ने कुछ आदमियों को बहुत से ऊँट देकर सामान भर कर लाने के लिये कामरूप देश भेजा। सेठ ने उन्हें यह बात भी समझा दी थी कि वहाँ जादू टोना करने वाले बहुत होते हैं इसलिए सावधान रहना। वे लोग चले गये और जब सामान ऊँटों पर लादकर लौट रहे थे तब विश्राम करने के लिये एक गाँव में ठहरे। वहाँ के लोग जादूगर थे। उन्होंने कता-

रियो को मंत्रित मूलियाँ लाकर दीं और वे सब बड़े चाव से मूलियाँ खाने लगे। उनमें से सिर्फ एक आदमी ने आँख बचाकर मूली फेंक दी और बाकी सब आदमियों न मूलियाँ खा लीं। मंत्रित मूलियाँ खाने से वे सब (एक को छोड़कर) मोहित हो गये। मूली खिलाने वालों ने जब देखा कि मूली अपना असर कर चुकी है तब उनमें से एक ने कहा, 'मूलोजी' तब सब कतारियों ने एक साथ कहा, 'हाँ-सा' तब उन्होंने कहा कि ऊँटों पर से सामान उतार दो। सबने सामान उतार दिया। फिर उसने कहा, 'मूलोजी' सबने कहा, 'हाँ-सा', तब आदेश मिला कि सब यहीं सो जाओ। सब सो गये, तो गाँव वालों ने देखा कि जादू इन पर पूरा असर कर चुका है। सबेरे आकर सारे सामान को बाँट लेंगे, अतः सब चले गये। आधी रात होने पर वह आदमी जिसने मूली नहीं खाई थी उठा और बोला, 'मूलोजी' सबने कहा, 'हाँ-सा, तब उसने कहा कि ऊँटों पर सामान लादो। सबने सामान लाद लिया, तब उसने फिर कहा, 'मूलोजी' सबने कहा, 'हाँ-सा', हुक्म मिला, अब जल्दी-जल्दी यहाँ से ऊँटों को लेकर चलो। सारे लोग अपने-अपने ऊँटों को लेकर चलने लगे। सबेरे गाँव वाले आये तो वहाँ कोई नहीं था। तब उन्होंने जान लिया कि अवश्य ही उन आदमियों में से किसी ने मूली नहीं खाई थी और वही उन्हें हाँक ले गया है। लेकिन् अब क्या हो सकता था, क्योंकि वे अब तक उनकी सीमा को पार कर चुके थे। वे लोग जब सेठ के यहाँ पहुँचे तो सेठ ने कहा कि सकुशल वापिस आ गये, अच्छा हुआ, अब सामान उतार दो। लेकिन किसी ने सेठ की बात पर ध्यान नहीं दिया। तब जिस आदमी ने मूली नहीं खाई थी वह बोला कि सेठजी, ये लोग ऐसे कुछ नहीं करते, देखो, मैं इन्हें समझाता हूँ। तब उसने कहा, 'मूलो-जी', सबने उत्तर दिया, 'हाँ-सा' तब उसने आदेश दिया कि ऊँटों पर से सामान उतारकर उधर रख दो। सब सामान उतारने लगे। तब उस आदमी ने सारी स्थिति सेठ को समझाई और तब सेठ ने अपने एक योग्य आदमी को कामरूप भेजा। वह वहाँ से एक जादूगर को लाया और उसने आकर सबको जादू से मुक्त किया।

● आंधो अर भैंसो

एक अन्धा आदमी रात को अपने घर से बाहर निकला। घर के दरवाजे के पास ही एक भैंसा बैठा था। अन्धा ठोकर खाकर भैंसे पर गिर पड़ा। भैंसा बिदका और अन्धे को लिये-दिये ही उठकर तड़बड़-तड़बड़ करता हुआ भाग चला। सामने से भी दो अन्धे आदमी आ रहे थे, उन्होंने भागने की आवाज सुनी तो बोले, "भाई ! बचाना, बचाना।" अन्धे सवार ने पूछा कि मैं किस चीज पर चढ़ा हुआ हूँ, यह तो मुझे बतलाओ ? तब उन्होंने कहा कि हम तो अन्धे हैं, क्या तुम भी अन्धे हो ? इतना कहते-कहते भैंसा उन दोनों से जा टकराया और सबको पटक पछाड़कर भाग गया।

● मांगै कुण था ?

एक बार गाँव में अकाल पड़ा तो मियाँ जी के घर में कुछ खाने को न रहा। उसने एक साधु को माँगते देखा तो सोचा कि इस वक्त यह धंधा ही अच्छा है। तब उसने लाठी के सिरे पर एक हँडिया बाँध ली और माँगने के लिए चल पड़ा। जब जिस घर में वह साधु जाकर कहता, 'अलख जागे' तब मियाँ लाठी के बँधी हँडिया को आगे करके कहता 'तेरी से मेरी आगे।' घर वाले उसकी हँडिया में अनाज डाल देते। और साधु यों ही रह जाता। एक दिन साधु को क्रोध आया और उसने अपने चिमटे से हँडिया को फोड़ दिया। मियाँ का उन घरों में आना-जाना तो हो ही गया था, इसलिए रोज उन घरों में चला जाता और पीठ पीछे हाथ करके खड़ा हो जाता। घर की कोई स्त्री रोटी देती तो मियाँ पीछे हाथ किये ही ले लेता। दूसरी साल वर्षा अच्छी हुई और मियाँजी के यहाँ भी खूब अन्न पैदा हुआ। तब मियाँ एक दिन मस्त बना, मलार गाता हुआ खेत से आ रहा था। सामने से एक जाटनी और उसकी लड़की आ रही थी। मियाँ को पहचानकर लड़की ने कहा कि माँ, जो अपने घर रोटी माँगने आया करता था, यह वही आदमी है। सुनकर मियाँ को तैश आ गया और बोला कि माँगता कौन था ? लोग पीछे पड़-पड़ कर घालते थे।

● गांगियासर की राय

एक बार एक मीना किसी गाँव से एक बैल चुराकर ले आया। गाँव के कुछ आदमियों ने हथियार लेकर उसका पीछा किया। चोर ने सोचा कि ये लोग बैल को तो ले ही जायेंगे साथ ही मुझे भी मार डालेंगे। डर के मारे वह थर-थर काँपने लगा। तब तक वह गांगियासर की सरहद में प्रवेश कर चुका था और उसने गांगियासर की राय माता से बड़े आर्त स्वर में प्रार्थना की—

गांगियासर की राय, करो बलद सैं गाय।

(हे गां गिया सर की राय माता, इस बैल को गाय बना दीजिए।)

राय माता ने उसकी प्रार्थना सुन ली और बैल गाय में बदल गया। पीछा करने वालों ने जब कहा कि तू हमारा बैल चुरा लाया है तब चोर ने कहा कि भाई लोगो! मेरे पास बैल है ही कहाँ? मैं तो अपनी गाय लिये जा रहा हूँ। बैल की जगह गाय को देखकर वे लोग भी निरुत्तर हो गये।

● हां अर ना

दो जाट, भाई थे। बड़ा सयाना था, छोटा भोला। एक बार बड़े भाई ने कहा कि मुझे तो आजकल खेत में बहुत काम है, तू जाकर अपनी भाभी को उसके पीहर से ले आ। छोटे ने कहा कि मैं भाभी को लेने नहीं जाऊँगा क्योंकि वहाँ स्त्रियाँ मुझ से तरह-तरह की बातें पूछेंगी, उन सबका मेरे से उत्तर नहीं दिया जा सकेगा। तब बड़े भाई ने समझाया कि तुम अधिक कुछ न कहकर सिर्फ हाँ—ना में उत्तर दे देना। बड़े भाई की सीख उसे पसन्द आई और वह अपनी भाभी को लाने के लिये चला गया। वहाँ स्त्रियों ने उससे पूछा कि क्या तुम लेने के लिये आये हो? तब उसने कहा कि हाँ। फिर उन्होंने पूछा कि वे स्वयं नहीं आये? तब उसने कह दिया कि ना। फिर उससे पूछा गया कि क्या वे बीमार हैं? तब

उसनें सोचा कि भाई बीमार तो नहीं हैं लेकिन अब हाँ कहने की बारी है, इसलिये उसने कह दिया कि हाँ। फिर स्त्रियों ने पूछा कि क्या चल-फिर नहीं सकते? तब उसने कहा, 'ना'। फिर स्त्रियों ने पूछा कि क्या वैद्यों ने बिल्कुल उत्तर दे दिया है? तब उसने कहा कि हाँ और जब उन्होंने पूछा कि क्या उनके बचने की कोई आशा नहीं है? तब उसने जवाब दिया कि ना। अन्त में स्त्रियों ने पूछा कि क्या जँवाईजी मर गये? तब उसने कह दिया कि हाँ। इतना सुनना था कि घर में रोना-धोना मच गया। जाट की स्त्री की चुड़ियाँ वगैरह तोड़कर उसे विधवा का बाना पहना दिया गया और वह मूर्ख अपना-सा मुँह लेकर अकेला ही घर चला आया। जब उसके भाई ने पूछा तो उसने उत्तर दिया कि भाभी तो विधवा हो गई है। उसके भाई को बड़ा दुःख और क्रोध हुआ कि यह मूर्ख क्या बकवास करता है? उसने कहा कि जब मैं मौजूद हूँ तब भला वह विधवा कैसे हो सकती है? तब छोटे ने कहा कि भला हो क्यों नहीं सकती, तुम्हारे मौजूद होते हुए माँ विधवा कैसे हो गई है?

● जाट और कमेड़ी

डूंगर (पहाड़) में एक कमेड़ी रहा करती थी। अपनें पति के मना करनें पर भी वह जाट के खेत में ज्वार खाने के लिए हमेशा जाया करती। जाट ने भी उसे मना किया.पर वह न मानी। तब उसने एक दिन ज्वार के बूटों पर गुड़ चिपका दिया। ज्योंही कमेड़ी उन पर आकर बैठी उसके पैर चिपक गए। तब जाट ने उसे एक जाँटी (वृक्ष विशेष) से लटका दिया। थोड़ी देर में उधर से गायों का एक झुंड गुज़रा, कमेड़ी ने गायों के झुंड के मालिक से प्रार्थना की—

"गायां का गुवालिया रै बीर, टमरक टूं।
बंधी कमेड़ी छुटाई मेरा बीर, टमरक टूं।
डूंगर में मेरा बचिया रै बीर, टमरक टूं।
आंधी आयां उड़ज्या रै बीर, टमरक टूं।

मेह आयां गल ज्यासी रे बीर, टमरक टूं।
बंधी कमेड़ी छुटाई मेरा बीर, टमरक टूं।

(हे गायों के ग्वाले, हे भाई, इस बँधी हुई कमेड़ी को छुड़ाना। पहाड़ में मेरे बच्चे हैं, आँधी आयेगी तो वे उड़ जाएंगे और वर्षा आएगी तो वे गल जाएंगे। हे भाई, तुम बँधी हुई कमेड़ी को छुड़ाना।)

तब उसने जाट से कहा कि भाई! इस कमेड़ी को छोड़ दे और इन गायों में से एक गाय जो तुझे अच्छी लगे वह ले ले। लेकिन जाट ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। फिर भैंसों का झुंड आया, बकरियों का रेवड़ आया और ऊँटों का टोला आया। कमेड़ी की प्रार्थना पर उनके मालिकों ने भैंस, बकरी और ऊँट के बदले में कमेड़ी को छोड़ देने की बात जाट से कही। पर जाट टस से मस न हुआ। उसी वृक्ष के नीचे एक चूहे का बिल था। उसने कहा कि कमेड़ी बहन, मैं तुम्हें इस दुष्ट के पंजे से छुड़वा दूँगा, तू रो मत। वह अपने बिल में गया और एक बहुत सुन्दर सोने की माला लाया। उसने जाट को माला दिखला कर कहा कि चौधरी, इस कमेड़ी को छोड़ दे तो मैं तुझे यह सोने की माला दे दूँगा। माला देखकर जाट का मन ललचा गया और उसने कमेड़ी को बन्धन-मुक्त कर दिया। जैसे ही कमेड़ी उड़ी, चूहा माला लेकर अपने बिल में घुस गया और तब जाट पछताने लगा कि इससे तो यही अच्छा था कि मैं एक गाय, भैंस या ऊँट ले लेता। जाट हाथ से निकले हुए शिकार को आकाश की ओर मुँह बाये देख रहा था कि कमेड़ी उसके मुँह में बीट करके उड़ गई।

● सोनलदे बाई

सात भाइयों के बीच 'सोनलदे' एक ही बहिन थी। एक दिन सातों भाभियों के साथ वह मिट्टी लाने के लिए गड्ढे पर गई। जिस जगह वह जमीन खोदती थी वहाँ सोना, मोती और हीरे निकलते थे और जिस जगह उसकी भावजें खोदती थीं, वहाँ मिट्टी ही मिट्टी निकलती थी।

सभी अपनी ननद से कहतीं कि बाईजी, अपनी जगह हमें खोदने के लिए दो, लेकिन ज्योंही वे खोदने लगतीं वहाँ भी मिट्टी ही निकलने लगती। खोदते खोदते 'सोनलदे' थक गई और उसकी आँख लग गई। सातों भौजाइयाँ उसे वहीं छोड़ उसके द्वारा खोदे हुए सोने और हीरे मोतियों को लेकर चलती बनीं। जब उसकी आँख खुली तब उसने और जमीन खोदकर सोना और हीरे मोती निकाले लेकिन उस बोझ को वह अकेली सिर पर नहीं उठा सकती थी। थोड़ी ही देर में एक साधु उधर से गुजरा, तो उसने कहा कि बाबाजी! यह बरतन मेरे सिर पर उठवा दीजिए। साधु ने सोनलदे को अपने झोले में डाल लिया और अपनी मढ़ी में ले गया। दूसरे दिन उसने गाँव में से भिक्षा लाने के लिए 'सोनलदे' को आदेश दिया और जिधर उसका घर था उस दिशा में न जाने के लिए भी कह दिया। तीन दिन तक वह अन्य दिशाओं में जाकर भिक्षा ले आई। लेकिन चौथे दिन अपनी छोटी भौजाई के घर पहुँची और बोली—

"सात भायाँ बिच एक सोनल बाई,
मोतीड़ा सा चुगै, थांनै जोगीड़ो उठाई
घालो ए माई बिच्छा (भिक्षा)
जोगी मारै लो।

सात भाइयों के बीच में एक सोनल दे बाई थी, मोती चुगती हुई सोनलदे को जोगी उठा कर ले गया। हे भाई, भिक्षा दे दो अन्यथा मुझे मारेगा।

इस प्रकार भिक्षा माँगते माँगते सातों भौजाइयों के घर घूम आई और अन्त में अपनी माँ के घर गई और उसी प्रकार कहा। उसकी माँ ने देखा कि यह तो उसकी लाड़ली बेटी सोनलदे है। तब उसने उसे अन्दर बुलाया। उसकी झोली वगैरह फेंक दी और उसे अपने घर में छुपा लिया। थोड़ी देर बाद वह जोगी धमधम करता आया और घर घर में पूछने लगा कि "बाई, म्हारी चेलकी भी देखी के?" जब वह जोगी पूछते-पूछते वहाँ आया जहाँ सोनलदे थी तब उसकी माँ ने कहा कि बाबाजी, सोनलदे बाहर

गई है, आप बैठो खाना खाओ, इतने में आ जाएगी। जोगी जीमने लगा तो उसकी माँ ने दालान में एक गड्ढा खोदा और उसे घास-फूस से भर दिया। फिर उस गड्ढ पर एक टूटा पलंग डाल दिया और उस पर एक चादर बिछा दी। जोगी आकर पलँग पर बैठा तो सोनलदे की माँ नु चुपके से गड्ढे में आग लगा दी। बाबाजी के नितंब जल गए और वह वहाँ से उठकर भागता बना।

चँवर न झल्लै साह पर

भिणाय का राजा कर्मसेन अकबर बादशाह का दरबारी था। अन्य दरबारियों के कहने-सुनने और स्वयं बादशाह द्वारा एक बड़े राज्य का प्रलो-भन दिये जाने पर कर्मसेन बादशाह के हाथी पर खवासगी पर बैठने और बादशाह पर चँवर डुलाने के लिए राजी हो गया। राजपूत सरदारों में इस बात को लेकर बड़ा क्षोभ था, लेकिन वे निरुपाय थे। सवारी तैयार हो गई और कर्मसेन चँवर लेकर हाथी पर बैठ गया। अभी बादशाह के आने में देर थी। तभी एक चारण न यह दोहा कहा—

कम्मा उगर सेन रा तो जननी बलिहार।
चंवर न झल्लै साह पर तूं झल्लै तलवार॥

सुनकर कर्मसेन हाथी से कूद पड़ा और इस प्रकार उसने राजपूतों की शान को बचा लिया।

लाडू भी चाखो

एक स्त्री बड़ी बदचलन थी लेकिन अपने पति से बनावटी प्यार बहुत जताया करती। एक दिन परीक्षा लेने के लिए उसका पति आधी रात को मर जाने का बहाना करके पड़ रहा। उसकी स्त्री ने देखा कि जब लोग-बाग इकट्ठे हो जाएँगे तो कुछ खाना-पीना न हो सकेगा इसलिए उसने बहुत सारी खीर बनाई और चट कर गई। फिर उसने सोचा कि पति की मृत्यु के दुःख में जितना शोक प्रदर्शन किया जायेगा उतनी ही मेरी

प्रशंसा होगी। अतः कुछ लड्डू बनाकर रख दूँ और मौका पाकर वे ही खा लिया करूँगी। सब यही जानेंगे कि पति शोक में इसने खाना पीना छोड़ दिया है। ऐसा सोचकर उसने दस-बारह दिन तक खाने के लिए पर्याप्त लड्डू बनाये और उन्हें छुपाकर रख दिया। अब सबेरा होने में थोड़ी ही देर थी अतः उसने पति की मृत्यु-सूचक दुःखभरी बाँग दी। सुनकर पड़ोस के सारे स्त्री-पुरुष वहाँ आ गये और सहानुभूति प्रकट करने लगे। वह स्त्री बहुत जोर-जोर से और छाती पीट-पीटकर रो रही थी। लोगों ने बहुत धीरज बँधाया पर उसका रोना रुकता ही न था। फिर वह पति के 'शव' के पास जाकर और उसके चेहरे पर से कपड़ा उघाड़ कर बोली—

स्वामी सुरग सिधारग्या, कुछ म्हानें भी भाखो।

("हे स्वामी, तुम स्वर्ग सिधार गये मुझ से एक बार तो मुंह से बोलो "।)

तब उसका पति सहसा उठ बैठा और बोला—

खीर सबड़का मारिया अब लाडू भी चाखो ॥

"खीर तो तुमने खूब मजे से खाली है, अब जरा लड्डू भी तो चख देखो"।)

यह सब देखसुन कर औरत सकते में आ गई। लोगों पर जब सारा भेद खुला तो वे भी उसे धिक्कारने लगे।

● के दड़ में मेह बरस्यो है ?

एक जाट की स्त्री के पुत्र हुआ। घर में पुत्र-जन्म बहुत दिनों बाद हुआ था लेकिन जब बच्चे के दादा को यह बात मालूम हुई तो उसने साधारणतया संतोष प्रकट कर दिया और कहा, "पोतो होयो है तो चोखी बात है, पण के दड़ में मेह बरस्यो है ?" जाट की बहू ने यह बात सुनी तो उसे बड़ा बुरा लगा। वह अपने पति से कहकर ससुर से अलग हो गई। संयोग से अगले दो-तीन साल लगातार अकाल पड़ा और जाट

दम्पति के पास खाने को एक दाना भी न रहा। दोनों घर के ताला लगाकर और बच्चे को साथ लेकर रोटी की तलाश में निकल पड़े। दो तीन कोस जाने पर एक स्वामी जी का मठ आया। जाट और जाटनी ने बच्चे को कुछ अनाज के बदले में स्वामीजी को दे दिया और आगे चल पड़े। स्वामीजी ने सोचा कि इस लड़के को चेला बना लेंगे। लेकिन लड़के का दादा पीछे-पीछे आ रहा था। उसने स्वामी को दुगना अनाज देकर बच्चे को वापिस ले लिया और उसे घर लाकर अच्छी तरह खिलाने-पिलाने लगा। दूसरे साल वर्षा अच्छी हुई तो जाट जाटनी अपने घर वापिस आ गए। दोनों की बड़ी दुर्दशा हो रही थी। जाट की स्त्री सूखकर काँटा बन गई थी। जाट के बाप ने पूछा कि बच्चा कहाँ है, तो जाट ने बहुत उदास होकर कहा कि बच्चे को परदेश का जलवायु जँचा नहीं, वह बीमार हो गया और चल बसा। जाटनी भी सिसक-सिसककर रोने लगी। तब बुड्ढे जाट ने अपने पोते को पुकारा। पोता हँसता-खेलता वहाँ आया तो बुड्ढे ने कहा कि यह क्यों नहीं कहते कि इसको पाँच सेर अनाज के बदले फलाँ स्वामी को बेच गए थे। अब समझे कि नहीं कि दड़ में मेह न बरसने से ऐसा हाल होता है। तब जाट की स्त्री ने ससुर के पैर पकड़ लिए और अपनी भूल पर पछताने लगी।

● नांव लियां रोटी कोनी मिलै

एक बारहठ एक ठाकुर के यहाँ गया और उसने ठाकुर के पुरखों का यशोगान किया, लेकिन ठाकुर के बाप का नाम नहीं लिया। ठाकुर ने पूछा तो बारहठ ने बहुत आनाकानी की लेकिन ठाकुर ने जिद की तो बारहठ ने कहा कि आपके पिता का नाम लेने से रोटी नसीब नहीं होती है, बस इसीलिए उनका नाम नहीं लिया। ठाकुर ने कहा कि यह सब झूठ बात है, तुम उनका यशोगान करो, मैं देखूँगा कि तुम्हें रोटी कैसे नहीं मिलती? बारहठ ने वैसा ही किया तब ठाकुर ने अपनी दासी से कहा कि मैं एक बहुत आवश्यक काम से बाहर जा रहा हूँ, तुम बारहठजी को

खूब अच्छी तरह से खिला-पिला देना, कोई कमी न रखना। ठाकुर बाहर चला गया और दासी रसोई बनाने लगी। भोजन बन गया तो थाल सजाकर बारहठ को जिमाने चली। संयोग से उसी वक्त एक दूसरा बारहठ घर में घुसा, दासी ने समझा कि यही वे बारहठ जी हैं जिनके लिए ठाकुर साहब कह गए हैं। इसलिए उसने वह थाल उस बारहठ के सामने रख दिया। बारहठ ऐसा अच्छा खाना पाकर निहाल हो गया और खाना खाकर चलता बना। शाम को ठाकुर आया तो उसने बारहठ से पूछा कि क्यों बारहठजी!! भोजन कर लिया न? बारहठ ने कहा कि ठाकुर साहब, मैंने तो सवेरे ही कह दिया था कि आज भोजन नहीं मिलने का। इतना सुनते ही ठाकुर आवेश में आ गया और उसने दासी को आवाज़ दी तो वह घबड़ाई हुई वहाँ आई। ठाकुर ने गुस्से में भरकर कहा कि हरामज़ादी, मैंने कहा था न कि इन बारहठजी को भोजन अच्छी तरह से करवा देना। तब उसने कहा कि अन्नदाता! मैंने भोजन तो अवश्य करवाया था, लेकिन वे तो कोई और ही आदमी थे। इनको मैंने देखा नहीं था और इसलिये ग़लती हो गई। बारहठ हुक्का पी रहा था। ठाकुर ने दासी को मारने के लिये हुक्का उठाया तो उसका निचला हिस्सा अलग हो कर बारहठ के सिर में जा लगा जिससे उसके सिर से खून बहने लगा। तब बारहठ ने बीच बचाव करते हुए कहा कि ठाकुर साहब अब शान्त हूजिये, अब मुझे भोजन मिल जायेगा। आपके पिता श्री का नाम लेने से, बिना खून-खच्चर हुये रोटी नहीं मिलती। यह बात तो मैंने संकोचवश कही ही न थी। अब मेरे सिर से खून गिरा है तो अब रोटी भी मिल जायेगी।

● बाप बेटै सैं भी गयो बीत्यो

एक पंडित जी ने राह से गुज़रते समय देखा कि एक लड़का खड़ा-खड़ा पेशाब कर रहा है। लड़के का पिता पंडितजी का जानकार था। पंडितजी ने सोचा कि चलकर इसके बाप को कहना चाहिए कि अपने लड़के को पेशाब करने का सलीका तो सिखलाओ। पंडितजी उसके

बाप के पास गये तो क्या देखते हैं कि वह भला आदमी चक्कर काटता जाता है और पेशाब करता जाता है। तब पंडित जी ने सोचा कि भला लड़के का क्या दोष है ? उन्होंने सोचा कि ऐसे बाप को उपालम्भ देना व्यर्थ है और बिना कुछ कहे-सुने वहाँ से लौट गये ।

आन्धै हाली लूट

एक अन्धा ब्राह्मण एक बार एक ब्रह्म-भोज में जीमने गया। जब वह भरपेट खा चुका तो उसने अपने सारे जेब लड्डुओं से भर लिये। फिर उसने धोती की लाँग की झोली सी बनाकर उसमें बहुत सारे लड्डू भर लिये। लोगों ने सोचा कि अन्धा आदमी है, ले जाने दो। लेकिन अन्धे ने सोचा कि मेरी करतूत को कोई नहीं जानता तथा और सब लोग भी लड्डू चुरा-चुराकर ले जा रहे होंगे। अतः अपने को साहूकार बनाने के लिये चिल्लाने लगा कि लोगों दौड़ो-दौड़ो, ये ब्राह्मण लोग देखो किस प्रकार लड्डू चुरा-चुराकर ले जा रहे हैं, इन्हों ने कैसी लूट मचा रखी है ।

दोई है

एक बार चार आदमी कमाने जा रहे थे। रास्ते में प्यास लगी तो वे चारों एक कुएँ पर गये जहाँ एक नवयुवती पानी भर रही थी। उनमें से एक ने नवयुवती के पास जाकर कहा कि मुझे पानी पिलाओ तो औरत ने पूछा कि तुम कौन हो ? तब उसने कहा कि मैं ग़रीब हूँ। इस पर उस स्त्री ने कहा कि ग़रीब तो दो ही हैं, तुम तीसरे कहाँ से आ गये ? ठीक से बतलाओगे तो पानी पिलाऊँगी, अन्यथा नहीं। उसकी बात सुन-कर वह प्यासा ही लौट गया। फिर दूसरा गया, उसने कहा कि मैं मुसा-फ़िर हूँ, तीसरे ने कहा कि मैं ज़बरदस्त हूँ और चौथे ने कहा कि मैं बेव-कूफ़ हूँ। लेकिन औरत का सबको एक ही उत्तर था कि मुसाफिर भी दो हैं, ज़बरदस्त भी दो हैं और बेवकूफ़ भी दो ही हैं। फिर वह औरत उनको वहीं बिठलाकर घर से मिठाई का थाल भरकर लाई। इतने में किसी ने

उसके पति को कह दिया कि तुम्हारी औरत को चार आदमी भगाकर ले जा रहे हैं। उसने तुरन्त राजा के पास फ़रियाद की और राजा ने उन सबको पकड़ बुलवाया। फिर राजा ने उस स्त्री को सारी बात स्पष्ट करने के लिये कहा तो औरत ने सारी बात सही-सही बतला दी और कहा कि गरीब दो ही हैं, बेटी और बैल, मुसाफ़िर दो ही हैं चाँद और सूरज, जबरदस्त दो ही हैं दाना और पानी तथा बेवकूफ़ भी दो ही हैं राजा और मेरा पति जिन्होंने कोई विचार नहीं किया और मुझे बुलवा लिया। तब राजा शर्मिन्दा हुआ और उसने सबको छुट्टी दे दी।

● आंसू बेचतां आसी

एक बार एक पंसारी ने अपने बेटे को हींग खरीदकर लाने के लिये भेजा। और उससे कहा, हींग इतनी तेज होनी चाहिये कि उसे सूँघते ही आँखों में आँसू आ जाएँ। लड़का हींग खरीदने गया। उसने हींग की डलियों को उठा-उठाकर सूँघना शुरू किया। तब दूकानदार ने पूछा कि तुम इस प्रकार क्या सूँघते हो? पंसारी के लड़के ने कहा कि मेरे बाप ने कहा था कि हींग एसी होनी चाहिये कि जिसे सूँघते ही आँखों में आँसू आ जाएँ। दूकानदार ने समझ लिया कि लड़का बेवकूफ़ है और उसन उसे घटिया किस्म की हींग दे दी और कहा कि आँसू इस वक्त नहीं आते, जब इसे बेचोगे तब आयेंगे अर्थात् यह घटिया हींग बेचने में जब नुकसान लगगा तब अपने आप आँसू आने लगेंगे।

● इत्ती तो मरदां की छूट ई है

एक जाट अपने समधी के घर उससे मिलने के लिये गया। जाटनी जाट को अपने नीचे पटके हुए थी और उसकी पीठ पर बैठी चक्की चला रही थी नीचे पड़ा हुआ भी जाट बाजरी के दाने लेकर चबा रहा था। समधी को देखा तो वह सकुचाने लगा। तब आगन्तुक ने कहा कि समधीजी! शर्माते क्यों हो? तुम दाने तो चबा रहे हो लेकिन अपने यहाँ तो यह

बात भी नहीं है। तब जाट ने नीचे पड़े-पड़े ही मूँछों पर ताव देते हुए कहा कि इतनी तो मर्द की छूट ही है।

● सांप अर साहूकार की बहू

एक साहूकार के कोई संतान न थी। इसलिये पति-पत्नी बहुत चिंतित रहते थे। एक दिन साहूकार ने उदास होकर कहा कि जब इस धन को भोगने वाला ही कोई नहीं है तब इसे रखने से फायदा ही क्या है? अच्छा है इसे लुटा दिया जाये। लेकिन उसकी पत्नी ने कहा कि ऐसी क्या बात है? पंडितों से पूछना चाहिए। साहूकार की स्त्री ने पंडितों को गुप्त रूप से बहुत धन दिया और पंडितों ने साहूकार को कह दिया कि तुम्हारे पुत्र होगा, लेकिन तुम नौ महीने तक अपनी पत्नी को न देखना। साहूकार ने हाँ भर ली। नौ महीने बाद साहूकार की पत्नी ने झूंठ-मूठ पुत्र जनने का बहाना किया और अपने पति को पंडितों द्वारा कहला दिया कि बारह वर्ष तक पुत्र का मुँह न देखना। साहूकार ने लाचार होकर यह बात भी मान ली। इन बातों को दस बरस हो गए तो लड़कियों वाले साहूकार के लड़के से अपनी लड़की की सगाई करने के लिए आने लगे। सेठ ने बहुत आना-कानी की लेकिन बारह वर्ष पूरे होते न होते सेठ के लड़के की शादी एक दूसरे गाँव के साहूकार की लड़की से होनी तय हो गई। जब बारात चलने को हुई तो सेठ ने दूल्हे का मुँह देखने की इच्छा प्रकट की लेकिन साहूकार की स्त्री ने कहा कि अभी नहीं, आधा रास्ता तय करने पर देख लेना। दूल्हे की पालकी चारों ओर से बंद कर दी गई। उधर बारात चली और इधर साहूकार की स्त्री विष का प्याला लेकर छत पर चढ़ गई। उसने सोचा कि थोड़ी देर बाद ही सारा भंडाफोड़ हो जाएगा अतः ज्यों ही बारात को आधे रास्ते से लौटती देखूँगी, विष का प्याला पीकर प्राणान्त कर लूँगी। उधर बारात ने एक पीपल के वृक्ष के पास पड़ाव डाला। पीपल के नीचे एक बिल में एक नाग और एक नागिन रहते थे। नागिन ने कहा कि बारात तो बहुत सुन्दर सजी है लेकिन दूल्हा नहीं है। तब नाग

ने कहा कि यदि तू कहे तो मैं दूल्हा बन जाऊँ लेकिन शर्त यह है कि वधू की आयु पूरी होने से पहले मैं नहीं लौटूँगा। नागिन ने शर्त मंजूर कर ली। नाग पालकी में घुस गया और वहाँ जाकर एक बहुत स्वस्थ और सुन्दर युवक बन गया। थोड़ी दूर जाने पर जब साहूकार ने दूल्हे को देखा तो फूला न समाया और उसने अपनी पत्नी को संदेश-वाहक के साथ बधाई भेजी। वह बेचारी तो विष का प्याला लिये खड़ी थी, संदेश सुनकर उसने परमात्मा को बहुत बहुत धन्यवाद दिया। इधर जिस किसी ने भी दूल्हे को देखा वही मोहित हो गया। खूब धूमधाम से शादी करके बारात वधू को लेकर लौटी। वर-वधू के दिन चैन से कटने लगे। उधर नागिन को नाग का बिछोह खलने लगा और उसने सोचा कि नाग को वापिस लाना चाहिये। एक दिन वह इत्र बेचने वाली का वेष बनाकर साहूकार के घर गई। साहूकार की स्त्री ने उसे पुत्र-वधू के पास भेज दिया। उसने कई तरह के इत्र दिखलाये लेकिन साहूकार की पुत्र-वधू को कोई भी इत्र पसन्द न आया। तब उसने चिढ़कर कहा कि इतने नखरे करती हो, अपने पति की 'जात' का भी तुम्हें पता है? यों कहकर वह चल दी। शाम को पति जब घर आया तो उसने पति से उसकी 'जात' पूछी। उसने बहुत टालने की कोशिश की लेकिन वह न मानी। तब वह समझ गया कि नागिन इसे बहका गई है। तब उसने कहा कि यदि किसी तरह नहीं मानती तो उस बरतन में जो कच्चा दूध पड़ा है, उसका एक छींटा मुझे मार दे, तब बतलाऊँगा। ज्यों हीं उसकी स्त्री ने दूध का छींटा दिया, उसका पति नाग बनकर चला गया। अब वह बहुत पछताने लगी लेकिन अब क्या हो सकता था? सबेरे जब उसकी सास ने पूछा तो उसने कह दिया कि वे तो कमाने के लिए रातों रात दिसावर चले गए।

अब साहूकार की पुत्र-वधू ने यह नियम कर लिया कि जो कोई भी उसे नई कहानी सुनायेगा उसे ही वह एक सोने का टका और मन भर का सीधा देगी। इस प्रकार वह रोज नई कहानी सुनने लगी। एक रात एक ब्राह्मण उसी पीपल के वृक्ष पर आश्रय लिये हुए था तो उसने देखा कि

एक नाग और नागिन में तकरार हो रही है। नाग कह रहा था कि तुमने साहूकार की पुत्र-वधू की आयु पूर्ण होने तक की अवधि मुझे दी थी। अब उसकी जिन्दगी कैसे कटेगी ? पहले जो पाप किये थे उनके कारण तो यह सर्प-योनि मिली ही है, अब इससे भी नीच योनि मिलेगी। लेकिन नागिन राजी न होती थी। अन्त में नागों की सभा में इस बात का फैसला करवाने की बात तय हुई। ब्राह्मण ने सोचा कि यह नई बात है और साहूकार की पुत्र-वधू को यह बात कहकर सोने का टका और सीधा लेना चाहिए। उसने जाकर साहूकार की पुत्र-वधू को यह बात कही तो वह बड़ी प्रसन्न हुई और उसने ब्राह्मण को खूब इनाम दिया। फिर ब्राह्मण से कहा कि क्या तुम वह स्थान मुझे दिखला सकते हो ? ब्राह्मण के हाँ करने पर उसने अपनी सास से कहा कि मैं तीर्थ करने के लिए जाऊँगी. अतः इसका प्रबन्ध करवा दीजिए। साहूकार की स्त्री ने अपने पति से कहकर सारा प्रबन्ध करवा दिया। शाम को वे लोग उस पीपल के पास पहुँचे तो ब्राह्मण ने दूर से ही पीपल का वृक्ष दिखला दिया। उन सबको वहीं छोड़ वह स्वयं उस पीपल के पास गई और वृक्ष पर चढ़कर बैठ गई। आधी रात को पहले वहाँ झाड़ देने वाला आया, फिर भिश्ती छिड़काव कर गया और फिर वहाँ नागों की सभा हुई। पाँच नागों ने यह फैसला दिया कि वह नाग फिर साहूकार का पुत्र बनकर जाये और अपनी पत्नी की आयु पूर्ण होने तक वहीं रहे। इस फैसले को सुनकर उसकी पत्नी वृक्ष से नीचे कूद पड़ी और बोली कि मैं हाज़िर हूँ और अपने पति को ले जाती हूँ। नाग फिर उसका पति बनकर उसके साथ चला गया। सारे लोग लौट गये और वे आनन्द पूर्वक रहने लगे।

● छयां छयां जाई—छयां छयां आई

एक सेठ मरते वक्त अपने पुत्र को यह शिक्षा दे गया था कि बेटा ! दूकान पर छाया-छाया जाना और छाया-छाया ही आना। लड़के ने घर से लेकर दूकान तक का सारा रास्ता पालों से छवा दिया, जिससे चाहे वह

दोपहर को भी जाये तो भी वहाँ छाया ही रहे। लड़का दोपहर तक घर में पड़ा रहता और फिर कुछ देर के लिये दूकान जाकर वापिस घर चला आता। दूकान न संभालने से सारा काम ठप्प हो गया, तब बूढ़े मुनीम ने समझाया कि तुम्हारे पिता की सीख का आशय यह था कि छाया रहते रहते अर्थात् सूर्योदय होने से पहले दुकान जाना और छाया हो जाने पर अर्थात् सूर्यास्त के बाद घर जाना। तब लड़के ने वैसा ही करना शुरू कर दिया और उसका कारोबार फिर ठीक से चलने लगा।

● गंगू भांड

एक राजा के यहाँ गंगू नाम का भांड था। एक दिन राजा ने कहा कि गंगू! अब हम तुम्हें तभी इनाम देंगे जबकि स्वाँग भर कर आने पर तुम्हें पहिचान नहीं सकेंगे। दरबार के दो बड़े मालदार सेठों ने भी राजा की बात का समर्थन किया कि तुम्हारे सब स्वांग पुराने पड़ चुके हैं। दरबार की ओर से जब सहायता बन्द हो गई तो गंगू के घर में फाके पड़ने लगे। एक दिन गंगू ने अपने लड़कों से कहा कि मैं परदेश जा रहा हूँ। तुम लोग मुझे मृत घोषित कर देना और मेरी अरथी ले जाकर जला देना। लड़कों ने वैसे ही किया और सबने यह जान लिया कि गंगू मर गया है।

चार-पाँच वर्ष बाद एक दिन गंगू अपने गाँव आया। रात को वह शंकर के उस मंदिर में गया जहाँ एक पंडाइन शंकर की पूजा किया करती थी तथा जहाँ राजा और वे दोनों सेठ भी दर्शन करने नित्य आया करते थ। गंगू बैल पर चढ़ा था और शिव का स्वांग बनाये हुए था। पंडाइन ने समझा कि साक्षात् भगवान् शंकर ही प्रगट हुए हैं। अतः उसने भक्तिपूर्वक नमस्कार किया। शिव रूपी गंगू सन्तुष्ट हो गया तो पंडाइन ने कहा कि महाराज! मुझे स्वर्ग में स्थान दीजिये। तब गंगू ने कहा कि आजकल स्वर्ग की चाबी स्वर्गीय गंगू भांड के हाथ में है। वही आजकल स्वर्ग का द्वारपाल है, यदि उसे राजी कर लोगी तो स्वर्ग में सहज ही प्रवेश पा सकोगी। पंडाइन के पूछने पर गंगू ने कहा कि सबेरे ही अपना आधा धन तो गंगू

के लड़कों को दे देना और शेष आधा भूखे-नंगों को बाँट देना। आज के आठवें दिन मैं स्वर्ग-लोक जाऊँगा और तुम्हें भी वहाँ पहुँचा दूँगा। सवेरा होते ही पंडाइन ने वही काम किया। सेठ ने पूछा तो उसने कहा कि रात को भगवान् शंकर आये थे और उन्होंने स्वर्ग-प्राप्ति के लिये यह उपाय बतलाया है। सेठ ने भी स्वर्ग जाने की इच्छा प्रकट की तो पंडाइन ने कहा कि आज रात को वे फिर दर्शन देंगे तो पूछूँगी। रात को गंगू उसी वेष में फिर आया और सेठ के लिए भी वही उपाय बतला गया। दूसरे दिन उसने भी अपना सारा धन उसी प्रकार आधा-आधा करके लुटा दिया। तीसरे दिन दूसर सेठ ने और उनकी देखा-देखी राजा ने भी आधा धन गंगू के लड़कों को दे दिया और आधा गरीबों में बाँट दिया। जिस रात को स्वर्ग जाना था, उस रात को गंगू फिर उसी वेष में मन्दिर में आया। चारों उसकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे। उसने आदेश दिया कि एक लँगोटी के सिवाय शरीर पर कोई वस्त्र न रखो और आँखों पर पट्टी बाँध लो। स्वर्ग के पहले नरक आयेगा, जो कदाचित् उसकी विभीषिकाओं से सिहर-कर वहीं गिर पड़े तो फिर वहीं के हो जाओगे। स्वर्ग का मार्ग बड़ा बीहड़ है, काँटों के चुभने से कोई सीत्कार भी कर देगा तो वह वहीं रह जाएगा। तब पंडाइन ने गंगू के कहने से बैल की पूँछ पकड़ ली और अन्य तीनों ने एक दूसरे के हाथ पकड़कर पंडाइन को पकड़ लिया। अब चारों जने बैल के लटके हुए से चलने लगे। गंगू उनको जंगल में ले गया और रात भर घुमाता रहा। कँटीले झाड़ों में उलझ उलझ कर उनके शरीर लहू लुहान हो गये। जब सवेरा होने को आया तो नगर के चौराहे पर लाकर गंगू ने उनसे कहा कि अब स्वर्ग का दरवाज़ा आ गया है, मैं गंगू को बुलाकर लाता हूँ, तुम सब यहीं ठहरो। यों कहकर वह तो चलता बना। इधर सबेरा होने लगा और लोग इधर-उधर आने जाने लगे। जो भी इन्हें देखता आश्चर्य-चकित होकर कहता कि यह क्या तमाशा है? आख़िर गंगू जब स्वर्ग की चाबी लेकर नहीं आया और बहुत आदमी वहाँ जमा हो गये तब पंडाइन ने शेष तीनों

से कहा कि आँखों की पट्टी उतारकर देखना चाहिये कि आखिर बात क्या है। पट्टी खोलने पर उन्होंने अपने को चौराहे पर लोगों से घिरा देखा तो अवाक् रह गए। वे झेंपते हुए किसी प्रकार अपने-अपने स्थानों को गए। घर जाकर सबने सोचा कि बुरे ठगे गए। लेकिन अब क्या हो सकता था? कुछ ही दिन बाद गंगू ने सेठ के पास जाकर सलाम किया तो सेठ ने आश्चर्य में भर कर पूछा अरे गंगू! तू तो मर गया था न? तब गंगू ने कहा कि मरता नहीं तो स्वर्ग की चाबी कैसे हाथ लगती? सेठ को काटो तो खून नहीं। फिर वह दूसरे सेठ के पास गया और फिर राजा के पास गया। उसने राजा से कहा कि सरकार, अब मुझे इनाम दिलवाइये, क्योंकि आपने यह वचन दिया था कि जब तुझे नहीं पहिचानेंगे तो इनाम देंगे। राजा ने कहा कि अब हमारे पास इनाम देने के लिए रह ही क्या गया है? गंगू ने कहा कि हुजूर, जो आधा धन गरीबों में बँट गया है, वह तो गया और शेष आधा आपका और दोनों सेठों का मेरे घर सुरक्षित रक्खा है, वह सब आप अपना-अपना ले लें, लेकिन मुझे मेरा इनाम अवश्य दिलवा दें।

● चमारी बामणी बणी

पहाड़ की घाटी में एक बुढ़िया ब्राह्मणी रहा करती थी। पहाड़ पर स्थित मन्दिर में दर्शन करने जाने वालों के लिए वह खाना बना दिया करती थी। चूँकि आस-पास और कोई गाँव न था इसलिए भक्त जन वहीं भोजन करते थे। इससे होने वाली आमदनी से बुढ़िया का काम चल जाता था। बुढ़िया मर गई तो एक चमारी ने सोचा कि क्यों न मैं बुढ़िया का स्थान ले लूँ? अच्छी आय के साथ-साथ सम्मान भी मिलेगा। ऐसा विचारकर वह बुढ़िया की झोंपड़ी में रहने लगी और यात्रियों के लिए भोजन बनाने लगी। एक दिन दो दर्शनार्थी आये तो उनके लिए उसने काचरों का साग और रोटियां बनाईं। यात्रियों ने सराहना करते हुए कहा कि ब्राह्मणी माई! तू ने साग तो बहुत ही स्वादिष्ट बनाया

है, पहले वाली बुढ़िया ऐसा साग नहीं बना सकती थी। तब उसने बड़ी शान के साथ कहा कि आज मुझे मेरी राँपी (चमारों का एक औजार) नहीं मिली इसलिये काचरों को दाँत से काटकर साग बनाना पड़ा, अन्यथा मैं और भी अधिक स्वादिष्ट साग बनाती। उसकी बात सुनकर सास्री सन्न रह गये और उन्हें निश्चय हो गया कि यह औरत ब्राह्मणी नहीं चमारी ही है।

● गंगाजी की मींडकी

एक जाट एक बार गंगा-स्नान करने के लिए गया। नहाकर पंडे के पास तिलक करवाने के लिये गया तो पंडे ने देखा कि चन्दन तो ख़त्म हो गया है, अतः उसने गंगाजी की बालू लेकर जाट के तिलक लगा दिया और कहा—

गंगाजी कै घाट पर, बामण बचन परवाण।
गंगाजी की रेणका, तूं चंदन करकै जाण॥

गंगाजी के घाट पर तुम ब्राह्मण के वचनों को प्रमाण मानो और गंगाजी की बालुका को ही चंदन समझो।

तब जाट ने पास ही फुदकती हुई एक मेंढकी को पकड़ लिया और पंडे से कहा कि लो मैं तुम्हें गऊ का दान देता हूँ। पंडे ने गुस्से से कहा कि गऊ है कहाँ? तब जाट ने उसे मेंढ़की को दिखलाते हुये कहा—

गंगाजी कै घाट पर जाट बचन परवांण।
गंगाजी की मींडकी, तूं गऊ करकै जाण॥

गंगाजी के घाट पर तुम जाट के बचनों को प्रमाण मानो और गंगाजी की मेंढ़की को गाय करके ही जानो।

● समरथ नै दोस कोनी

एक सेठ के यहाँ एक मुनीम गद्दे पर बैठा बही-खाता कर रहा था। सेठ आया और उसकी ठोकर दवात को लगी तो सारे गद्दे पर स्याही

फैल गई। सेठ ने झुँझलाकर कहा कि मुनीमजी, यहाँ रास्ते में ही दवात क्यों रख दी थी? दूसरी बार सेठ वहीं बैठा कुछ लिख रहा था कि संयोग से मुनीम के पैर की ठोकर से दवात उलट गई, तब सेठ ने गुस्से से कहा कि अंधे हो रहे हो क्या? इतनी बड़ी दवात भी दिखलाई नहीं पड़ती।

● बेगम भाई नै वज़ीर बणायो

एक बार बादशाह की बेगम ने बादशाह से कहा कि आप मेरे भाई को वज़ीर बनाइये और इस वज़ीर को हटा दीजिये। बेगम ने बहुत हठ किया तो बादशाह ने कहा कि तेरा भाई कुछ जानता-बूझता तो है नहीं उसे किस प्रकार वज़ीर बनाया जाये? लेकिन बेगम न मानी तो बादशाह ने उसके भाई को वहीं बुलवाया और उससे कहा कि यह एक पैसा लो और इसके सब तरह के मसाले ले आओ। वह गया और सारे बाजार में घूम आया लेकिन किसी ने एक पैसे में सब तरह के मसाले नहीं दिये। तब बादशाह ने फिर उससे कहा कि इसी पैसे से एक लाख रुपये कमा लाओगे तो तुम्हें वज़ीर बना दिया जाएगा। वह फिर घूमघाम कर आ गया, लेकिन किसी ने एक पैसे के बदले एक लाख रुपये नहीं दिये। तब बादशाह ने बेगम से कहा कि देख ली न अपने भाई की होशियारी? अब बादशाह ने वज़ीर को बुलवाया और उसे वही पैसा देकर कहा कि एक पैसे के सब तरह के मसाले ले आओ। वज़ीर गया और हलवाई की दुकान से एक पैसे के बड़े ले आया। बादशाह के पूछने पर वज़ीर ने स्पष्ट किया कि इन बड़ों में सब तरह के मसाले मौजूद हैं। तब बादशाह ने उसे एक पैसा और दिया और कहा कि इससे एक लाख रुपये कमा कर लाओ। वज़ीर ने एक मुरीद के घर से एक पैसे का सूत लिया और उसने सूत की एक रस्सी बना ली। फिर वह उस रस्सी को लेकर बड़े सेठों के मुहल्ले में गया और रस्सी से एक हवेली के कोने नापने लगा। सेठ ने इसका कारण पूछा तो वज़ीर ने कहा कि आपकी हवेली का कोना बहुत आगे निकला

हुआ है अतः इसे तुड़वाना होगा क्योंकि बादशाह सलामत की यह इच्छा है कि रास्तों को अधिक चौड़ा बनाया जाये। सेठ ने बहुत मिन्नत की तो वजीर ने बीस हजार रुपये उसी वक्त बादशाह के पास महल में भेजने की बात कही। सेठ ने बीस हजार रुपये उसी वक्त थैलियों में भरवाकर महल में भेज दिये। फिर दूसरे सेठ की बारी आई और फिर तीसरे की। इस प्रकार वजीर ने कई लाख रुपये महल में भिजवा दिये, तब बादशाह ने वजीर को कहलवाया कि अब बस करो। तब वजीर बादशाह के पास चला गया तो बादशाह ने रुपयों के ढेर की ओर इशारा करके बेगम से कहा कि मैंने इसलिये इसे वजीर बनाया है और तुम्हारे भाई को नहीं बनाया। बेगम निरुत्तर हो गई।

● कुरूंख पर कुमाणस चढ़्यो

एक बार एक राजा से उसके दरबारियों ने कहा कि मंत्रीजी गधे, ग्वार, कुम्हार और अरंड का नाम नहीं लेते हैं। तब राजा ने एक कुम्हार से कहा कि वह अपनी बाड़ी में ग्वार बोये और एक अरंड का पेड़ लगाये। कुछ दिनों बाद राजा मंत्री के साथ बाड़ी में पहुँचा तो कुम्हार अरंड के वृक्ष पर चढ़ा था और गधा ग्वार खा रहा था। तब राजा ने कहा कि कुम्हार का नुकसान हो रहा है, उसे आवाज दो कि वह गधे को बाहर निकाल दे। तब मंत्री ने जोर से पुकारा—"कुरूंख पर कुमाणस चढ़्यो अर कुअन्न नैं कुधन खावै है।" मंत्री की चतुराई पर राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

● गोह कै कित्ता बचिया होवै ?

एक बार एक राजा अपने मंत्री सहित जंगल में जा रहा था। वर्षा बहुत अच्छी हुई थी और एक बूढ़ा किसान अपने खेत में हल चला रहा था। राजा ने पूछा कि चौधरी ! वर्षा कैसी हुई ? तब किसान ने कहा कि वर्षा घूरे पर ही हुई। यह उत्तर सुनकर राजा ने उसे दो सौ रुपये

इनाम के दिये । मंत्री को बड़ा आश्चर्य हुआ कि किसान ने बड़ा बेहूदा उत्तर दिया है और फिर भी राजा ने उसे इनाम दिया है । उसने राजा से इसका कारण पूछा तो राजा ने कहा कि फिर कभी बतलायेंगे । कुछ दिन बाद राजा ने मंत्री से पूछा कि 'गोह' के कितने बच्चे होते हैं ? मंत्री की समझ में कुछ नहीं आया तो उसने उत्तर देने के लिए मोहलत माँगी । मंत्री उसी किसान के पास गया तो किसान ने उससे पाँच सौ रुपये लेकर कहा कि 'गोह' के बारह बच्चे होते हैं । मंत्री ने राजा को वैसे ही कह दिया । तब राजा ने फिर पूछा कि उनमें से कितने कमाते हैं और कितने खाते हैं ? तब मंत्री फिर किसान के पास गया और किसान ने उससे एक हजार रुपये लेकर कहा कि चार कमाते हैं और आठ खाते हैं । मंत्री ने आकर राजा से वैसे ही कह दिया तो राजा ने फिर पूछा कि कौन-कौन से कमाते हैं और कौन-कौन-से खाते हैं ? तब मंत्री फिर उसी किसान के पास गया और किसान ने उससे दो हजार रुपय लेकर बतलाया कि आषाढ़, श्रावण, भादों और क्वार कमाने वाले हैं और कार्तिक, मागशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ खाने वाले हैं । मंत्री ने कहा कि ये तो महीनों के नाम हैं, तब किसान ने कहा कि तुम्हारे प्रश्न का यही उत्तर है । तब मंत्री ने राजा के पास आकर वैसे ही कह दिया । राजा जानता था कि मंत्री उसी किसान से बार-बार पूछकर आता है, तब उसने मंत्री से कहा कि सच-सच बतलाओ कि तुमने किसान को कितने रुपये दिये हैं ? मंत्री के बतलाने पर राजा ने कहा कि उस दिन किसान ने ठीक ही तो कहा था कि मेह घूरे पर बरसा है, अर्थात् मेरे सब पुत्रियाँ ही पुत्रियाँ हैं, पुत्र एक भी नहीं, अतः मुझे इस बुढ़ापे में भी हल चलाना पड़ता है और मैंने उसे दो सौ रुपये दिये थे, तो तुम्हें यह बात बहुत अखरी थी, लेकिन अब तुमने उसे इतने रुपये क्यों दिए ?

● बेटी नैं टीबड़ी चढ़ाई

एक सुनार कुछ कमाता-कजाता न था । भाइयों से उसकी बनती न

थी। अलग रहता था। खाने के लिए घर में रोटी न थी, लेकिन लड़की सयानी हो गई थी, अतः उसकी शादी करनी आवश्यक थी। सुनार की स्त्री जब उसे बहुत तंग करने लगी तो सुनार पास के किसी गाँव में जाकर अपनी लड़की की सगाई कर आया। शादी के दो दिन पहले उसने एक पड़ोसी सेठ से कहा कि लड़की की शादी है, सो मुझे एक कड़ाही दे दो और घर में एक भट्टी चिनवा दो, बस तुम्हारी इतनी ही मदद काफ़ी है। सेठ ने उसके घर में एक भट्टी चिनवा दी और एक कड़ाही उसके यहाँ रखवा दी। बारात आई तो सुनार ने भट्टी पर कड़ाही चढ़ा दी और थोड़ा-सा बेसन घोलकर कड़ाही के पास इस तरह छिड़क दिया कि मानो भट्टी पर बहुत मिठाई बनाई गई हो। उस वक्त की प्रथा के अनुसार फेरे होने के पहले का भोजन वर-पक्ष की तरफ से ही होता था अतः वर-पक्ष वालों ने अपना भोजन बनवा कर खा लिया। फेरे हो चुके तो अब सुनार की बारी आई। सुनार ने अपने रूठे हुए भाइयों से कहा कि भाई, इस वक्त तो कुछ काम आओ, मेरी लड़की का ब्याह बिगड़ेगा तो तुम्हारी भी नाक कटेगी, मैं तुमसे कुछ माँगता भी नहीं, सिर्फ थोड़ी देर के लिये आ जाओ। जब वे आ गये तो उसने बारात वालों को भोजन के लिये बुलावा दिया और कहा कि रसोई तैयार होने में देर हो गई है अतः सबके-सब साथ ही शीघ्रता से आ जाओ। अपने भाइयों को उसने दरवाज़े पर खड़ा कर दिया और कह दिया कि बारातियों के सिवा और कोई अन्दर न आने पाये। और सारे बाराती तो घर में घुस गये लेकिन दूल्हे का बाप अपने डेरों की सार-सम्भाल करने के लिये पीछे रह गया था अतः वह देरी से पहुँचा। दरवाज़े पर खड़े लोगों ने उसे टोका कि तू कौन है? हम तुझे अन्दर नहीं जाने देंगे। बातों-बातों में बात बढ़ गई और दूल्हे के बाप ने कहा कि इस घर में कोई पैर रक्खे तो उसके सौ बाप, उसने सारे बारातियों को बाहर बुलवा लिया और सब अपने डेरे पर चले गये। लड़की का बाप उसे मनाने के लिये पहुँचा कि पहरेदारों की ग़लती से ऐसी बात हो गई है, अब कसूर माफ़ होना चाहिए। लेकिन दूल्हे

का बाप तना हुआ था, उसने कहा कि चुपचाप वधू को भेज दे और अधिक बात करने की आवश्यकता नहीं है। वह तो यह चाहता ही था। उसने लड़की को उनके साथ विदा कर दिया और तब संतोष के साथ बोला कि लड़की टीवड़ी चढ़ गई।

● चारण की गलती

एक बार किसी ठाकुर ने एक चारण पर प्रसन्न होकर उसे सौ गज़ लम्बा और सौ गज़ चौड़ा जमीन का टुकड़ा दिया और उससे कहा कि मुंशी के पास जाकर अपनी जमीन का पट्टा बनवा ले। चारण मुंशी के पास गया तो मुंशी ने अपना इनाम माँगा। चारण ने कहा कि भला तुझे किस बात का इनाम दूँ? यह ज़मीन तो ठाकुर साहब ने प्रसन्न होकर दी है। मुंशी थोड़ी देर अपने काम में लग गया और फिर उसने चारण से कहा कि बारहठजी, आपको ज़मीन का एक टुकड़ा १०० गज़ लम्बा और १०० गज़ चौड़ा क्या करना है? पच्चीस गज़ लम्बे और पच्चीस गज़ चौड़े चार टुकड़े लिख दूँ तो आपको कोई एतराज़ तो नहीं है? चारण ने सोचा कि एक की बजाय चार टुकड़े अच्छे रहेंगे, लड़कों में भी आपस में झगड़ा नहीं होगा और किराये पर देने में भी आसानी रहेगी। बारहठ ने एक की जगह चार टुकड़े लिख देने की स्वीकृति दे दी और मुंशी ने वैसा ही लिखकर ठाकुर के दस्तखत करवा दिये। लेकिन जब वह बाहर आया तो किसी सयाने आदमी ने बताया कि तू ठगा गया है। दस हज़ार वर्ग गज़ की जगह तुम्हें अढ़ाई हजार वर्ग गज़ जमीन ही मिली है।

● अनोखी बात

एक ठाकुर का यह नियम था कि वह किसी बारहठ को तभी खाना खिलाता था कि जब वह उसे कोई बड़ी अनोखी बात सुनाता। एक दिन एक बारहठ उसके यहाँ आया, वह ठाकुर की आदत को जानता था, अतः उसने तरकीब से खाना खाने की बात सोची। ठाकुर ने जब पूछा कि कहो, वहाँ

से आये तो बारहठ ने कहा कि आज सवेरे ही दिल्ली से चलकर सीधा यहाँ आया हूँ। ठाकुर ने चकित होकर पूछा कि इतनी देर में दिल्ली से यहाँ कैसे आ गये? इस पर बारहठ ने कहा कि मेरे पास एक ऐसा वृक्ष है जो सौ कोस प्रति घंटे की रफ्तार से चलता है, उसी पर चढ़कर आया हूँ। ठाकुर ने वृक्ष को देखने की इच्छा प्रकट की तो बारहठ ने कहा कि जंगल में अमुक स्थान पर वृक्ष कोछोड़ कर आया हूँ। इतने में बाँदी ठाकुर के लिए भोजन का थाल लेकर आई। ठाकुर वृक्ष देखने के लिये उतावला हो रहा था। इसलिए उसने बाँदी से कह दिया कि थाल एक तरफ रख दे और स्वयं घोड़े पर चढ़कर जंगल में निकल गया। बारहठ भूखा तो था ही उसने थाल पर हाथ साफ कर दिया। उधर बाँदी ने ठकुरानी से जाकर कहा कि ठाकुर साहब ने भोजन नहीं किया और घोड़े पर सवार होकर बाहर निकल गये तो ठकुरानी बारहठ के पास इसका कारण पूछने के लिए आई। बारहठ ने कह दिया कि ठाकुर साहब तुमसे नाराज़ हो गये हैं और दूसरी पत्नी लाने के लिये गये हैं। ठकुरानी ने तुरंत ही रथ जुड़वाया और ठाकुर की खोज में चली। उधर ठाकुर लौटा और उसने रथ के पहियों के निशान देखे तो पूछा कि ठकुरानी कहाँ गई है? बारहठ ने कह दिया कि पास के गाँव का ठाकुर आया था और वह ठकुरानी को रथ में बिठाकर ले गया। ठाकुर ने सुना तो उसे तैश आ गया और उसने घोड़े की बाग मोड़ दी। पीछे से ठाकुर का साला परदेश से आया तो बारहठ ने कह दिया कि तुम्हारी बहिन मर गई है और ठाकुर साहब उसे जलाने के लिये गये हैं। आगन्तुक ने यह सुना तो उसने सोचा कि मुझे भी तालाब पर चलकर मुण्डन करवा लेना चाहिये। अतः वह अपने घोड़े को वहीं बाँधकर मुण्डन करवाने के लिए चला गया। पीछे से ठकुरानी आई और उसने घोड़ा बँधा देखा तो बारहठ से पूछा कि यह नया घोड़ा किसका है? तब बारहठ ने कहा कि तुम्हारा भाई आया था और कह रहा था कि तुम्हारी माँ मर गई है। ठकुरानी ने सुना तो रोना-धोना शुरू कर दिया। पास पड़ोस की और भी बहुत-सी स्त्रियाँ आ गईं। ठाकुर का साला

लौटा और उधर ठाकुर भी लौट आया। ठाकुर ने साले का सिर मुँडा हुआ देखा तो पूछा क्या बात हुई? उधर उसने पूछा कि बाई को क्या तकलीफ हुई थी? जब सारा भेद खुला तो ठाकुर ने कहा कि मैं इस दुष्ट बारहठ को जान से मारूँगा। इस पर बारहठ ने कहा कि सरकार! आपने ही तो यह नियम बना रखा है कि कोई अनोखी बात सुनाये तो मैं उसे भोजन कराऊँगा, अन्यथा नहीं। अब बतलाइये कि यह अनोखी बात है या नहीं? तब ठाकुर ने भोजन बनवाकर उस बारहठ को खिलाया।

● बा देवै बो ले कोनी

एक सेठ अपने साथ नाई को लेकर दिसावर चला। नाई ने सेठ से यह शर्त तय कर ली कि जिस गाँव में हम जायेंगे, उस गाँव में यदि कोई नई बात देखूँगा तो उसका मतलब तुम्हें बतलाना होगा। दोनों अगले गाँव में पहुँचे तो सेठ तो सराय में रुक गया और नाई बाजार चला गया। जब वह एक घर के सामने से गुजर रहा था तो उसने देखा कि एक स्त्री एक आदमी को दो हजार रुपये दे रही है और वह किसी प्रकार लेना नहीं चाहता। नाई को यह बात अजीब सी लगी और उसने सराय में आकर सेठ से पूछा कि इस बात का मतलब मुझे समझाइये। सेठ ने बहुत टालना चाहा लेकिन नाई ने हठ पकड़ लिया तो सेठ ने कहा—

एक साहूकार के सात लड़कियाँ थीं। बाप के पूछने पर छः ने तो कह दिया कि हम आपके भाग्य का ही खा रही हैं। लेकिन सातवीं ने कहा कि मैं तो अपने भाग्य का खाती हूँ। उसके उत्तर से साहूकार बहुत रुष्ट हुआ और उसने नाई और ब्राह्मण को बुलाकर कहा कि इस लड़की की सगाई किसी ऐसे घर करके आओ कि जो पहले तो बहुत ही सम्पन्न रहा हो, लेकिन अब उस घर के लोग दाने-दाने को मुहताज हों। तलाश करने पर उन्हें एक ऐसा घर मिल गया। एक माँ अपने दो बेटों के साथ एक गंदी सी कोठरी में रहती थी। यद्यपि लड़कों का पिता किसी समय गाँव

का सबसे बड़ा धनी व्यक्ति था, लेकिन अब उसके दोनों लड़के मज़दूरी करके पेट पालते थे। वे दोनों आदमी (नाई और ब्राह्मण) जब पता लगाते हुए वहाँ पहुँचे तो घर में उन लड़कों की माँ ही थी। जब उन्होंने अपना मंतव्य बुढ़िया से कहा तो उसे हर्ष भी हुआ और आश्चर्य भी। उन दोनों ने बुढ़िया को एक सोने का टका और नारियल दे दिया और कह दिया कि अमुक दिन अपने बड़े लड़के को शादी के लिए भेज देना। जब दोनों लड़के घर आये तो उन्हें भी यह बात सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। शादी का दिन नजदीक आ गया। लेकिन उनकी बिरादरी में से कोई भी उनके साथ जाने को तैयार न हुआ। बुढ़िया ने सोने का टका भुनवाकर उन दोनों के लिए अच्छे वस्त्र बनवा दिये और उन्हें विदा कर दिया। दोनों जाकर गाँव के बाहर तालाब पर ठहर गये। शाम को वहीं सेठ के आदमी आकर उन्हें लिवा ले गए और रातों-रात मामूली तौर से शादी की रस्म अदा करके उन्हें विदा कर दिया। लड़की को कुछ भी दहेज नहीं दिया गया, उल्टे उसके बाप ने कहा कि जब तू पैदा हुई थी, तब तेरे जन्मोत्सव पर मेरे दो हजार रुपये खर्च हुए थे। लड़की को बड़ा रंज हुआ और उसने कहा कि यदि मैं लड़की के बजाय लड़का होता तो शरीर पर के वस्त्र भी यहीं डाल जाता। निदान तीनों घर आ गए। बहू ने देखा कि जिस कोठड़ी में वे लोग रह रहे थे, वह बहुत गंदी हो रही है, चारों ओर कोनों में फटे चिथड़े पड़े हैं। दूसरे दिन उसने सारे चिथड़े बाहर फेंक दिये, कोठड़ी को झाड़-बुहार के साफ किया और मिट्टी मँगवाकर उसे अच्छी तरह लीप-पोत दिया। अगले दिन उसने अपने पति और देवर से कहा कि तुम दोनों जंगल से लकड़ियाँ ले आया करो और मज़दूरी करने मत जाया करो। दोनों जंगल से बहुत सारी लकड़ियाँ तोड़कर ले आये तो उसने उन लकड़ियों को दो की बजाय चार भारों में बाँध दिया और उन चारों को बेचने से उन्हें दो रुपये मिल गए। उन दोनों को दिन भर मज़दूरी करने पर एक रुपया मिला करता था और आज दो रुपये मिल गये थे। इसलिए वे खुशी-खुशी घर आये और फिर हमेशा लकड़ी ही लाने लगे। इस प्रकार कुछ रुपये जुट गये तो बहू

ने उन्हें एक गधा ले दिया। जिससे वे अधिक लकड़ियाँ लाने लगे और उनकी आमदनी भी बढ़ गई। तब उसने बाजार से कुछ कपड़े मँगवाये और उन पर बेल-बूटे काढ़कर उन्हें फिर बाजार में बेच दिया, इससे उसे अच्छे पैसे मिले और अब वह नित्य यही काम करने लगी। इस प्रकार बहू ने काफ़ी पैसे जोड़ लिए तब एक दिन उसने अपनी सास से पूछा कि ससुरजी हमारे लिए क्या यही कोठरी छोड़ गए हैं ? तब सास ने ठंडी साँस लेते हुए कहा कि बहू, क्या कहूँ, वह सामने जो हवेली देख रही हो वह हमारी ही है लेकिन तुम्हारे ससुर के भाइयों का कुछ कर्ज हम पर है सो उन्होंने हवेली दबा रक्खी है। बहू ने सोचा कि अब इन दोनों भाइयों को कुछ पढ़ाना चाहिए सो उसने उनके लिए एक गुरु रख दिया। लकड़ी बेचकर आने के बाद दोनों खूब जी लगाकर पढ़ने लगे। एक दिन बहू ने अपने पति से कहा कि अब तुम लकड़ियाँ मत लाया करो, तुम रोज़ दरबार में जाया करो। तुम्हारा पिता नगर का सबसे धनी सेठ था, उसकी कुर्सी दरबार में अवश्य होगी, तुम उसका पता लगाओ। उसका पति अब दरबार में आने-जाने लगा। उसका देवर अभी लकड़ियाँ ही लाया करता, सो एक दिन लकड़ियों में एक मरे साँप को भी ले आया। घर आकर उसने साँप को देखा तो कोठरी की छत पर फेंक दिया। संयोग से उसी दिन एक चील रानी का नौलखाहार उठा लाई। जब वह उस छत पर से गुजर रही थी तो उसने मरे साँप को देखा, उसने हार वहीं डाल दिया और वह साँप को उठा ले गई। बहू ने देखा तो हार को उठाकर रख लिया। उधर राजा के सिपाहियों ने सारी चीलों के घोंसले छान डाले लेकिन कहीं हार का पता न लगा। दिवाली नजदीक आने लगी तो बहू ने हार अपने पति को दिया और कहा कि दरबार में जाओ तब इसे राजा को सौंप देना, राजा इनाम के लिए कहे तो कह देना कि कल निवेदन करूँगा। राजा हार पाकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मुँह माँगा इनाम सेठ के लड़के को देना चाहा लेकिन उसने कहा कि इनाम तो मैं कल माँगूंगा। घर आने पर उसकी पत्नी ने कहा कि कल राजा जब फिर इनाम माँगने के लिए कहे तो उससे पहले वचन ले लेना ताकि वह मुकर न सके।

फिर कहना कि दिवाली के दिन सिवा मेरे घर के और कहीं भी रोशनी न हो, आपके महल में भी नहीं। दूसरे दिन उसने वैसा ही किया। राजा बड़े असमंजस में पड़ गया लेकिन वचनवद्ध था, अतः उसने डोंडी पिटवादी कि दिवाली के दिन कोई भी अपने घर में रोशनी न करे। इसके अतिरिक्त राजा ने उसे और भी इनाम दिया। दूसरे ही दिन वहू ने सारा कर्ज चुका दिया और अपने ससुर की हवेली में प्रवेश किया। उसने हवेली को बुहार झाड़कर साफ करवाया। दिवाली की रात उसने बहुत बढ़िया रोशनी की। सिर्फ़ वही एक हवेली रोशनी से जगमगा रही थी और बाकी सारी नगरी अन्धकार में डूबी हुई थी। आधी रात को लक्ष्मी ने आकर दरवाजा खटखटाया तो बहू ने कहा कि तू कौन है? लक्ष्मी ने उत्तर दिया कि मैं लक्ष्मी हूँ। बहू ने कहा कि तू तो हमें छोड़कर चली गई थी, अब फिर क्यों आई है? तब लक्ष्मी ने कहा कि सारे नगर में अन्धकार ही अन्धकार छा रहा है, अतः मुझे यहीं आने दो। तब बहू ने कहा कि पहले प्रतिज्ञा करो कि फिर न जाओगी। तब लक्ष्मी ने कहा कि मैं तुम्हारे घर से नौ पीढ़ी तक न जाऊँगी। तब बहू ने दरवाजा खोल दिया और लक्ष्मी ने घर में प्रवेश किया। घर का कोना-क़ोना हीरे मोतियों से जगमगा उठा। तभी एक फटे चिथड़ों वाला बदसूरत आदमी घर से बाहर भागने लगा। बहू ने कहा कि तू कौन है? तब उसने कहा कि मैं तो दिवाला हूँ, लक्ष्मी के आने से अब इस घर में मेरा ठौर नहीं है। तब बहू ने उसकी पीठ में एक लात जमाई और कहा कि अब फिर न आना। सबेरा हुआ तो लोगों ने देखा कि उस घर की काया पलट हो गई है। राजा ने भी लड़के को दरबार में उच्च स्थान दे दिया और सब आनन्दपूर्वक रहने लगे। तब एक दिन बहू को याद आया कि तेरे बाप ने कहा था कि तेरे जन्म दिन पर मेरे दो हजार रुपये खर्च हुए थे अतः वे रुपये उसे लौटा देने चाहिएँ। अतः वह अपने बाप के घर रुपये लेकर गई और अपने बाप से कहा कि मेरे जन्म-दिन पर जो दो हजार रुपये तुमने खर्च किये थे वे ले लो। लेकिन वह ले नहीं रहा था। और उन्हीं दोनों को तुमने झगड़ते देखा है।

गोकुलिये गुसाइयों की लीला

कहते हैं कि एक बार जोधपुर में गोकुलिया गुसाइयों का बहुत जोर था। स्वामी दयानन्द सरस्वती जोधपुर आये तो उन्होंने देखा कि ये लोग धर्म की आड़ में अनाचार फैला रहे हैं। उन्होंने महाराजा से इसकी चर्चा की। महाराजा ने उनके प्रधान को बुलाकर पूछा कि आप लोग क्या-क्या करते हैं? प्रधान ने कहा कि श्रीकृष्ण की लीलायें किया करते हैं, जैसे कृष्ण की बाललीला, रासलीला आदि। तब महाराज ने फिर पूछा कि चीर-हरण लीला भी करते हो न? गुसाईं ने कहा कि अन्नदाता, कृष्णलीला में तो उनकी सभी लीलायें चलती हैं। तब महाराजा ने फिर पूछा कि तब तो गोवर्द्धन लीला भी करते ही होंगे? लेकिन गोवर्द्धन तो बहुत बड़ा पर्वत होगा, तुम सामने खड़ी इस छोटी सी पहाड़ी को ही अपनी उँगली पर उठा-कर दिखलाओ। गुसाईं ने अपनी असमर्थता प्रकट की तो महाराज ने सरोष कहा कि गुसाईं जी, चीर-हरण-लीला करना ही आसान है, गोवर्द्धन-लीला करना नहीं। खैरियत इसी में है कि आप सब लोग यहाँ से कूच कर जाएँ।

क्यांको मोट्यार है? परलै बासको है

एक ननद और भौजाई गाँव के तालाब में स्नान कर रही थीं। भौजाई ने किसी आदमी को उधर आते देखा तो कहा कि बाईजी, मरद आ रहा है। तब उसकी ननद ने कहा कि यह काहे का मरद है! नहाती क्यों नहीं! वह तो किसी दूसरे मुहल्ले का रहने वाला है। कोई जान पहिचान का थोड़े ही है जो उससे शर्म की जाए।

स्याणो आदमी लीक कोंनी पीटै

एक मन्दिर में एक अन्धा पुजारी पूजा किया करता था। मन्दिर में विशेष आय न थी। पुजारी अपने लिए जो रोटियाँ बनाता उन्हें ही भगवान् के आगे रखकर स्वयं खा लेता। मन्दिर में एक बड़ा बिलाव हिल गया और ज्यों ही अन्धा भगवान के आगे रोटियाँ रखकर हाथ जोड़ता त्यों ही बिलाव रोटियों को उठा कर भाग जाता। पुजारी हैरान हो गया, आखिर

उसने एक तरकीब निकाली कि रोटियाँ रखकर उनमें एक काठ की खूँटी गाड़ दिया करता जिससे कि बिलाव उन्हें उठाकर न भाग सके। तभी से उस मन्दिर में यह प्रथा पड़ गई कि भगवान् के जो भोग लगाया जाए उसमें खूँटी अवश्य गाड़ी जाए। उस पुजारी की मृत्यु पर जब दूसरा पुजारी आया तो उसने भी प्रथा के अनुसार रोटियों में खूँटी गाड़ना शुरू कर दिया। फिर तीसरा पुजारी आया, वह कुछ समझदार था। उसने बड़े-बूढ़ों से पूछा कि यह क्या प्रथा है? तब किसी जानकार बूढ़े ने उसे बतलाया कि यह प्रथा किसलिए चली। तब उसने कहा कि वे बाबाजी तो अन्धे थे अतः वे ऐसा करते थे लेकिन मेरे तो मुँह पर आँखें हैं, मैं भला लकीर का फ़कीर क्यों बनूँ। और उसी दिन से उसने उस प्रथा को तोड़ दिया।

● धन कै जोर पर कूदै

एक मढ़ी में एक साधु रहता था। एक दिन उस साधु के पास कोई दूसरा साधु उससे मिलने के लिए आया। रात को जब दोनों खा पीकर सो गए तो आने वाले साधु ने कोई बात कहनी शुरू की। लेकिन मढ़ी वाला साधु उसकी बात को ध्यान से नहीं सुन रहा था। बात यह थी कि उसने सबेरे के खाने के लिए कुछ रोटियाँ बाँध कर खूँटी से लटका रक्खी थीं और एक चुहिया उछल-उछलकर रोटियों तक पहुँचना चाहती थी। साधु अपने डंडे से उसे बार-बार भगा रहा था। आगन्तुक साधु को उसकी उपेक्षा अच्छी न लगी। लेकिन जब उसे उपेक्षा का कारण जान पड़ा तब उसने कहा कि इस चुहिया का बिल खोदना चाहिए, अवश्य ही बिल में कुछ धन गड़ा हुआ है, जिसके बल पर वह कूद रही है। बिल खोदा गया तो उसमें कुछ सोने के गहने मिले। तब आगन्तुक साधु ने कहा कि अब तुम निश्चिन्त हो जाओ, अब वह चुहिया कदापि रोटियों तक नहीं पहुँच सकेगी, जिस धन के बल पर वह कूद रही थी वह हमने निकाल लिया है।

● लड्डू पर भगवान को भी मन चालै

एक बार मोतीचूर का लड्डू विष्णु भगवान् के पास गया और उसने

पुकार की कि प्रभो ! मुझे जो भी देखता है खाने के लिए लालायित हो जाता है। अपनी सुरक्षा का साधन मेरे पास नहीं है। तब भगवान् ने कहा कि भाई ! मन तो मेरा भी ललचा रहा है, इसलिए तुम जरा दूर हटकर बात करो। तब लड्डू सोचने लगा कि यह तो नीचे से लेकर ऊपर तक एक-सा ही हाल है, कहीं भी निस्तार नहीं।

बाँकीदास अर मानसिंह

जोधपुर नरेश मानसिंहजी ने कविवर बाँकीदासजी की स्पष्टवादिता से रुष्ट होकर उन्हें दो बार अपने राज्य से बाहर जाने का हुक्म दिया था, लेकिन उनकी गुण-ग्राहकता ने उन्हें फिर वहीं बुला लिया। महाराजा ने प्रसन्न होकर एक बार उन्हें लाख-पसाव भी दिया था। कविराज की प्रशंसा में महाराज ने एक दिन उनसे कहा

बाँका थारी बाँक नैं काढ़ सक्यो ना कोय।

(हे बांकी दास तुम्हारे बांकपन को कोई नहीं निकाल सका)

बीच में ही बाँकीदासजी बोल उठे

लाख पसाव तो एक दियो, देस निकाला दोय।

(आपने लाख-पसाव तो एक बार ही दिया और देशनिकाले दो बार दे दिये)

महाराजा सुनकर शर्मिन्दा हो गए।

टक्कै हाली को झूंझणियों बाजसी

एक आदमी मेले में जा रहा था। किसी स्त्री ने कहा मेरे लड़के के लिए मेले से अमुक चीज लाना, किसी ने कहा कि मेरी लड़की के लिए अमुक चीज़ लाना। लेकिन पैसा एक ने भी न दिया। तब एक स्त्री ने उसके हाथ में टका देते हुए कहा कि मेर नन्हें के लिए एक झुनझुना लेते आना। तब उसने कहा कि तू ने टका दिया है सो तेरा नन्हा ही झुनझुना बजायेगा। अर्थात् बिना पैसे दिये अन्य स्त्रियों ने जो चीजें मंगाई हैं वे नहीं आयेंगी, और तुम्हारे बेटे के लिए झुनझुना अवश्य आएगा।

● हूँ अर हुँकार दास

एक मढ़ी में एक बाबाजी रहते थे। जब गाँव में दक्षिणा आदि की कोई चिट्ठी बँटती तो बाबाजी चालाकी से दुगनी चिट्ठियाँ हथिया लिया करते, वे कहते कि हम इतने आदमी हैं :—

हूँ अर हुँकार दास, चेलो गोपालदास ।
मैं अर बा, छोरो अर छोरै की मा
अर मन्नैं थे जाणो ई हो ।

हूं याने मैं और हुँकारदास याने हुंकारा देने वाला, चेला गोपाल दास, मैं और मेरी पत्नी, लड़का और लड़के की माँ और मुझे तो तुम जानते ही हो।

सिंहा सिर नीचा किया

मल्हारराव होल्कर की फौज चित्तौड़ के पास डेरे डाले पड़ी थी। राजपूत राजे अपने को लड़ने में असमर्थ पाकर होल्कर के फौजी अफसरों से किसी प्रकार सन्धि करने का प्रयत्न कर रहे थे । जिस वक्त बातचीत चल रही थी संयोग से उसी वक्त एक चारण घोड़े पर चढ़कर उधर से गुजर रहा था। पूछने पर जब उसे राजपूत राजाओं की अकर्मण्यता का पता चला तो वह उनके तम्बुओं के पास गया और उसने ज़ोर से यह दोहा कहा—

सिंहा सिर नीचा किया, गाडर करै गिलार।
अधिपतियाँ सिर ओढ़णी, माथै पाग मल्हार ।।

(सिंहों ने सिर नीचे कर लिए हैं और भेड़ अहंकार जता रही है। राजाओं के सिरों पर ओढ़नियाँ हैं और मल्हार राव के सिर पर पगड़ी है।)

दोहे को सुनकर राजपूतों ने अपना आपा सँभाला, बातचीत बन्द कर दी और उन्होंने होल्कर की फ़ौज को मार भगाया।

इसी राणियां कई आवै

जोधपुर नरेश मानसिंह जी ने एक बार सावन का उत्सव मनाने के

लिए सूरसागर पर एक बड़ा आयोजन किया । महारानियाँ भी उत्सव में शामिल होने के लिए पालकियों में बैठ-बैठ कर चल पड़ीं । एक चौराहे पर एक महारानी और कवि बाँकीदासजी की पालकी टकरा गई । महारानी की पालकी के साथ चलने वाले घुड़सवारों ने बाँकीदासजी की पालकी के कहारों को टोका कि पहले महारानी की पालकी निकल जाए फिर तुम अपनी पालकी लाना । लेकिन बाँकीदासजी ने कहा कि पालकी को रोको मत, आगे बढ़े चलो, ऐसी रानियाँ कई आती हैं । महारानी को बड़ा बुरा लगा और उसने निश्चय किया कि महाराज से इस उद्दण्ड को अवश्य दण्ड दिलाऊँगी । सूरसागर पहुँच कर जब रानी ने महाराजा से अपने अपमान की बात कही तो महाराजा ने यह कहकर टाल दिया कि यहाँ तो हम आनन्द मनाने आये हैं । जब राजधानी चलें तब फ़रियाद करना । उस वक्त तो रानी मन मारकर रह गई लेकिन राजधानी लौटते ही उसने फिर महाराजा से फ़रियाद की । महाराजा उस वक्त महल की छत पर सावन की हल्की फुहारों का आनन्द लेते हुए बाँकीदासजी का रचा हुआ एक दोहा गुनगुना रहे थे—

केहर तणी कलाइयाँ, भणणाहट भमराँह ।
भोजी गजसिंह भांजतां, मद सौरभ उभराँह ॥

(हाथी का शिकार करते समय शेर के पंजे हाथी के मद में शराबोर हो गये थे और उसी मद की गंध से आकर्षित होकर शेर के पंजों के चारों ओर भौंरे मँडरा रहे हैं ।)

महाराजा ने महारानी से पूछा कि क्या ऐसा दोहा कहने वाले कवि को दण्ड देना चाहती हो ? महारानी ने कहा कि हाँ, क्योंकि उसने उद्दण्डतापूर्वक यह कहा था कि ऐसी रानियाँ कई आती हैं । तब महाराजा ने कहा कि कवि ने ठीक ही तो कहा था, यदि मैं चाहूँ तो तुम जैसी कई रानियाँ ला सकता हूँ, लेकिन ऐसा विद्वान् कवि मुझे दूसरा नहीं मिल सकता, अतः इस विषय में अब चुप रहना ही अच्छा है । निदान रानी मन मसोसकर ही रह गई ।

● देपालदे

देपालदे अमरकोट का सोढ़ा था। वह अपनी ससुराल (जैसलमेर) से गौना करके लौट रहा था। रथ में उसकी पत्नी थी तथा साथ में और बहुत से सेवक थे। रथ आगे-आगे चल रहा था। देपालदे स्वयं घोड़े पर चढ़ा पीछे-पीछे आ रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक चारण खेत में हल चला रहा है। उसके पास एक ही बैल है और दूसरे बैल की जगह उसने अपनी पत्नी को जोत रक्खा है। सूर्य मध्य-आकाश में पहुँच गया था और स्त्री के माथे से पसीने की बूँदें चलकर जमीन तक आ रही थीं। देपालदे उनके नजदीक गया और उसने चारण से पूछा कि क्या तुम्हारे पास दूसरा बैल नहीं है? तब चारण ने कहा कि नहीं। तब देपालदे ने कहा कि मेरा रथ आगे जा रहा है, तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें दूसरा बैल दे दूँ। चारण ने जाने से इन्कार किया तो देपालदे ने कहा कि अपनी स्त्री को भेज दो, वह बैल ले आयेगी। तब चारण ने कहा कि इतनी देर हल चलना बंद हो जायेगा और जमीन सूख जायेगी। तब देपालदे ने कहा कि तब तक मैं तुम्हारी स्त्री के स्थान पर हल खींचूँगा। चारण की स्त्री बैल लाने गई तो देपालदे हल में जुत गया। चारणी ने जाकर कहा कि ठाकुर ने एक बैल देने के लिए कहा है। ठकुरानी ने सुना तो बोली कि इस बैल के साथ तुम्हारा बैल चल नहीं सकेगा, अतः दोनों बैलों को ही ले जाओ। चारणी दोनों बैलों को ले आई तो देपालदे को अधिक संतोष हुआ। वह हल छोड़कर घोड़े पर सवार हुआ और आगे बढ़ा। फिर उसने नये बैल मँगवाये और रथ जोतकर अपने घर गया। इधर जब फसल पकी तो जितनी दूर में देपालदे ने हल से लकीरें खिंचाई थीं उतनी दूर में जितने सिट्टे पके उनमें अनाज के दानों की बजाय मोती निकले, तब चारण ने कहा—

जौ जाणूं जिणवार निज भल मोती नीपजै।
बाहूँ तो बड बार दी हूं सूँ, देपालदे ॥

(हे देपालदे यदि मुझे उस वक्त यह पता होता कि तुम्हारे हल खींचने से मोती पैदा होंगे तो मैं तुम्हारे से ही बहुत देर तक हल खिंचवाता)

दोनूं एकसा मिलग्या

जोधपुर महाराज अभयसिंहजी ने अपने पिता को मार कर जोधपुर की गद्दी प्राप्त की थी। और जयपुर नरेश जयसिंहजी ने अपने पुत्र को मरवा दिया था। एक बार दोनों राजे पुष्कर में एक जगह मिले। कविराजा करणीदानजी को कुछ सुनाने का हुक्म हुआ तो कविराजा ने दोनों को ही खरी-खरी सुनाई—

पत जैपर जोधाणपत, दोनूं थाप उथाप।
कूरम मार्‌यो डीकरो, कमधज मार्‌यो बाप॥

(जयपुर और जोधपुर दोनों के अधीश्वर एक जैसे ही हैं कूरम अर्थात् कछवाहा राजा जयसिंह ने अपने पुत्र की हत्या करवाई और जोधपुर के राजा ने अपने पिता की हत्या की। दोनों में से किसी का भी यश कम नहीं है।)

कायथ को हिसाब

एक कायस्थ अपने परिवार सहित किसी दूसरे गांव जा रहा था। रास्ते में एक नदी पड़ी। कायस्थ ने सोचा कि पहले नदी की गहराई माप लेनी चाहिए और तब लड़के-लड़कियों को नदी पार करवाना ठीक रहेगा। कायस्थ ने अपना फीता निकाला और नदी की गहराई मापने लगा। किसी जगह पानी दो फुट गहरा था तो किसी जगह चार फुट और किसी जगह पाँच फुट। उसने सारा हिसाब लगाया तो गहराई का औसत तीन फुट निकला। कायस्थ ने सोचा कि इतने पानी में लड़के-लड़कियाँ नहीं डूब सकेंगे, अतः सबको नदी पार कराने लगा, लेकिन जहाँ पानी की गहराई पाँच फुट थी वहाँ जाकर सारे बालक डूब गए। तब कायस्थ ने सोचा कि कहीं हिसाब लगाने में भूल हो गई है। अतः उसने फिर हिसाब लगाया तो गहराई का औसत वही निकला, तब उसे बड़ी हैरानी हुई और बोला—

हिसाब बैठे ज्यूं को त्यूं।
छोरा छोरी डूब्या क्यूं।

(हिसाब ज्यों का त्यों बैठता है फिर लड़के लड़की क्योंकर डूब गए ?)

● हठीला, हठ छोड़ दे

एक शेरनी को जब भूख लगी तो उसने शेर से कहा कि भूख लगी है, जाकर शिकार कर लाओ। तब शेर उठा, उसने एक झटके के साथ अपने शरीर को झाड़ा, उसकी पूँछ खड़ी हो गई और आँखें लाल हो गई। उसने एक दहाड़ लगाई तथा एक ओर को दौड़ गया। थोड़ी ही देर में वह एक जंगली भैंसे को मार कर ले आया। एक गीदड़ ने यह सब देखा तो उसने सोचा कि अब शिकार करने की अटकल मुझे भी आ गई है। वह दौड़ा-दौड़ा अपनी घरवाली के पास गया और बोला कि क्यों भूख लगी है क्या ? यदि भूख लगी हो तो मुझसे कहो, मैं आज शिकार करने की विद्या सीखकर आया हूँ। उसके हाँ करने पर गीदड़ ने कहा कि देखो मेरी पूँछ हवा में सीधी खड़ी हो गई है न ? और मेरी आँखें लाल हो गई हैं न ? तब सियारी ने कहा कि अभी तो पूँछ नीचे लटक रही है और आँखों की पुतलियाँ सफेद पड़ी हैं, तब गीदड़ ने उसे फटकारा और कहा कि तुम्हें इतनी भी तमीज़ नहीं। तब सियारी ने कहा कि नाराज़ क्यों होते हो ? तुम जैसा कहोगे मैं हाँ भर लूँगी। तब गीदड़ शिकार की खोज में दौड़ा। थोड़ी ही दूर पर एक ऊँट चर रहा था, गीदड़ ने झाड़ में घुसकर उसके मुँह पर अपना पंजा जमाया ? ऊँट ने अपनी गर्दन ऊपर को उठाई तो गीदड़सिंहजी जमीन से पाँच हाथ ऊपर हवा में लटक गये। तब सियारी ने अपने पति से शिकार का हठ छोड़ने के लिए कहा, "हठीला, हठ छोड़ दे" तब सियार ने कहा कि मैं हठ तो छोड़ दूँ, लेकिन कम्बख्त ने तो मुझे ज़मीन से पाँच हाथ ऊपर उठा रक्खा है, कहीं ज़मीन पर पैर भी तो टिकें :

सुन्दर का बोल मेरै मन भावै।
पण धरती पर पग टेकण भी पावै॥

(सुन्दरी के बोल मेरे मन को बड़े अच्छे लग रहे हैं लेकिन धरती पर पैर टिकने पाएं तब तो शिकार करने का हठ छोड़ूं)

● कैं घड़ बैठै ऊंट

एक दिन एक ऊँट माली की बाड़ी में घुस गया और उसके बूटे चरने लगा। कुछ बूटे उसने खाये और कुछ तोड़ डाले। माली की लड़की उस वक्त बाड़ी में थी, उसे बड़ा रंज हुआ, लेकिन सामने ही कुएँ पर कुम्हार की लड़की खड़ी थी वह खिलखिला कर हँसने लगी। तब माली की लड़की ने कहा—

गड़ गड़ हँसै कुम्हार की,
माली की का चर रह्यो बूंट।
तूं के हँसै कुम्हार की,
कैं घड़ बैठै ऊंट॥

(ऊँट माली की लड़की के बूटों को चर रहा है यह देखकर कुम्हार की लड़की हँस रही है। लेकिन कुम्हार की बेटी तू क्या हँस रही है, न जाने ऊँट किस करवट बैठे।)

तब कुम्हार की लड़की ने कहा कि ऊँट मेरा क्या खायेगा—

सुख सोवै कुम्हार की, चोर न मटिया ले।
गधो पगाणै बाँध कर, छाज सिरहाणैं दे।

(कुम्हार की तो अपने गधे को पैताने की ओर बाँधकर तथा अपने छाज को सिरहाने देकर सुख पूर्वक सोती है उसकी मिट्टी को चोर भी नहीं चुराता)

लेकिन संयोग ऐसा हुआ कि ऊँट बाड़ी से निकलकर कुम्हार के आँवे की तरफ चला गया जहाँ कुम्हार ने बहुत सारे बरतन पकाने के लिए इकट्ठे कर रक्खे थे और वहीं लेट लगाने लगा। कुम्हार के सारे बरतन फूट गये।

● क़ाज़ी और तेली

एक बार क़ाज़ी और तेली के बैल आपस में लड़ पड़े। क़ाज़ी के बैल ने तेली के बैल को मार दिया। लेकिन काज़ी को ख़बर मिली कि तुम्हारे बैल को तेली के बैल ने मार डाला है, तब काज़ी ने फैसला दिया—

लाल किताब उठ बोली यूं।
तेली बलद लड़ाया क्यूं॥

(लाल किताब यों बोल उठी कि तेली ने बैलों को क्यों लड़ाया। उसने खल खिला खिलाकर अपने बैल को मुस्टंडा कर दिया। इसलिए तेली बैल के बदले का बैल दे और पच्चीस रुपये दंडस्वरूप और दे)

खुवा कै खल कर दिया मुसटंड,
बलद का बलद पच्चीस रिपिया डंड॥

लेकिन जब काज़ीजी को सही ख़बर मिली तो उन्होंने फ़ैसला बदल दिया—

बलद का बलद पर पड़ग्या डाव,
इसका क्या करै काज़ी न्याव।

(बैल का बैल पर दाँव पड़ गया, इसका भला काजी क्या न्याय करे)

● तोला बड़ा क रत्ता

एक ठाकुर ने एक सुनार को अपने यहाँ गहना गढ़ने के लिए बुलवाया। ठाकुर की बाई हर वक्त सुनार के पास बैठी एक टक उसे देखा करती थी। सुनार ने समझा कि बाई बहुत कड़ी निगरानी रखती है, इसलिए उसने खोट नहीं मिलाया। जब गहना गढ़ा जा चुका तो बाई ने पूछा कि सोनीजी! तोला बड़ा या रत्ता? (वजन में तोला अधिक होता है या रत्ती) तब सुनार ने जान लिया कि यह तो यों ही आँखें फाड़ा करती थी अतः बोला, "बाईजी का तो फेर घड़ावण का मत्ता" (बाई जी का विचार तो फिर से गहना गढवाने का है)। उसने ठाकुर से कहा कि गहना मेरे मन मुआफ़िक

नहीं गढ़ा गया है अतः दुबारा गढ़ूँगा। दूसरी बार जब सुनार ने गहना बनाया तो उसने मनचाहा खोट उसमें मिला दिया।

● न नर, न मादा

एक मछुआ एक राजा के पास बहुत सुन्दर मछली पकड़कर लाया। राजा मछली को देखकर बहुत खुश हुआ और उसने कारिन्दे से कहा कि इसे सौ रुपये पुरस्कार स्वरूप दे दो। कारिन्दे को ईर्ष्या हुई और उसने राजा से कहा कि हुज़ूर! चार आने की मछली के लिए आप सौ रुपये क्यों दे रहे हैं? आप उससे पूछिये कि यह मछली नर है या मादा, यदि यह नर कहे तो उससे कहिये कि इसकी मादा भी लाओ और यदि मादा बतलाये तो कहिए कि इसकी जोड़ी का नर लाओ, तब पुरस्कार मिलेगा। राजा ने इच्छा न होते हुए भी कारिन्दे की बात मछुए से कही। तब मछुए ने हाथ जोड़कर कहा कि अन्नदाता! यह मछली न नर है, न मादा, यह तो नपुंसक है। राजा उसके उत्तर से बहुत खुश हुआ और उसे अपने सामने दो सौ रुपये दिलवाकर विदा किया।

● बुग और गादड़ो

एक गीदड़ के शरीर पर एक बुग चिपक गई। गीदड़ इधर-उधर बहुत दौड़ा, लेकिन बुग टस से मस न हुई। तब गीदड़ ने तरकीब से काम निकालने की सोची और उसने बुग की बड़ाई करनी शुरू कर दी। गीदड़ ने कहा, "बुग मौसी! तुम मुझे बड़े भाग्य से मिली हो, तुम हर वक्त मेरी रखवाली करोगी, यदि मैं सोया हूँगा और सिंह मुझ पर झपटेगा तो तुम मुझे तुरंत सावधान कर दोगी।" बुग ने कहा कि तुमने तो मुझे गिराने की बहुत कोशिश की थी लेकिन तुम्हारी एक न चली इस पर तो गीदड़ ने कहा कि नहीं मौसी! मैं तो तुम्हें जंगल की सैर करा रहा था। यों बातें करते-करते गीदड़ अपनी माँद के पास पहुँच गया और बोला, "बुग मौसी! मैं जरा लेट लगा लूँ। तब तक तुम इस छाने (उपले) के चारों ओर कुछ चक्कर

काट लो।" बुग ने गीदड़ की बात मान ली और उसकी पीठ से उतरकर उपले के चक्कर काटने लगी। अवसर पाकर गीदड़ अपनी माँद में घुस गया, जहाँ अँधेरा होने के कारण बुग नहीं घुस सकती थी, तब किसी ने कहा--

बुग छाणै बैठाय कै जम्बुक छिबकी जाण।
मेल घसक मनवार की खिसक गये खुरसाण॥

(चतुर गीदड़ ने बुगकी झूठी मनुहार करने की गप लगाकर उसे उपले पर बैठा दिया और स्वयं खिसक गया)

● जल्लाद औरत

एक जाट के बेटे की बहू भैंस दुह रही थी। तभी एक काला नाग उसके पास से गुज़रा। उसने भैंस दुहते-दुहते ही काले नाग को अपनी एड़ी से कुचलकर मार डाला और भैंस दुह लेने पर उसे एक लकड़ी से उठाकर घूरे पर फेंक आई और फिर घर में चली गई। जाट ने सारी घटना देखी और उसे बहू के पराक्रम पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि बहू फ़ुरसत के समय अपनी सास-ननद के सामने अपने बल का बखान अवश्य करेगी। लेकिन कई दिन निकल गये और बात आई-गई हो गई। बहू ने कोई ज़िक्र नहीं किया, तब जाट ने सोचा कि यह स्त्री तो बड़ी क्रूर है। बहुत संभव है कि यह पति से थोड़ी सी कहासुनी हो जाने पर ही रात को सोते में उसे मार डाले। यह सोचकर जाट एक बारगी ही काँप गया और उसने उसी वक्त अपनी पुत्रवधू को घर से निकाल दिया। वह घर से निकलकर दूसरे गाँव की ओर चल दी। उस गाँव के एक जाट की औरत मर गई थी और कुछ लोग उसे जलाकर मरघट से वापिस जा रहे थे। रास्ते में उस औरत को खड़ी देखकर उन्होंने पूछा कि तुम कौन हो? तब उस औरत ने कहा कि मैं एक जाट की लड़की हूँ और एक जाट के घर ही ब्याही थी, लेकिन अब मेरा कोई नहीं है, सर्वथा एकाकी हूँ। वे लोग उसे गाँव में अपने साथ ले गये और जिसकी औरत मर गई थी, उस जाट से उसका नाता कर दिया। जब

कुछ दिन बीत गये तो एक दिन जाट ने गुस्से में आकर अपनी औरत को कुछ कह दिया। उसी रात को जाटनी ने सोते में अपने पति को गँड़ासे से मार डाला और वहीं झोंपड़ी में एक गड्ढा खोदकर उसे गाड़ दिया। सवेरे घर के अन्य लोगों ने पूछा तो जाटनी ने कह दिया कि मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम कि वह कहाँ गया। उन लोगों ने बहुत तलाश की लेकिन जाट का कोई पता ठिकाना नहीं लगा। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे लोग उसी जाट के गाँव में पहुँचे, जिसने उस औरत को निकाल दिया था। बातचीत के सिलसिले में उस जाट ने उन लोगों से पूछा कि कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि वह घरवालों से खटपट करके अपनी ससुराल चला गया हो? तब उन लोगों ने कहा कि उसके ससुराल तो है ही नहीं जाट के दुबारा पूछने पर उन लोगों ने वह सारा किस्सा बतलाया कि किस प्रकार एक राह चलती औरत से उसका विवाह कर दिया गया था। जाट ने अनुमान लगाया कि हो न हो यह वही औरत है जिसे उसने अपने घर से निकाला था और अवश्य उसने ही अपने पति को काटकर वहीं कहीं गाड़ दिया है। तब उसने उन लोगों से कहा कि घर जाकर उस जगह की छान-बीन करो जहाँ वह रात को सोया करता था। वे लोग अपने गाँव चले आये और घर आकर उस झोंपड़ी के आँगन को खोदने पर उन्हें लाश मिल गई। पर अब क्या हो सकता था? उन्होंने भी उस जल्लाद औरत को घर से बाहर निकाल दिया।

खरो-खोटो परखाल्यो

एक चमार और एक सुनार साथ-साथ जा रहे थे। रास्ते में उन्हें दो लुटेरे मिल गये। सुनार तो शीघ्रता से सरकंडों के एक ढेर में छुप गया लेकिन चमार को उन लोगों ने पकड़ लिया। चमार के पास कुल एक रुपया मिला, सो उन लोगों ने छीन लिया। तब चमार ने सोचा कि मैं तो लुट गया, लेकिन सुनार बच गया है। अतः सुनार को पकड़वाने की नीयत से उसने लुटेरों से कहा कि देखो भाई, सरकंडों में सुनार बैठा है, खोटा-खरा उससे परखवा लेना, फिर मैं जिम्मेदार नहीं हूँ। तब उन लोगों ने सरकंडों में छुपे हुए सुनार

को जा पकड़ा और उसके पास जो कुछ मिला, लेकर चलते बने। तब चमार को भी सन्तोष हो गया।

● भाट अर चारण

एक भाट और एक चारण में विवाद हो गया। भाट ने चारण को नीचा दिखाने के लिए कहा—

चारण, चूरण, चींचड़ी, खटमल जैया जूँ।
मैं बूझूं करतार नैं इता बणाया क्यूँ ?

(मैं ईश्वर से पूछता हूँ कि हे करतार, तू ने चारण, चमूने, चींचड़े, खटमल जैया और जूँ आदि निरर्थक जीवों की रचना क्यों की ?)

तब चारण ने उत्तर दिया—

चारण, चंवर, चतुर नर गढ़पतियाँ कै होय।
भाट, टाट, गाडर, गिंडक सब कोई कै होय ॥

(भाट, बकरी, भेड़ और कुत्ते ये तो हर किसी के भी होते हैं लेकिन चारण, चँवर और चतुर मनुष्य राजाओं के यहाँ ही होते हैं)

भाट सुनकर चुप हो गया।

● तीनूं ई आग्या ?

एक अंधी बुढ़िया के तीन दौहित्र थे। एक बार एक दौहित्र अपनी नानी के घर गया। उसका कद बहुत लम्बा था। अपनी नानी के पास उकड़ूँ बैठा हुआ था तो नानी ने उसके सिर और घुटनों पर हाथ फरते हुए पूछा कि बेटा, तीनों ही आ गए हो क्या ? तब उसने कहा कि नहीं नानी ! ये दो तो मेरे घुटने हैं, मैं तो अकेला ही आया हूँ। तब उसकी नानी ने आश्चर्यचकित होकर कहा कि मर निपूते ! कहीं इतने बड़े भी घुटने हुआ करते हैं।

● सीली हो सपूती हो

राजस्थान के रिवाज के अनुसार जब एक औरत किसी बुढ़िया के

पैरों लगी तो बुढ़िया ने उसे आसीस देते हुए कहा—"सीली हो सपूती हो, सात पूत की माँ हो।" बुढ़िया ने उसे सात बेटों की माँ होने का आशीर्वाद दिया लेकिन उस औरत के नौ बेटे तो पहले से ही थे, इसलिए उसने नाराज़ होते हुए कहा कि आप मुझे गाली क्यों देती हैं ? मेरे नौ पुत्र तो पहले ही हैं, क्या तुम उनमें से दो को मारना चाहती हो ?

● रंडुड़ो और घेसलो

एक जाट के पास दो बैल थे। एक का नाम था 'रंडुड़ा' और दूसरे का नाम था 'घेसला'। जाट की छोटी बच्ची का नाम 'भोभरड़ी' था। एक दिन एक बटाऊ जाट के घर आया। शाम हो गई थी और जाट खेत से आ गया था। उसने जाटनी से पुकारकर कहा कि आज रंडुड़ा (मोटा रस्सा) और 'घेसला' को तैयार कर रखना। बटाऊ ने सोचा कि जाट मेरे लिए ही 'रंडुड़ा' और 'घेसला' (मोटा लट्ठ) तैयार करने को कहता है। अतः वह एक खारी के नीचे छिप गया। जाट की स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरे पास तो भोभरड़ी (गर्म राख) है। तब जाट ने कहा कि 'भोभरड़ी' को खारी में डाल दे। इतना सुनते ही बटाऊ वहाँ से निकलकर भागा। जाट ने बटाऊ को भागते हुए देखा तो वह उसके पीछे यह कहता हुआ दौड़ा कि तुम्हें खाये बिना न जाने दूँगा। बटाऊ ने समझा कि जाट मुझे ही खाना चाहता है। अतः वह और भी जोर से भागने लगा और पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत भी न कर सका।

● जाट को गरू

दो भाई एक जाट के कुछ रुपये माँगते थे। जब एक भाई रुपये माँगने के लिए जाट के घर गया तो जाटनी ने कह दिया कि जाट खेत गया है और खाने के लिए उसे एक अधपकी सी रोटी और 'राबड़ी' दे दी। इस प्रकार का खाना देखकर वह बिना कुछ खाये-पीये ही लौट गया। तब दूसरे भाई ने कहा कि इस बार मैं जाता हूँ। जाटनी ने उसी प्रकार इसे भी टरकाना चाहा, लेकिन उसने उस अधपकी रोटी को बड़े स्वाद से खाते हुए कहा कि ऐसी

बढ़िया रोटी तो मैंने आज तक कभी नहीं खाई। यदि साल भर भी इस तरह की रोटी खाता रहूँ तो भी मन न भरे। वह दो तीन दिन वहीं टिका रहा। तब जाटनी ने सोचा कि यह निगोड़ा तो सचमुच ही नहीं टलेगा। तब वह जाट के पास खेत में गई और उससे कहा कि उस दुष्ट का मन तो यहीं लग गया है, मुझसे रोजाना पीस-पोकर उसे नहीं खिलाया जायेगा। इसलिए उसे रुपये दे-.दिलाकर विदा करो। तब जाट घर आया और उसे रुपये देकर उससे अपना पीछा छुड़ाया।

● लुगाई अर भाड़ेती

एक औरत ने किसी दूसरी जगह जाने के लिए एक ऊँट किराये पर किया। ऊँट वाले ने सिर्फ एक टूटा-सा पलान ऊँट पर डाल दिया। न उसके पास तंग था न नकेल। तब उस स्त्री ने कहा—

तंग नीं, तोरण नीं, मूरी की नीं जात।
रामार्‌या भाड़ेती, तेरी आगै जातां बात॥

निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचकर उसने ऊँट वाले को दो लूखी-सूखी रोटियाँ पकड़ा दीं और स्वयं घी में रोटियाँ चूरकर खाने लगी। तब ऊँट वाले ने सोचा कि इसने बदला तो खूब लिया है, लेकिन लौटते वक्त देखूँगा। लौटती बार जब ऊँट टीले से नीचे उतर रहा था तब ऊँट वाले ने पीछे से पलान खिसका दिया और वह औरत ऊँट की गर्दन पर से होती हुई नीचे गिर पड़ी। तब ऊँट वाले ने कहा—

हाथ टूट्यो, चूड़ो फूट्यो, नाड़ ऊपर कै चाली।
तूं घूंघट में घी घसकायो, मन्नै लूखी घाली॥

(तू ने खुद तो घूंघट के भीतर भीतर खूब घी सरकाया और मुझे रूखी सूखी रोटी दी। उसी का यह फल है कि तेरा हाथ टूट गया, चूड़ा फूट गया और तू ऊँट की गर्दन पर से होती हुई नीचे आ गिरी।)

पनजी अर मंगलजी

नवलगढ़ ठिकाने में पनजी नाम का एक बीदावत राजपूत रहता था। आये-गये को खिलाने पिलाने का काम उसके जिम्मे था। एक बार मंगलजी नाम का एक बारहठ वहाँ आया और उसने बड़प्पन जताते हुए कहा कि आज तो ऐसा सुहावना दिन है कि एक हाथ में तो वह हो और दूसरे हाथ में वह हो। उसका मतलब शराब और पके माँस से था। पनजी को उसका रौब अच्छा न लगा, अतः उसने कहा कि एक हाथ में तो वह हो (तुम्हारी चोटी हो) और दूसरे हाथ में वह हो (दूसरे हाथ में जूता हो) तब कैसा रहे? बातों-बातों में बात बढ़ गई। तब वहाँ बैठे किसी अन्य व्यक्ति ने मंगलजी को समझाया —

गरब करै मत मंगलजी, धर धरती को ध्यान।
बीदावत नर बाँकड़ा, तेरी सट दे लेले स्यान॥

(हे मंगल जी, तू घमंड न कर और स्थान का ध्यान रख। बीदावत सरदार बड़ा बाँकुरा है, वह झट से तेरी इज्ज़त खो देगा)

लेकिन मंगलजी नहीं माना तब —

मान्यो कोनी मंगलजी, जाँ कै धरती को धन जी।
पटक्यो बालू रेत में, पकड़ कंठ पनजी॥

(लेकिन मंगलजी नहीं माना तो पनजी ने उसके कंठ पकड़ कर उसे बालू रेत में पछाड़ दिया)

नीबू निचोड़

एक सराय के अन्दर एक नीबू निचोड़ नाम का मुसलमान रहा करता था। जब कोई भी मुसलमान यात्री सराय में आता, नीबू निचोड़ उसके साथ जबरन खाना खाने बैठ जाया करता। एक दिन एक पठान उस सराय में आया तो भठियारिन ने नीबू निचोड़ की आदत उसे बतला दी। लेकिन पठान ने कहा कि जबरन खाना खाने वाले को मैं देख लूँगा। जब पठान

खाना खाने के लिए बैठा तो नीबू निचोड़ भी आधा नीबू लेकर वहीं आ गया और पठान के मना करते-करते दाल में नीबू निचोड़कर खाने के लिए बैठ गया। पठान ने कसकर एक थप्पड़ उसको जमा दिया। तब नीबू निचोड़ ने कहा कि भाई पठान ! या तो बचपन में अम्मा ही इस प्रकार मार-मार कर खिलाया करती थी या आज तुम ही खिला रहे हो। तब पठान को हँसी आ गयी और उसने नीबू निचोड़ को अपने साथ खाना खिलाया।

एक टाँग को मुरगो

एक पठान बाज़ार से एक मुरग़ा ख़रीदकर लाया और उसे अपने नौकर को पका लाने के लिए दे दिया। जब नौकर मुरग़े को पकाकर पठान के पास ले जा रहा था तो उसका मन ललचाया और उसने मुरग़े की एक टाँग तोड़कर खा ली। शेष पठान के पास ले गया। पठान ने पूछा कि इसकी एक टाँग कहाँ गई तो नौकर ने कह दिया कि हुज़ूर ! मुरग़ा एक ही टाँग का था। पठान ने कहा कि मूर्ख, कहीं एक टाँग का भी मुरग़ा हुआ करता है तो नौकर ने कहा कि किसी दिन आपको एक टाँग का मुरग़ा दिखला दूँगा। एक दिन जब दोनों साथ-साथ जा रहे थे, तो नौकर ने देखा कि एक मुरग़ा एक टाँग के बल खड़ा हुआ है और दूसरी टाँग उसने ऊपर को छिपा रक्खी है। उसे अच्छा मौका मिल गया औरउसने पठान से कहा कि जनाब ! उधर देखिये, एक टाँग का मुरग़ा खड़ा है। पठान ने मुरग़े के पास जाकर चुटकी बजाई तो मुरग़े ने अपनी दूसरी टाँग भी निकाल ली। तब पठान ने कहा कि यह देख, दूसरी टाँग भी हाज़िर है। तब नौकर ने कहा कि हुज़ूर ! उस वक्त आपने चुटकी कहाँ बजाई थी ? यदि चुटकी बजाते तो उस मुरग़े की भी दूसरी टाँग निकल आती।

● क्युं ई बणनो नई

एक साधु अपने चेले के साथ जा रहा था। चेले ने साधु से ज्ञान पूछा तो साधु ने इतना ही कहा कि कभी कुछ बनना नहीं चाहिए। चलते-चलते एक बाग़ आया तो दोनों उसमें ठहर गये। साधु एक कमरे में ठहर गया

और चेला दूसरे कमरे में जाकर लेट गया । थोड़ी देर में बाग के रखवाले आये तो उन्होंने चेले से पूछा कि तू कौन है ? तब चेले ने कहा कि मैं साधु हूँ । उन्होंने तिरस्कारपूर्वक कहा कि साधु की सूरत ऐसी ही होती है क्या ? चल निकल यहाँ से। यों कहकर उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया। फिर उन लोगों ने गुरु से पूछा कि तुम कौन हो ? लेकिन गुरु कुछ बोला नहीं । तब उन लोगों ने सोचा कि यह कोई करामती साधु है और उन लोगों ने विनयपूर्वक साधु से किसी दूसरे स्थान को चले जाने के लिए कहा । जब गुरु और चेले फिर मिले तब चेले ने अपने अपमान की बात गुरु से कही। इस पर गुरु ने कहा कि तू कुछ बना होगा ? चेले ने कहा कि गुरुजी ! मैंने तो उनके पूछने पर इतना ही कहा था कि मैं साधु हूँ । इस पर मुझे धक्के देकर बाहर निकाल दिया गया । तब गुरु ने कहा कि तू साधु बन गया न इसीलिए तेरी दुर्दशा हुई। तुझसे तो तीस वर्ष पहले मैं साधु बना था लेकिन मैंने नहीं कहा कि मैं साधु हूँ ।

● बाबै का अर धोलिये बलद का पग

एक जाट के चार-पाँच साल का पोता था। उसमें यह कुटेव थी कि जब भी जाट किसी काम से बाहर जाता, वह उसे टोक दिया करता। जब वर्षा हो गई और जाट हल लेकर खेत जाने की तैयारी करने लगा तो उसने सोचा कि पोता टोके बिना न रहेगा । अतः उसने उसे एक कुठले में बंद कर दिया । उधर जाट अपने बैलों को लेकर और कंधे पर हल रखकर खेत को चला, इधर लड़का कुलबुलाने लगा। उसने कुठले के नीचे के सूराख से झाँककर देखा और बोला कि बाबा के और धौले बैल के तो भागते के पैर ही दिखलाई देते हैं। इस प्रकार बाबा को टोककर उसने अपनी बात पूरी की ।

● जाटणी की रीझ

एक पंडित अपने जाट यजमान के घर गया और स्नान करके रुद्री के

पाठ करने लगा। अपनी पंडिताई जताने के लिए वह जोर-जोर से पाठ करने लगा। जाटनी उसके समीप आकर बैठ गई और उसे एक टक देखने लगी। जाटनी की आँखों में आँसू आ गए। पंडितजी ने सोचा कि जाटनी पर पंडिताई का सिक्का जम रहा है अतः वे और भी जोर से पाठ करने लगे। पाठ समाप्त होने पर पंडितजी ने जाटनी से पूछा कि मालूम होता है तुम्हें पाठ सुनने में बहुत आनन्द आया है। तब जाटनी ने कहा कि पाठ-पूठ तो मैं कुछ समझी नहीं, मैं तो यह समझी कि तुम अब मरोगे, क्योंकि कुछ ही दिन पहले मेरी एक भेड़ तुम्हारी ही तरह चिल्ल-पों करती-करती मर गई। मैंने समझा कि भेड़वाली बीमारी तुम्हें भी हो गई है।

● धाप्या पड़्या छां

एक ठाकुर के घर में बहुत भूख थी। बच्चों को चुप कराने के लिए उसने छीके पर एक बेंत रख छोड़ा था। जब बच्चे रोटी के लिए अधिक हठ करते तो वह छीके पर से बेंत उठाकर उन्हें पीट दिया करता। बच्चे चुप हो जाते। एक दिन उक्त ठाकुर के एक पाहुना आया। बच्चों की हालत देखकर उसने कहा कि बच्चे तो बहुत दुबले हो रहे हैं। तब ठाकुर ने कहा कि खाना चनों का है। बच्चों ने यह सोचकर कि पाहुने के सामने तो बाप नहीं पीटेगा, बोल उठे कि चने यदि मिलें तो सूखे ही चबा लें। तब ठाकुर ने कहा कि क्यों, छीके पर से लाऊँ क्या ? पाहुने ने सोचा कि छीके पर रोटी रक्खी होगी, लेकिन बच्चे सही बात को जानते थे, इसलिए उन्होंने कहा कि नहीं बापजी, हम तो अघाये हुए हैं।

● नई राह

एक बनिया अपने घर में सोया हुआ था कि एक चूहा उसकी छाती पर से निकल गया। बनिया जाग उठा और जोर-जोर से रोने लगा। घर के सारे लोग वहाँ जमा हो गए और उससे रोने का कारण पूछने लगे। कारण जानकर उन लोगों ने कहा कि चूहा निकल गया तो क्या हो गया, रोते क्यों हो ? उनकी बात सुनकर तब उसने कहा कि मैं चूहे के निकल

जाने से नहीं रोता हूँ । मैं तो इसलिए रोता हूँ कि यह राह बुरी निकली । आज चूहा निकला है, कल साँप भी इसी राह निकल सकता है । (इसी वास्ते शायद कोई नई राह नहीं निकालने देता है ।)

● दिल्लगीबाज़ और हलवाई

एक हलवाई की यह आदत थी कि वह किसी को भी अपनी भट्ठी से चिलम के लिए आग नहीं लेने देता था । कोई अनजान में ले भी लेता तो उसे बिना मारे न छोड़ता । एक दिन एक दिल्लगीबाज़ उधर से निकला । भट्ठी में लाल अंगारों को देखकर उसने सोचा कि एक चिलम पी लेनी चाहिए। उस समय हलवाई वहाँ मौजूद नहीं था अतः वह भट्ठी से आग लेकर चिलम पीने लगा । इतने में हलवाई वहाँ आ गया और उसने गुस्से में भरकर कहा कि इस बार तो तुम्हें ब्राह्मण जान कर छोड़े देता हूँ, आगे कभी यहाँ चिलम पीने का विचार करके आओ तो सिर पर तवा बाँधकर आना । तब दिल्लगीबाज़ ने कहा कि यदि वक्त पर तवा न मिले तो क्या सेहरा बाँधकर आ जाऊँ ? हलवाई सुनकर लज्जित हो गया ।

● बार्प-बेटो दोनूं एक सा

एक सेठ के यहाँ बाप और बेटा दोनों नौकर थे । सेठ का लड़का मर गया तो नौकर ने अपने बेटे से कहा कि मैं बीमार हूँ, सेठ के यहाँ तुम हो आओ और जो सब लोग कहें वही तुम कह देना । नौकर का लड़का गया तो उसने सेठ के मकान के बाहर कुछ आदमियों को यों कहते सुना कि सेठ को अपने किये का फल मिल गया । नौकर के लड़के ने अन्दर जाकर उसी प्रकार कह दिया । तब सेठ के आदमियों ने उसे मार-कर बाहर निकाल दिया । उसने जाकर सारी बात अपने बाप से कही तो दूसरे दिन वह खुद लाठी टेकता हुआ सेठ के यहाँ गया और उसने कहा कि सेठजी, लड़का मूर्ख है, उसने अनजान में कुछ कह दिया हो तो क्षमा करें, आपके यहाँ दुबारा जब कोई मरेगा तो मातमपुरसी के लिए मैं खुद

आऊँगा। तब सेठ ने कहा कि आप बड़ा बुद्धिमान् बनकर आया है, और फिर उसको भी घर से बाहर निकलवा दिया।

अनाज को कोठलियो

एक औरत का पति मर गया तो वह जोर-जोर से रोने लगी। पड़ोस में ही एक नशेबाज़ रहता था, वह भी सहानुभूति जताने के लिए उस औरत के पास आया। उसने औरत से पूछा कि क्या वह भंग पीता था? औरत ने कहा कि कभी नहीं। तब उसने पूछा कि क्या वह अफ़ीम खाता था? औरत ने कहा कि बिलकुल नहीं। तब नशेबाज ने फिर पूछा कि क्या वह तंबाकू भी नहीं पीता था, तब उस औरत ने कहा कि जी नहीं। तब नशेबाज़ ने बड़ी लापरवाही से कहा कि भला ऐसे आदमी को क्या रोती हो? वह तो अनाज का कुठला था सो लुढ़क गया।

● ढ़ेढ़ की बेगार

एक चमार बेगार से उकताकर कुएँ में जा गिरा। वहाँ मेंढक ने पूछा कि भाई! तुम कौन हो? जब उसने कहा कि मैं तो चमार हूँ तब मेंढक ने रोब से कहा कि इस चारों ओर फैली हुई सिवार को साफ करदे, मैं तैरूँगा। तब चमार ने सोचा कि इसी बेगार से डरता तो मैं कुएँ में गिरा था और वही बेगार यहाँ भी तैयार मिली।

● भली करी रै दायमा

एक दायमा ब्राह्मण जब मरने लगा तो उसने सोचा कि अपने पड़ोसी को भी साथ ही ले चलूँ। अतः उसने पड़ोसी को बुलाकर कहा कि भाई, मैं तो मर रहा हूँ, लेकिन मेरा एक काम कर देना। हमारी परंपरा के अनुसार जब तक मरे हुए आदमी के पेट में एक लठ नहीं घुसेड़ दिया जाता तब तक उसकी मुक्ति नहीं होती। अतः तुम कृपा करके मरने के बाद मेरे पेट में एक लठ घुसेड़ देना। पड़ोसी उसकी बातों में आ गया और मरने के बाद उसने एक लठ लाकर उसके पेट में घुसेड़ दिया। पुलिस को इस बात का

सुराग लगा तो उसने ब्राह्मण के पड़ोसी को हत्या करने के अपराध में फँसा लिया । उसने बहुत कहा कि मैं निर्दोष हूँ लेकिन हत्या के अपराध में उसे फाँसी की सजा हो गई । तब उसने कहा—

भली करी रै दायमा, अण पढ़ि याई भट्ट ।
मरतो मरतो मारग्यो, दिरा पेट में लट्ठ ।।

राजस्थान में दायमा जाति के ब्राह्मण बहुत चालाक समझे जाते हैं । वे अनपढ़ भी बुद्धिमान होते हैं । इसी बात को लेकर उपर्युक्त दोहा कहा गया है कि (अरे बिना पढ़े भी भट्ट दायमा, तू ने खूब किया । तू मरता हुआ भी अपने पेट में लट्ठ दिलवाकर मुझे मार गया)

● अट्टा-सट्टा

एक जाट का लड़का अपनी ससुराल को चला । उसके पास एक बढ़िया तलवार थी । रास्ते में उसने एक आदमी को कंधे पर फरसा उठाये हुए जाते देखा । फरसा धूप में चमक रहा था । जाट के लड़के को फरसा बहुत अच्छा लगा और उसने तलवार के बदले में वह फरसा ले लिया । आगे चला तो उसने एक आदमी को अलगोझा बजाते हुए देखा । जाट के लड़के ने सोचा कि अलगोझा एक साधारण बाजा बजाने में कितनी मस्ती है ? उसने फरसे के बदले में अलगोझा ले लिया और मस्त होकर बजाता हुआ चलने लगा । थोड़ी देर में उसे भूख लगी । उसने चारों तरफ नजर घुमाकर देखा तो एक आदमी उसे मूलियाँ ले जाते हुए दिखलाई पड़ा । उसने अलगोझे के बदले में एक मोटी मूली ले ली और एक कुंएँ पर बैठकर उसे आनन्द से खाने लगा और बोला ।

तरस बेचकर फारस ली, फारस बेचली फूं ।
अट्टा सट्टा जो करै, सो अरड़ाखावै यूं ।।

(मैंने तलवार बेच कर फरसी ली और फरसी बेचकर बाजा लिया; हाँ भाई, जो उलट पुलट करता है वही इस प्रकार मूली गटका सकता है)

● तेरी मा डाकण है

एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा कि तेरी माँ तो डाकिन है । तब

दूसरे ने पूछा कि तुम्हें कैसे मालूम हुआ ? पहले ने कहा कि वह श्मशान में मेरी माँ को मिली थी और मुर्दों को निकाल निकालकर खा रही थी। तब दूसरे ने कहा कि यदि तुम्हारी माँ राँड अच्छी है तो वह भला वहाँ क्यों गई थी ?

● जौहरी की निज़र

एक राजा के यहाँ एक जौहरी एक कीमती हीरा बेचने के लिए आया। राजा ने नगर के सबसे बूढ़े जौहरी को बुलाकर वह हीरा दिखलाया। जौहरी हीरे की परख कर ही रहा था कि उसे पेशाब की हाजत हो गई और उसने वहीं थोड़ा हटकर पेशाव कर लिया। फिर उसने आकर राजा को बतलाया कि उक्त हीरे में साढ़े तीन रत्ती मैल है। राजा उसकी बात सुनकर चकित हुआ और उसने पूछा कि इस बुढ़ापे में भी आपकी नज़र इतनी तेज़ है, इसका क्या रहस्य है ? तब जौहरी ने कहा कि इसका रहस्य इतना ही है कि मैं कभी लघुशंका की हाजत को रोकता नहीं, चाहे कितना ही आवश्यक काम हो ?

● पल्लै बांधले रोटी

एक चारण (बीकानेर डिवीजन में) जसरासर गया। इस तरफ खारिया गाँव आया, आगे पोटी नाम का गाँव आया। लेकिन न खारिये में, न पोटी में और न जसरासर में ही उसे खाने के लिए रोटी मिली। तब उसने कहा—

उरलै नाकै खारियो, परलै नाकै पोटी।
जै जसरासर जाय बटाऊ, पल्लै बाँध ले रोटी ।।

(जसरासर के इस तरफ खारिया नाम का गाँव है और उस तरफ पोटी है। हे बटाऊ, यदि तुझे जसरासर जाना हो तो पल्ले रोटी बाँध कर ले जाना। वहाँ खाने को रोटी नहीं मिलेगी।)

थारो म्हारो के रूसणो ?

एक चुहिया घर का काम धंधा विल्कुल न करती थी, लेकिन खाने

में बहुत होशियार थी। एक दिन चूहे ने उसे पीट दिया तो वह एक नीम के वृक्ष के नीचे जाकर बैठ गई। जब चूहे ने पुकारा कि आकर घर में बुहारी निकाल लो तो उसने रूठे-रूठे वहीं से कहा——

'मनैं मारी थी, मनै कूटी थी,
मैं नीम तलै जा सूती थी,
मैं क्युं आऊं मेरो के लियो।'

तुमने मुझे मारा था, पीटा था और मैं रूठकर नीम के नीचे आकर सो गई। अब भला मैं क्यों आऊँ ? मेरा क्या लेता है ?

इसी प्रकार जब भी उसने घर के काम के लिए कहा, वह उपर्युक्त बहाना बनाकर, टालती रही। अन्त में चूहे ने घर में बुहारी निकाली, बरतन साफ किये और खाना बनाया। खाना बनाकर उसने चूहिया को फिर पुकारा कि आकर खाना खालो। तब चुहिया ने कहा——

"आऊं छूं जी आऊं छूं,
मुखड़ो धोकर आऊं छूं,
थांरा म्हारा के रूसणा"

(आ रही हूं जी आ रही हूँ, मुँह धोकर आ रही हूँ, हमारा और तुम्हारा भला कैसा रूठना ?)

और वह शीघ्र ही उछलती कूदती वहाँ आ गई। चूहे को बड़ा गुस्सा आया और उसने एक पत्थर उठाकर उसको मार दिया। पत्थर के लगते ही चुहिया वहीं ढेर हो गई।

● रमज्यान नै मार दियो

एक काज़ीजी मस्जिद में बैठे लोगों से कह रहे थे कि कल रमज़ानशरीफ़ आयेगा सो आप सब लोग रोज़ा रक्खें। वहीं बैठे एक अनाड़ी आदमी ने पूछा कि काज़ीजी रमजान किधर से आयेगा ? काज़ी ने भी मज़ाक करते हुए दूसरे गाँव से आने वाले रास्ते की तरफ इशारा करके कह दिया

कि इस रास्ते आयेगा। वह आदमी यह सोचकर कि रमज़ान को आते ही मार डालूँगा ताकि सबको भूखा न रहना पड़े, उसी रास्ते पर जा बैठा और हर आने वाले से उसका नाम पूछने लगा। किसी ने कुछ नाम बताया किसी ने कुछ। अन्त में एक ऊँट वाला आया और नाम पूछने पर उसने अपना नाम रमजान बतलाया। तब उस आदमी ने लट्ठ मार-मारकर उस बेचारे को जान से मार डाला और फिर ऊँट पर पिल पड़ा। ऊँट को भी मारकर वह काज़ी के पास गया और उसने कहा कि मैंने रमजान को मार डाला है, अब किसी को रोजा रखने की आवश्यकता नहीं है। काजी उसकी बात सुनकर लाहौल बिला, लाहौल बिला कह उठा तो उसने सोचा कि लाहौल बिला रमजान के साथ वाले जानवर का नाम है इसलिए काज़ी की शंका मिटाने के लिए उसने कहा कि मैंने उसका भी काम तमाम कर दिया है।

● जाट अर भूत

एक बार एक गाँव में अकाल पड़ा तो एक जाट अपने परिवार को लेकर किसी दूसरे स्थान को चला। रात हो गई तो सब लोग जंगल में ही ठहर गए। जो कुछ पास था खा लिया और सो रहे। बड़े तड़के ही सब लोग उठे और काम में लग गए। जाट ने सोचा कि चलते हुए जंगल से कुछ लकड़ियाँ काटकर ले चलें तथा कुछ रस्सियाँ बाँट लें तो पास के गाँव में उन्हे बेचकर कुछ पैसे प्राप्त कर लेंगे। उधर वृक्ष पर एक भूत रहता था, उसने सोचा कि न जाने ये लोग आज क्या करने वाले हैं? उसने मुखिया से पूछा तो मुखिया ने कहा कि इन रस्सियों से आज तुझे ही बाँधकर ले जाएँगे। भूत ने कहा कि तुम मुझे यहीं रहने दो, मैं तुम्हें बहुत धन दूँगा। मुखिया ने उसकी बात मान ली और भूत ने उसे बहुत धन दिया। धन लेकर वे सब अपने गाँव आ गए और सुख से रहने लगे। पड़ोसी ने पूछा तो जाट ने सारी बात बतला दी। तब वह भी अपने परिवार को लेकर उसी स्थान पर पहुँचा। उसने सबको काम करने के लिए कहा, लेकिन

किसी ने उसका कहना नहीं माना। किसी ने कहा मुझे नींद आ रही है, किसी ने कहा कि मैं बहुत थका हुआ हूँ। भूत ने प्रकट होकर पूछा कि तुम क्यों आये हो? परिवार के मुखिया ने अपना मन्तव्य बतलाया तो भूत ने कहा कि जब तुम अपने परिवार के लोगों को वश में नहीं कर सकते तो मुझे क्या वश में करोगे? अतः शीघ्र ही यहाँ से चले जाओ अन्यथा सबको मार डालूँगा। यह सुनकर सब लोग खाली हाथ ही वहाँ से भाग गएँ।

● अनाज लेसी 'क आटो

एक जाट ने एक नया खेत मोल लिया। जब वह उसमें हल चलाने लगा तो एक भूत ने प्रकट होकर जाट से कहा कि तुम्हारे हल की नोक से हमारी अँतड़ियाँ फट रही हैं, अतः तुम यहाँ हल न चलाओ। इस पर जाट ने कहा कि क्या मैं अपने परिवार सहित भूखों मर जाऊँ? मुझे पाँच मन अनाज हर महीने चाहिए, वह कहाँ से आयेगा? तब भूत ने कहा कि हम पाँच मन अनाज हर महीने तुम्हारे घर पहुँचा दिया करेंगे। तब जाट हल लेकर अपने घर चला गया और भूत हर महीने पाँच मन अनाज उसके घर भिजवाने लगा। एक दिन उन भूतों के यहाँ कोई उत्सव था। बहुत से भूत वहाँ एकट्ठे हुए थे। वे लोग उत्सव मना ही रहे थे कि इतने में उस भूत को जाट के घर अनाज भेजने की बात याद आई तो वह उठकर चलने को हुआ। आये हुए भूतों ने जब पूछा कि कहाँ चले, तो उक्त भूत ने सारी बात कही और कहा कि आज महीना पूरा हो गया है अतः जाट के घर अनाज डालने जा रहा हूँ। आये हुए भूतों में से एक ने कहा कि तुम भूत होकर आदमी से डर गए, लो आज मैं जाट के घर जाकर तुम्हारा पीछा ही छुड़वा देता हूँ। वह भूत जाट के घर चला। उधर जाट के घर में एक बिलाव हिल गया था सो वह दूध, दही खा जाया करता। जाट ने उसे फँसाने के लिए रस्से का एक फन्दा बनाया और मोरी के पास छुपकर बैठ गया। उधर भूत ने मोरी में मुँह डाला तो जाट ने उसे बिलाव का सिर समझकर फन्दा उसके गले में डाल दिया और बोला कि तुझे

बहुत दिन हो गए हैं, आज तुझे जान से मारूँगा। जाट की बात सुनकर भूत सकपका गया और हाथ जोड़ने लगा। जाट ने जब देखा कि यह तो बिलाव नहीं कोई और ही है तो उसने कड़क कर भूत से पूछा कि तू कौन है ? भूत ने और कोई चारा न देखकर जान बचाने के लिए गिड़गिड़ाते हुए कहा कि मैं भूत हूँ, आज तुम्हारा महीना पूरा हो गया है इसलिए उस भूत ने यह पुछवाया है कि तुम्हें अनाज वैसे ही ला दें या पीसकर ला दिया करें। जाट ने सोचा कि चलो पीसने का झंझट भी ख़त्म करें, अतः बोला कि हमें तो अनाज पीसकर ही ला दिया कर और तब जाट ने भूत को फन्दे से मुक्त कर दिया। भूत जान बचाकर भागा और जब उसने आकर सारी बात कही तो वह भूत बोला कि तुमने पाँच मन अनाज हर महीने पीसने की आफ़त और खड़ी कर दी, ऐसा पीछा छुड़वाया ?

● शिवजी को शंख

एक बार पृथ्वी पर लगातार कई वर्षों तक अकाल पड़ा। बात यह हुई कि शिवजी महाराज ने कुपित होकर अपना शंख बजाना छोड़ दिया और जब तक शिवजी शंख नहीं बजायें तब तक वर्षा होती नहीं। एक दिन शिवजी पार्वती सहित मृत्युलोक से होकर जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक किसान अपने खेत में हल चला रहा है। शिवजी ने पूछा कि भले आदमी, वर्ष गुज़र गए, वर्षा हुई नहीं, तू सूखे में क्यों हल चला रहा है ? तब किसान ने उत्तर दिया कि मैं इसलिए हल चला रहा हूँ कि कहीं मैं हल चलाना न भूल जाऊँ। यदि वर्षा हो गई और मैं हल चलाना भूल गया तो वह वर्षा मेरे किस काम आयेगी ? तब शिवजी ने सोचा कि मैंने भी कई वर्षों से शंख नहीं बजाया है, कहीं मैं ही तो शंख बजाना नहीं भूल गया हूँ। यह सोच कर उन्होंने अपना शंख लेकर जोर से बजाया। शंख बजते ही घनघोर वर्षा हुई और सारी दुनिया निहाल हो गई।

● बारठजी को आंगळो

एक बारहट के पास घर में तो कुछ था नहीं लेकिन गाँव में उसकी मान

प्रतिष्ठा अच्छी थी। एक दिन एक बटाऊ उनके यहाँ आया तो बारहटजी ने किसी तरह उनका अच्छा सत्कार कर दिया। कहीं से खाट माँगकर लाये, कहीं से कपड़े। किसी के घर से अच्छी रसोई बनकर आ गई। रात को बारहटजी जब उसके लिए एक कचोला (कटोरा) दूध का लाये और दूध में पड़ी चीनी को अपनी उँगली से मिलाने लगे तो बटाऊ ने कहा कि बारहटजी! आपने तो मेरी बहुत अच्छी खातिर की है तब बारहटजी बोले, "बारठजी को तो बस आंगलो है", अर्थात् मेरी तो सिर्फ उँगली उँगली ही है जो दूध के कटोरे में फिरा रहा हूँ, बाकी सब चीजें तो माँगी हुई हैं।

● सोड़ ल्याओ

एक पंडितजी अपने छोटे लड़के को जाड़े के दिनों में साथ लेकर सोया करते थे। वे सोड़ (रजाई) में सोये सोये-उसको विवाह पद्धति रटाया करते। धीरे-धीरे लड़के को सारी विवाह पद्धति कंठस्थ हो गई। पंडितजी ने सोड़ में लेटे-लेटे ही कई बार उससे विवाह पद्धति सुन ली। जब उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि बच्चे को विवाह पद्धति अच्छी तरह याद हो गई है तो वे एक दिन एक विवाह करवाने उसे भी अपने साथ ले गए। वहाँ लोगों पर रोब डालने के लिए पंडित जी ने कहा कि आज यह लड़का ही विवाह करवायेगा और उन्होंने लड़के से विवाह-पद्धति बोलने के लिए कहा। इस पर लड़के ने अपने पिता से कहा कि पिताजी 'सोड़' मँगवाइये। घर वालों ने पूछा कि 'सोड़' का क्या करोगे? तब लड़के ने कहा कि मैंने 'सोड़' के अन्दर ही विवाह-पद्धति रटी है, उसी में बोलने का मुझे अभ्यास है, उसके बिना मैं नहीं बोल सकता। तब सब लोग पंडितजी की ओर देखकर हँसने लगे।

●

कथाओं की प्रतीकानुक्रमणिका

कथा-क्रम